CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आर्थर बिर्नी

युद्धकला

355
ब प
3550

विश्वविद्यालय प्रकाशन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युद्धकला

आर्थर विर्नी

355
व य

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

BOOK-LAND
65, Halwasiya Market,
HAZRATGANJ, LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

युद्धकला

लेखक

आर्थर बिर्नी

अनुवादक

श्रीराम गोयल

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 3550
प्राप्ति तिथि 30/1/78
State Museum, Library, Lko.

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम संस्करण : जनवरी १९६५

मूल्य : ७.५०

355
ब य

अँग्रेजी संस्करण के प्रकाशक
टॉमस नेल्सन एण्ड संस लि०, लंदन
की अनुमति से प्रकाशित

प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, भैरवनाथ, वाराणसी
मुद्रक—ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ६१९४–२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

ऐसे समय में जब कि ब्रिटिश-साम्राज्य अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है[1], इसके नागरिकों का ध्यान स्वाभाविक रूप से सैन्य-समस्याओं और सैनिक सफलता के लिए आवश्यक परिस्थितियों की ओर लगा हुआ है। युद्धकला किस प्रकार सीखी जा सकती है ? स्पष्ट है अनुभव के कठोर और महँगे विद्यालय में; इसके अलावा इसका केवल एक उपाय और है—सैनिक इतिहास का अध्ययन। "सैनिक इतिहास के विधिवत् अध्ययन के अतिरिक्त युद्धकला न कुछ है और न कभी थी", ऐसा सर फ्रेडेरिक मॉरिस का कहना था। नेपोलियन का यह सिद्धान्त भी सुविज्ञात ही है कि "हनीवाल और सीज़र, गुस्टावस अडोल्फस तथा तुरेन, प्रिंस यूजीन और फ्रेडेरिक, इन सबके अभियानों का बारम्बार अध्ययन करो; युद्धकला के रहस्य को समझने का यही एक मात्र उपाय है।" प्रस्तुत रूपरेखा में मैंने सैनिक इतिहास के विकास को, विशेषज्ञों की शास्त्रीय सूक्ष्मताओं (technicalities) तथा लम्बी-चौड़ी हाँकने वाले इतिहासकारों की गर्वोक्तियों को बचाते हुए, पेशेवर सैनिकों एवं इस विषय में रुचि रखने वाले सामान्य पाठकों के लिए बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। मैंने युद्धकर्म के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को गौण तत्त्वों से अलग करने की चेष्टा भी की है। सैनिक द्वारा प्रयुक्त भौतिक साधनों के सतत परिवर्तन के मध्य, आयुधों, संगठन, संख्या और यातायात के साधनों में बराबर सुधार होते रहने के बावजूद, युद्धकला के कुछ शाश्वत सिद्धान्त समस्त परिस्थितियों में लागू होने योग्य सिद्ध हुए हैं। ये सिद्धान्त ही युद्ध-विज्ञान हैं, और इनका ज्ञान इतिहास की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। सैनिकों का इनसे परिचित होना और इन्हें समझ लेना द्वितीय विश्वयुद्ध में हमारी अन्तिम विजय की सर्वोत्तम 'गारण्टी' होगा।

मार्च, १९४१ — ए० बी०

---

१. यह पुस्तक १९४१ में, जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था, लिखी गई थी।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुवाद के सम्बन्ध में

अनुवाद-कार्य के क्षेत्र में मेरा यह प्रथम प्रयास है। क्योंकि अनूदित साहित्य से मौलिक रचनाओं का स्थान सदैव ऊँचा होता है, इसलिए स्पष्टतः किसी भी ऐसे लेखक को, जो मौलिक ग्रन्थों की रचना कर सकता है और करना चाहता है, अनुवाद-कार्य में अपनी शक्ति का अपव्यय नहीं करना चाहिए। लेकिन हमारे देश में परिस्थिति भिन्न है। हम सभी यह चाहते हैं कि अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाएँ, परन्तु स्वदेशी भाषाओं में अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त मौलिक ग्रन्थों का प्रणयन एकदम नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में उच्चकोटि के विदेशी साहित्य का अनुवाद भारतीय लेखकों के लिए स्पष्ट कर्त्तव्य है। सुप्रथित फ्रान्सीसी लेखक आन्द्रे गीद का यह सुझाव कि 'उच्चकोटि के कम से कम एक ग्रन्थ का अपनी भाषा में अनुवाद करना प्रत्येक अच्छे लेखक का देश के प्रति कर्त्तव्य है', हम भारतीयों पर विशेष रूप से लागू होता है।

राल्फ हम्फरीज के इस कथन का प्रत्याख्यान दुष्कर है कि किसी पुस्तक के अनुवाद का कार्य उसी व्यक्ति को करना चाहिए जो उसकी विषय-वस्तु के साथ सृजनात्मक अनुभूति रखता हो। उदाहरणार्थ उपन्यासों का अनुवाद उपन्यासकारों को करना चाहिए, कविताओं का कवियों को और नाटकों का नाटककारों को। मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ और प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकृत्या इतिहास का है—युद्धकला के इतिहास का। इसलिए जब मेरे सामने इसके अनुवाद का प्रस्ताव आया तो मैंने उसे सहर्ष स्वीकृत कर लिया। स्मरणीय है कि इतिहास कोई विशिष्ट विषय नहीं, अध्ययन की एक विशेष 'विधि' या 'दृष्टि' मात्र है। जब भी हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो वह प्रकृत्या किसी न किसी विषय का इतिहास होता है। उस विषय के विद्वान् उसका अध्ययन जिस दृष्टि से करते हैं वह उसके इतिहास के अध्येता की दृष्टि से भिन्न होती है। उदाहरणार्थ संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ भास, अश्वघोष, कालिदास, बाण तथा अन्यान्य लेखकों की भाषा, शैली, मौलिक-प्रतिभा आदि का समालोचक की दृष्टि से अध्ययन करते हैं और प्रायः स्वयं संस्कृत भाषा में साहित्य-सृजन का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत इतिहासकार की दृष्टि व्यापक होती है। वह साहित्य-निर्माताओं का साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि में और उसके प्रकाशन के हेतु अध्ययन करता है। उसकी मौलिक साहित्य के सृजन में व्यक्तिगत रूप से रुचि होने या न होने से उसके इतिहासज्ञ होने में न कोई बाधा आती है और न विशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहायता मिलती है। जिस प्रकार कलाकृतियों का आलोचक होने के लिए कलाकार होना आवश्यक नहीं है उसी प्रकार साहित्य, युद्धकला तथा अन्य किसी भी विषय का इतिहासकार होने के लिए इतिहास-दृष्टि की आवश्यकता होती है, उस विषय में सृजनात्मक अनुभूति रखने की नहीं। युद्धकर्म में सक्रिय भाग लेने वाले व्यक्ति अपने संग्रामों और अभियानों के विवरण लिखते हैं, नवीन अस्त्र-शस्त्र, समरनीति, युद्धनीति आदि का अध्ययन करते हैं और पुराने सेनाध्यक्षों के कार्यकलापों पर समालोचक की दृष्टि से विचार करते हैं। उनकी दृष्टि साहित्य में सृजनात्मक अनुभूति रखने वाले साहित्यकारों और कलाकारों की दृष्टि से तुलनीय है। इसके विपरीत युद्धकला के इतिहासकार उपर्युक्त सामग्री का उपयोग करके युद्धकला के क्रमिक विकास का विवरण लिखते हैं। उनकी तुलना साहित्य और कला के इतिहासकारों से की जा सकती है। यह दूसरी बात है कि युद्धकर्म में सक्रिय भाग लेने वाले किसी व्यक्ति के पास समुचित इतिहास-दृष्टि भी हो, ठीक वैसे ही जैसे किसी साहित्यकार में मौलिक साहित्य के सृजन के साथ साहित्य का इतिहास लिखने की प्रतिभा भी हो। लेकिन ऐसे व्यक्ति प्रायः कम मिलते हैं। इसीलिए युद्धकला के इतिहास पर लेखनी उठाने वाले सफल लेखक, विशेषतः भारत में, बहुधा ऐसे व्यक्ति रहे हैं जिनका युद्धकर्म से विशेष सम्बन्ध नहीं रहा। भारतीय लेखकों में जदुनाथ सरकार और के० एम० पनिक्कर के नाम इस प्रसंग में उदाहरणीय हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री आर्थर बिर्नी भी स्वयं मुख्यतः अर्थशास्त्र के विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध हैं।

हिन्दी भाषा में युद्धकला पर अभी तक बहुत कम पुस्तकें लिखी गई हैं और प्रामाणिक ग्रन्थों का तो एकदम अभाव-सा है। परिणामस्वरूप मेरे सामने पारिभाषिक शब्दों की भारी कठिनाई रही है। भारत सरकार के 'पारिभाषिक-शब्द-संग्रह' में सैन्य-विज्ञान सम्बन्धी शब्द भी मिलते हैं और उनका मैंने यथासम्भव प्रयोग भी किया है। परन्तु एक तो इस 'संग्रह' में इस विषय के सभी शब्दों के हिन्दी रूप नहीं दिए गए हैं और दूसरे किसी एक अंग्रेजी शब्द का भावार्थ हिन्दी में एक या दो शब्दों से नहीं बहुधा उसके प्रयोग के भेदानुसार अनेक शब्दों से होता है। इसलिए यह समस्या इस 'संग्रह' से पूरी तरह हल नहीं होती। परिणामतः इस विषय में मैं अपने विवेक पर निर्भर रहने के लिए बाध्य रहा हूँ। इसीलिए पाठकों की सुविधा के हेतु मैंने पुस्तक में ऐसे शब्दों के आगे कोष्ठकों में अंग्रेजी शब्द दे दिए हैं और अन्त में एक पारिभाषिक शब्द-सूची भी जोड़ दी है।

पुस्तक में यत्र-तत्र पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं। इनमें तारांकित (*) टिप्पणियाँ बिर्नी महाशय की हैं और वे, जिन पर संख्याएँ पड़ी हैं, मैंने जोड़ी हैं। श्री बिर्नी ने यह पुस्तक पाश्चात्य पाठकों के लिए लिखी थी, इसलिए उन्होंने ऐसे बहुत से ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं की ओर संकेत मात्र किया है जिनसे पाश्चात्य पाठकों का परिचित होना निर्विवाद-सा माना जाता है। भारतीय पाठकों की सुविधा के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनमें कुछ का वर्णन पाद-टिप्पणियों में करना आवश्यक था। कुछ टिप्पणियाँ नवीन गवेषणाओं से ज्ञात तथ्यों की जानकारी के लिए जोड़ी गई हैं। पृष्ठ १ और २ पर दी गई टिप्पणियाँ इसका उदाहरण हैं।

इस पुस्तक के लेखक की दृष्टि पाश्चात्य जगत् तक सीमित रही है, इसलिए इसमें एशियायी देशों, विशेषतः भारत की युद्धकला का उल्लेख प्रसंगवशात् ही किया गया है। इस कमी को दूर करने के लिए मैंने बिर्नी महाशय की अनुमति से 'भारतीय युद्धकला' पर एक विस्तृत परिशिष्ट जोड़ने की योजना बनाई थी। परन्तु पुस्तक की अत्यधिक माँग होने के कारण और अधिक विलम्ब समीचीन नहीं समझा गया। अतः फिलहाल इसे पाठकों के सम्मुख यथावत् प्रस्तुत किया जा रहा है। 'भारतीय-युद्धकला' विषयक सामग्री इसके अगले संस्करण में जोड़ दी जाएगी अथवा अलग से प्रकाशित कर दी जाएगी।

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व
तथा संस्कृति विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

—श्रीराम गोयल

'युद्धकला के सिद्धान्त इतिहास में उसी प्रकार प्रकाशित हैं जिस प्रकार क्षितिज पर सूर्य; लानत है उन अन्धों पर जो उन्हें नहीं देख पाते !'

—ग्रुआर्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

प्राक्कथन

अनुवाद के सम्बन्ध में

१. यूनानी फेलैंक्स् ... १

भाला बनाम धनुष

२. रोमन लीजन ... २१

अनुशासन की विजय

३. अश्वारोही सेनाओं का युग ... ४२

युद्ध, सज्जनों का मनोरञ्जन

४. आग्नेयास्त्रों का आविर्भाव ... ६२

विज्ञान के हस्तक्षेप का प्रारम्भ

५. मार्लबोरो और फ्रेडेरिक ... ७७

"महाशय, पहले आप गोली चलाएँ !"

६. नेपोलियन और वेलिंग्टन ... ९४

पंक्ति बनाम कॉलम

७. ग्राण्ट और ली ... ११५

गोली बनाम संगीन

८. मोल्ट्क ... १३०

वैज्ञानिक सेनापति का आविर्भाव

९. रूसी-जापानी युद्ध, १९०४-५ ... १४३

आक्रमक बनाम प्रतिरक्षात्मक

१० प्रथम विश्वयुद्ध—पश्चिमी मोर्चा ... १५०

मनुष्य बनाम मशीनगन

११. प्रथम विश्वयुद्ध—पूर्वी मोर्चा ... १६६

जर्मनी की सत्यानाशी विजय

१२. द्वितीय विश्वयुद्ध, १९३९–४५ ... १७९

पेट्रोल-युद्ध

पठनीय-सामग्री ... २००

पारिभाषिक-शब्द-सूची ... २०१

अनुक्रमणिका ... २१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मान-चित्रों और योजना-चित्रों की सूची

मानचित्र

१. यूनानी और ईरानी	...	४
२. अलेक्ज़ेण्डर की विजयें	...	१७
३. भूमध्यसागरीय प्रदेश में रोमन-साम्राज्य का विस्तार	...	२४
४. धर्मयुद्ध	...	४९
५. मार्लबोरो का डेन्यूब की ओर अग्रसरण	...	७९
६. उत्तरी इटली में नेपोलियन के अभियान	...	९६
७. प्रायद्वीपीय युद्ध	...	१०५
८. अमरीकी गृहयुद्ध	...	१२४
९. फ्रान्सीसी-जर्मन युद्ध	...	१३६
१०. रूसी-जापानी युद्ध	...	१४५
११. जर्मनी का हमला, १९१४	...	१५४
१२. पश्चिमी मोर्चा, १९१५-१८	...	१५९
१३. पूर्वी मोर्चा, १९१४-१५	...	१६७
१४. गेल्लिपोली	...	१७४
१५. पोलैण्ड का अभियान, १९३९	...	१८१
१६. फिनलैण्ड का अभियान, १९३९-४०	...	१८३
१७. नार्वे का अभियान, १९४०	...	१८५
१८. फ्रान्स का संग्राम, १९४०	...	१८९

संग्रामों के योजना-चित्र

१. मेराथोन	...	५
२. थर्मोपाइले और प्लेटाई	...	८
३. कैने	...	२७
४. क्रेसी	...	५४
५. प्वाक्तियर्स्	...	५६
६. आगिन्कूर्त	...	५७
७. डुन्बर ड्रोव	...	७२
८. ब्लेनहीम	...	८२
९. ल्यूथेन	...	८७
१०. वाटरलू	...	१०९
११. ग्रांसेलोरविए	...	१२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १

यूनानी फॅलॅंक्स्

आदिम युद्धकला—यह विचार प्रायः प्रचलित है कि मनुष्य प्रकृत्या युद्धप्रिय प्राणी है, परन्तु उसके प्राचीनतम इतिहास में किए गए अन्वेषणों से इसका बहुत कम समर्थन होता है। अधिकांश पुरातत्त्ववेत्ता इस विषय में सहमत हैं कि सैकड़ों शताब्दियों तक युद्धकर्म (warfare) का मानव जीवन में विशेष महत्त्व नहीं था। युद्ध में प्रयुक्त होने वाले हथियार न तो पूर्व-पाषाणकालीन (Palaeolithic) मनुष्य के अवशेषों में मिलते हैं न नव-पाषाणकालीन (Neolithic) मनुष्य के अवशेषों में। इनकी अवधि २८,००० वर्ष (३०,००० ई० पू०--२००० ई० पू०) मानी जाती है।[१] इस युग में युद्ध अगर एक नियमित या व्यवस्थित कर्म रहा होता तो केवल युद्ध में काम आने वाले औज़ारों या यन्त्रों का आविष्कार भी अवश्य ही हो गया होता। ऐसे सामरिक आयुधों का अभाव होने से हम यह विश्वास कर सकते हैं कि आदिम समूहों में यदा-कदा आन्तरिक और पारस्परिक झगड़े भले ही हो जाते हों, लेकिन ये उनके सामान्यतः शान्त जीवन में होने वाली आकस्मिक हलचलों से अधिक नहीं थे, कुछ वैसे ही जैसे आधुनिक काल के गाँवों की शान्ति कभी-कभी शराबियों के उपद्रव से भंग हो जाती है। युद्ध तब तक एक व्यवस्थित कर्म नहीं हो पाया और न हो ही सकता था जब तक मनुष्य ने आक्रमक और रक्षात्मक आयुध प्राप्त न कर लिए, और इनके लिए उसे धातुओं के आविष्कार (लग० २००० ई० पू०) तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।[२]

लड़ाई में प्रयुक्त होने वाला सबसे पहला हथियार कांसे (bronze) का छुरा था। यही लम्बा होकर तलवार बन गया और लाठी में लगा दिए जाने पर भाला। छुरा, तलवार और भाला आक्रमक हथियार हैं। शीघ्र ही इनका सामना करने के लिए ढाल (shield), शिरस्त्राण (helmet) तथा वक्षस्त्राण (cuirass) आविष्कृत हुए। अस्त्र-शस्त्र और कवच मनुष्य को कांस्य-युग (Bronze Age) की घातक देन थे। इनसे युद्धकर्म ने छिटपुट के स्थान पर व्यवस्थित रूप धारण कर लिया। सिपाही-

---

१. पूर्व-पाषाण काल वस्तुतः अब से लाखों वर्ष पूर्व, निश्चित रूप से पांच लाख से भी अधिक वर्ष पूर्व, प्रारम्भ हुआ।—अनु०।

२. नव-पाषाण काल का अन्त और ताम्र (copper) के प्रयोग का प्रारम्भ वस्तुतः, मिस्र और पश्चिमी एशिया में, ५,००० ई० पू०—३००० ई० पू० के मध्य हुआ और यूरोप के ईजियन प्रदेश (Aegean Region) में ३००० ई० पू० के लगभग और शेष यूरोप में उसके बाद। कांस्य (bronze) का पश्चिमी एशिया, मिस्र तथा पश्चिमोत्तर भारत में प्रयोग ३००० ई० पू० के लगभग प्रारम्भ हुआ।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गीरी एक व्यवसाय हो गया, सेनापतित्व एक कला और युद्ध राजनीति का एक साधन। इतिहास ने तत्काल ही वह दुःखद रूप ले लिया जो उसने अब तक धारण कर रखा है। चालीस रक्तांकित शताब्दियों से बल (force) मानव के भाग्य का सर्वोपरि विधाता रहा है।

युद्धकर्म के प्राचीनतम आरम्भ की खोज करना अलाभकर अध्ययन है। इस विषय में हमारे साधन अत्यल्प हैं और ज्ञान अत्यन्त अपूर्ण। मनुष्य ने सेनाओं का संगठन (organization of armies) तथा व्यूह-रचना (military formations) सर्वप्रथम कब और कैसे की, इसका प्रामाणिक विवरण नहीं दिया जा सकता। यह सब इतिहास-लेखन आरम्भ होने के पहले ही हो चुका था। परवर्ती युग में नील (Nile) और फरात (Euphrates) नदियों के तटों पर उद्भूत होने वाले विशाल साम्राज्यों के पास स्थायी (standing) सेनाएँ थीं। उनके आयुधों और युद्ध-सामग्री का कुछ ज्ञान तक्षित कलाकृतियों और स्मारकों से होता है। लेकिन मिस्री और असीरियन युद्धों के समसामयिक विवरण समरतन्त्र (tactics) अथवा युद्धनीति (strategy) पर वस्तुतः बिल्कुल प्रकाश नहीं देते।* युद्धों और अभियानों के बोधगम्य वर्णन के लिए हमें पाँचवीं शती ई० पू० के यूनानी-ईरानी युद्धों (Graeco-Persian Wars) तक प्रतीक्षा करनी होती है। इसलिए अपने सैनिक इतिहास के इस सर्वेक्षण का श्रीगणेश हम इन्हीं युद्धों से करेंगे।[१]

ईरानी और यूनानी समरतन्त्र (tactics)—सैनिकों के रूप में ईरानियों की शक्ति मुख्यतः उनके अश्वारोहियों और धनुर्धारियों में निहित थी। उनके लड़ने का ढंग था शत्रु को बाणवर्षा से आतंकित करना और फिर निश्चित समय पर अश्वारोहियों द्वारा उस पर टूट पड़ना। यह समरतन्त्र (tactics) मीड जैसे धनु-

---

* समरतन्त्र का अर्थ है समरभूमि (battlefield) में सैन्य-संचालन की कला और युद्धनीति से आशय है युद्धक्षेत्र (theatre of war) में सैन्य-संचालन की कला।

१. उपर्युक्त साम्राज्यों की युद्धकला का इतिहास उससे कहीं अधिक ज्ञानवर्धक है जितना प्रायः समझा जाता है। उदाहरणार्थ यह तथ्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि सर्वप्रथम सुमेरियन राज्यों (लगभग ३०००-२००० ई० पू०) में सैनिकों को पंक्तिबद्ध रूप में लड़ने की शिक्षा दी जानी प्रारम्भ हुई। ऐसा अनुशासन तत्कालीन युग के मिस्र आदि अन्य सभ्य देशों में अज्ञात था और काफी बाद तक अज्ञात रहा। इसी प्रकार यह तथ्य भी कि सुमेरियन युग में युद्धों में रथों का प्रयोग होता था परन्तु इन रथों में अश्वों के स्थान पर गधे या ऐसे ही अन्य कोई अश्वसम पशु जुते होते थे, अत्यन्त रोचक है। युद्धों में अश्वों का प्रयोग भारत तथा पश्चिमी एशिया में इण्डो-यूरोपियन और अर्द्ध-इण्डो-यूरोपियन जातियों ने २००० ई० पू० के लगभग प्रारम्भ किया और मिस्र में हिक्सो स जाति ने इसके कुछ बाद में। हित्ती जाति द्वारा लोहे के हथियार बनाने की कला का आविष्कार (दूसरी सहस्राब्दी ई० पू० का मध्य) भी युद्धकला के इतिहास में महत्त्व रखता है। ईरानी-यूनानी युद्धों के पूर्व लड़े गए बहुत से युद्धों का विवरण तत्कालीन युद्धनीति (strategy) और समरतन्त्र (tactics) पर प्रकाश देता है। हित्ती और मिस्री साम्राज्यों में लड़े गए कादेश के युद्ध (१२८६ ई० पू०) का वर्णन इसका उदाहरण है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धारियों, लीडियन जैसे अश्वारूढ़ बल्लमधारियों और मिस्री तथा बैबिलोनियन जैसे भारी पदातियों के साथ सफल रहा। यूनानियों के विरुद्ध उन्हें असफलता मिली। इसके लिए ईरानियों की पदाति-सेना का दौर्बल्य उत्तरदायी था। अगर यूनानी बर्छीधारी सैनिक (pikemen) शत्रु के निकट पहुँच जाते—और सब कुछ इसी बात पर निर्भर था—तो अपनी छोटी तलवारों और छोटी ढालों से ईरानी पदाति सैनिकों को नीचा दिखा सकते थे। एस्काइलस (Aeschylus) ने यूनानी-ईरानी युद्धों का वर्णन धनुष और भाले के संघर्ष के रूप में ही किया है। अन्त में भाले ने अपने को श्रेष्ठतर शस्त्र सिद्ध कर दिया।

यूनानी नगर-राज्य (city-state) की सैनिक-शक्ति एक लोकसेना (militia) होती थी जिसके लिए प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक को अपने सक्रिय जीवन के अधिकांश में अपनी सेवाएँ अर्पित करनी होती थीं। उदाहरणार्थ सुकरात (Socrates) ने सैंतालीस वर्ष की आयु में एक युद्ध में भाग लिया था। एक आदर्शभूत (typical) यूनानी सैनिक या तो प्रचुर शस्त्रों से सुसज्जित बर्छीधारी (pikeman) था अथवा होप्लाइट (hoplite)। उसके पास एक छः फुट लम्बा भाला और एक छोटी तलवार होती थी। रक्षा के हेतु उसके पास शिरस्त्राण, ढाल, वक्षस्त्राण और पिण्डुली-कवच (greaves) रहते थे। होप्लाइट यूनानी सेनाओं की रीढ़ थे। कभी-कभी उनकी सहायता के लिए थोड़े से अश्वारोही और धनुर्धारी भी रहते थे, परन्तु एले`क्ज़े`ण्डर महान् के समय तक ये सहायक शक्तियाँ गौण ही रहीं।

होप्लाइट सुप्रसिद्ध 'फे`ले`क्स्' (phalanx) में व्यवस्थित होकर युद्ध करते थे जो सामान्यतः आठ पंक्तियों (files) की होती थी और भालों द्वारा निर्मित एक घनी झाड़ी के समान प्रतीत होती थी। यह एक दुर्गम और सुदृढ़ रचना थी जो किसी भी अन्य क्षीणतर सैन्य-रचना (formation) का अनायास विध्वंस कर देती थी। आक्रमण करते समय फे`ले`क्स् लगभग दुर्निवार थी। लेकिन इसकी अपनी दुर्बलताएँ थीं। इसमें गतिशीलता (mobility) का अभाव था। ऊबड़-खाबड़ भूमि पर यह सहज ही अव्यवस्थित हो जाती थी। और क्योंकि यह मोर्चे को शीघ्रता से परिवर्तित करने में असमर्थ थी, इससे इसके पार्श्व (flanks) विशेष रूप से भेद्य थे। ईरानियों के विरुद्ध लड़े गए प्रारम्भिक युद्धों में, जिनमें यूनानी सहायक अथवा वेतनभोगी सैनिकों के रूप में लड़े, फे`ले`क्स् की विशेष रूप से दुर्बलताएँ ही प्रकाश में आईं। सामरिक 'यूनिट' (tactical unit) के रूप में इसका यथार्थ महत्त्व सर्वप्रथम मे`राथोन युद्ध के ऐतिहासिक दिवस पर उद्घाटित हुआ।

मे`राथोन—जब सम्राट् दारयवौष (Darius) ने ४९० ई० पू० में यूनान पर आक्रमण किया तब उसका उद्देश्य, जैसा कि कभी-कभी मान लिया जाता है, समस्त देश की विजय नहीं वरन् दो नगरों—एथेंस और एरिट्रिया—को, जिन्होंने आयोनियन यूनानियों को ईरान के विरुद्ध विद्रोह में सहायता भेजी थी, दण्डित करना मात्र था। इस सीमित उद्देश्य के हेतु उसने परवर्ती लेखकों द्वारा वर्णित विशाल सैन्य नहीं वरन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२५,००० पदातियों और सम्भवतः ५००० अश्वारोहियों की मध्यम आकार की एक अभियान-सेना भेजी। इन सैनिकों को एशिया से यूरोप भेजने में कोई दिक्कत नहीं हुई, क्योंकि ईरानियों का समुद्र पर नियन्त्रण था। आधी पदाति-सेना और

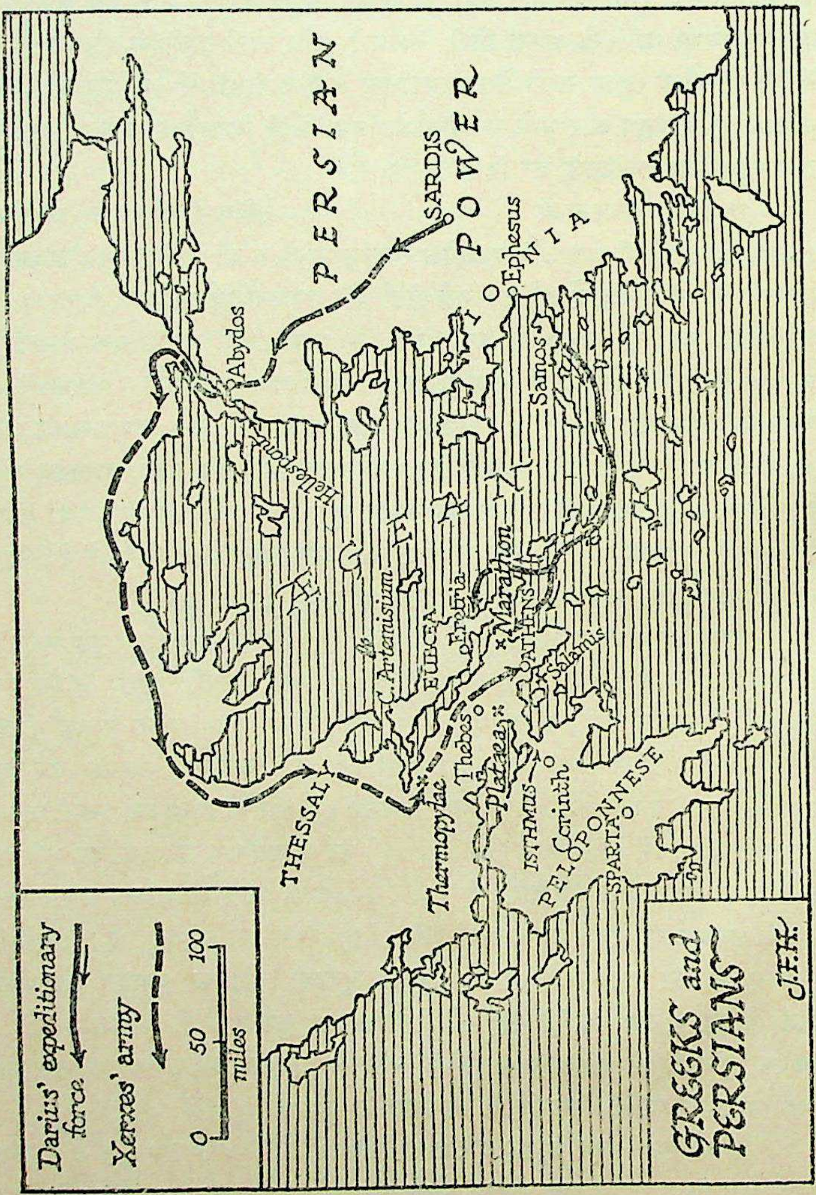

शायद सारी अश्वारोही सेना को यूबोया (Euboea) द्वीप पर उतार दिया गया जहाँ उन्होंने एरिट्रिया नगर पर घेरा डाल दिया। एरिट्रियावासियों ने तत्काल एथेंस से सहायता माँगी। प्रत्युत्तर में एथेंस की सारी सेना ने, जिसमें सम्भवतः १०,०००

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पदाति थे, उत्तर की ओर प्रस्थान कर दिया। लेकिन यह बहुत दूर नहीं जा पाई। समाचार मिला कि शेष ईरानी सेना मेराथोन की खाड़ी के तट पर उतर गई है। यह एक कुशल युद्धनीतिक (strategic) चाल थी। एथेंस वाले अपने पीछे शत्रु-सेना को छोड़कर उत्तर की ओर बढ़ते रहने का दुस्साहस नहीं कर सकते थे। अतः एरिट्रिया को सहायता देने का प्रयास छोड़ देना पड़ा और एथेंस की सेना पहाड़ियों को पार करती हुई पूर्व में मेराथोन की ओर चल पड़ी।

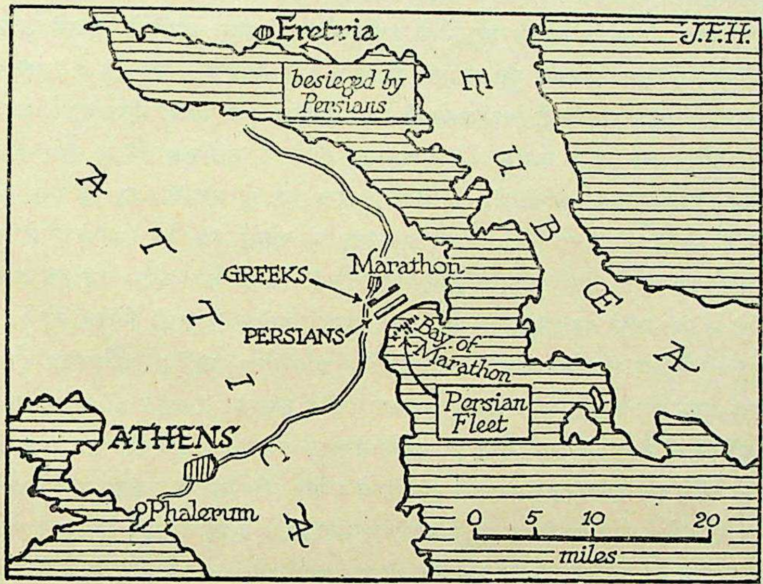

वहाँ दोनों प्रतिद्वन्द्वी सेनाएँ कई दिन तक एक दूसरे के समक्ष जमी रहीं। एथेंस वाले ईरान के दुर्दान्त धनुर्धारियों पर आक्रमण करने में हिचक रहे थे और स्पार्टा से सहायता मिलने की आशा में थे; ईरानी एथेंसवालों को मेराथोन में रोके रखकर सन्तुष्ट थे। उस समय युद्धनीतिक (strategic) स्थिति पूर्णतः ईरानियों के अनुकूल थी। एथेंस की सेना एरिट्रिया की सहायता के लिए नहीं जा सकती थी। यह एथेंस भी नहीं लौट सकती थी क्योंकि ईरानी नगर को जानेवाली सड़क पर डटे हुए थे और प्रत्यावर्तन करने वाली सेना के पार्श्व पर आक्रमण करते। इस बीच में एथेंस सेनारहित था और किसी भी अनपेक्षित आक्रमण से अरक्षित था। ईरानी सेनापतियों को आशा थी कि जब एरिट्रिया का पतन हो जायेगा, उस पर घेरा डालने वाली ईरानी सेना तुरन्त समुद्री मार्ग द्वारा जाएगी और एथेंस पर अधिकार कर लेगी, जबकि शेष ईरानी सेना एथेंस की सेना को मेराथोन में रोके रहेगी। यह उत्कृष्ट योजना असफल रही। जब एरिट्रिया पर ईरानी अधिकार हो जाने की सूचना मिली, एथेंस के सेनाध्यक्षों ने निराश होकर आक्रमण करने का निश्चय किया। उनका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रधान सेनापति मिलिटियाडिज़ (Militiades) अपनी सेना को व्राना (Vrana) नदी की घाटी के मुहाने के पार मे`राथोन के मैदान में ले गया। उनके दोनों पार्श्व छोटी-छोटी पहाड़ियों की कतार द्वारा अश्वारोहियों के अप्रत्याशित आक्रमण से सुरक्षित थे (यद्यपि मे`राथोन में ईरानियों के पास अश्वारोही सेना थी, यही अतीव सन्देहास्पद है)। फे`ले`क्स् को ईरानी सेना के निकट पहुँचने के लिए एक मील चलना पड़ा। अन्तिम दो सौ गज की दूरी तो उसने दौड़ कर पूरी की। भाग्यवश ईरानी धनुर्धारियों की बाणवर्षा उसकी रचना (formation) को तोड़ने में असमर्थ रही, और होप्लाइट शत्रु के निकट पहुँचने में सफल रहे। परन्तु घाटी के मुहाने के पार अपने सैनिकों को फैलाने के प्रयास में मिलिटियाडिज़ ने, या तो जानबूझ कर अथवा अधिक सम्भव है अनजाने ही अपनी सेना के मध्य भाग को क्षीण कर दिया और इस दुर्बल प्रभाग (division) को ही सर्वोत्तम ईरानी सैनिकों का सामना करना पड़ा। थोड़ी देर के संघर्ष के उपरान्त ही यह खण्डित हो गया और घाटी के भीतर भाग गया। लेकिन यूनानी सेना के दोनों पक्षों ने अपने विरोधियों को मार भगाया और ईरानी सेना के विजयी केन्द्र की ओर बढ़ गए। इस शिकंजे में फँस जाने पर ईरानियों को हार माननी पड़ी। यूनानी विजयी रहे। यह विजय थी लेकिन संमर्दक विजय (crushing victory) नहीं। अधिकांश ईरानी सैनिक अपने पोतों (ships) पर पहुँच गए और लगभग तत्काल ही एरिट्रिया से विजयी ईरानी सैन्यदल आ पहुँचा। उनके संयुक्त जलबेड़े सीधे एथेंस की ओर चल पड़े। अभी इस बात की सम्भावना थी कि वे एथेंस की सेना के उसकी रक्षा के लिए लौट पाने के पूर्व ही उस तक पहुँच जाते। परिणामतः दोनों सेनाओं में एक उत्तेजक दौड़ प्रारम्भ हुई, लेकिन कष्टकर संचलन (hard marching) के द्वारा यूनानी अपने लक्ष्य पर पहले पहुँच गए और एथेंस की रक्षा हो गई। इस प्रकार दारयवौष अपने केवल एक उद्देश्य को पूरा कर पाया; एरिट्रिया विनष्ट कर दिया गया पर एथेंस बच गया। ईरानी सेनाध्यक्षों की चातुर्यपूर्ण युद्धनीति (strategy) से श्रेष्ठतर परिणाम निकलना चाहिए था, लेकिन जैसा कि युद्ध में प्रायः होता है, एक उत्कृष्ट युद्धनीतिक योजना (strategical scheme) व्यावहारिक रूप दिए जाते समय भंग हो गई।

थर्मोपाइले—ईरानियों ने मे`राथोन के अपमान का प्रतिशोध लेने का प्रयास इसके दस वर्ष उपरान्त किया। ४८० ई० पू० में दारयवौष के उत्तराधिकारी क्षयार्ष (Xerxes) ने यूनान पर भारी आक्रमण की योजना बनाई। उसकी सेना, जिसकी संख्या सम्भवतः ३,६०,००० थी, इतनी विशाल थी कि इसे समुद्री-मार्ग द्वारा भेजना कठिन था, इसलिए उसके सैनिकों ने हेलेस्पोन्ट (Hellespont) को नावों के सुप्रसिद्ध पुल के द्वारा पार किया और दक्षिण में थेसली होते हुए आगे बढ़े। ईरानी बेड़ा सेना से सम्पर्क रखते हुए और उसे आवश्यकता पड़ने पर रसद देते हुए सागर के किनारे-किनारे चला। यह यदाकदा स्थल-मार्ग से जाने वाली सेना का प्रतिरोध करने वाले शत्रुओं के पीछे सैनिक भेज कर प्रतिरोध को दबाने में सहायता भी करता था। इस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चक्करदार प्रगमन (turning movement) के कारण ईरानी उस भारी जनक्षति से बच गए जो उन्हें सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) में उठानी पड़ती।

इस भयंकर संकट को सामने देखकर यूनानी राज्यों ने अपने पारस्परिक विद्वेष को दबा दिया और एक सुदृढ़ सैनिक-सन्धि कर ली। लेकिन इस संघ के सदस्यों में युद्ध की सर्वोत्तम योजना के विषय में गम्भीर मतभेद था। ईरानियों का सामना स्थल पर किया जाए या समुद्र पर? अगर स्थल पर, तो रक्षात्मक स्थिति (defensive position) की तैयारी कहाँ की जाए? स्पार्टा और पेलोपोनेसे[१] (Peloponnese) के अन्य राज्य कोरिंथ के भूडमरूमध्य (Isthmus of Corinth) पर लड़ना चाहते थे। इससे उनके प्रदेशों की रक्षा हो जाती। लेकिन इससे इस रेखा के उत्तर में स्थित राज्यों को ईरानियों की कृपा पर छोड़ना पड़ता, और इन राज्यों में एथेंस भी था जिसे असन्तुष्ट करने की सामर्थ्य स्पार्टा में नहीं थी। एथेंस की नौशक्ति यूनान में सर्वोच्च थी, और स्पार्टा वाले यह जानते थे कि बिना जलबेड़े के पेलोपोनेसे की सफलतापूर्वक रक्षा नहीं हो सकती। अगर ईरानी समुद्र पर अपना आधिपत्य बनाए रखते तो वे अपने सैनिकों को कोरिंथ के भूडमरूमध्य के दक्षिण में उतार सकते थे और रक्षात्मक स्थिति को वहाँ बदल सकते थे।

परस्पर विरोधी मतों के संघर्ष से अन्ततोगत्वा एक मध्यमार्गीय योजना (compromise scheme) निकल आई। इसके अनुसार ईरानियों को उकसाकर एक समुद्री युद्ध लड़ा जाना था जिसमें, यह आशा की गई थी, कि ईरानी बेड़ा अगर विनष्ट नहीं तो दुर्बल अवश्य कर दिया जायगा। और इस नौसैनिक कार्यवाही के साथ स्थल पर भी, जहाँ तक हो सके अधिकाधिक उत्तर की ओर, सैनिक कार्यवाही (military operation) की जानी थी जिससे मध्य यूनान के राज्यों की रक्षा हो सके और वे शत्रु के हाथ में न पड़ सकें। अन्ततः थर्मोपाइले के संकीर्ण दर्रे (defile) पर रक्षात्मक स्थिति (defensive position) चुनी गई। इस स्थान से क्षयार्ष (क्जर्क्सीज़) को अवश्य ही गुजरना था। कोई अन्य मार्ग उसकी भारी सामग्री से लदी सेना के लिए व्यवहार्य नहीं था। अगर ईरानियों से यहाँ मोर्चा लिया जाता तो सम्भव था उनका बेड़ा चक्करदार प्रगमन (turning movement) का प्रयास करता और यूनानी नौसेना को उस पर आक्रमण करने का इच्छित अवसर मिल जाता। इस अपेक्षित संघर्ष के लिए सन्नद्ध यूनानी पोत यूबोया द्वीप के उत्तरी सिरे पर आर्तेमिज़ियम अन्तरीप (Cape Artemisium) के समीप लंगर डाले रहे।

थर्मोपाइले युद्ध के जो वर्णन आजकल उपलब्ध हैं उनमें ऐसी बहुत सी बातें हैं जो अस्पष्ट और अबोध्य हैं। सत्य तो यह है कि यह एक भीषण सैनिक पराजय थी जिसे विजित यूनानियों ने अपने शौर्य का विस्तरशः विवरण लिखकर छिपाने की

---

१. पेलोपोनेसे अथवा पेलोपोनेसस दक्षिण यूनान को कहा जाता है। मध्य यूनान को पेलोपोनेसस से कोरिंथ नाम की खाड़ी पृथक् करती है और इसी नाम का भूडमरूमध्य संयुक्त करता है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चेष्टा की। सैनिक सम्प्रचार (propaganda) के धुम्रावरण को भेद कर तथ्यों को पहिचानना कठिन है। फिर भी एक बात निश्चित है। यह भीषण पराजय अवश्यम्भावी नहीं थी। थर्मोपाइले की रक्षात्मक स्थिति की सबलता प्रश्नातीत थी। यह संकीर्ण दर्रा समुद्र के किनारे आठ या दस मील तक चला गया है और तीन स्थानों या 'द्वारों'(gates) पर पहाड़ समुद्र के बहुत पास हो गए हैं। मध्य 'द्वार' पर, जिसे यूनानियों ने रक्षा के लिए चुना, मार्ग केवल पचास फुट चौड़ा था*। स्पार्टा नरेश ल्योनिडास (Leonidas) के पास ७,००० सैनिक थे जिनमें केवल ३०० स्पार्टा-

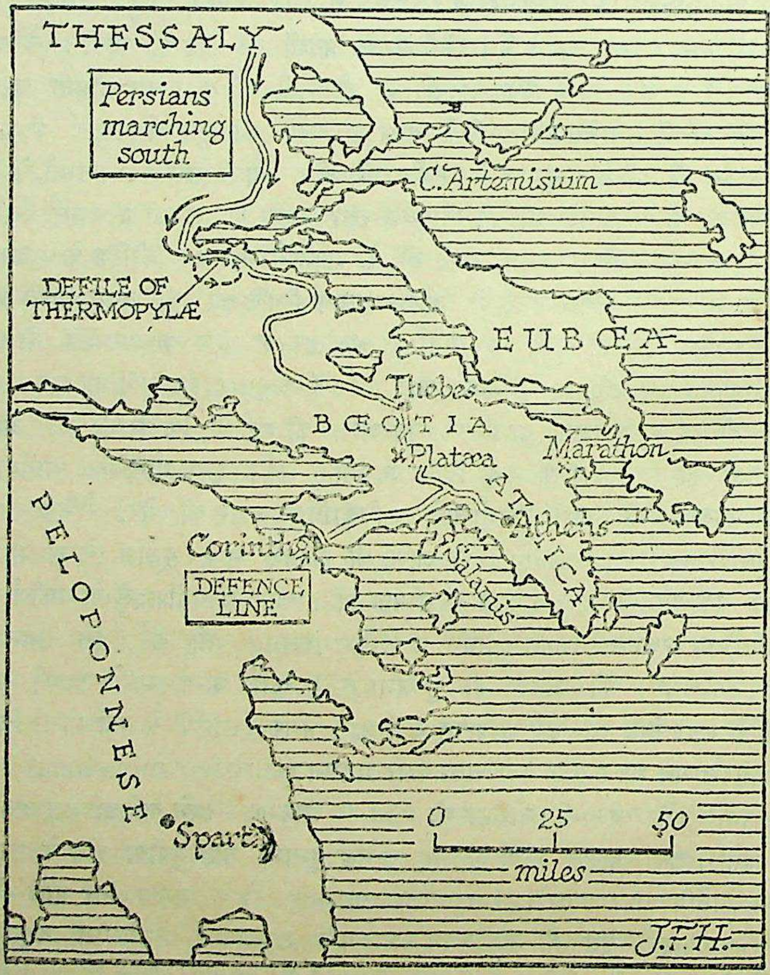

वासी थे। इनमें कोई भी एथेंसवासी नहीं था। एथेंस के सभी होप्लाइट आर्तेमिज़ियम स्थित बेड़े में नौसैनिक रूप में काम कर रहे थे। यह सेना छोटी सी थी परन्तु इसका उद्देश्य अगर शत्रु की गति विमन्दित करना (delaying movement)

* समुद्र के खिसक जाने से यह मार्ग अब अधिक चौड़ा हो गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था तो पर्याप्त थी। लेकिन अगर ईरानियों को यहाँ रोकने का गम्भीर प्रयास करना अभीप्सित था तो यहाँ एक विशालतर सेना भेजी जानी चाहिए थी। कुछ इतिहासकारों का मत है कि यूनानियों का यह न कर पाना उनकी युद्ध के दौरान में की गई सबसे बड़ी भूल थी। इस सफल रक्षात्मक युद्ध लड़ने से अत्युत्तम परिणाम निकलने की सम्भावना थी। परन्तु पेलोपोनेसे के राज्य अभी तक कोरिंथ भूडमरूमध्य पर युद्ध करने के विचार के प्रबल समर्थक थे, और शायद उत्तर की ओर थोड़ी-सी सेना भेजे जाने का यही कारण भी था। ल्योनिडास का इस स्थिति के विषय में क्या विचार था, यह स्पष्ट नहीं है। उसने बलवर्धन (reinforcement) की माँग की लेकिन जब और सैनिक नहीं आए तो विशेष चिन्ता भी प्रकट नहीं की। जो सैनिक उसके पास थे वे मध्य 'द्वार' की रक्षा के लिए पर्याप्त थे, और यद्यपि पहाड़ियों से होकर 'अनापोए' (Anapoea) नामक एक वनपथ (forest track) भी था जिससे स्थिति पलट सकती थी, तथापि ईरानियों द्वारा इस मार्ग का प्रयोग दुःसम्भाव्य था, और अगर वे इसका प्रयोग करते भी तो फोसिस नगर-राज्य के १००० सैनिकों की टुकड़ी इसकी रक्षा के लिए नियुक्त थी। यूनानी सेना को यह महसूस नहीं हो रहा था कि उसका बलिदान किया जा रहा है। वह निश्चल आत्मविश्वास के साथ अवसर की प्रतीक्षा करती रही।

जब ईरानी आए तो वे तीन दिन तक इस आशा में रुके रहे कि उनका बेड़ा स्थिति परिवर्तित करेगा। यूनानी नौसेना की उपस्थिति ने इस परिचालन (operation) को अव्यवहार्य कर दिया। क्षयार्ष ने तब धावा बोलने का आदेश दिया। दो दिन तक यूनानी सब हमलों को विफल करते रहे। यह समझ कर कि मुख्य आक्रमण (main assault) से कोई लाभ नहीं होगा, क्षयार्ष ने 'चक्करदार प्रगमन' (turning movement) अर्थात् घूमकर आक्रमण करने का निश्चय किया। हाइडरनिज़ (Hydarnes) नामक क्षत्रप (satrap) के नेतृत्व में एक ईरानी टुकड़ी रात्रि में 'अनापोए मार्ग' की ओर भेजी गई। वहाँ इसका मुकाबला फोसिस की रक्षक-टुकड़ी से होना चाहिए था, परन्तु उस रक्षक-टुकड़ी का क्या हुआ यह अभी तक रहस्य बना हुआ है। या तो वह अपना स्थान छोड़ कर भाग गई थी अथवा अप्रत्याशित आक्रमण द्वारा वशीभूत कर ली गई। जो कुछ भी हुआ, ईरानी उस मार्ग को पार कर यूनानियों के पीछे आने में सफल हो गए। ल्योनिडास को गुप्तचरों से उन के आने की पर्याप्त चेतावनी मिल गई थी और वह पीछे हट कर अपने को बचा सकता था। वस्तुतः, विशुद्ध सामरिक दृष्टि से यही करना उचित था। अपने को इस प्रकार कटवा डालने में कोई तुक भी नहीं थी। लेकिन स्पष्टतः उस के विचार से स्थिति इतनी बुरी नहीं थी। उसने रुके रहने का निश्चय किया, और अपने आधे आदमी उस मार्ग (pass) से घूमकर आने वाली सेना का सामना करने के लिए भेज दिए। इस टुकड़ी का क्या हुआ, यह भी एक रहस्य है। इस का सर्वाधिक उदार स्पष्टीकरण यही है कि यह रास्ता भूल गई होगी। निश्चितरूपेण इसने उस उद्देश्य को पूरा नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया जिसके लिए इसे भेजा गया था। ईरानियों ने अपने चक्करदार प्रगमन (turning movement) को निर्विरोध पूरा कर लिया। शेष यूनानी सेना मध्य 'द्वार' पर घेर ली और विनष्ट कर दी गई। यूनानी सैनिकों ने शत्रुओं को भारी संख्या में हताहत करके अपने जीवन की ऊँची कीमत वसूल की लेकिन उन का अन्तःकालीन पराक्रम इस तथ्य को नहीं छिपा सकता कि ल्योनिडास ने सेनापति के रूप में मात खाई। यूनान को इस असफलता की भारी कीमत चुकानी पड़ी। बोयोतिया (Boeotia) और एट्टिका (Attica) रौंद डाले गए, एथेंस पर अधिकार कर लिया गया, और पेलोपोनेसस की आक्रमणकारी से रक्षा केवल कोरिंथ भूडमरूमध्य पर रक्षात्मक स्थिति की सबलता के कारण हो सकी। यूनान की स्वतन्त्रता कभी इतने भंयकर संकट में नहीं पड़ी थी।

लेकिन नौसैनिक युद्धों में यूनानियों को मिली सफलताओं से स्थल युद्ध में हुई उनकी पराजय की कुछ क्षतिपूर्ति हो गई। आर्तेमिज़ियम में यूनानी बेड़े ने एक अनिर्णीत युद्ध लड़ा और दक्षिण की ओर लौट गया। सालमिस (Salamis) में उसने दूसरी लड़ाई मोल ली और इस बार ईरानी पोतों को इतना परेशान किया गया कि उन्हें एशिया लौट जाना पड़ा। इससे थर्मोपाइले की पराजय के कारण दुखित यूनानियों को कुछ सान्त्वना मिली। लेकिन यूनान के लिए संकट का अभी अन्त नहीं हुआ था। क्षयार्ष अपनी सेना के एकांश सहित स्वदेश लौट गया, परन्तु सेनाध्यक्ष मार्डोनियस (Mardonius) को १०,००० से अधिक सैनिकों सहित छोड़ गया। जब तक इस सेना से निबट न लिया गया, यूनानी स्वतन्त्रता को गुरुतम भय बना रहा।

प्लेटाई—पिछले वर्ष स्थलयुद्ध में ईरानियों को मिली सफलता के बावजूद मार्डोनियस की समस्या, जो ४७९ ई० पू० के अभियान में उसके सम्मुख आई, सरल न थी। अब उसके पास ईरानी बेड़ा नहीं था, जिससे उसकी संचार (communication) समस्या जटिल हो गई। इसके लिए अब उसे उत्तर की ओर थेसली होते हुए हेलेस्पोन्ट को जाने वाले स्थल मार्ग पर निर्भर हो जाना पड़ा। यूनान में ईरानी सेना का आकार भयावह रूप से लघु कर दिया गया। क्षयार्ष ने सेना के बहुत से प्रभागों (divisions) को सम्भावित यूनानी आक्रमणों से स्वदेश की रक्षा के हेतु वापिस बुला लिया। इसके विपरीत यूनानी राज्यों ने कठिन परिश्रम करके अपनी सेनाओं की संख्या बढ़ा ली जो कुल मिलाकर १,००,००० के आस-पास पहुँच गई। इसलिए ईरानियों को संख्याधिक्य का लाभ बहुत कम था और अगर होप्लाइटों के योद्धाओं के रूप में श्रेष्ठतर गुणों को ध्यान में रखा जाय तो यह बिलकुल तिरोभूत होने लगता। और फिर पेलोपोनेसे की रक्षा करने वाली महान् प्राचीर, कोरिंथ के भूडमरूमध्य की दुर्जय रक्षात्मक स्थिति, का ध्यान भी रखा जाना था जिसने पिछले वर्ष क्षयार्ष को भी चकरा दिया था। कुल मिलाकर सैनिक स्थिति आशाप्रद नहीं थी, और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मार्डोनियस को युद्ध द्वारा फैसला करने के पहले कूटनीति के हथियार को आजमाने का लोभ हुआ। उत्तरी यूनानी राज्य ईरानी मैत्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को स्वीकृति देने और आक्रमणकारी सेना में टुकड़ियाँ भेजने के लिए बाध्य कर दिए गए थे। अब मार्डोनियस ने एथेंस को यूनानी पक्ष से फोड़ने का प्रयास किया। जब उसके प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिए गए तब उसने बल-प्रयोग किया। एट्टिका को रौंद डाला गया और एथेंस पर दूसरी बार अधिकार कर लिया गया। परन्तु एथेंस-वासियों के दृढ़ संकल्प को तोड़ने में न तो बल सफल हुआ और न चिकनी-चुपड़ी बातें। अपने शरणस्थल सालमिस से वे बराबर चुनौती ही देते रहे और स्पार्टावालों पर आक्रमक-युद्ध (offensive) में साथ देने के लिए दबाव डालते रहे। परन्तु स्पार्टावाले इसके लिए हिचकिचा रहे थे। उनके दिमाग में तो उनकी मेगिनॉट लाइन (Maginot Line), पेलोपोनेशियन-दीवार, छाई हुई थी और वे इसकी ओट में रह कर लड़ने से किसी बात को श्रेष्ठतर नहीं मानते थे। परन्तु, एथेंसवालों द्वारा यह धमकी दिए जाने पर कि वे ईरानियों के साथ जा मिलेंगे, उनका दिमाग ठिकाने आ गया और उन्होंने अपनी सेना उत्तर की ओर भेज दी।

संयुक्त यूनानी सेना के एट्टिका में अग्रसरण (advance) के कारण मार्डो-नियस पीछे हटने के लिए बाध्य हो गया। अपने आगे वाले अड्डे (base) थीबिज (Thebes) से संचार-विच्छेद के भय से वह सिथेरोन-पार्निज पर्वत श्रेणी से होते हुए लौटा और उत्तर की तरफ अपना शिविर स्थापित किया। यूनानी सेना ने दर्रा में होकर उसका पीछा किया और पहाड़ियों की निचली बाहु में व्यूह-रचना कर ली। यहाँ उस पर ईरानी अश्वारोही सेना ने असफल आक्रमण कियां। यूनानियों की स्थिति अत्युत्तम थी। उनके पार्श्व नीची पहाड़ियों द्वारा सुरक्षित थे और सम्मुख भाग पानी से कट कर बनी गहरी घाटियों (gullies) द्वारा। शत्रु की अश्वारोही सेना के पास, सामरिक पैंतरे बदलने (manoeuvre) के लिए स्थान नहीं था, इसलिए उसे सुगमता से खदेड़ दिया गया। अभाग्यवश इस मामूली सी सफलता से यूनानी सेनाध्यक्षों का दिमाग चढ़ गया। उन्होंने विकराल ईरानी अश्वारोहियों के भय को भुला दिया और तत्काल आक्रमण करने का निश्चय किया। सारी सेना प्लेटाई (Plataea) के मैदान में बढ़ी। एक पहाड़ी (ridge) की ओट में यह इस भाँति फैलाई गई (deployed) कि स्पार्टा की सेना दाहिनी ओर, एथेंस की बाईं ओर और अन्य यूनानी मित्र-राज्यों की मध्य भाग में रही। तब यह ईरानियों को दाहिनी ओर से अंशतः आच्छादित (overlap) कर लेने और थीबिज़ से उनका सम्बन्ध-विच्छेद कर देने की आशा से अग्रसरित हुई। लेकिन मार्डोनियस को इस चाल का पता चल गया और उसने अपनी सम्पूर्ण सेना दाहिनी ओर हटा दी जिससे यह यूनानी सेना के ठीक सम्मुख हो गई और पार्श्व की ओर से आक्रमण करना (flanking movement) असम्भव हो गया। कुछ दिनों के विराम के उपरान्त इस बार ईरानियों ने आक्रमण किया। मार्डोनियस ने अपनी अश्वारोही सेना को शत्रु के पीछे भेज दिया और उन दर्रों को, जिनसे यूनानी अपने लिए आवश्यक युद्ध-सामग्री (supplies) मँगाते थे, रोक दिया। उसने उस झरने पर जो जल का एक

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मात्र स्रोत था धावा किया और उसे अनुपयोगी कर दिया। अन्त में उसने यूनानी सेना के प्रभागों (divisions) पर अश्वारोही सेना से आक्रमण किया। अश्वारोही धनुर्धारियों ने बहुत अधिक निकट न आने का ध्यान रखा। निरापद दूरी से उन्होंने निष्ठावान होप्लाइटों पर बाणों और बर्छों की वर्षा की। अब यूनानियों की स्थिति बहुत बुरी हो गई। अन्न और जल से वंचित एवं गर्मी तथा प्यास से अतिशयरूपेण दुःखी होने के बावजूद उन्हें आक्रमण सहने पड़े और प्रत्याक्रमण का कोई अवसर नहीं मिला। इस अग्नि परीक्षा के दो दिन पर्याप्त सिद्ध हुए। सेनाध्यक्षों ने निर्णय किया कि उनकी अग्रगति (forward move) एक भूल थी और उनको पुनः गिरिपादों (foothills) की ओर लौट जाना चाहिए। रात्रि के आवरण में भारी परेशानी के बीच जो आतंक की सीमा तक पहुँची हुई थी, प्रत्यावर्तन हुआ। अन्धकार में तीनों प्रभागों का एक दूसरे से सम्पर्क टूट गया। मध्य भाग रात्रि प्रारम्भ होने पर चला और दो मील पीछे हट आया। स्पार्टावाले लगभग प्रभात होने पर ही चले और जैसे ही प्रकाश हुआ ईरानी अश्वारोही सेना ने उन्हें देख लिया और आक्रमण कर दिया। उनके नेता पॉसेनियस (Pausanias)ने एथेंसवालों के पास, जो स्पार्टावालों के बाद चल पड़े थे, सहायता भेजने के लिए संदेश भेजा। एथेंसवाले एकदम स्पार्टा की सेना की तरफ बढ़े लेकिन मार्ग में उनको ईरान के यूनानी मित्रों के एक प्रभाग (division) ने उलझा लिया और वे अपने लक्ष्य पर कभी नहीं पहुँच पाए। मध्यप्रभाग ने, जो बहुत पीछे था, लड़ाई का शोरगुल सुना लेकिन उसने युद्ध के लगभग समाप्त होने तक आगे बढ़ने का निर्णय ही नहीं किया। इस प्रकार पॉसेनियस और उसके साथी स्पार्टावालों को ईरानी आक्रमण की पूर्ण भीषणता का सामना करना पड़ा। मार्डोनियस अपनी पदाति सेना को जल्दी से अश्वारोही सेना के पीछे ले आया और होप्लाइटों को धनुर्धारियों के विशाल दल का सामना करना पड़ा जो उन पर अस्त्रों की बौछार पर बौछार करता चला गया। ऐसा प्रतीत होता था मानों यूनानी सैनिक शत्रु के केवल संख्याधिक्य से पराभूत हो जायेंगे, लेकिन अन्त में शत्रु का संख्याधिक्य ही उसकी बरबादी का कारण सिद्ध हुआ। ज्यों-ज्यों सेना के प्रभाग पर प्रभाग जल्दी-जल्दी आगे बढ़ते गए, ईरानी पदाति सैनिक ठसाठस भरते गये, जब तक कि उनकी सामरिक पैंतरे बदलने (manoeuvre) की शक्ति समाप्त न हो गई। ठसाठस भर जाने के कारण वे वापिस भी नहीं लौट सकते थे। सर्वोपरि बात तो यह थी कि वे अपनी रीतिगत 'बेधो और भागो' (shoot and run) नीति को भी व्यवहार में नहीं ला सके। यह समझ कर पॉसेनियस ने, जो अब तक अपने सैनिकों को अस्त्रवर्षा में कठिनाई से नियन्त्रित किए हुए था, आक्रमण का आदेश दिया। परस्पर सटी हुई फेलैंक्स् हल्के हथियारों से सज्जित ईरानियों की अव्यवस्थित भीड़ का विनाश करने लगी। मुकाबला कड़ा किया गया, ईरानी निराशोन्मत्त होकर लड़े, लेकिन 'डोरियन भाला' (Dorian spear) बाजी ले गया। मार्डोनियस मार डाला गया और उसके सैनिक विचार-शून्य अवस्था में युद्धभूमि से खदेड़ दिए गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस बीच में एथेंसवालों ने भी अपने प्रतिरोधियों को आखिर ठिकाने लगा दिया था। यूनानियों को केवल अपने मध्य भाग के एक बटेलियन की हानि उठानी पड़ी जो एथेंसवालों की सहायता के लिए विलम्ब से चला परन्तु थीबिज़ की अश्वारोही सेना द्वारा घर लिया और काट डाला गया। युद्ध भूमि से सब ओर से भागनेवाले ईरानियों ने अपने सुरक्षित शिविर (fortified camp) में शरण ली परन्तु इस पर अनायास धावा बोल दिया गया और इसके रक्षकों को मार डाला गया। एक लड़ाकू 'यूनिट' (fighting unit) के रूप में ईरानी सेना का अस्तित्व समाप्त हो गया और इसके साथ ईरान द्वारा यूनान की विजय के स्वप्न का भी सदैव के लिए अन्त हो गया।

फिर भी यूनानियों को इस विजय के योग्य कहना दुष्कर है। प्लेटाई का युद्ध इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार एक उच्च कोटि की युद्धनीतिक योजना (strategical plan) एक समरतन्त्रीय (tactical) भूल से अफसल हो सकती है। युद्ध के दिन प्रभात में मार्डोनियस अपने शत्रु को पराजित कर चुका था। उसे केवल अपनी परेशान करने की नीति (harassing tactics) को चालू रखना था जिससे छिन्न-भिन्न यूनानी सेनाएँ दर्रों से होकर निकल जाएँ और छोटी-छोटी टुकड़ियों में बिखर जाएँ। लेकिन उनके विनाश को सुनिश्चित करने की अत्युत्कण्ठा के कारण उसने अपने सैनिकों को श्रेष्ठतर शत्रु-सैनिकों के साथ मुठभेड़ (hand to hand fighting) के फन्दे में फँसा दिया और सब कुछ खो बैठा। निराशाजनित साहस ने उत्कृष्टतर सेनापतित्व को हरा दिया। महज़ कठोर लड़ाई लड़कर होप्लाइटों ने अपने सेनापतियों की भारी युद्धनीतिक भूलों (strategic blunders) को सुधार दिया। स्मरणीय है कि युद्ध शतरंज के खेल की तरह नहीं है जिसमें आप शत्रु को केवल अपनी चतुराई से चली गई चालों द्वारा मात देते हैं। युद्ध में आप को अपने शत्रु से लड़ना और उसे नष्ट करना होता है। चतुरतापूर्वक चली गई चालों से आपको अच्छी स्थिति में रहकर लड़ने का लाभ प्राप्त हो सकता है। लेकिन इसके बावजूद अगर आप उसे विनष्ट नहीं करते, और इसके बजाय वह आपको विनष्ट कर देता है, तो आपकी चतुरतापूर्वक चली गई सब चालें व्यर्थ हो जाती हैं।

सेनापति एपामिनोडास—ईरान की ओर से भय दूर होते ही यूनानी राज्यों में जो पारस्परिक युद्ध हुए, उनमें युद्धकला में बहुत कम प्रगति हुई। अब यूनानी सैनिक की यूनानी सैनिक से टक्कर हुई। परस्पर विरोधी सेनाएँ एक से आयुध प्रयुक्त करती थीं और उनकी विरचना (formation) भी समान होती थी। युद्धों का निर्णय सैनिकों की संख्या (numbers), अप्रत्याशित घटनाओं (accidents) अथवा संयोग (chance) द्वारा, जो युद्ध से अवियोज्य हैं, होता था। फिर भी फे`ले`क्स् के फे`ले क्स् के साथ संघर्ष से एक रोचक तथ्य अवश्य ही प्रकाश में आया। आक्रमण करते समय फे`ले`क्स् की प्रवृत्ति सदैव दाहिने ओर झुकने की रहती थी। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि प्रत्येक सैनिक अपनी ढाल बाएँ हाथ में रखता था और सहज प्रेरणावश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने असुरक्षित दाहिने अंग को अपनी दाहिनी ओर स्थित साथी की ढाल की शरण में ले जाने का प्रयास करता था। इसके परिणामस्वरूप जब दो फे`लें`क्स् एक दूसरे पर आक्रमण करते थे तब लगभग निरपवाद रूप से दोनों का दाहिना पक्ष (wing) शत्रु के बाएँ बाजू से होकर निकल जाता था (outflanked) तथा उसे परास्त कर देता था; और इस प्रकार युद्ध का निर्णय—अगर यह निर्णय कभी हो पाता था तो—दो विजेता पक्षों (wings) के अव्यवस्थित संघर्ष द्वारा होता था। लगभग एक शताब्दी तक किसी सेनापति ने इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयास नहीं किया। इसकी सम्भावनाएँ सर्वप्रथम थीबिज़ के सेनापति एपामिनोडास ने प्रदर्शित कीं जिसने इसका उपयोग तत्कालीन यूनान की सर्वोच्च सैन्यशक्ति स्पार्टा को दो बार निर्णायक रूप से पराजित करने के लिए किया।

कई बातों में एपामिनोडास ने यूनानी सैनिक प्रथाओं का त्याग कर दिया। अब तक सर्वोत्तम सैनिक फे`लें`क्स् की दाहिनी ओर रखे जाते थे। एपामिनोडास ने इस क्रम को उलट दिया। उसने 'थीबिज़ का पवित्र दल' (Theban Sacred Band) नामक अपने श्रेष्ठतम लड़ाकू प्रभाग (division) को बाएँ ओर, उसकी भेदन-शक्ति दृढ़ करने के लिए पचास पंक्तियों के कॉलम (column) में, रखा। क्योंकि इस व्यवस्था से मोर्चे के फैलाव में कुछ संकुचन आवश्यक हो गया और सेना पार्श्व से होनेवाले आक्रमणों से अरक्षित रह गई, इसलिए उसने अपने बाएँ छोर को अश्वारोही सेना द्वारा सुरक्षित किया। पदाति और अश्वारोही सेनाओं का यह संयोजन (combination) समरतन्त्र को एक महत्त्वपूर्ण देन थी। एपामिनोडास की इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण देन असम अनुक्रम (oblique order) का प्रयोग था जिसका प्रयोग बाद में फ्रेडरिक महान् ने किया। जब थीबिज़ के फे`लें`क्स् का आक्रमण होता था, एपामिनोडास अपनी सेना के मध्य और दाहिने भागों को रोक लेता था। यह युक्ति शत्रु के मध्य और बाएँ भागों को रोके रखने के लिए पर्याप्त थी और इससे उसके सबलीकृत (reinforced) बाएँ भाग को शत्रु के दाहिने भाग को ध्वस्त करने और शत्रु की सम्पूर्ण पंक्ति को पीछे धकेलने का समय मिल जाता था। ल्यूक्ट्रा (३७१ ई० पू०) तथा मेन्टीनिया (३६२ ई० पू०) के युद्धों में ये युक्तियाँ पूर्णरूपेण सफल हुईं। लेकिन इनमें दूसरे युद्ध में एपामिनोडास मारा गया, और उसकी मृत्यु से थीबिज़ की सैन्यशक्ति के रूप में हुई अल्पकालीन सर्वोपरिता (supremacy) का भी अकस्मात् अन्त हो गया।

अले`क्ज़े`ण्डर महान्—जिस सेना को अले`क्ज़े`ण्डर महान् ने अपने पिता फिलिप से उत्तराधिकार में प्राप्त किया, वह यूनानी राज्यों की नागरिक सेनाओं से बहुत भिन्न थी। यह लगभग पूर्णतः पेशेवर (professional) सेना थी। इसमें केवल वेतनभोगी सैनिक (hired mercenaries) जिनके लिए युद्ध एक व्यवसाय था, ही नहीं थे वरन् मेसीडोनिया निवासी भी इसमें वर्षों तक रखे जाते थे जबतक वे ज्ञानवृद्ध सैनिकों (veteran soldiers) की दक्षता और अनुभव प्राप्त नहीं कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लेते थे। अलेक्जेण्डर के नेतृत्व में प्रत्येक प्रकार के सैनिकों ने काम किया। उसकी पदाति सैन्य अब भी फेलेँक्स् विरचना (phalanx formation) का प्रयोग करती थी परन्तु यह एक नवीन और संशोधित फेलेँक्स् था। इसमें बल्लमधारी सैनिकों (pikemen) को सोलह पंक्तियों में खड़ा किया जाता था और प्रत्येक के पास १२ फुट लम्बा बल्लम या सरिस्सा (*sarissa*) रहता था जो सामान्य यूनानी होप्लाइट के ६ फुट लम्बे भाले से अधिक दूर तक अनायास मार कर सकता था। फेलेँक्स् के साथ भारी पदाति सैनिकों का, जो हाइपेस्पिस्ट (hypaspist) कहलाते थे, एक और दल लड़ता था। उनमें और फेलेँक्स् के सैनिकों में क्या अन्तर था, कहना कठिन है। उनके एक जैसे अस्त्र-शस्त्र होते थे और वे एक जैसी विरचना का प्रयोग करते थे। सम्भवतः उनमें केवल वही अन्तर था जो आधुनिक काल में लाइन के पदाति सैनिक और गार्ड में होता है। इसके विपरीत अलेक्जेण्डर का पेल्टास्ट (peltast) नामक हल्के पदाति सैनिकों का दल युद्धकर्म में एक नई चीज़ था। पेल्टास्ट के पास वही आक्रमक हथियार होते थे जो होप्लाइट के पास रहते थे, लेकिन उसका रक्षात्मक कवच (defensive armour) हल्का होता था और वह खुली विरचना (open formation) में युद्ध कर सकता था जो होप्लाइट के लिए सम्भव नहीं था। दूसरी ओर, होप्लाइट के विपरीत, उसको सुदीर्घ और गहन प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक था। केवल पेशेवर सैनिक कुशल पेल्टास्ट बन सकते थे। हल्की पदाति सेना के साथ क्रीट के धनुर्धारी तथा एग्रियेनियन बर्छीधारी सैनिकों के दल थे, और अलेक्जेण्डर के पास घेरा डालने वाली एक ऐसी कार्यक्षम सेना (efficient siege train) भी थी जैसी उस समय बहुत कम यूनानी राज्यों के पास थी। इससे नगरों को घेर कर उन्हें आहाराभाव (starvation) की विलम्बकारी विधि द्वारा अधिकृत करने के बजाय तूफ़ान की भाँति आक्रमण करके जीत लेना सम्भव हो गया। और अन्त में, अलेक्जेण्डर के पास मेसीडोन की सुप्रसिद्ध अश्वारोही सेना थी जिस पर वह शत्रु के ऊपर अन्तिम प्रहार करने के लिए मुख्यतः निर्भर था। इसके दो प्रभाग (division) थे जिनके युद्धक्षेत्र में विशिष्ट कर्त्तव्य थे। 'राजसखा' (Companions of the King) नाम से पुकारे जाने वाले बल्लमधारी सैनिक फेलेँक्स् के अरक्षित अथवा दाहिने बाज़ू (flank) पर आक्रमण करते थे; थेसली और यूनानी मित्रों के अश्वारोही सैनिक, जो सम्भवतः हल्के शस्त्र धारण करते थे, दूसरे बाज़ू पर रक्षात्मक रूप से लड़ते थे। अपने सुप्रशिक्षित सैनिकों, दक्ष सेनापतियों और हथियारों के प्रभावकर संयोजन (combination) के कारण मेसीडोन की सेना एक दुर्जेय सैन्य यन्त्र—विजय प्राप्ति का एक आदर्श साधन—हो गई थी। इसकी सहायता से मेसीडोन नरेश फिलिप (Philip) केरोनिया (Charonea) के युद्ध (३३८ ई० पू०) में यूनानी स्वतन्त्रता को विनष्ट कर सका। और इस के बल पर ही उसके पुत्र ने ईरान की प्रबल शक्ति पर विजय प्राप्त की।

ईरान पर आक्रमण—उस अभियान सेना में, जिसे अलेक्जेण्डर अपने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ हेलेस्पोन्ट (Hellespont) के पार ले गया, ३०,०००–४०,००० पदाति और १०००–५००० अश्वारोही सैनिक थे। संख्या की दृष्टि से यह ईरानी सेना से दुर्बल थी, लेकिन लगभग उतनी नहीं जितनी दुर्बल होने का तत्कालीन यूनानी चारणों (panygyrists) और प्रचारकों ने दावा किया है। ईरानियों की अश्वारोही सेना लगभग निश्चित रूप से सबलतर थी, लेकिन उनकी पदाति सैन्य शोचनीय रूप से दुर्बल थी और वे इसे वेतनभोगी यूनानी सैनिकों को भरती करके, जिनका प्रयोग उन्होंने सहसाक्रमक सैनिकों (shock troops) के रूप में किया, दृढ़ करने के लिए मजबूर हो गए।

अभियान की प्रथम मुठभेड़ अश्वारोही सैन्य की भिड़न्त (skirmish) मात्र सी थी। ईरानी सामन्तों ने ग्रेनिकस (Granicus) नदी पर (३३४ ई० पू०) युद्ध का एक ही बार में अन्त करने का शौर्यपूर्ण प्रयास किया। उन्होंने मेसीडोन की अश्वारोही सेना को नदी के पार आ जाने के लिए ललचाया और फिर स्वयं अलेक्जेण्डर को मार डालने की आशा में उस पर धावा बोल दिया। वे इसमें करीब-करीब सफल हो गए थे, लेकिन अलेक्जेण्डर अपने साथियों के अपने प्रति प्रेम के कारण बच गया। इसके बाद उसके सैनिकों ने शत्रु की अश्वारोही सेना को मार भगाया, और फिर वेतनभोगी यूनानी सैनिकों को धर दबाया जो युद्ध के प्रथम भाग में निष्क्रिय दर्शक मात्र बने रहे थे।

आइसस में (३३३ ई० पू०) दोनों पक्षों के बीच अधिक गम्भीर शक्ति-परीक्षण हुआ। यहाँ ईरान नरेश दारयवौष (Darius), या तो संयोग से अथवा पूर्व-योजनानुसार अलेक्जेण्डर के पीछे, जब वह (अलेक्जेण्डर) दक्षिण दिशा में समुद्र के किनारे-किनारे टायर[1] (Tyre) नगर की ओर बढ़ रहा था, एक विशाल सैन्य लेकर आ पहुँचा। इससे मेसीडोन वालों को पीछे घूमना और युद्ध करना पड़ा। दोनों सेनाएँ समुद्र और पर्वतों के मध्य स्थित संकीर्ण मैदान में भर गईं। अलेक्जेण्डर ने अपने हल्के अश्वारोहियों का प्रयोग करके गिरिपाद (foothills) में बाजू से होकर आने वाली (outflanking) ईरानी टुकड़ी को मार कर पीछे हटाया और फिर अपने भारी अश्वारोहियों के साथ ईरानियों के बाएँ बाजू पर आक्रमण किया। इस स्थल पर ईरानियों के पैर उखड़ गए और दारयवौष संत्रस्त होकर भाग गया। उसने यह समझा कि उसकी युद्ध में हार हो चुकी है, लेकिन अन्यत्र ईरानी सेना को युद्ध में डटे रहने से भी अधिक सफलता मिल रही थी। जब मेसीडोन की पदाति सैन्य मध्य भाग में आगे बढ़ी, फॅलॅंक्स् में एक रिक्त स्थान बन गया जिसमें दारयवौष के सामने खड़े वेतनभोगी यूनानी सैनिक तत्काल घुस पड़े। बाईं ओर थेसली के अश्वारोहियों ने अपने को शत्रु की सम्पूर्ण अश्वारोही सेना से लड़ते हुए पाया जो समुद्र के किनारे एकत्र हो गई थी। उन्हें अस्तव्यस्त अवस्था में पीछे धकेल दिया गया। अगर

१. टायर भूमध्यसागर (Mediterranean Sea) के पूर्वी पट पर स्थित एक फिनीशियन नगर था। ईरानी युग में, और इसके पहले भी, यह व्यापार का सुप्रसिद्ध केन्द्र था।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईरानियों ने विजय-श्री प्राप्त करने की कुछ ही और अधिक इच्छा प्रदर्शित की होती तो सफलता उन्हीं को मिलती। लेकिन उन्होंने युद्ध का आरम्भ ही पिनारस (Pinarus) नदी के पीछे सुदृढ़ रक्षात्मक स्थिति (defensive position) बना कर किया था और ऐसा प्रतीत होता है कि विशुद्ध सुरक्षात्मक लड़ाई लड़ने का विचार

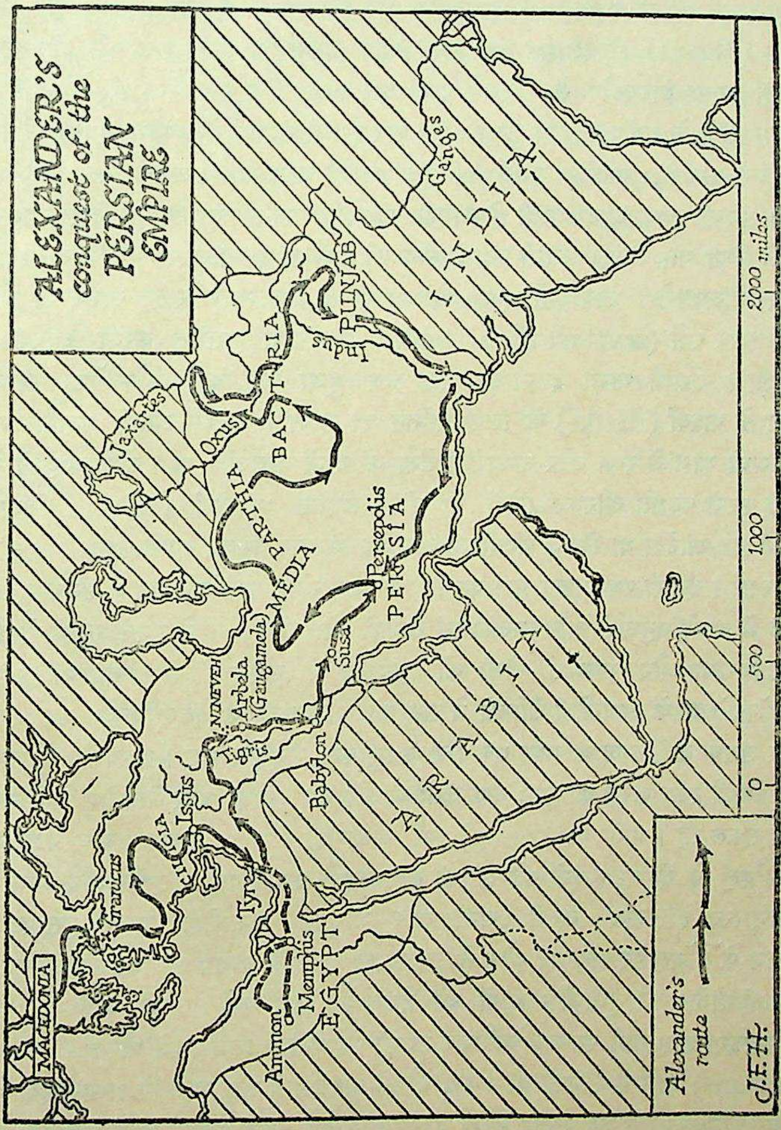

उनको ग्रस्त किए हुए था। मध्य और दाहिने प्रभाग अपनी अनुकूल स्थिति से लाभ उठाने में असफल रहे, और जब बाएँ प्रभाग पर पड़ी विपत्ति का समाचार आया, ईरानी भयातुर हो गए और अव्यवस्थित अवस्था में लौट गए। भाग्य से मिली इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजय के लिए अलेक्जेण्डर का अपना अटल आक्रमक समरतन्त्र (offensive tactics) जितना जिम्मेदार था लगभग उतना ही शत्रु का असमंजस।

युद्ध (war) की निर्णायक लड़ाई (battle) गौगामेला (Gaugamela) अथवा अर्बेला (Arbela) में लड़ी गई (३३१ ई० पू०)। इस बीच में अलेक्जेण्डर ने महान् नगर टायर को एक सुविख्यात घेरे (siege) के उपरान्त अधिकृत और मिस्र (Egypt) को वशीभूत कर लिया था। ईरान के हृदय-स्थल की ओर बढ़ते समय उसका दारयवौष से, जिसके पास इस समय एक नई सेना थी, निनेवेह के भग्नावशेषों के समीप सामना हुआ। इस बार ईरानी सेना में वेतनभोगी यूनानी सैनिक पहले से कम थे, क्योंकि उनमें अधिकांश या तो भाग गए थे अथवा मार डाले गये थे। उनका स्थान जल्दी-जल्दी होप्लाइटों की भाँति शस्त्र-सज्जित और प्रशिक्षित ईरानियों ने ले लिया था; लेकिन ईरानी पदाति सैन्य की दुर्बलता इतनी सुस्पष्ट थी कि दारयवौष ने इसमें अश्वारोही 'स्क्वाड्रनों' (squadrons) को मिलाना और इसे सामने की ओर दरांतीदार रथों (scythed chariots) की पंक्ति द्वारा सुरक्षित करना आवश्यक समझा। ईरानी मोर्चा इतनी दूर तक फैला हुआ था कि अलेक्जेण्डर अपनी सेना के पार्श्वों (flanks) के लिए चिन्तित हो गया। उसने अपनी पदाति सेना को मध्य भाग में रखा और अश्वारोही सेना को दोनों बाजुओं पर। दोनों बाजुओं के पीछे उसने पदाति और अश्वारोही सैनिकों के मिश्रित 'कॉलम' (column) बनाए जिन्हें यह आदेश था कि वे पार्श्वों पर आक्रमण होने पर घूमकर आक्रमणकारी की ओर हो जाएँ। ईरानी रथ आशा पूरी करने में असमर्थ रहे। अलेक्जेण्डर ने उनके मुकाबिले में अपने धनुर्धारी और बल्लमधारी सैनिकों को रखा जिन्होंने उनके सारथियों को मार गिराया और भयभीत घोड़ों को युद्धक्षेत्र से खदेड़ दिया। दाहिनी ओर अलेक्जेण्डर के अश्वारोही सैनिकों ने शत्रु को पीछे हटने के लिए विवश कर दिया और उसके बाएँ बाजू के मध्य एक रिक्त स्थान बना कर घुस गए। दारयवौष ने भाग कर अपनी रक्षा करने की पुनः अकालतः शीघ्रता की। बाईं ओर मेसीडोन के सैनिक कम सफल रहे। बाएँ पक्ष (wing) की अश्वारोही सेना पर इतना दबाव पड़ा कि फॅलॅक्स् के दो बटेलियनों को उसकी सहायतार्थ आना पड़ा। इससे मध्य भाग में स्थान रिक्त हो गया जिसमें ईरानी और भारतीय अश्वारोही एकदम घुस पड़े। लेकिन फॅलॅक्स् पर पीछे की ओर से आक्रमण करने के बजाय उत्तेजित सैनिक युद्ध-सामग्री ढोने वाली यूनानी गाड़ियों को लूटने के लिए भागे। अपने बाएँ भाग की कठिनाइयां ज्ञात होने पर अलेक्जेण्डर उसकी सहायता के लिए अपने 'सखा' (Companions) नाम के सैनिकों को लेकर, लौटते हुए ईरानी और भारतीय अश्वारोहियों के मध्य से निकलता हुआ, सरपट दौड़ा आया। लेकिन बायाँ भाग उसकी सहायता के बिना ही अपने को संकटमुक्त करने में सफल हो गया। दारयवौष के पलायन के समाचार से उसके सैनिकों का दिल टूट गया और सेना में संदेह और निराशा फैलने लगे। इसके परिणामस्वरूप दाहिने विजयी भाग ने पराजय मान ली और शेष सेना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी मेसीडोनी सैनिकों के प्रचण्ड आघातों से शनैः शनैः अभिभूत हो गई। जब अन्त में ईरानी छिन्न-भिन्न हुए और भागे, अलेक्जेण्डर ने उनका साठ मील तक पीछा किया और समरक्षेत्र के हत्याकाण्ड से बच कर निकल भागने वालों का निर्ममता-पूर्वक अन्त कर दिया।

अलेक्जेण्डर का एक और युद्ध संक्षेप में उल्लिखित होने योग्य है—उसका भारतीय नरेश पोरुष के साथ पंजाब में भीषण संघर्ष। यहाँ मेसीडोन वालों को हाथियों का पहली बार गम्भीर रूप से सामना करना पड़ा। इन पशुओं की सैनिक उपयोगिता को हमेशा बढ़ा-चढ़ा कर आँका गया था। वे अश्वारोही सेना के विरुद्ध उपयोगी थे क्योंकि अप्रशिक्षित अश्व उनका सामना नहीं करते थे। और यदाकदा वे सघनरूपेण एकत्र पदाति सेना का भीषण संहार कर सकते थे। लेकिन उनका मुकाबिला करने का उपाय शीघ्र ही खोज लिया गया। अन्तरालयुक्त-क्रम (open order) में लड़ने वाले पदाति सैनिकों के विरुद्ध वे लगभग निःसहाय थे, इतने कि उनको जो भी सफलताएँ मिलीं वे सब उन्हीं सैनिकों के विरुद्ध थीं जिनको उनका सामना करने की सही विधि का अभ्यास नहीं था। लेकिन अलेक्जेण्डर और उसके मेसीडोनी सैनिकों के साथ ठीक यही बात थी। इसलिए यह मेसीडानी फेलेँक्स् की कुशलता का बहुत बड़ा प्रमाण है कि उसने इस दुःसाहसपूर्ण और अपरिचित संघर्ष में विजय पाई। अश्वारोही सैनिक इसमें कोई सहायता नहीं दे सकते थे क्योंकि घोड़े हाथियों के सामने आने के लिए तैयार नहीं थे। अतः बर्छीधारी सैनिकों (pikemen) को यह युद्ध अकेले लड़ना पड़ा। यद्यपि वे भयंकर रूप से हताहत हुए, तथापि अन्ततः अपने धैर्य और अनुशासन के कारण सफल हो गये। इस लड़ाई ने अलेक्जेण्डर के सेनापतियों पर स्पष्ट प्रभाव डाला। उनमें उन्होंने जो बाद में उसके साम्राज्य के भागों के शासक बने, हस्ति-सेना के निर्माण का उदाहरण रखा जिसे सौ या उससे कुछ अधिक वर्षों तक अपनाया जाता रहा। तीसरी शती ई० पू० के समर क्षेत्रों में हाथी प्रायः दिखाई देते थे, लेकिन ज्यों ही उनकी निरर्थकता का ज्ञान हुआ, उनका प्रयोग धीरे-धीरे बन्द कर दिया गया।

सेनापति के रूप में अलेक्जेण्डर ने कई प्रकार से परवर्ती युगों की सैन्य-पद्धति का पूर्व-प्रयोग किया। उसने इच्छाविरुद्ध संचलन (forced march) किए, उसने भागती हुई सेनाओं का जमकर पीछा किया, उसने शीतकालीन युद्ध लड़े और सुदीर्घ संचार-मार्गों को सुरक्षित रखा। लेकिन सबसे बड़ी बात यह थी कि उसने लड़ाई के दौरान में अपने सैनिकों पर प्रत्यक्ष नियन्त्रण रखा। अब तक हर सेनापति सेना का संगठन और समर की सामान्य योजना निश्चित करने के बाद सेना में मिलकर साधारण सैनिक की भांति लड़ता था। अगर लड़ाई की प्रगति योजनानुसार नहीं होती थी तो आवश्यक आदेश देने वाला कोई नहीं होता था। प्रत्येक बात संयोग पर छोड़ दी जाती थी। अलेक्जेण्डर को भी सन्निकटीय युद्ध (hand to hand fighting) का शौक था। वह प्रायः अश्वारोही सेना के नेता के रूप में आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करता था। लेकिन वह अपनी शेष सेना पर दृष्टि रखता था और जहाँ सहायता की आवश्यकता होती थी, पहुँचाता था। गौगामेला में, जैसा कि हम देख चुके हैं, वह अपने 'सखाओं' (Companions) को समर-क्षेत्र के ठीक मध्य से एक संकटग्रस्त बाजू (wing) की सहायता के लिये ले गया था। सेनापतित्व के इतिहास में यह एक नई चीज़ थी। अलेक्जेण्डर उन व्यक्तियों में था जिन्होंने सर्वप्रथम यह समझा कि सेनापति का यथोचित कार्य स्वयं लड़ना नहीं वरन् युद्धरत सैनिकों को निर्देश देना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय २

रोमन लीजन

मेनिपल लीजन—रोमन लीजन[1] मूलतः नागरिकों की संगृहीत-सैन्य (military levy) अथवा लोकसेना (militia) थी। यह प्रकृत्या युद्धकला प्रेमियों की सेना थी। इसमें भरती होने का अधिकार उच्चवर्गीय नागरिकों तक सीमित था और सेवाकाल ग्रीष्मऋतु तक। ऐसे द्वितीय कोटि के सैनिकों (second-line troops) की सहायता से रोम कभी एक साम्राज्यिक नगर (imperial city) नहीं बन सकता था। प्रारम्भिक गणतन्त्रकालीन राजनीतिज्ञों को जिस सैनिक समस्या का सामना करना पड़ा वह यह थी कि किस प्रकार एक रक्षात्मक नागरिक-सैन्य (defensive militia) को विजय-सैन्य (army of conquest) के रूप में परिवर्तित किया जाय। उन्होंने इसको अपनी परम्परागत व्यावहारिकता और सूझ-बूझ से हल किया। ४०० ई० पू० के लगभग समर-क्षेत्र में कार्य करनेवाले सैनिकों को वेतन देना प्रारम्भ किया गया। अब सेवारत सैनिकों को ध्वजाधीन बनाए रखना (to retain with the colours) सम्भव हो गया और युद्ध को ग्रीष्म ऋतु तक ही सीमित रखना अनिवार्य नहीं रह गया। इस सीधे-सादे सुधार से एक ऐसी लोकसेना अस्तित्व में आई जिसमें पेशेवर सेना (professional army) के भी कुछ गुण थे। इसमें अनुभवी सैनिक थे और यह दीर्घकाल तक चलने वाले युद्ध ठानने में समर्थ थी। इससे रोम ने इटली को जीता।

प्रारम्भ में रोम वालों ने फेॅलेॅक्स्-विरचना का प्रयोग किया, लेकिन उन्होंने अनुभव से अधिक-अन्तरालयुक्त-क्रम (more open order) के लाभ शीघ्र ही समझ लिए। उन दूरव्यापी सुधारों द्वारा, जो सम्भवतः चौथी शती ई० पू० में किए गए, लीजन की संरचना को पूर्णतः नए साँचे में ढाल दिया गया। इसको तीन भागों में बाँट दिया गया—'हस्ताती' (hastati), 'प्रिन्सिपिज़' (principes) तथा 'ट्रिआराई' (triarii)। हस्ताती नवयुवक सैनिक होते थे, प्रिन्सिपिज़ अधिक परिपक्वावस्था के और ट्रिआराई वे ज्ञानवृद्ध (veterans) सैनिक जिनकी सैनिक-सेवा का दायित्व समाप्तप्रायः होता था। हर भाग दस 'मेनिपलों' (meniples) अथवा गणों (companies) में विभाजित किया गया। पहले दो भागों (हस्ताती और प्रिन्सिपिज़) के प्रत्येक मेनिपल में १२० आदमी होते थे; तीसरे भाग (ट्रिआराई) के हर मेनिपल में ६०। भारी

---

१. प्रारम्भ में रोम की संयुक्त सेना को 'लीजन' (legion) कहते थे। इसमें राजा द्वारा नियुक्त एक सेनापति के नेतृत्व में ३०० सरदार और तीन सैनिक ट्रिब्यूनलों (military tribunals) के अधीन ३००० पदाति सैनिक होते थे। कालान्तर में सेना का विस्तार हो जाने पर मूल सेना के लगभग बराबर सैनिक इकाई को 'लीजन' कहा जाने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पदाति सैन्य के साथ १,२०० 'वेलाइट' (velite) अथवा हल्के हथियारों से सुसज्जित सैनिक एवं ३०० अश्वारोही संयुक्त होते थे। लीजन के सैनिकों की सामान्य संख्या ४,५०० थी, लेकिन आवश्यकता होने पर इसे ६,००० तक बढ़ा दिया जाता था। साधारणतः एक अभियान के लिए चार लीजन संगृहीत किए जाते थे और हर कोन्सल[1] के अधिनायकत्व में दो लीजन रहते थे, लेकिन संकट काल में लीजनों की संख्या और आकार में वृद्धि कर दी जाती थी। कोन्सलों की सहायता सैनिक ट्रिब्यून (military tribune) नाम के अधिकारी करते थे जो हर लीजन में छः होते थे। प्रत्येक मेनिपल का नायकत्व दो सेन्चुरियन (centurian) अफसर करते थे।

लीजन के सैनिक शिरस्त्राण, ढाल, वक्षस्त्राण तथा लघु तलवार से सज्जित होते थे। पहले सभी प्रकार के सैनिकों के पास 'हस्ता' (hasta) अथवा 'पाइक' (pike) होता था, लेकिन अब इसे केवल ट्रिआराई ही धारणा करते थे। प्रत्येक हस्ताती और प्रिन्सिपिज़ के पास दो 'जवेलिन' अथवा 'पिल' (javelin or pila) होते थे। रोमनों की लड़ने की विधि थी पहले हल्के पदाति सैनिकों को सामान्य भिड़न्त के लिए आगे भेजना। इसके बाद हस्ताती अपने जवेलिनों को फेंकते हुए धावा करते थे और शत्रु पर तलवारें लेकर टूट पड़ते थे। प्रिन्सिपिज़ और ट्रिआराई उनके पीछे रह कर सहायता देते थे। मेनिपलों की विरचना शतरंज के खानों की भाँति होने के कारण आवश्यकता होने पर पिछले प्रभागों के लिए अगली पंक्तियों को पार करना आसान होता था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मेनिपल एक स्वतन्त्र इकाई होता था और पृथक्तः पैंतरे बदल सकता था। यदि आगे की पंक्ति में स्थान रिक्त हो जाता था तो एक मेनिपल को उसे पूरित करने के लिए आगे भेजा जा सकता था। अगर लीजन का एक भाग आक्रान्त हो जाता था तो शेष मेनिपल परस्पर सन्निकट हो जाते थे और युद्ध जारी रखते थे। फेलें क्स् के विपरीत, जो एक ठोस समूह के रूप में पैंतरा बदलता था, लीजन शत्रु द्वारा भेद दिए जाने पर भी छिन्न-भिन्न नहीं होता था। वस्तुतः यह एक लचकदार फेलें क्स् था जिसमें ठोसपन (solidity) और विभाज्यता (divisibility), नम्यता (pliancy) और दृढ़ता (strength), भार (weight) और पैंतरे बदलने की शक्ति (manoeuvring power) सम्मिश्रित थे।

जिन युद्धों के द्वारा रोम ने इटली को जीता, उनके विषय में हमारी जानकारी

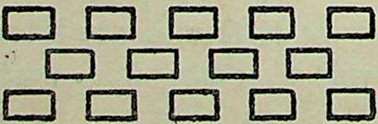

सैनिक दृष्टिकोण से सन्तोषप्रजनक रूप से विस्तृत नहीं है। इसलिए हम एक दम जीवन-मरण के उस संघर्ष पर आ जाते हैं जो रोमनों ने

१. ५१० ई० पू० में रोम में राजतन्त्र के स्थान पर गणतन्त्र की स्थापना हुई। तब से उसकी प्रभुसत्ता (supreme authority) राजा के स्थान पर कोमीटिया सेन्चुरियाटा नामक संस्था द्वारा चुने गए दो कोन्सलों में निहित कर दी गई।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्थेज[1] के विरुद्ध छेड़ा। इससे हमारा परिचय सब कालों के सर्वश्रेष्ठ सैनिक-प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों में से एक के साथ होता है।

हनीबाल—प्रथम प्युनिक युद्ध[2] (२६४-२४१ ई० पू०) में किसी भी पक्ष के पास असाधारण योग्यता वाला सेनापति नहीं था, और स्थल युद्ध भी अनिर्णीत रहा। समुद्री युद्ध में रोम ने विजय प्राप्त की। वह एक नौसैनिक-शक्ति (maritime power) नहीं था, फिर भी उसने व्यापारी नगर कार्थेज से नौसैनिक सर्वोपरिता (naval supremacy) छीन ली और उसका प्रयोग अपने शत्रु को नीचा दिखाने में किया। इस बहुमूल्य परिसम्पत् (asset) पर वह दूसरे प्युनिक युद्ध (२१९-२०२ ई० पू०) में भी अधिकार बनाए रहा। यह तथ्य उन कारणों में से एक था जिन्होंने उसे अन्तिम सफलता दिलाने में सर्वाधिक योगदान दिया।

इसके विपरीत प्रतिशोध लेने के लिए लड़े गए इस युद्ध में कार्थेज को पूर्णतः अपनी स्थल सेनाओं की कार्यक्षमता पर ही निर्भर रहना पड़ा। सुप्रसिद्ध बर्का (Barca) वंश ने स्पेन में एक अत्युत्कृष्ट वेतनभोगी सेना बना ली थी जो अब, एक महान् सैनिक-प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति के अधिनायकत्व में, रोमन शक्ति के हृदय-स्थल पर झपटने के लिए प्रस्तुत थी। हनीबाल ने इटली के ऊपर किए गए एक आक्रमण में सब कुछ दाँव पर लगा दिया था। यह सही है कि वह यह जानता कि कोई भी सेना जिसे वह अपने साथ ला सकता था, सहायता मिले बिना रोम को नहीं जीत सकती थी। नगर के रक्षात्मक साधनों (fortifications) की सुदृढ़ता एवं जनशक्ति की प्रचुरता ने इसे अव्यावहारिक बना दिया था। लेकिन उसने अनुमान लगाया कि अगर एक बार इटली की भूमि पर रोमनों को पछाड़ दिया जाएगा तो रोम के इटालवी मित्र उसका साथ छोड़ देंगे और कार्थेज के ध्वज के नीचे एकत्र हो जाएँगे। यही वह अनुमान था जो आगे चलकर इतने निराशापूर्ण रूप से गलत सिद्ध हुआ।

हनीबाल ने स्पेन से इटली में प्रवेश करने के लिए आल्प्स् पर्वत पार करके आने वाला स्थल-मार्ग चुना। इससे वह रोमन नौसेना द्वारा पकड़े जाने के खतरे से बच गया और पो (Po) नदी की घाटी में अपनी भावी सामरिक-संक्रियाओं (operations) के लिए एक अड्डा (base) पा गया जहाँ असन्तुष्ट गॉलों से, जो हाल ही से रोम के विरुद्ध विद्रोह किए हुए थे, उसे युद्ध-सामग्री और नये सैनिक (recruits) मिल सकते थे। ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण लाभों के कारण स्थल-मार्ग को उसकी भारी असुविधाओं के बावजूद चुना गया था। इस मार्ग को अपनाने की

१. कार्थेज अफ्रीका के उत्तर में भूमध्यसागर के दक्षिणी तट पर बसा एक व्यापारिक नगर था। शताब्दियों तक कोई शक्तिशाली प्रतिस्पर्द्धी न मिलने के कारण यह 'भूमध्यसागर की रानी' बन गया था। इसके बसाने वाले और अधिकांश निवासी सेमाइट थे, इसलिए एक प्रकार से रोम और कार्थेज का संघर्ष 'आर्य' अथवा 'इण्डो-यूरोपियन' और सेमाइट जातियों का संघर्ष माना जा सकता है।—अनु०।

२. रोम और कार्थेज के युद्ध 'प्युनिक युद्ध' नाम से विख्यात हैं।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वजह से इटली आते समय हनीबाल के लगभग आधे सैनिक मर गए। आल्पस् के पश्चिम में बसे एलोब्रोगिज (Allobroges) ने कड़ा प्रतिरोध किया और उसके सैनिकों को भारी संख्या में हताहत किया। उसकी प्रगति इतनी धीमी थी कि हिमपात

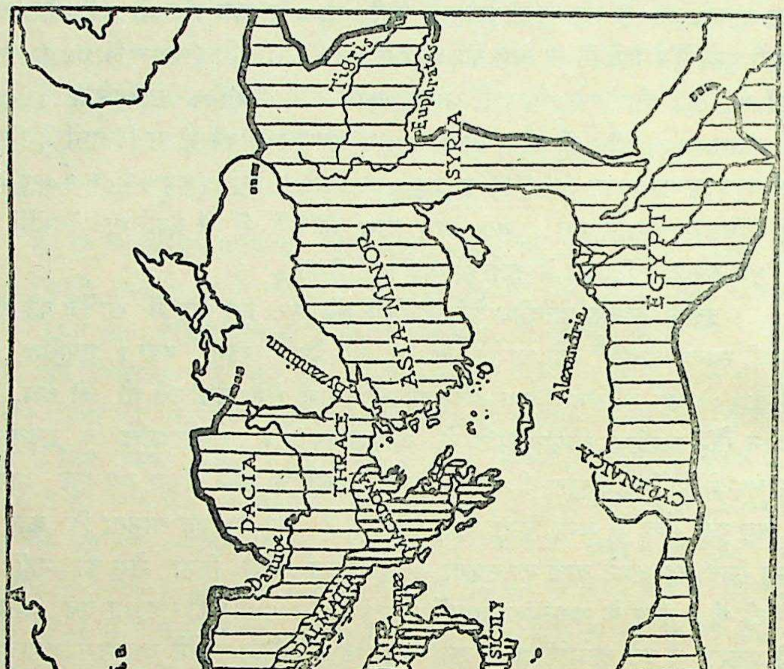

से दर्रे बन्द हो जाने के पूर्व आल्प्स् पार करने का समय उसे मुश्किल से मिल पाया। और हुआ यही कि प्रारम्भिक शीतकालीन अवस्था के कारण उसकी सेना पूर्वी ढाल पर रुकने के लिए मजबूर-सी हो गई; केवल हनीबाल की शक्ति और साधनों के कारण मैदान में उतरने में सफलता मिल सकी। उन ४६,००० आदमियों में,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिनके साथ वह स्पेन से चला था, केवल २६,००० लोम्बार्डी (Lombardy) पहुँच पाए।

हनीबाल की निर्भीक चाल ने रोमनों को आश्चर्यान्वित कर दिया। सीनेट, सन्तोषपूर्वक यह सोच कर कि अन्तिम युद्ध के विजेताओं के हाथ में ही शुरुआत करने का अधिकार रहेगा, इत्मीनान के साथ स्पेन और अफ्रीका पर आक्रमण करने की योजना बना रही थी। कोन्सल सेम्प्रोनिअस (Sempronius) को अफ्रीकी समुद्र तट पर उतरने की तैयारी के उपक्रम स्वरूप दो लीजनों के साथ सिसली भेज दिया गया था। दूसरे दो लीजन कोन्सल प्यूब्लियस सीपियो (Publius Scipio) के नेतृत्व में स्पेन पर आक्रमण करने के लिए तैनात कर दिए गए थे। हनीबाल के आगे बढ़ आने का समाचार सुनकर रोमन हेडक्वार्टर्स् (headquarters) को बड़ा अचम्भा हुआ और उसे इस पर विश्वास करना कठिन-सा हो गया। सेम्प्रोनियस को शीघ्रता से वापिस बुला लिया गया और सीपियो के लीजन हनीबाल को रोकने के लिए समुद्री मार्ग द्वारा भेज दिए गए। जब सीपियो मार्सेलिज़ (Marseilles) में उतरा तो उसने पाया कि कार्थेज की सेना उसके पहुँचने के पहले ही खिसक चुकी थी और इटालवी दर्रों की ओर अग्रसरित हो रही थी। उसने स्वयं सेम्प्रोनियस के साथ जा मिलने का, लेकिन अपनी सेना को अपने भाई के अधिनायकत्व में स्पेन भेजने का, निश्चय किया--एक ऐसा निश्चय जो उस समय, जब कि सर्वोपरि आवश्यकता प्रत्येक सैनिक को हनीबाल के विरुद्ध एकत्र करने की थी, अत्यन्त प्रश्नास्पद था। दूसरी ओर हनीबाल ने सीपियो की संख्या की दृष्टि से दुर्बल सेना को कुचलने का अवसर गँवा दिया। यह सम्भव है कि वह इसके लिए समय न निकाल पाया हो। उसके लिए शीतकालीन हिमपात के पूर्व दर्रों तक पहुँचना आवश्यक था, जब तक कि उसकी इच्छा आल्प्स् के पश्चिम की ओर छः महीने और व्यतीत करने की न होती।

कैने—अगले तीन वर्षों में हनीबाल ने रोमन सैन्य-शक्ति पर लगातार कई विध्वंसक प्रहार किए। गॉलों की भरती (recruitment) के द्वारा अपनी सेना की संख्या ४०,००० करके उसने रोमनों को टिसिनो (Ticino) के पास अश्वारोही सैन्य की भिड़न्त (skirmish) में पराजित किया और सेम्प्रोनियस तथा सीपियो को ट्रेबिया (Trebbia) के संग्राम में (२१८ ई० पू०) मार भगाया। अगले वर्ष वह दक्षिण की ओर अग्रसरित हुआ। रोमन सेनाओं ने पो घाटी के एरेटियम (Arretium) तथा एरिमिनम (Ariminum) इन दो प्रमुख निर्गम-द्वारों (exits) को अवरुद्ध कर दिया, लेकिन हनीबाल ने एपिनाइन्स् पर्वत को एक कम प्रयोग में लाए जाने वाले दर्रे द्वारा पार कर लिया और कोन्सल फ्लेमिनियस (Flaminius) की सेना के पीछे जा पहुँचा। रोमन सेनापति, अपने साथी के आ मिलने की प्रतीक्षा करने के बजाय, अदूरदर्शितापूर्वक हनीबाल के पीछे-पीछे चलता गया और त्रसिमेन (Trasimene) झील के समीप गुप्त स्थान में छिपी हुई शत्रु सेना द्वारा भारी क्षति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के साथ हरा दिया गया (२१७ ई० पू०)। इन विनाशकारी पराजयों के कारण कुछ संयतमन हो गए रोमनों ने सुप्रसिद्ध फेबियस कन्क्टेटर (Fabius Cunctator) को, जो 'डिलेयर' (the Delayer) नाम से विख्यात है, डिक्टेटर (dictator) नियुक्त किया।[1] उसने छापामार लड़ाई (guerilla warfare) की सलाह दी। लेकिन जल्दबाजी करने वाले नेताओं का रोम पर पुनः नियन्त्रण हो गया और यह निश्चित किया गया कि भयावह कार्थेजियनों के साथ एक बार फिर निर्णायक युद्ध लड़ा जाय।

लगभग ८०,००० आदमियों की एक सेना वैरो और पो`लस नामक कोन्सलों के अधिनायकत्व में हनीबाल के पीछे-पीछे दक्षिणी इटली आई। पो`लस ने फेबियस की सतर्क युद्धनीति (cautious strategy) का समर्थन किया, जब कि वैरो प्रबल आक्रमण करने के पक्ष में था। क्योंकि हर कोन्सल प्रत्येक दिन बारी-बारी से सेना का नेतृत्व करता था इसलिए सेना की गतिविधि कुछ अस्थिर हो गई, लेकिन वैरो के अड़े रहने के कारण खुले मैदान में आमने-सामने जम कर लड़ने (pitched battle) का अवसर आ ही गया जिसकी उसे, और संयोग से हनीबाल को भी, तीव्र इच्छा थी। दोनों सेनाओं की कैने (Cannae) के मैदान में मुठभेड़ हुई (२१६ ई० पू०)। रोमन सेना के दाहिनी ओर औफिडस (Aufidus) नदी थी। (यह बात निश्चित है, यद्यपि यह सन्देहास्पद है कि नदी के किस तट पर लड़ाई हुई थी, और परिणामस्वरूप दोनों सेनाओं के रुख किस ओर थे)। जैसा कि सामान्यतः होता था रोमन सेना में अश्वारोही बाजुओं पर थे और पदाति सैनिक मध्य में। वैरो को, जो उस दिन सेनापति था, यह विश्वास था कि वह रोमन सैनिकों (legionaries) द्वारा प्रबल आघात करके शत्रु को पछाड़ देगा। उसने उनको, मेनिपलों के अग्रभाग (front) को संकुचित करते हुए, गहरे कॉलमों (deep columns) में खड़ा किया जिससे, परम्परा के विपरीत, उनकी गहराई चौड़ाई से अधिक हो गई। हनीबाल की सेना का अग्रभाग (front) रोमन अग्रभाग के समान था। उसकी भारी अश्वारोही सेना हस्ड्रूबाल के नेतृत्व में बाईं ओर, हल्के नूमीडियन (Numidian) घुड़सवार महरबाल के नेतृत्व में दाहिनी ओर और पदाति सेना मध्य भाग में थी। पदाति सेना में हनीबाल शत्रु के ७०,००० सैनिकों की तुलना में ४०,००० सैनिक होने के कारण दुर्बल था और अश्वारोही सैन्य में ६,००० की तुलना में १०,००० होने के कारण सबलतर। इसलिए उसने अश्वारोही सेना की सहायता से युद्ध जीतने का निश्चय किया। लेकिन लड़ाई में उसके पदाति सैनिकों को महत्त्वपूर्ण भाग लेना था। उनके लिए उसने एक अनोखी विरचना (formation) की। उसने मध्य भाग में कम विश्वसनीय गॉलों को अर्द्धचन्द्र (crescent) अथवा घोड़े के नाल

---

१. रोमन गणतन्त्र की सर्वोच्च सत्ता दो कोन्सलों में निहित थी, लेकिन आन्तरिक अथवा बाह्य संकट उपस्थित होने पर छः मास के लिए 'डिक्टेटर' नामक एक अधिकारी की नियुक्ति भी की जा सकती थी, जिसके अधिकार लगभग असीम होते थे।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के अनुरूप बाहर की ओर मुड़ी हुई पंक्ति में खड़ा किया, जिसके छोरों पर उसने भारी आयुधों से सुसज्जित कार्थेजियन सैनिकों को कॉलमों (columns) में एकत्र कर दिया। यह विरचना एक अति गूढ़-योजना (deep laid plan) का अंग थी। हनीबाल का विचार रोमन सेना को पराजित करने का ही नहीं, विनष्ट कर देने का था। उसने अपने मध्य भाग को जानबूझकर दुर्बल बनाया जिससे रोमन सैनिक (legionaries) ऐसी स्थिति में आ जाएँ जिससे वह उन्हें प्रबल आघात करके निर्णायक रूप से पछाड़ सके। प्रत्येक बात योजनानुसार होती गई। जब रोमन सैनिक आगे बढ़े, उन्होंने गॉलों को पीछे की ओर दबाया और कार्थेजियन कॉलमों के मध्य बने रिक्त स्थान में प्रविष्ट हो गए। तत्काल ही कार्थेजियनों ने अपना रुख अन्दर की ओर कर लिया और रोमनों के पार्श्वों पर आक्रमण किया। रोमन सैनिकों ने अपने को शत्रु द्वारा तीन ओर घिरा हुआ पाया। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे पराजित हो गए थे। इसके विपरीत स्वयं हनीबाल ही संकटपूर्ण स्थिति में था। उसने केवल ४०,००० सैनिकों द्वारा ७०,००० को घेर लिया था, जो युद्ध के सभी सामान्य नियमों के अनुसार एक मूर्खतापूर्ण कृत्य था। मान लीजिए रोमन सैनिक, जो संख्या में अधिक थे, गॉलों के दुर्बल मोर्चे को तोड़ देते और तब पलट कर कार्थेजियन कॉलमों पर टूट पड़ते? हनीबाल एक अकथनीय खतरा उठा रहा था, लेकिन उसने यह अत्यन्त सतर्कतापूर्वक किया। केवल यही ऐसा उपाय था जिससे वह रोमन पदाति सैनिकों को वहाँ ला सकता था जहाँ वह चाहता था। लेकिन अब प्रश्न था कि क्या रोमनों को अनुकूल स्थिति में लाने के बाद वह उन्हें वहाँ रोके रह सकता था, क्या उन्हें घेरा तोड़ कर निकल जाने से रोक सकता था? यह सब गॉलों के मोर्चे के दृढ़ रहने पर निर्भर था, और यहाँ हनीबाल, एक सच्चे सिपाही की भाँति स्वयं खतरे की स्थिति में खड़ा हो गया, और अपने आदमियों को शब्दों और कृत्यों द्वारा उत्साहित करने लगा। अपने सेनापति की उपस्थिति से प्रोत्साहित गॉलों ने अपने कर्त्तव्य का सराहनीय ढंग से निर्वहन किया। उनका मोर्चा नहीं टूटा। इस बीच शेष समर-भूमि में हनीबाल की सामरिक योजना (tactical plan) पूर्ण की जा रही थी। हस्द्रूबाल ने अपने भारी अश्वारोहियों की सहायता से पोॅलस और रोमन सरदारों को तितर-बितर किया, नूमीडियनों की सहायतार्थ समरभूमि पार की, वैरो और उसके मित्र अश्वारोहियों को खदेड़ा और तब घूम कर रोमन सैनिकों के पृष्ठभाग पर आक्रमण किया। यही वह प्रहार था जिसकी हनीबाल प्रतीक्षा कर रहा था। इसके धक्के से

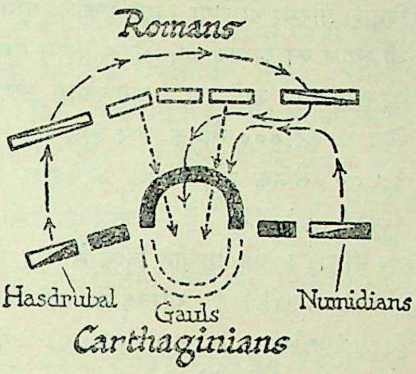

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेनिपलों की व्यवस्था असाध्य रूप से बिगड़ गई और उसी क्षण से रोमन सेना का विनाश प्रारम्भ हो गया। एक संकीर्ण स्थान में जहाँ उनको हथियार चलाने के लिए भी स्थान का अभाव था, नेतृत्वविहीन पूर्णतः अस्तव्यस्त रोमन सैनिक भेड़-बकरियों की तरह काट डाले गए। अब संग्राम संग्राम न रहकर क़त्लेआम हो गया। रोमन सेना के ४८,००० सैनिक मार डाले गये। हनीबाल की हानि बहुत कम हुई—केवल ६,७०० सैनिक मरे, जिनमें अधिकांश गॉल थे। कैने का युद्ध एक 'पूर्ण युद्ध' (perfect battle) है—जिसमें एक सबल सेना दुर्बलतर सेना द्वारा घेर कर विनष्ट कर दी गई। यह प्राचीन विश्व में प्राप्त सामरिक सफलता का सर्वोच्च चिह्न (high-water mark) है। वास्तव में किसी अवरकालीन युद्ध में इतनी मौलिक सूझ-बूझ (originality in conception) और कलापूर्ण कार्यान्विति (artistry in execution) के ऐसे संयोजन का प्रदर्शन नहीं हुआ।

लेकिन हनीबाल को तब बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसकी शानदार विजयों के वे परिणाम नहीं हुए जिनकी उसने आशा की थी। यह सत्य है कि दक्षिणी इटली के यूनानी नगरों ने रोमनों का साथ छोड़ दिया परन्तु लेटियम, उम्ब्रिया तथा एट्रूरिया, जो रोमन सत्ता के पक्के समर्थक थे, अन्त तक अविचलित रहे। चाहे हनीबाल ने इसे महसूस किया अथवा नहीं, परन्तु उसने दांव लगाया और हार गया। रोम के मित्रों की सहायता के बिना वह इटली पर निर्णायक रूप से प्रहार नहीं कर सकता था। अगर उसने इसे तुरन्त स्वीकृत कर लिया होता और अपनी सेना किसी अन्य ऐसे युद्धक्षेत्र (theatre of war) में भेज दी होती जहाँ वह अधिक उपयोगी सिद्ध होती तो सम्भवतः यह उसका सर्वाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण कृत्य होता, विशेषतः उस समय जब कि रोमनों ने फेबियस की नीति को पुनः अपना लिया था और खुले मैदान में आमने-सामने जम कर लड़ाई लड़ने की नीति छोड़ दी थी। श्रेष्ठता की दृष्टि से इस नीति का वस्तुतः दूसरा स्थान था और यह भयरहित भी नहीं थी। इससे रोम का सामरिक दौर्बल्य विश्व में उजागर हो गया, इससे हनीबाल इटली के सर्वोत्तम प्रदेशों को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए स्वतन्त्र हो गया, इससे रोम के मित्रों और नागरिकों की उसके प्रति निष्ठा कम होने का भय उत्पन्न हो गया। एक बार तो युद्ध-क्लान्ति (war-weariness) के ख़तरनाक चिह्न स्वयं रोम में प्रकट हुए और कुछ लैटिन जातियों ने वार्षिक भरती में अपने सैनिकों की टुकड़ी भेजने से इन्कार कर दिया। लेकिन उस परिस्थिति में यही सर्वोत्तम नीति थी। इसके बाद हनीबाल के आक्रमण मानो हवा में व्यर्थ जाने लगे और उसकी सेना नैसर्गिक रूप से होने वाली क्षति (natural wastage) के कारण कम होने लगी। इटली के युद्ध में अब गतिरोध (stalemate) की स्थिति उत्पन्न हो गई थी और इस अपचक्र (vicious circle) को तोड़ने के लिए किसी उत्कृष्ट सैन्य-प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति की आवश्यकता थी। हनीबाल यह नहीं कर सका। वह अपनी युद्धनीति के प्रत्येक दाँव को खेल चुका था। किसी रोमन सेनापति के लिए भी इसमें सफलता पाना सम्भव नहीं लग रहा था। ऐसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गणराज्य में, जिसके 'मेजिस्ट्रेट' प्रतिवर्ष चुने जाते थे और जिस पर सीनेट का नियन्त्रण था, प्रतिभाशाली व्यक्ति उत्पन्न नहीं हो सकते थे। फिर भी अप्रत्याशित घटना घटी। रोम का त्राता उसका अपना ही एक नागरिक प्यूब्लियस सीपियो कनीयस् (Publius Scipio the Younger), जिसे उसके देशवासी बाद में अफ्रीकेनस् (Africanus) कहने लगे, सिद्ध हुआ। इस अति असामान्य रोमन ने एक ऐसी युद्ध योजना (strategical plan) परिकल्पित की जिससे युद्ध का निर्णय अवश्यम्भावी हो गया और मतदाताओं ने घबड़ाहट में एक ऐसे राजनीतिज्ञ को, जिसकी मौलिकता सामान्य परिस्थिति में उनके गहनतम सन्देह को उभाड़ती, पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी।

जामा—इस बीच में इटली में गतिरोध होने के कारण ध्यान युद्ध के अन्य क्षेत्रों की ओर चला गया। कार्थेजियनों ने सार्डीनिया पर आक्रमण करके ध्यान-विकर्षण का प्रयास किया जो बुरी तरह असफल रहा, और उन्होंने सायराक्यूज़ को रोम के विरुद्ध विद्रोह में उस समय तक सहायता दी जब तक उस नगर को प्रो-कोन्सल मार्सेलस (Pro-consul Marcellus) ने अधिकृत नहीं कर लिया (२१२ ई० पू०)। स्पेन में दो सीपियो–प्यूब्लियस ज्येष्ठ (the Elder) और नेयस (Gnaeus) ने महत्त्वपूर्ण प्रगति की परन्तु हनीबाल के भाई हस्ड्रूबाल द्वारा पराजित हुए और मार डाले गए। इस पराजय के परिणामस्वरूप रोमनों को एब्रो के उत्तर की ओर चले जाना पड़ा। लेकिन सीपियो कनीयस् (the Younger) के, जो यद्यपि केवल चौबीस वर्ष का था, स्पेन में नेतृत्व संभाल लेने पर पासा पुनः पलट गया। उसने न्यूकार्थेज को सहसाक्रमण (coup de main) द्वारा हस्तगत कर लिया और हस्ड्रूबाल को पराजित कर दिया। इस पर हस्ड्रूबाल ने इटली पर आक्रमण करने का नैराश्यपूर्ण निश्चय किया और सीपियो उसका प्रतिरोध करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। वह मार्ग में बिना किसी रुकावट का सामना किए अपनी सेना सहित सकुशल पो नदी की घाटी में पहुँच गया और तत्काल हनीबाल के पास सन्देशवाहक भेजे। वे पकड़ लिए गए और हनीबाल, जिसकी श्रेष्ठ गुप्तचर व्यवस्था इस बार असफल सिद्ध हुई, अपने भाई की यथार्थ स्थिति के विषय में अनभिज्ञ रह गया और अतिरिक्त सूचना की प्रतीक्षा करता रहा। इससे कोन्सल क्लोडियस नीरो (Claudius Nero) को, जो उसके सामने था, एक अनोखी चाल चलने का अवसर मिल गया। हनीबाल को धोखे में रखने के लिए एक छोटी सी सेना छोड़कर वह तेजी से उत्तर की ओर गया और दूसरे कोन्सल लाइवियस (Livius) के साथ मिल कर हस्ड्रूबाल को मेटॉरस (Metaurus) नदी पर परास्त किया और मार डाला तथा इसके पूर्व कि हनीबाल को उसके गमन का सन्देह होता, वापिस लौट आया। सैन्य विशेषज्ञ जिसे आन्तरिक रेखाओं पर कार्य करना (operating on the inner lines) कहते हैं, उसका यह उत्कृष्ट उदाहरण है। नीरो एक कुशल समरतन्त्री (master tactician) और मतिमान युद्ध-नीतिज्ञ (brilliant strategist) दोनों था। मेटॉरस के युद्ध में उसने अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दाहिने पक्ष (wing) को बाईं ओर लाने और शत्रु के पार्श्व को लपेट लेने की कठिन संग्राम-संक्रिया (military operation) सम्पन्न की। यह योग्य सेनापति अपने

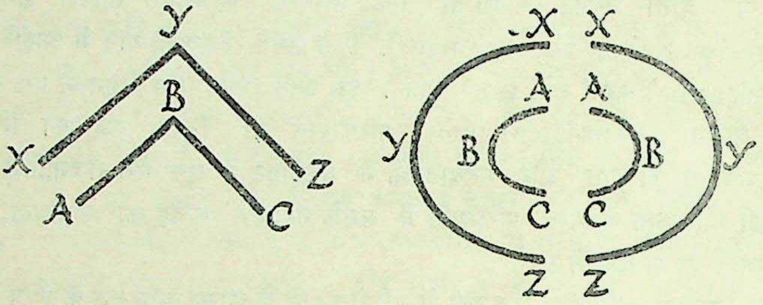

आन्तरिक और बाह्य रेखाएँ। आन्तरिक रेखाओं A B C पर कार्य करने वाला सेनापति अपने सैनिकों को किसी भी अभिलिषित स्थान पर, बाह्य रेखाओं X Y Z पर कार्य करने वाले सेनापति की तुलना में अधिक शीघ्रता से, एकत्र कर सकता है।

देश की शुभकामनाओं का अधिकारी था। लेकिन रोमन मौलिक व्यक्तियों को नापसन्द करते थे और अपनी इस प्रकृति के अनुरूप उन्होंने क्लोडियस नीरो का मूल्यांकन उसे बाकी जीवन अ-प्रसिद्ध रख कर किया।

इस बीच में सीपियो ने अवशिष्ट कार्थेजियनों को स्पेन से निकाल बाहर किया और अफ्रीका पर आक्रमण करने की एक सनसनीपूर्ण योजना के साथ रोम वापिस लौट आया। सीनेट उसकी योजना सुनकर स्तब्ध रह गई और वृद्ध फेबियस ने युवक सेनापति की दुःसाहसपूर्ण नीति की निष्ठुरतापूर्वक आलोचना की। उसके दृष्टिकोण के समर्थन में बहुत कुछ कहा जा सकता था। अगला कदम स्पष्टतः हनीबाल की सेना का हनन था और यह कार्य सर्वाधिक सुविधा से इटली में ही किया जा सकता था जहाँ रोमनों को संख्याधिक का लाभ प्राप्त था। अफ्रीका में यह श्रेष्ठता नष्ट हो जाती। वहाँ रोमन एक लघु अभियान-सेना (expeditionary force) मात्र होते जिसके विशालतर कार्थेजियन सेनाओं द्वारा कुचल दिए जाने का भय रहता। और अगर, जैसा कि सीपियो का तर्क था, अफ्रीका पर आक्रमण होने से हनीबाल इटली से चला जाता तो इससे रोमन आक्रमणकारी सेना के लिए केवल संकट में वृद्धि होती। सीपियो अपने प्रस्ताव के विरुद्ध उठाए जाने वाले तर्कों के प्रति निस्सन्देह पूर्णतः सजग था, लेकिन उसने फिर भी इसके स्वीकार के लिए दबाव डाला। लगता है उसकी इच्छा युद्ध को निर्णायकरूपेण लड़ लेने की थी। अगर हनीबाल इटली में पराजित किया जाता तो सम्भवतः युद्धक्लान्त रोमन उससे फौरन सन्धि कर लेते और संघर्ष कोई निर्णय हुए बिना समाप्त हो जाता। कार्थेज को नष्ट करने के लिए उसके अपने द्वार पर युद्ध लड़ना आवश्यक था और यही समय था जब जनता की भावना को अफ्रीका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर आक्रमण करने के पक्ष में उभाड़ा जाता। हो सकता था बाद में जनमत शान्तिवादी अथवा पराजयवादी दिशा की ओर उन्मुख हो जाता।

सीपियो के जन-उत्तेजना उभाड़ देने पर सीनेट को झुकना पड़ा लेकिन उसने अभियान का केवल उदासीन भाव से ही समर्थन किया। सीपियो को सिसिली में स्थित दो लीजनों, कैने के हत्याकाण्ड के बचे-खुचे अनादृत सैनिकों के उपयोग की अनुमति दे दी गई, लेकिन अपनी शेष सेना उसे स्वैच्छिक भरती द्वारा संगृहीत करनी पड़ी। समुद्र को आसानी से पार कर लिया गया, लेकिन अफ्रीकी भूमि पर उतरते ही सीपियो की कठिनाइयाँ आरम्भ हो गईं। एक अड्डा (base) प्राप्त करने के लिए उसने यूटिका (Utica) को घेर लिया, लेकिन वह नगर सब आक्रमणों का तब तक प्रतिरोध करता रहा जब तक हस्ड्रूबाल गिस्गो (Hasdrubal Gisgo) के नेतृत्व में एक सेना के पहुँचने से, जिसमें कार्थेज के मित्र साइफेक्स (Syphax) के नायकत्व में एक विशाल नूमीडियन टुकड़ी भी थी, रोमन समुद्र तट पर स्थित एक सुरक्षित शिविर को लौटने के लिए बाध्य न हो गए। सीपियो की स्थिति अब अत्यन्त संकटपूर्ण हो गई, और अगर हनीबाल ने यह समय इटली से अपनी सेना वापिस ले आने के लिए चुना होता, अथवा हस्ड्रूबाल गिस्गो ने हनीबाल जैसी स्फूर्ति और बुद्धि तनिक भी दिखाई होती तो फेबियस की अशुभ भविष्यवाणी काफी सत्य हो जाती। लेकिन भाग्य ने सीपियो का साथ दिया। हस्ड्रूबाल ने सीपियो को अपने शिविर पर रात्रि में अप्रत्याशित रूप से आक्रमण करने का अवसर दे दिया और बुरी तरह पराजित हुआ। सीपियो ने इसके बाद दुर्बल हो गई कार्थेजियन सेना पर आघात किया। 'ग्रेट प्लेन्स्' के संग्राम (Battle of the Great Plains) यह दूसरा हस्ड्रूबाल पराभूत कर दिया गया। यह रोमनों की पहली विजय थी जो अश्वारोही सेना की सहायता से प्राप्त की गई थी। सीपियो ने रोमनों की इस दुर्बलता को महसूस किया था और सिसली में एक अश्वारोही दल को प्रशिक्षित कर लिया था जो अफ्रीका में उसके मित्र मेंसिनिस्सा (Masinissa) द्वारा प्रदत्त हल्के नूमीडियन अश्वारोहियों के मिल जाने से सबलतर हो गया था। रोमन अश्वारोही सेना दोनों पक्षों में सफल रही। अपनी पदाति सेना से सीपियो ने एक ऐसे पैंतरे का प्रयोग किया जो उसने स्पेन में सीखा था। उसने हस्ताती को आगे भेजा और उसके पीछे प्रिन्सिपिज़ और ट्रिआराई को बाहर की तरफ फैला दिया। उन्होंने शत्रु के पार्श्वों पर आघात किया। इन सब संयुक्त पैंतरों के परिणामस्वरूप कार्थेजियन सेना का लगभग पूर्ण विनाश हो गया।

इस क्षति से निराश होकर कार्थेजियन सीनेट ने हनीबाल को एकदम वापिस बुला लिया। उसके आगमन का समाचार सुनकर सीपियो पश्चिम की ओर बढ़ा जिससे वह मेंसिनिस्सा के, जिसकी उस समय साइफेक्स से लड़ाई चल रही थी, समीप रह सके। कार्थेजियन सीनेट ने हनीबाल से आग्रह किया कि वह तत्काल आक्रमण कर दे, जिससे उसके प्रदेशों का विध्वंस रुक जाए। हनीबाल नए सैनिक भरती

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

कर सकने तक रुकना पसन्द करता (उसके सैनिकों को अपने अश्व इटली में ही छोड़ देने पड़े थे), लेकिन वह राजनीतिज्ञों के दबाव में आ गया और पश्चिम की ओर अग्रसरित हुआ। सीपियो मेसिनिस्सा के साथ मिल कर जामा (Zama) के समीप उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। दोनों पक्षों में प्रत्येक के पास लगभग ४०,००० सैनिक थे। लेकिन इस बार स्थिति कैने से बिल्कुल उल्टी थी। हनीबाल पदाति सैन्य में अधिक शक्तिशाली था और रोमन लोग अश्वारोही सैन्य में। इस नई परिस्थिति में हनीबाल ने अपने को जिस प्रकार ढाला उससे उसकी सेनापति के रूप में श्रेष्ठता प्रकाशित होती है। उसने इस युद्ध में, जिसमें वह हार गया, जितने कौशल और सूझबूझ का परिचय दिया उतना इसके पूर्व कभी नहीं दिया था। दोनों सेनाएँ सामान्य विरचना (formation) में खड़ी की गई—मध्य में पदाति सेना और पार्श्वों पर अश्वारोही। हनीबाल के पास करीब अस्सी हाथी थे जिसे उसने रोमनों की ओर भेजा। परन्तु उनका प्रभाव नगण्य रहा। सीपियो ने मेनिपलों को कॉलमों (columns) में खड़ा किया। उन्मत्त पशुओं ने या तो कॉलमों के मध्य रिक्त 'गलियों' में अघातुक आक्रमण किए अथवा कार्थेजियन पार्श्वों की ओर खदेड़ दिए गए, जहाँ उन्होंने अश्वारोही सेना को अव्यवस्थित कर दिया। जैसा कि हनीबाल ने सोचा था, उसके अश्वारोही सैनिक पराजित कर दिए गये और समर-क्षेत्र से खदेड़ दिए गये। सम्भवतः उनको आदेश था कि वे अपना पीछा करने वालों को जितनी दूर हो सके ले जाएँ। इस बार हनीबाल संग्राम को पदाति सैनिकों द्वारा जीतना चाहता था। उसने उन्हें तीन प्रभागों (divisions) में खड़ा किया, पहले गॉल के वेतन भोगी सैनिक, फिर स्थानीय कार्थेजियन सैनिक और अन्त में इटली में अनुभव प्राप्त सैनिक। दूसरे और तीसरे प्रभागों के मध्य काफी फासला रखा गया। हनीबाल की योजना थी रोमन सैनिकों को पहले दो प्रभागों को धकेलने देना और तब, जब वे अपने अग्रसरण (advance) के कारण अव्यवस्थित हो जाएँ, उनके ऊपर अपने इटालवी युद्धों में अनुभव प्राप्त सैनिकों से आक्रमण करना। सीपियो के अतिरिक्त किसी अन्य सेनापति के विरुद्ध यह योजना सम्भवतः सफल हो जाती, लेकिन ठीक उस समय जब कि आक्रमण किया जाने वाला था, रोमन सेनापति ने अपने शत्रु का इरादा भाँप लिया। उसने शीघ्रता से अपने सैनिकों को लौटा लिया, और उनको पुनः पंक्तिबद्ध किया। यह घमासान युद्ध के दौरान में एक कठिन संक्रिया (operation) थी। इस प्रकार हनीबाल के अनुभवी सैनिकों को उचित विरचना में खड़े मेनिपलों पर आक्रमण करना पड़ा। तब भी वे शायद रोमन पंक्ति को तोड़ देते, क्योंकि वे तरोताजा थे जब कि रोमन सैनिक थके हुए थे, लेकिन उन्हें कुछ समय की आवश्यकता थी और समय का हनीबाल के पास अभाव था। पीछा करके लौटती हुई रोमन अश्वारोही सेना ने कार्थेजियनों के पृष्ठभाग पर आक्रमण किया, और उन्हें काट डाला। हनीबाल स्वयं बच निकला लेकिन इसके बाद, प्रतिरोध करने के प्रयास की निष्फलता को महसूस करके, उसने अपने देशवासियों को सन्धि कर लेने की मन्त्रणा दी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेनापति के रूप में हनीबाल सीपियो से श्रेष्ठतर था, वैसे ही जैसे गुरु शिष्य से होता है। फिर भी वह पराजित हुआ। 'ऐसे भी अवसर होते हैं', पॉलाइबियस ने जामा की चर्चा करते हुए कहा था, 'जब भाग्य वीरों की योजनाओं को विफल कर देता है।' युद्ध में एक अनियन्त्रणीय तत्त्व होता है जो बुद्धिमानों के विवेक को उलझन में डाल देता है। सफल सेनापति अपने सितारे में बिना किसी आधार के ही विश्वास नहीं करते। सीपियो और हनीबाल के जीवन-क्रम में भाग्य के खेल की अनिश्चितता अपने पूर्ण रूप में अभिव्यक्त हुई है। हनीबाल ने इटली में जो किया वह स्पष्टतः एक जुआ था, और वह असफल रहा। सीपियो ने अफ्रीका में उससे भी अधिक भयंकर जुआ खेला, और वह सफल हो गया। इस अन्तर का क्या स्पष्टीकरण दिया जाय? इसे तो केवल इतिहास की अवैयक्तिक (impersonal) शक्तियों के, जो इसके महान् पुरुषों से अधिक बलवती होती हैं, सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। हनीबाल के भाग्य में इन शक्तियों का शिकार होना बदा था। उसके प्रतिस्पर्द्धी को उन्होंने सफलता के शिखर पर ला बैठाया।

लीजन : फॅलॅंक्स् के विरुद्ध—यूनान और एशिया में रोम ने जो युद्ध अलॅक्जॅण्डर महान् के उत्तराधिकारियों के विरुद्ध लड़े, उनमें लीजन का फॅलॅंक्स् से मुकाबला हुआ और दोनों प्रतिद्वन्द्वी विरचनाओं (formations) के गुण सर्वोच्च कसौटी पर चढ़ाए गए। लेकिन यह परीक्षा न्यायपूर्ण थी, यह कहना कठिन है। इस समय फॅलॅंक्स् अपनी सर्वोत्तम अवस्था में नहीं थी। अलॅक्जॅण्डर के समय से इसकी अवनति होने लगी थी। सरिस्सा (sarrisa) की लम्बाई बढ़ा कर इक्कीस फुट कर दी गई थी, जिससे फॅलॅंक्स् की पैंतरा बदलने की शक्ति दुर्बल हो गई थी। सैनिकों को अपने विशाल भालों को दोनों हाथ से पकड़ना और एक दूसरे को सहायता देने के लिए खूब सटकर रहना होता था। वे अब मोर्चा बदलने में इतने अधिक असमर्थ हो गए थे जितने पहले कभी नहीं थे और पार्श्व अथवा पृष्ठभाग पर आक्रमण होते ही छिन्न-भिन्न हो जाते थे। अलॅक्जॅण्डर अपने पार्श्वों की सुरक्षा के लिए अश्वारोहियों का उपयोग करता था, लेकिन उसके उत्तराधिकारी लगभग सम्पूर्णतः असहायित (unaided) पदातियों पर निर्भर रहे। समतल समरक्षेत्र में, एक ऐसे शत्रु के विरुद्ध जो अपने ऊपर आक्रमण होने की प्रतीक्षा करता था, फॅलॅंक्स् विरचना अब भी आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर सकती थी। लेकिन गतिशील और लचीली लीजन विरचना से मुकाबला होने पर यह चपल स्पेनी वृषयोद्धाओं (toreadors) से घिरे सांड के सदृश थी।

तीन संग्रामों ने लीजन विरचना की श्रेष्ठता निर्भ्रान्तरूपेण प्रकाशित कर दी। साइनोस्कॅफाले (Cynoscephalae) के युद्ध में (१९७ ई० पू०) फॅलॅंक्स् को ललचा कर ऊबड़-खाबड़ भूमि पर ले आया गया जहाँ उसे खण्डशः लड़ना पड़ा। दाहिना बाजू (wing) पहले आगे बढ़ा और उसने अपने शत्रु को पराजित कर दिया, लेकिन बायाँ बाजू अग्रसरित होते समय ही घेर लिया गया और इसके पूर्व कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैनिक अपने भाले नीचे कर पाते, उन पर आक्रमण हो गया। अन्त में संग्राम का निर्णय एक रोमन सेन्चुरियन के साहसपूर्ण उपक्रम (initiative) से हुआ, जिसने वीस मेनिपलों को समरक्षेत्र के पार लेजाकर फे`लें`क्स् के विजयी पक्ष के पृष्ठभाग पर आक्रमण कर दिया। मेग्नेशिया (Magnesia) के संग्राम में (१८९ ई० पू०) दाहिने बाजू पर एकत्र रोमन अश्वारोही सैन्य ने शत्रु के बाएँ भाग को खदेड़ दिया और तब फे`ले क्स् के पार्श्व पर धावा किया। पाइड्ना (Pydna) के संग्राम में (१६८ ई०पू०) फे`लें`क्स् ने आगे बढ़ने में अनावश्यक रूप से तेजी की। इससे मध्यवर्ती स्थान रिक्त हो गया, और रोमनों ने आक्रमण कर दिया। पाइड्ना के बाद युद्धकर्म में फे`लें`क्स् का भाग महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया, यद्यपि पौर्वात्य नरेश इसका प्रयोग करते रहे। इनमें पोन्टस का मिथ्रिडेटिज़ (Mithridates) उल्लेखनीय है।

कोहॉर्ट लीजन—समुद्र पार के प्रदेशों की विजय और विदेशों में सुदीर्घ काल तक कार्य करने वाली आक्रमक सेनाओं की आवश्यकता ने रोमन सैन्य की कायापलट कर दी। इस युग के अधिकांश सैनिक सुधार सुप्रथित रोमन सेनापति मेरियस (१५७-८६ ई० पू०) के नाम से सम्बद्ध हैं, यद्यपि उनमें कुछ निश्चय ही विकास की धीमी प्रक्रिया का परिणाम थे। एक बड़ा परिवर्तन जिसके लिए मेरियस (Marius) निस्सन्देह उत्तरदायी था, रोमन सेना को पेशेवर बनाया जाना था। अभी तक लीजनों में सैनिकों की भर्ती प्रधानतः मध्यमवर्गीय नागरिकों में से की जाती थी। सैनिक-सेवा के लिए जायदाद की अर्हता (property qualification) आवश्यक थी, यद्यपि संकटकाल में इसे स्थगित किया जा सकता था। यह बात अब समयानुकूल नहीं रह गई थी। भू-पूँजीवाद (agrarian capitalism) और दासप्रथा की प्रगति के कारण इटली में कृषकों की संख्या कम हो गई थी और सैनिक भर्ती का यह स्रोत सूख गया था। जनशक्ति (man-power) की समस्या भयंकर हो गई थी। मेरियस ने ऐसे निर्धन व्यक्तियों को जिनके पास सम्पत्ति बिल्कुल नहीं थी सेना में भर्ती करके इस समस्या को साहसपूर्वक सुलझाया। इससे भी अधिक, उसने उन्हें केवल कुछ युद्धों के लिए नहीं वरन् सुदीर्घ समय के लिए, सम्भवतः बीस वर्ष के लिए, भर्ती किया। इस एक सुधार से ही रोमन सेना नागरिक-सेना से पेशेवर सेना के रूप में परिणत हो गई।

मेरियस को लीजन के समरतन्त्र (tactics) में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने का श्रेय भी प्राप्त है। उसने, प्रधानतः ग्लेडियेटर-शिक्षालयों[1] की कार्य-प्रणाली के

---

१. रोम में तीसरी शती ई० पू० के मध्य से जनता के मनोरञ्जनार्थ ग्लेडियेटर (Gladiator) नाम से पुकारे जाने वाले मल्लों के दंगल कराने की प्रथा प्रचलित हुई। रोमन गणतन्त्र की अन्तिम शती और साम्राज्य युग में ये दंगल रोमन जनता के मनोरञ्जन के प्रमुख साधन हो गये। इनमें भाग लेने वाले ग्लेडियेटर, जो प्रायः अपराधी, दास अथवा युद्धबन्दी होते थे, विविध प्रकार के हथियारों के प्रयोग में निष्णात होते थे और सचमुच की लड़ाई लड़ते थे। इसलिए उनके लिए ये दंगल जीवन-मरण का प्रश्न होते थे। रोम में ग्लेडियेटरों को प्रशिक्षित करने के लिए अनेक शिक्षालय थे जो 'लूडी' कहलाते थे।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुसार, अपने पेशेवर सैनिकों को आयुध-सञ्चालन में सम्यक्रूपेण प्रशिक्षित किया। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था मेनिपल के स्थान पर कोहॉर्ट (Cohort) को अपनाना। इसका तात्कालिक कारण ट्यूटनों और किम्बरिओं के, जिन्होंने ११७ ई० पू० के उपरान्त इटली को कई वर्ष तक भयभीत रखा, रोमनों पर कठोर आघात थे। १९ वीं शताब्दी के सूडानी योद्धाओं की तरह ये बर्बर जन एक भीषण आक्रमण पर, जिसमें उनकी भयावह शारीरिक शक्ति का पूरा प्रभाव पड़ता था, सब कुछ दाँव पर लगा देते थे। उनका सामना करने के लिए मेनिपलों की शिथिल पंक्तियों की अपेक्षा एक सघनतर विरचना (denser formation) की आवश्यकता थी। इसीलिए विशालतर कोहॉर्ट, जिनके अग्रभाग (fronts) अधिक चौड़े और मध्यवर्ती भाग संकीर्णतर होते थे, अपनाए गये। प्रत्येक कोहॉर्ट में छः सौ सैनिक होते थे जो छः शतकों (centuries) में बँटे होते थे। हर लीजन में दस कोहॉर्ट होते थे। कोहॉर्ट रोमन सेना की स्थायी इकाई बन गया। समरतन्त्रीय पैंतरेबाजी (tactical movements) में यह मेनिपल से अधिक सुविधापूर्ण सिद्ध हुआ। वास्तव में इससे लीजन को, कुछ लघु मात्रा में, वह लोच (flexibility) मिली जो अट्ठारहवीं शती की सेनाओं को प्रभागीय सिद्धान्त (divisional principle) से प्राप्त हुई। कोहॉर्ट लीजन की सहायता से ही सीज़र (Caesar) ने अपनी विजयें प्राप्त की थीं।

इस काल के अन्य परिवर्तनों का संक्षेप में वर्णन किया जा सकता है। (अ) मित्र राज्यों के सैनिकों के लिए पृथक् संवर्गों (cadres) और विरचनाओं (formations) का अन्त कर दिया गया; ९०-८९ ई० पू० के मताधिकार क़ानूनों के बाद सब इटालवी जन रोम के पूर्ण नागरिक और लीजन में सेवा करने के अधिकारी बन गये; (आ) हस्ताती, प्रिन्सिपिज़ तथा ट्रिआराई का पुराना भेद समाप्त कर दिया गया; अब सब सैनिक समान रूप से 'पीलम'[1] और सीपियो द्वारा प्रचलित लघु स्पेनी तलवार से सज्जित किए जाते थे; (इ) अब तीन पंक्तियों (lines) अथवा प्रभागों (divisions) की समर-विरचना (battle formation) का सख़्ती से अनुसरण नहीं किया जाता था; (ई) लीजन से हल्के सैनिकों (light troops) और अश्वारोहियों को हटा दिया गया; इनके और अन्य अधिसंख्यकों (supernumeraries) के लिए रोम अब प्रान्तवासियों पर निर्भर रहने लगा; एवं गॉल के अश्वारोही,

---

१. 'पीलम' लगभग छः फुट लम्बे हल्के भाले को कहते थे। इसे युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व शत्रु-पंक्ति पर फेंका जाता था। इसको फ़ेंकने के बाद तलवारों का प्रयोग किया जाता था। मेरियस के समय यह तीन फुट लम्बी लकड़ी की छड़ में कच्चे लोहे की इतनी ही लम्बी छड़ को लगाकर बनाया जाता था। लोहे की छड़ के अग्रभाग पर फौलाद की नोक रहती थी। यह बड़े काम का हथियार था क्योंकि शत्रु-सैनिक अगर इसे नहीं रोक पाता था तो उसकी मृत्यु हो जाती थी, लेकिन वह अगर इसे अपनी ढाल पर रोक लेता था तो कच्चे लोहे की छड़ मुड़ जाती थी और ढाल बेकार हो जाती थी। —अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रीट के धनुर्धारी तथा बेलियर के गोफन चलाने वाले (slingers) रोमन सेना की नियमित इकाइयाँ बन गये।

सीज़र—यद्यपि सीज़र को नेपोलियन ने इतिहास के युद्धविशारदों (military geniuses) की अपनी लघु सूची में स्थान दिया था, फिर भी उसके जीवन का अध्ययन करने से उसके विषय में मन में अन्धाधुन्ध काम करने वाले एक ऐसे सेनापति का हताशकारी चित्र बनता है जिसने अनावश्यक संकटों को अपनाया और जो सर्वनाश से बार-बार अपने अत्युत्कृष्ट सौभाग्य के कारण ही बच पाया। सीज़र राजनीति के समान युद्ध में भी जुआ खेलता था। दोनों में भाग्य ने उसका असामान्य रूप से सुदीर्घ काल तक साथ दिया। यहाँ तक कि उसकी मृत्यु भी बड़े सुअवसर पर हुई। इससे एक ओर वह एक ऐसी राजनीतिक स्थिति का सामना करने से बच गया जिस पर उसका नियन्त्रण नहीं रह गया था तो दूसरी ओर पार्थियनों द्वारा पराजित किए जाने से। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसमें सैनिकोचित गुण नहीं थे लेकिन इसका यह अर्थ अवश्य है कि उसका स्थान अन्य अनेक सेनापतियों से नीचे है, उदाहरणार्थ हनीबाल से जिसकी यथार्थ सफलताएँ सीज़र की तुलना में बहुत कम रहीं। इतिहासकार इस लोकप्रिय विचार को स्वीकृत नहीं कर सकता कि सफलता महत्ता का मापदण्ड है।

सीज़र ने सैनिक व्यवसाय को काफी आयु व्यतीत हो जाने के उपरान्त अपनाया। जब उसने गॉल में सेनापति के रूप में कार्य प्रारम्भ किया (५८ ई० पू०) उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी, और उसका सैन्य अनुभव कुछ महत्त्वहीन युद्धों तक सीमित था। लेकिन भाग्य से उसे अपने अनुभवविहीन ज्ञान को एक ऐसे बर्बर शत्रु के विरुद्ध आजमाने का अवसर मिला जिसके पास, उसकी अन्य दुर्बलताओं के अतिरिक्त, कोई सुव्यवस्थित रसद-विभाग (commissariat) नहीं था और जो विशाल सेना को समरक्षेत्र में कभी एक साथ नहीं रख सकता था। इसके विपरीत रोमन अपनी सक्षम रसद-व्यवस्था के कारण निर्णायक समरस्थलों में सदैव अधिक संख्या में सैनिक एकत्र कर सकते थे। इसलिए सीज़र को गॉल के किसी समरक्षेत्र में शायद ही कभी विषम स्थिति में लड़ना पड़ा हो, यद्यपि उसके ग्रन्थ 'गालिक वार' (Gallic War) में, जो रोमनों के पढ़े जाने के लिए लिखा गया राजनीतिक-प्रचार-पत्र (political pamphlet) था, स्पष्टतः इसके प्रतिकूल दावा किया गया है। फिर भी, सैनिकों की संख्या, शस्त्रास्त्र और अनुशासन में अपनी सेना की श्रेष्ठता के बावजूद उसने गम्भीर भूलें की, और एकाधिक बार पराजय से बाल-बाल बचा। अपने प्रथम युद्ध (५८ ई० पू०) में उसने हेल्वेटाइ (Helvetii) का, उन्हें विस्मयाभिभूत कर देने की आशा से, गुप्त रूप से पता लगाया; लेकिन उल्टे शत्रु ने उसे आश्चर्यान्वित कर दिया। इसके बाद जो लड़ाई हुई, उसमें शत्रु ने पीछे लौटने का बहाना करके उसके सैनिकों को रक्षात्मक स्थिति (defensive position) छोड़ देने को ललचा लिया और एक छिपी हुई सेना द्वारा उसके बाजू पर आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर दिया। इस कठिनाई से वे अपने को भारी हानि सहने के उपरान्त ही मुक्त कर सके। उसी वर्ष एरियोविस्टस (Ariovistus) और उसके जर्मन साथियों के विरुद्ध युद्ध में सीज़र अपने एक सहायक की सूझबूझ के कारण बचा। उसने अपने दाहिने पक्ष की ओर सफलता पाई, लेकिन उसका बायाँ पक्ष विनष्ट होने के खतरे में रहा जब तक कि आरक्षित (reserve) सेना को उसकी सहायता के लिए अग्रसरित होने का आदेश नहीं दे दिया गया, वह भी उसके द्वारा नहीं वरन् अश्वारोही सेनाध्यक्ष प्यूब्लियस क्रेसस द्वारा। नरवाई (Nervii) के विरुद्ध लड़े गये युद्ध में (५७ ई० पू०) वह एक बार पुनः शत्रु द्वारा धोखे से घेर लिया गया, और सर्वनाश से केवल अपने सैनिकों के संख्याधिक्य और श्रेष्ठतर युद्ध-कौशल के कारण बच पाया। उसके ब्रिटेन पर आक्रमण (५५-५४ ई० पू०) दोषपूर्ण ढंग से आयोजित हुए और निष्फल रहे। और उसकी वर्सिन्गेटोरिक्स् (Vercingetorix) पर प्राप्त अन्तिम विजय (५२ ई० पू०) भी, उसके 'गालिक वार' ग्रन्थ में प्रदत्त शत्रुसेना की संख्या के अतिरञ्जित अनुमान को आधुनिक विद्वानों की शोधों के द्वारा विवेकसम्मत सीमा तक कम कर देने पर चमत्कारपूर्ण नहीं लगती।

गृह युद्ध में सीज़र को अधिक प्रशंसनीय सफलता मिली, यद्यपि उसकी सफलता के कम से कम एक अंश का कारण उन परिस्थितियों को मानना चाहिये जिन पर उसका कोई नियन्त्रण नहीं था। उसके रोम पर धावा कर देने से, जिसका प्रयोजन राजनीतिक था, संख्याबहुल शत्रुओं के मध्य उसकी स्थिति अत्यन्त सबल हो गई। उसका इटली पर आधिपत्य था जब कि उसकी सेनाएँ स्पेन, यूनान और अफ्रीका के प्रत्येक भाग में फैली हुई थीं। आन्तरिक रेखाओं पर सैनिक कार्यवाही (operation) करते हुए उसने प्रत्येक पर एक-एक करके आक्रमण किया। उसकी एक मात्र युद्धनीतिक (strategic) भूल थी उसका ४८-४७ ई० पू० की शीत ऋतु में मिस्र में अव्याख्येय विलम्ब, जिसके कारण उसके शत्रुओं को पुनः सिर उठाने का अवसर मिल गया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें दबाने के लिए उसे दो युद्ध और लड़ने पड़े। लेकिन जब कि उसकी सामान्य युद्धनीति लगभग निर्दोष थी, उसके सामरिक अभियान पृथक्तः अधिक आलोच्य हैं। उसके पहले आघात का लक्ष्य पॉम्पी (Pompey) की स्पेन में स्थित सेना थी। यह एक संकटास्पद उपक्रम था। मार्सेलिज़ (Marseilles), जो उसके लिए इटली के साथ सम्पर्क बनाये रखने के लिए इतना महत्त्वपूर्ण था उसके विरुद्ध डटा रहा, और स्पेन में पॉम्पी के सेनापति युद्ध करने से तब तक बचते रहे जब तक रसद की कमी के कारण सीज़र लौटने के लिए लगभग बाध्य नहीं हो गया। इस विषमावस्था से उसने एक भाग्यवश घटी घटना के कारण मुक्ति पाई। उसके सहायक डेसिमस ब्रूटस (Decimus Brutus) ने मार्सेलिज़ के बेड़े (fleet) के ऊपर एक अति साधारण विजय प्राप्त की; लेकिन इस सामान्य सफलता के कारण, जिसे प्रतिवेदन (report) में अतिरञ्जित रूप दे दिया गया था, स्पेनी कबीलों ने, जो अब तक पॉम्पी के आदमियों को खाद्य-सामग्री दे रहे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे, यह रसद सीज़र के शिविर में भेजने लगे। परिणामतः अब पॉम्पी के आदमी क्षुधाकुल होकर पीछे हटने लगे, और सीज़र ने तेजी से बढ़कर उनके पृष्ठभाग पर आक्रमण करके उन्हें इलेर्डा (Ilerda) के युद्ध में (४९ ई०पू०) आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया।

उसका थेसली में लड़ा गया अगला युद्ध और भी अधिक दुस्साहसिक उपक्रम था। पॉम्पी का वेड़ा एड्रायाटिक समुद्र पर आधिपत्य जमाये हुए था। सीज़र ने अपनी सेना के एकांश के साथ उसे पार करने में सफलता पाई। लेकिन तत्काल ही उसने अपने आप को एक बड़ी ही संकटपूर्ण स्थिति में पाया। पॉम्पी के बेड़े ने उसका इटली से सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया। अतिशय कठिनाई से उसके कुछ सैनिक, जिन्हें वह पीछे छोड़ आया था, उससे आ मिलने में सफल हुये। पॉम्पी, जो अपने डायराकियम (Dyrrachium) के अड्डे (base) पर सुरक्षित था, तब तक अटल बैठा रहा जब तक उसके शत्रु की रसद समाप्त नहीं हो गई। सीज़र ने उसे यथाशीघ्र निर्णायक युद्ध करने के लिए विवश करने के हेतु उसके शिविर के चारों ओर खाइयों का विस्तृत जाल खुदवा दिया। लेकिन उसके सैनिक संख्या में इतने नहीं थे कि शत्रु को घेरे रहते; इसलिए इस उपाय को अपना कर उसने अपने ऊपर शत्रु का प्रत्याक्रमण सरल कर दिया। एक निर्बल स्थल पर अपने आदमियों को संग्रहीत करके पॉम्पी ने सीज़र के सैनिकों को गहरी पराजय दी। निराश होकर सीज़र आभ्यन्तर प्रदेश (interior) में घुस गया। पॉम्पी ने उसका पीछा किया और उसे युद्ध के लिए ललकारा। जैसा कि सिद्ध हुआ यह उसकी मूर्खता थी क्योंकि सीज़र की मुक्ति की एकमात्र आशा लड़ाई थी; और यह आशा भी बहुत क्षीण थी क्योंकि सर्वप्रथम इस बार ऐसा हुआ कि उसकी सेना शत्रु-सेना की तुलना में बहुत कम थी। फिर भी केवल एक समरतन्त्रीय विजय (tactical victory) उसे उस फंदे से छुटकारा दिला सकती थी जिसमें पॉम्पी की युद्धनीति (strategy) ने उसे फंसा दिया था। फर्सालुस (Pharsalus) के युद्ध (४८ ई०पू०)में वह लड़ा और, सभी सम्भावनाओं के विरुद्ध, अपने महान् प्रतिस्पर्द्धी को परास्त किया। पॉम्पी ने अपनी पदाति सैन्य के दाहिने पार्श्व को एनीपियस (Enipeus) नदी के किनारे रखा और सीज़र के १,००० की तुलना में अपने ७,००० अश्वारोहियों को बाईं ओर एकत्र किया। उसका इरादा सीज़र की अश्वारोही सेना को कुचल देने के उपरान्त उसकी पदाति सेना को पराभूत करने का था। इस आघात का सामना करने के लिए सीज़र ने अपनी पदाति सैन्य-पंक्ति से छः कोहॉर्ट अलग किये और उन्हें लीजनों के दाहिने बाजू (wing) के पीछे नियुक्त कर दिया। जैसे ही पॉम्पी के अश्वारोही पदाति सैन्य के पार्श्व से सरपट गुजरे, कोहॉर्ट उन पर झपट पड़े। अनाशंकित ओर से हुए इस अकल्पित आक्रमण के कारण शत्रु-सैनिक समर-क्षेत्र से भाग खड़े हुए। तब सीज़र की अश्वारोही सैन्य के शेषांश की सहायता पाकर विजयी कोहॉर्टों ने आगे बढ़कर पॉम्पी की पदाति-सेना के पार्श्व और पृष्ठभाग पर आक्रमण किया। संक्षिप्त संघर्ष के उपरान्त

पॉम्पी की सेना तितर-बितर हो गई और भाग खड़ी हुई। सीज़र ने एक अत्यन्त मौलिक सामरिक पैंतरे का प्रयोग किया था। उसने पदातियों द्वारा अश्वारोही सैन्य पर आक्रमण किया। लेकिन उसकी मौलिकता पुरस्कृत हुई। इस नवीन प्रयोग की सफलता से उसका रोमन-जगत् पर प्रभुत्व स्थापित हो गया।

सीज़र के परवर्ती युद्धों के विवरण अत्यधिक गड़बड़ होने के कारण उनका बोधगम्य वर्णन प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अफ्रीका में थाप्सस् (Thapsus) के युद्ध (४६ ई० पू०) में अपने सौभाग्य से वह शत्रु सेना को विभाजितावस्था में पाने और पूर्णतः विनष्ट करने में सफल रहा। स्पेन में मुण्डा (Munda) के युद्ध में (४५ ई० पू०) वह पराजित होने ही वाला था, लेकिन एक भाला लेकर और अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करने के लिए उनके मध्य कूदकर उसने विनाश को विजय में परिवर्तित कर दिया।

दीर्घ काल तक सफलता पाते रहने के बावजूद सीज़र ने सम्भवतः अपने सैनिक जीवन में अपूर्णता अनुभव की। अतः इसे असंदिग्ध रूप से एक शानदार सफल जीवन सिद्ध करने और इसके भव्य समापन के हेतु उसने रोम लौटने के तत्काल बाद ही पार्थियनों के विरुद्ध युद्ध की योजना बनानी आरम्भ कर दी। लेकिन उसने पार्थियनों को उन सब योद्धाओं से अधिक दुर्दान्त पाया होता जिनसे उसका अब तक सामना हुआ था। पार्थियन पुरानी ईरानी (Persian) समरनीति (tactics) के अनुसार लड़ते थे। उनके अश्वारोही धनुर्धर शत्रु से निरापद दूरी पर रहते थे और उसे बाणों से बींध देते थे। कार्हे (Carrhae) के युद्ध (५४ ई० पू०) में वे एक रोमन सेना को फुसला कर रेगिस्तान में ले गए थे और उसे विनष्ट कर दिया था। इन दुर्धर्ष और छली योद्धाओं पर काबू पाने में सीज़र की उद्योगशीलता की पूरी परीक्षा हो जाती। लेकिन उसके घातकों के छुरों ने उसे इस कठिन परीक्षा से बचा दिया और उसे, अविजित सेनाध्यक्ष को, उस ख्याति का उपभोग करने का अवसर दे दिया जो कैने के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त होने पर हनीबाल को मिली होती और मास्को में मर जाने पर नेपोलियन को।

साम्राज्यिक लीजन—रोमन साम्राज्यिक सेना (Roman imperial army) का सुदीर्घ इतिहास बहुत संक्षेप में वर्णन करना चाहिये। चार सौ साल तक साम्राज्य ३००,०००—४००,००० आदमियों की सीमा पर नियुक्त सेना द्वारा रक्षित रहा। दूसरी शती ई० में, जब साम्राज्य-प्रसार का युग निश्चित रूप से समाप्त हो गया था, लीजनों की रक्षात्मक समरनीति (defensive tactics) अपनाने की प्रवृत्ति अधिकाधिक बढ़ती गई। सन्निकटीय युद्ध (hand-to-hand fighting) विरल हो गये। तलवार त्यागकर भाले को अपना लिया गया और फेंक कर मारे जाने वाले हथियारों (missile weapons) का अधिकाधिक प्रयोग किया जाने लगा। रक्षणात्मक उपायों (fortification) को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा। सीमा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निश्चित करते समय पहाड़ियों और नदियों जैसी प्राकृतिक बाधाओं का पूरा लाभ उठाया गया और बर्बर आक्रमणकारियों को रोकने में खाइयों, बाँधों, दर्रों की रक्षा के हेतु बने दुर्गों, क़िलों और ब्रिटेन में बनी 'हेड्रियन प्राचीर' जैसी प्राचीरों की विस्तृत व्यवस्था ने सहायता दी। आक्रमक युद्धनीति (offensive strategy) और समर-नीति (offensive tactics) का सुचिन्तित परित्याग सेना के रणकौशल (fighting quality) पर सदैव प्रतिकूल प्रभाव डालता है। कुछ समय उपरान्त ही रोमन लीजन अधःपतित होकर मुख्यतः पुलिस-कर्त्तव्यों को पूरा करने वाले सशस्त्र सिपाहियों के दल (corps of armed gendarmerie) के सदृश हो गये।

साम्राज्य काल में अनिवार्य भर्ती (conscription) का नियम सिद्धान्ततः माना जाता रहा, लेकिन यह लोकप्रिय नहीं था और विरलतः ही लागू किया गया। रोमन सेना में अपनी इच्छा से भर्ती होने वाले सैनिक, जो सोलह से पच्चीस वर्ष के सुदीर्घ समय तक सैनिक-सेवा करते थे, बहुत अधिक संख्या में थे। लीजन में भर्ती होने के लिए रोमन नागरिक होना अब भी अनिवार्य था, इसलिए इसमें प्रारम्भ में इटालवी तत्त्व की प्रधानता रही। लेकिन लीजन तो सेना का आधा हिस्सा मात्र थे। शेषांश प्रान्तों से भर्ती किये गये सहायक-सैन्य-दलों (auxiliaries) का था। समस्त अश्वारोही सैनिक एवं गोफन चलाने वालों (slingers) तथा धनुर्धारियों के दल सेना के इसी भाग से सम्बद्ध थे।

धीरे-धीरे इटालवी तत्त्व लीजन से भी विलुप्त होने लगा। न जाने कैसे इटली-निवासियों के हृदय में सैनिक जीवन के प्रति घोर अरुचि हो गई और सम्राटों ने, राजनीतिक कारणों से, उन्हें अपने दायित्व से मुँह चुरा लेने दिया। तीसरी शताब्दी ई० तक सैनिक पदाधिकारी इटालवी ही रहे; इसके बाद सब पदों पर प्रान्तवासी अथवा बर्बर-जन नियुक्त होने लगे। इससे भी बुरा यह हुआ कि बर्बर जातियों को रोमन ध्वज के नीचे सैन्य दलों के रूप में सेवा करने के लिए निमन्त्रित किया जाने लगा और ये 'फोयडेराटी' (foederati) संख्या और महत्त्व में तब तक बढ़ते गये जब तक कि रोमन सेना में प्रमुखतम नहीं हो गये। बर्बरों की संख्या में अधिकाधिक वृद्धि हो जाने से लीजनों के अनुशासन और दक्षता का विनाश हो गया। उन्होंने अपनी परम्परागत युद्धविधि (mode of fighting) का परित्याग कर दिया और अपने प्राचीन शत्रुओं के आयुधों, समरनीति, और यहाँ तक कि युद्धघोषों (war-cries) तक को अपना लिया। पाँचवीं शती तक लीजन युद्ध-विरचना (military formation) लगभग उतनी ही लुप्त-प्रयोग (obsolete) हो गई जितनी फ़ेलँक्स्।

रोमन सेना के बर्बरीकरण के साथ एक महत्त्वपूर्ण सैनिक परिवर्तन सम्बद्ध था—अश्वारोही सैनिक के प्रभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि। जो बर्बर-जन रोमन सेना में भर्ती हुए वे मुख्यतः अश्वारोही सैनिक थे, और उन्होंने धीरे-धीरे अपने युद्ध करने के तरीकों को रोमन सेनाध्यक्षों पर थोप दिया। इस प्रक्रिया को लीजनों के पदाति सैनिकों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की सतत अवनति से सहायता मिली। डायोक्लेशियन (Diocletian) ने ३०० ई० के लगभग अश्वारोहियों का अनुपात कुल सेना के दशमांश के स्थान पर तृतीयांश कर दिया। सौ साल बाद पदाति सेना कुल सेना के आधे भाग से भी कम रह गई और उसे सैनिक-अनुसन्धान, छुटपुट मुठभेड़ और दुर्गों की रक्षा जैसे महत्त्वहीन कार्य सौंप कर हीनतर बना दिया गया। अश्वारोही सैनिक की इस प्रकार स्थापित श्रेष्ठता अगले एक सहस्र वर्ष तक अटूट रूप से बनी रही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ३

अश्वारोही सेनाओं का युग

अश्वारोही सेनाएँ—तिमिर युग (Dark Age) तथा मध्य काल (Middle Ages) में अश्वारोही सेना की प्रमुखता उसके आभ्यन्तर (intrinsic) लाभों के कारण कम थी, परवर्ती-रोमन-साम्राज्य युग में पदाति सैन्य के न्यूनाधिक दैवयोग से हुए अधःपतन के कारण अधिक। इसके अतिरिक्त अश्वारोही सैनिक की पदाति सैनिक से श्रेष्ठता पूर्णतः सुनिश्चित नहीं थी, यद्यपि छठी शती में रकाबों (stirrups) का प्रयोग प्रारम्भ हो जाने से अश्वारोही की युद्धक्षमता में वृद्धि हो गई थी। जैसा कि आयरलैण्ड पर नॉर्मनों (Normans) की विजय से सिद्ध हुआ, एक कवचधारी अश्वारोही सूरमा (knight) निश्चयतः लगभग अनेक अर्द्धनग्न केल्टिक पदाति ग्रामीण सैनिकों के लिए काफी था। लेकिन कवचधारी पदातियों के विरुद्ध परिणाम अधिक संदिग्ध रहता था। हेस्टिंग्ज के युद्ध ने प्रदर्शित कर दिया कि कुछ परिस्थितियों में पदाति सैन्य अश्वारोही सैन्य के विरुद्ध रक्षात्मक स्थिति (defensive position) को बनाए रख सकती थी। लेकिन इसके साथ ही हेस्टिंग्ज ने यह भी दिखा दिया कि अश्वारोही सेनाओं के युग में पदाति सेनाओं की सबसे बड़ी दुर्बलता थी उनका आक्रमण करने के अयोग्य होना। केवल अत्यधिक अनुशासित और सांगोपांग रूप से प्रशिक्षित सैनिक ही यह कार्य कर सकते थे, लेकिन लीजन के अधःपतन से लेकर स्विट्ज़रलैण्ड के बर्छीधारी सैनिकों (pikemen) के अभ्युत्थान तक यूरोप में इस प्रकार की कोई सेना नहीं थीं। यूरोप और एशिया के बर्बर अभिजात वर्गों (barbarian aristocracies) को, सामाजिक और राजनीतिक कारणवश, अश्वारूढ़ होकर युद्ध करने का रिवाज बहुत प्रिय था; और धीरे-धीरे यह लगभग विश्वजनीन (universal) हो गया जब तक कि मध्यकाल में लैटिन शब्द miles जिसका अर्थ है 'किसी प्रकार का सैनिक', केवल अश्वारूढ़ सैनिक के लिए प्रयुक्त नहीं होने लगा। ४०० ई० से १४०० ई० तक के सुदीर्घ युग में यूरोप और एशिया की सभी प्रमुख सेनाएँ अश्वारोही सैनिकों की थीं जिनमें, अधिक से अधिक, असन्तोषप्रद रूप से सज्जित पदाति सैनिकों के दुर्बल प्रभाग (divisions) भी रहते थे। यह बात जस्टीनियन (Justinian) और परवर्ती बाइजेन्टाइन साम्राज्य (later Byzantine Empire) की सेनाओं, गोथों, हूणों, मंगोलों, सारसीनों और तुर्कों के आक्रान्ता दलों तथा मध्यकालीन यूरोप की सामन्ती सेनाओं, सभी के विषय में समान रूप से सत्य थी।

अश्वारूढ़ सैनिक के उत्कर्ष के युग में युद्धनीति (strategy) और समरतन्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(tactics) लगभग बिलकुल नगण्य हो गये। समरतन्त्र अश्वारूढ़ सैनिकों की मुठभेड़ तक सीमित रह गया और युद्धनीति शत्रु पर धावा बोल देने के एक मात्र नियम तक। सैनिक पैंतरेबाजी (manoeuvre) के लिए कोई स्थान नहीं रह गया। जो अश्वारोही सेनाएँ युद्ध से बचने का प्रयास करती थी उन्हें लड़ने के लिए विरलतः ही विवश किया जा सकता था। युद्ध केवल तभी होता था जब दोनों पक्षों को विजय की पूर्ण आशा होती थी। अन्यथा दुर्बल सेना घोड़ों पर चुपचाप निकल भागती थी और अपने दुर्गों में शरण ले लेती थी। किसी मध्यकालीन दुर्ग को दीर्घ काल तक घेरा डालने के उपरान्त ही जीता जा सकता था, और कुछ ही मध्यकालीन सेनाएँ लम्बे समय तक लड़ाई करने के लिए प्रस्तुत होती थीं। एक युद्ध की सामान्य अवधि छः सप्ताह मानी जाती थी। इस प्रकार किसी दुर्ग की रक्षक-सेना के सम्मुख आहाराभाव (starvation) का भय उपस्थित होने के बहुत पहले ही घेरा डालने वाली सेना तितर-बितर हो जाती थी। इन दो तथ्यों से—गतिशील सेनाएँ और दुर्जेय दुर्ग—इतने मध्यकालीन युद्धों की अनिर्णयात्मकता बोधगम्य हो जाती है।

अश्वारोही सेनाओं के संग्राम—निम्नलिखित संग्रामों से विभिन्न अश्वारोही सेनाओं की रणविधियों (mode of fighting) के विषय में कुछ अनुमान किया जा सकता है।

एड्रियानोपल (३७८)—इस संग्राम (Adrianople) को प्रायः अश्वारोही सेनाओं के युग का प्रारम्भ माना जाता है। गोथों ने डेन्यूब (Danube) को पार कर लिया था और सम्राट् वालेन्स् (Valens) उनका सामना करने के लिए अग्रसरित हुआ। वह कवचयुक्त गाड़ियों के पड़ाव से बनी प्राचीर के पीछे छिपी हुई गोथिक पदाति सेना की तरफ बढ़ा। जिस समय लड़ाई प्रारम्भ हुई, गोथिक अश्वारोही चारे की खोज में गये हुये थे, लेकिन उन्होंने पूरी तेजी से लौट कर रोमन सेना के पार्श्व पर आक्रमण किया। सहायक रोमन अश्वारोही सेना तितर-बितर हो गई और लीजन के सैनिक बुरी तरह अव्यवस्थित हो गये। यह देखकर गोथिक पदाति सैन्य गाड़ियों की प्राचीर से बाहर निकली और सामने से रोमन सैन्य पर टूट पड़ी। यह कैने के युद्ध की पुनरावृत्ति थी। सब ओर से आक्रमण किये गए, अपनी पंक्तियों (ranks) को फैलाने में असमर्थ, खचाखच खड़े होने के कारण अपने हथियारों को प्रयुक्त करने में असमर्थ, ४०,००० रोमन अपने सम्राट् सहित काट डाले गये। लीजन-सैनिकों का गोथिक अश्वारोहियों के आक्रमण द्वारा इस प्रकार अचानक कुचला जाना यह प्रदर्शित करता है कि साम्राज्य के प्रारम्भिक दिनों से रोमन सैनिकों के अनुशासन (discipline) और मनोबल (morale) का कितनी बुरी तरह ह्रास हो गया था।

ट्रिकामेरोन् (५३५)—यह विजय जस्टीनियन के सुप्रथित सेनाध्यक्ष बेलिसारियस (Belisarius) ने अफ्रीका में वण्डालों (Vandals) पर प्राप्त की थी। बेलिसारियस ने मुख्यतः भारी आयुधों से सज्जित अश्वारोही सैनिकों (heavy cavalry) और अश्वारूढ़ धनुर्धरों पर भरोसा रखा। उसके पास पदाति सैनिक थे

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकिन युद्धों में विजय प्राप्त करने में उनका बहुत कम हाथ रहता था और कभी-कभी तो, उदाहरणार्थ ट्रिकामेरोन् (Tricameron) के युद्ध में, बिलकुल भी नहीं। इस अवसर पर पदाति सैन्य अश्वारोही सैन्य से एक दिन पीछे थी, लेकिन बेलिसारियस ने उसके बिना ही लड़ने का निश्चय किया। वण्डाल सेना, जिसमें अधिकांशतः अश्वारोही सैनिक थे, एक छोटी सी नदी के पार खड़ी थी। बेलिसारियस ने उसे नदी पार करने के लिए प्रलोभित किया, परन्तु वह टस से मस नहीं हुई। इस पर उसने स्वयं आक्रमण करने का निश्चय किया। उसके सर्वोत्तम सैनिक मध्य में थे। उनके साथ उसने नदी पार की। तत्काल ही उस पर समस्त वण्डाल सैन्य ने धावा कर दिया। तब रोमन सेना के बाजुओं (wings) ने आक्रमण किया। रोमन सेना के मध्य भाग (centre) के निकट आकर वण्डालों ने अपने बाजुओं को दुर्बल कर दिया था। इनको आक्रमणकारी रोमन बाजुओं ने धर दबाया। एक घंटे से कम में ही वण्डाल सेना घेर ली और काट डाली गई।

लेॅख़्फेॅल्ड (९५५)—लेॅख़्फेॅल्ड (Lechfeld) के युद्ध में जर्मनों ने मग्यार (Magyar) नामक एक मंगोल जाति की शक्ति को विनष्ट किया, जो लगभग एक शताब्दी से दक्षिण-पूर्वी यूरोप को बर्बाद कर रही थी। मग्यार छलबल (stratagem) तथा घात लगाने (ambush) में चतुर, वेगवान अश्वारूढ़ धनुर्धर थे। लेकिन वे भारी आयुधों से सज्जित अश्वारोहियों का सामना नहीं कर पाते थे। उनको प्रारम्भ में सफलताएँ मिलीं क्योंकि उनके शत्रु अश्वारूढ़ होकर लड़ना नहीं सीख पाये थे। और पदाति सेनाएँ इतने चपल शत्रु के विरुद्ध बेकार थीं। जर्मन रक्षा-व्यवस्था के इस दोष को महान् सम्राट् हेनरी 'दि फाउलर' (Henry the Fowler) और ओटो प्रथम (Otto I) ने दूर किया। लेॅख़्फेॅल्ड में ओटो ने शत्रु का सामना आठ 'लीजनों' (वृत्तलेखक ने उनके लिए यही शब्द प्रयुक्त किया है) के साथ, जिनमें प्रत्येक में १,००० अश्वारोही थे, किया। युद्ध उस समय प्रारम्भ हुआ जब एक मग्यार अश्वारोही दल ने जर्मन पार्श्व का सफाया कर दिया, ओटो के शिविर को लूट लिया, और जर्मनों के वाम पक्ष पर पीछे से हमला कर दिया। ओटो ने अपने दाहिने पार्श्व के एक लीजन को बाईं ओर भेज कर स्थिति को सुधारा। मग्यारों का पार्श्व की ओर आने वाला दल खदेड़ दिया गया, जर्मन पंक्ति को फिर से व्यवस्थित कर लिया गया और आक्रमण करने का आदेश दे दिया गया। भारी आयुधों से सज्जित जर्मन सरदारों के हमले से हल्के मग्यार अश्वारोही धूल की तरह बिखर गये।

हेस्टिंग्ज़ (१०६६)—यह सुप्रसिद्ध संग्राम सामन्ती अश्वारोहियों की पुराने ढंग के कवचधारी सैनिकों पर प्राप्त विजय था[१]। नॉर्मण्डी के विलियम (William of

---

१. इंग्लैण्ड पर १०४२ से १०६६ तक एडवर्ड 'दि कन्फेसर' का आधिपत्य था। वह मूलतः नॉर्मण्डी का निवासी था। उसकी मृत्यु के उपरान्त जनवरी १०६६ ई० में हारॉल्ड, जो इंग्लैण्ड का सर्वाधिक शक्तिशाली सामन्त था, राजा चुना गया। लेकिन नॉर्मण्डी के विलियम ने उसके चुनाव को स्वीकृत नहीं किया और इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर दिया।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Normandy) की सेना एक सामन्ती सेना इस अर्थ में थी कि इसका मूल कवचधारी अश्वारोही सरदार थे; लेकिन यह आसामी सामन्तों (feudal tenants) का दल नहीं थी। आसामी सामन्तों का सैनिक दायित्व (military obligation) साल में चालीस दिन की सेवा तक सीमित था। ऐसा परिमित दायित्व समुद्र पार जाने वाले युद्ध के लिए व्यर्थ था। विलियम को अपनी सेना भूमि और लूट की मनमोहक आशा देकर स्वैच्छिक भर्ती द्वारा संगृहीत करनी पड़ी। उसके नॉर्मन सामन्तों ने उसका अनुगमन स्वेच्छा से किया और वे उसी ध्येय से प्रेरित हुए थे जिससे वे सब दुस्साहसी योद्धा जो सम्पूर्ण यूरोप से उसकी पताका के नीचे एकत्र हो गये थे। अपने कवचधारी सरदारों के अतिरिक्त विलियम के पास बल्लमधारियों और धनुर्धारियों के दल भी थे। इनमें धनुर्धारियों के भाग्य में संग्राम में निर्णायक भाग लेना बदा था।

हारॉल्ड (Harold) की सेना पदातियों की थी। उसके सर्वोत्तम सैनिक कवच और भारी परशु (battle axe) धारण करने वाले 'हाउसकार्ल' (housecarles) अर्थात् सामान्य सेवक और उच्च-मध्यम श्रेणी के व्यक्ति (thegns) थे। उसकी शेष सेना दक्षिणी इंग्लैण्ड की जानपद सैन्य (fyrd) से लिए गए एवं तलवारें, भाले, बर्छियाँ, गदाएँ और अन्य पुराने हथियार धारण करने वाले कवचविहीन किसानों की थी। अंग्रेजी सेना, जिसमें हाउसकार्ल मध्य में और 'थेन्स्' (thegns) द्वारा सबल किए हुए स्थानीय सैनिक बाजुओं (wings) पर थे, उस पहाड़ी (ridge) से लगी हुई थी जो बाद में 'बैटिल हिल' (Battle Hill) नाम से विख्यात हुई। नॉर्मनों ने उसके सामने स्थित 'तेल्हम हिल' (Telham Hill) पर मोर्चा बनाया। धनुर्धारियों के लड़ाई शुरू कर देने के उपरान्त बल्लमधारी नॉर्मन सैनिक अंग्रेजी मोर्चे के विरुद्ध बढ़े लेकिन अनायास पीछे ढकेल दिए गए। इसके बाद कवचधारी सरदारों (mailed knights) की बारी आई। उनके धावे का वेग (momentum) उस ढाल (slope) की प्रवणता (steepness) के कारण, जिस पर उन्हें चढ़ना पड़ा, कम हो गया और प्रतिरोध की भीषणता से, जिसका उन्हें सामना करना पड़ा, वे स्तम्भित और हक्के-बक्के रह गये। भयंकर अंग्रेजी परशुओं के सम्मुख आक्रमणकारी परिभ्रान्त होकर पीछे हट गए, और बायाँ बाजू लज्जाजनक भयातुरता के साथ भाग निकला। उसका पीछा अंग्रेजी सैन्य के एक भाग ने किया। अगर इस समय समस्त अंग्रेजी सेना अग्रसरित हो गई होती तो नॉर्मन शायद पुनः जम कर युद्ध न कर पाते, क्योंकि विलियम के मारे जाने की अफवाह फैल चुकी थी और उसके आदमी आतंकित और हताश हो चुके थे। लेकिन सेना के केवल एक भाग द्वारा किया गया आक्रमण केवल निरर्थक ही नहीं हानिकारक भी सिद्ध हुआ। आतंक से मुक्त होते ही नॉर्मन पलट कर अपने पीछा करने वालों पर टूट पड़े और उन्हें काट डाला। इसका एक मात्र परिणाम हुआ अंग्रेजी पंक्ति का दुर्बल हो जाना।

विलियम ने दूसरी बार आक्रमण करने का आदेश दिया किन्तु इसे भी अधिक सफलता नहीं मिली। तब उसने छलबल (stratagem) का सहारा लिया। उसने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपनी सेना के एक भाग से भागने का ढोंग रचवाकर अंग्रेजी सेना के एक और अंश को आक्रमण करके उसका विनाश करने के लिए लालायित किया। हो सकता है कि यह पलायन ढोंग न होकर वास्तविक रहा हो, लेकिन परिणाम वही हुआ। अंग्रेजी सैन्य के पार्श्व, जिनके सैनिकों की संख्या कम हो गई थी, नॉर्मनों के नए आक्रमण के सम्मुख न ठहर सके। केवल मध्य-प्रभाग (centre) दृढ़ रहा। दिन का शेष भाग इस मध्य-भाग पर किए गए आक्रमणों में लग गया! नॉर्मनों ने धनुर्धारियों और अश्वारोहियों द्वारा बारी-बारी से धावे किए, लेकिन अंग्रजी मोर्चे को बेधा नहीं जा सका। रात्रि शनैः शनैः निकटतर आती जा रही थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो हारॉल्ड सकुशल लौट सकेगा। अन्तिम प्रयास के रूप में विलियम ने धनुर्धारियों को आदेश दिया कि वे आक्रमण करते हुए सरदारों के सिरों के ऊपर से बाणवर्षा करें। ऊपर से आने वाले इन बाणों की वर्षा से अंग्रेजी सेना का प्रतिरोध टूट गया। 'हाउसकार्ल' सामने से होने वाले आक्रमण का सामना करते समय अपनी ढालों को अपने सिरों के ऊपर नहीं ले जा सकते थे, और शीघ्र धराशायी हो गये। स्वयं हारॉल्ड एक बाण का शिकार हुआ। जब अंग्रेजी सैन्य-पंक्तियाँ (ranks) पर्याप्त क्षीण हो गईं, कवचधारी अश्वारोहियों ने पहाड़ी के ऊपर से आक्रमण करके बचे-खुचे वीर रक्षकों को उखाड़ फेंका।

उस समय हेस्टिंग्ज़ (Hastings) के युद्ध को अश्वारोही सैनिक की पदाति से उत्कृष्टता का निर्णायक प्रमाण माना गया था। लेकिन स्मरण रखना चाहिए कि (अ) अंग्रेज सैनिक उस समय तक बराबर जमे रहे थे जब तक उन्होंने आक्रमण करने की गलती नहीं की और (आ) धनुर्धारियों की सहायता के बिना नॉर्मन सरदार पदाति सैन्य-पंक्ति को तोड़ने में असमर्थ रहे थे।

मान्ज़ीकेर्ट (१०७१)—माञ्ज़ीकेर्ट (Manzikert) के युद्ध में बाइजेन्टाइन साम्राज्य (Byzantine Empire) की, बर्बर स्लाव (Slavs), सारसीन (Saracens) और ईरानी (Persians) जातियों को पाँच सौ वर्ष तक सफलतापूर्वक रोके रखने के उपरान्त, भीषण पराजय हुई। ग्यारहवीं शताब्दी में उसके एक नए और अधिक दुर्दान्त शत्रु, मध्य एशिया की एक भीषण धनुर्धारी अश्वारोही जाति, सेल्जुक तुर्क (Seljukian Turks) का उदय हुआ। सम्राट् रोमानस् (Romanus) उसके विरुद्ध एक सेना के साथ, जिसके सब सैनिक अश्वारोही थे, आर्मीनिया (Armenia) गया। माञ्ज़ीकेर्ट में उसने शत्रु के साथ सम्पर्क स्थापित किया। रोमन सेना के चारों प्रभाग (divisions) एक दूसरे से सतर्कतापूर्वक सम्पर्क रखते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़े। तुर्क उतनी ही स्थिरचित्तता के साथ पीछे हटते गये। रोमानस् ने रात्रि होने तक अग्रसरण (advance) जारी रखा जो उसकी भूल थी। माञ्ज़ीकेर्ट के खुले प्रदेश में कोई ऐसी प्राकृतिक बाधा नहीं थी जिसकी सहायता से तुर्कों को घेरा जा सकता और न कोई ऐसा साधन था जिसके द्वारा उन्हें युद्ध करने के लिए विवश किया जा सकता। जब रोमन अपने शिविर की ओर लौटने लगे, तुर्कों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ने उनका पीछा किया और उस दिन का विनाश प्रारम्भ हो गया। तेजी के साथ प्रत्यावर्तन करते समय रोमन प्रभागों (divisions) का पारस्परिक सम्पर्क टूट गया और उनके एक दूसरे से अलग कर दिए जाने का भय उत्पन्न हो गया। सम्राट् ने सम्पूर्ण सेना को रोक कर तुर्कों को खदेड़ने का निश्चय किया। लेकिन आरक्षित (reserve) प्रभाग के सेनाध्यक्ष ने दगाबाजी की और प्रत्यावर्तन जारी रखा जिससे रोमन सेना का पृष्ठभाग अरक्षित हो गया। यह धोखा घातक था। तुर्कों ने शेष प्रभागों को घेर लिया, उनका उनके शिविर से सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया और भारी क्षति करके उन्हें आत्म-समर्पण करने को विवश कर दिया।

मोही (१२४१)—मोही (Mohi) के समर में दुर्दान्त एशियाई यायावर मंगोलों ने एक यूरोपियन सामन्ती-सैन्य को गहरी पराजय दी। हाल ही में चंगेज़ खाँ (Jenghiz Khan) के नेतृत्व में एशिया में विजय-लाभ के उपरान्त वे दक्षिण-पूर्वी यूरोप पर टूट पड़े। उस समय तक खुद चंगेज खाँ की मृत्यु हो चुकी थी लेकिन उसके सर्वाधिक चतुर सेनापतियों में एक, सुबुताई (Subutai), नाममात्र के सेनाधिपति, राजकुमार बातु (Batu) का, परामर्शदाता था। हंगेरियनों, जर्मनों, पोलों एवं बोहेमियनों ने ईसाई-जगत् (Christendom) की रक्षा के लिए शस्त्र उठाए, लेकिन सुबुताई ने बड़ी द्रुतगति से आक्रमण किया। उसने अपनी एक सेना को पोलों और जर्मनों से निपटने और अपने पार्श्व को सुरक्षित करने के लिए अलग कर दिया और स्वयं कार्पेथियन पर्वतमाला (Carpathians) के पार हंगेरियनों का सामना करने के लिए अग्रसरित हुआ। पोल और जर्मन दो पृथक् युद्धों में बुरी तरह हरा दिए गए और हंगेरियन मोही के विनाशक रण-क्षेत्र में पराजित हुए। हंगेरियन या मग्यार, जो अब तक ईसाई धर्म अपना चुके थे, अपनी पुरानी समर-विधियों में अधिकांश को छोड़कर सामन्ती यूरोप की विधियों के अनुसार लड़ने लगे थे। उनके विपक्षी उनके सजातीय (akin in race) थे और उनकी ही पुरानी समरनीति (tactics) का अत्यन्त घातक ढंग से प्रयोग करते थे। मंगोलों ने 'फायर' और 'शॉक' शक्तियों (fire and shock power) को बड़ी चतुरता से संयुक्त किया। उनके अश्वारोही धनुर्धर (mounted bowmen) शत्रु पर बाण वर्षा करते थे और उसके पर्याप्त दुर्बल हो जाने पर उनके घुड़सवार धावा बोल देते थे। सेना के दोनों अंगों में सामञ्जस्य सफेद और काले झण्डों से संकेत देने की व्यवस्था द्वारा सुनिश्चित कर दिया गया था।

मोही के युद्ध में सुबुताई हंगेरियनों को फुसलाकर एक ऐसे मैदान में ले आया जो पहाड़ियों और जंगलों द्वारा घिरा हुआ था और जहाँ, हार जाने पर, वे निश्चित रूप से विनष्ट किए जा सकते थे। इसके बाद उसने उनकी सोई हुई सेना पर रात्रि में सहसा आक्रमण कर दिया। जब कि उसकी सेना के मुख्य भाग ने सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) किया, स्वयं उसने कुछ चुने हुए सैनिकों के साथ नीचे हटकर साजो (Sajo) नदी पार की और शत्रु के पार्श्व (flank) और पृष्ठभाग (rear) पर टूट पड़ा। यह चाल पूर्णरूपेण सफल हुई। ईसाई सेना को सम्पूर्णतः विनष्ट कर दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया और दक्षिण-पूर्वी यूरोप एक ऐसे शत्रु की दया पर निर्भर हो गया जो उन सब शत्रुओं से अधिक निर्दयी था जिनसे इस प्रदेश का अब तक पाला पड़ा था। भाग्यवश खान-साम्राज्य (Khanate) में उत्तराधिकार विषयक विवाद के कारण मंगोल वापस लौट गए और ईसाई-जगत् एक ऐसे संकट से मुक्त हो गया जिसका निवारण वह सैन्य-शक्ति से बिल्कुल नहीं कर सकता था।

ईसाइयों के धर्मयुद्ध[1] (१०९६-१२७०)—ईसाई-जगत् ने अपनी पूर्वी सीमा पर विधर्मियों (infidels) के विरुद्ध जो महान् आक्रमण आरम्भ किया वह मध्यकाल (Middle Ages) के सैनिक इतिहास में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी। यह संघर्ष दो प्रकार की अश्वारूढ़ सेनाओं—यूरोप के कवचधारी अश्वारोहियों और एशिया के अश्वारोही धनुर्धारियों—के मध्य था और इससे बहुत से ज्ञानवर्धक सैनिक सबक मिले, विशेषतः समरतन्त्र (tactics) में। एक प्रारम्भिक समस्या जो धर्मयुद्धों के नेताओं को हल करनी पड़ी यह थी कि वे अपनी सेनाओं को मध्य यूरोप से फिलिस्तीन (Palestine) तक कैसे ले जाएँ। सबसे पुरानी अभियान-सेनाओं ने एशिया माइनर (Asia Minor) से गुजरने वाले स्थल-मार्ग का उपयोग किया, और ईसाई सेनाएँ बड़े कष्ट से उन प्रदेशों से होकर गईं जहाँ न केवल भोजन और चारे की समस्या थी वरन् प्रत्येक पग पर सजग और छली शत्रु उन्हें परेशान करता था। रसद की कठिनाइयों और भौगोलिक अज्ञान के कारण धर्मयोद्धा (Crusaders) भयावह संकटों में पड़े और यह महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि उन सात सेनाओं में जिन्होंने १०९७ और ११९० के बीच स्थल-मार्ग से फिलिस्तीन पहुँचने की चेष्टा की, केवल दो सुरक्षित पहुँच सकीं। इन कठिनाइयों से समुद्री-मार्ग को अपना कर बचा जा सकता था, लेकिन् यह बात वेनिस, जिनेवा और पीसा जैसी नौसैनिक शक्तियों (maritime powers) के अभ्युत्थान के उपरान्त ही सम्भव हो सकी[2]। ये नगर सबल व्यापारिक कारणों से पूर्वी-प्रदेश (Levant) में टर्की की शक्ति कम करने के इच्छुक थे। तीसरे धर्मयुद्ध (Crusade) के समय से (११८८) समुद्री-मार्ग का विधिवत् प्रयोग किया जाने लगा और धर्मयुद्ध लड़ने वाली सेनाएँ अपने लक्ष्य पर अक्लान्त और अक्षुण्ण पहुँचने लगी। इससे उनको मुस्लिम शक्ति पर पूर्वी-भूमध्यसागरीय प्रदेश में स्वेच्छा-

---

१. ११ वीं शताब्दी में सेल्जुक तुर्कों ने फिलिस्तीन और अन्य अनेक पश्चिमी एशियाई देशों पर अधिकार कर लिया। उनके प्रसार के कारण कुस्तुन्तुनिया (Constantinople) का अस्तित्व खतरे में पड़ गया और यूरोप के एशियाई देशों के साथ व्यापार को गहरा धक्का लगा। लेकिन तुर्कों के विरुद्ध यूरोपियनों के मन में प्रतिहिंसा की भावना को बल मिला तुर्कों द्वारा येरूशलम की यात्रा को जानेवाले यात्रियों पर अत्याचार किए जाने से। १०९५ ई० में पोप अर्बन द्वितीय (Urban II) ने एक प्रभावशाली वक्तृता द्वारा ईसाइयों के धर्मजोश को उभाड़ दिया। इसके परिणामस्वरूप ईसाई देशों ने तुर्कों पर जो आक्रमण किये वही 'धर्मयुद्ध' अथवा 'क्रूसेड्स्' (Crusades) कहलाते हैं।—अनु०।

२. वेनिस, जिनेवा और पीसा इटली के नगर-राज्य थे।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नुसार, जहाँ कहीं भी एशिया माइनर में, फिलिस्तीन में और या मिस्र में—वह सर्वाधिक दुर्बल प्रतीत होती थी, आघात करने की सुविधा मिलने लगी।

मुख्य युद्धक्षेत्र (main theatre of war) के रूप में फिलिस्तीन के चुनाव का कारण तुर्कों के हाथ से 'पवित्र स्थलों' (holy places) को छीन लेने की ईसाई-

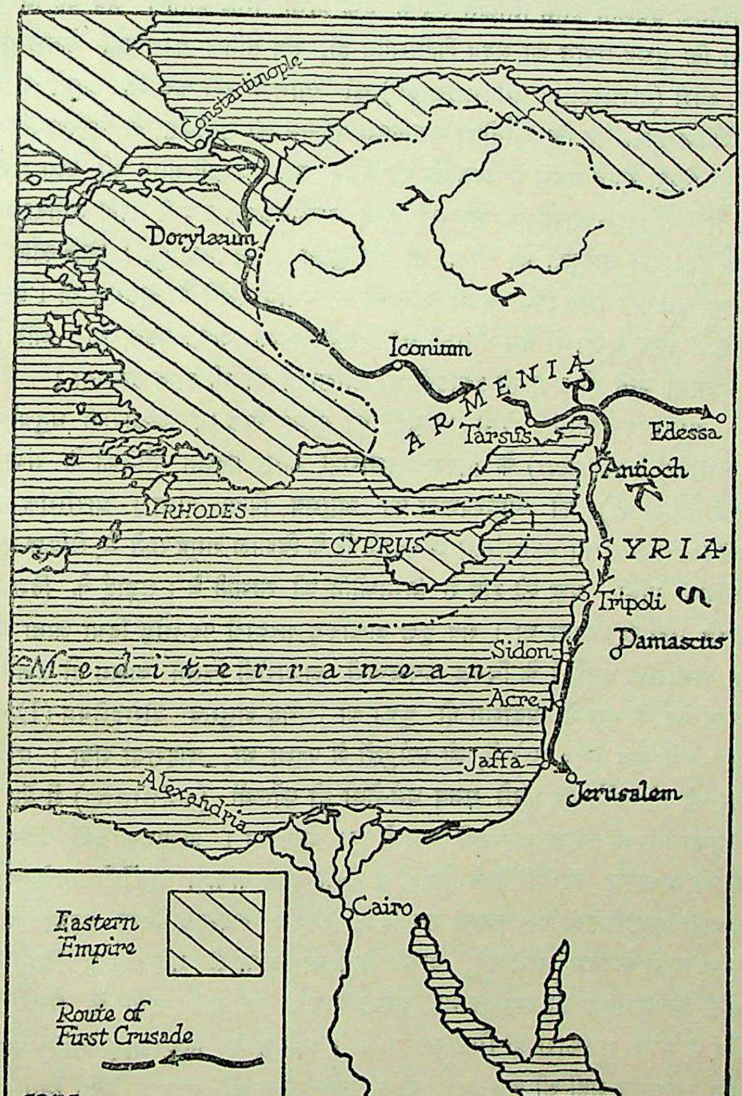

जगत् की उत्कट अभिलाषा थी। लेकिन 'पवित्र स्थलों' की सुरक्षा वहाँ ईसाई सेनाएँ रखने की अपेक्षा मुस्लिम शक्ति के विध्वंस पर अधिक निर्भर थी। इसलिए आक्रमण

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के प्रथम लक्ष्य का निर्धारण विशुद्ध युद्धनीतिक (strategical) तथ्यों के आधार पर होना चाहिए था। मिस्र पर आक्रमण करने के पक्ष में कुछ बातें थी। इससे भावी अभियानों के लिए एक सुविधापूर्ण अड्डा मिल जाता। दूसरे, वहाँ के सारसीन (Saracens) तुर्कों की तुलना में कम दुर्धर्ष योद्धा थे। लेकिन प्रारम्भिक धर्मयोद्धाओं की नौसैनिक दुर्बलता इसमें निश्चित रूप से एक बाधा सिद्ध होती। जब यह निश्चित हो गया कि मुख्य प्रयास का लक्ष्य फिलिस्तीन हो, तब सैनिक कार्यवाही केवल युद्धनीतिक लाभ (strategic advantage) को ध्यान में रख कर की जानी चाहिए थी। लेकिन हुआ यह कि धर्मयोद्धा येरूशलम पहुँचने की उत्सुकता के कारण सीरिया में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने में असफल रहे और उन्हें अपनी सीमा की रक्षा करना दुष्कर हो गया। इस प्रारम्भिक भूल को कभी सन्तोषजनक रूप से नहीं सुधारा गया और अन्ततः यही धर्मयुद्धों की असफलता का मुख्य कारण सिद्ध हुई। फिलिस्तीन की रक्षा-सेना सहायता मिले बिना अपने अस्तित्व को बनाए रखने में असमर्थ थी। इसकी सहायता के लिए यूरोप से धर्म-सेनाओं को बराबर भेजते रहना पड़ता था, और जब उनका आना बन्द हो गया तो ईसाइयों की आशाओं का भी अन्त हो गया।

समरतन्त्र (tactics) में धर्मयुद्धों का मुख्य पाठ था अश्वारोही धनुर्धारियों (mounted bowmen) के विरुद्ध अश्वारोही और पदाति सैनिकों के संयोजन (combination) की आवश्यकता का अनुभव किया जाना। प्रारम्भिक धर्मसेनाओं (crusading armies) में पदातियों के विशाल समूह रहते थे; लेकिन वे—अधिकांशतः यात्री—युद्ध की दृष्टि से निम्नकोटि की सामग्री थे। लड़ाई के दिन उन पर निर्भर नहीं रहा जाता था। सब कुछ अश्वारूढ़ सरदारों पर छोड़ दिया जाता था। लेकिन अश्वारोही धनुर्धरों के विरुद्ध कवचधारी अश्वारोही कितने अक्षम हो सकते थे, यह माञ्जीकेर्ट के युद्ध में प्रदर्शित हो चुका था। यह अनुभव डोराइलेयम (Dorylaeum) के युद्ध (१०९७) में, जो धर्मयुद्धों में पहला था, दोहराया गया। एशिया माइनर को धीरे-धीरे पार करते समय धर्म-सेना दो कॉलमों (columns) में बँट गई थी जिनका परस्पर सम्पर्क अस्थायी रूप से टूट गया था। अचानक बाएँ कॉलम ने अपने को अश्वारूढ़ धनुर्धारियों के समूहों से घिरा हुआ पाया। तुर्कों ने अपने तरकश कवचधारी अश्वारोहियों पर खाली कर दिए, लेकिन जब-जब ईसाई सूरमा उन पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े, अपने घोड़ों को भगा ले गए। कभी किसी सेना को ऐसी विषमावस्था का सामना नहीं करना पड़ा। तुर्क न तो लड़ने के लिए ठहरते थे और न उनसे छुटकारा ही मिल सकता था। धर्मयुद्ध के लिए आई पदाति सेना से भी कोई सहायता नहीं ली जा सकती थी। उसे शिविर की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया गया था और उस पर, अश्वारोही सैन्य के पीछे से, आक्रमण हो जाने दिया गया था। सेना हताश होकर पराजय मानने वाली थी कि तभी लगभग चमत्कारिक रूप से सहायता मिल गई। बाएँ कॉलम को ढूँढने के लिए संदेशवाहक भेज दिए गए थे; अब इसका अश्वारोही दल अप्रत्याशित रूप से एक पहाड़ी पर शत्रु के पार्श्व और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीछे की ओर आ पहुँचा। श्रेणीबद्ध होने की प्रतीक्षा किए बिना सूरमाओं ने धावा बोल दिया। पूर्णतः विस्मयाभिभूत हो गए तुर्क घर लिए गए और अपने अधिक शक्तिशाली शत्रुओं द्वारा पराभूत हुए।

डोराइलेयम के युद्ध से मिला सबक सुस्पष्ट था। अश्वारूढ़ धनुर्धरों (mounted archers) के विरुद्ध लड़ने वाले कवचधारी अश्वारोहियों (mailed cavalry) को पदातियों और धनुर्धरों (bowmen) की सहायता अवश्य मिलनी चाहिए। धनुर्धर सैनिक अश्वारूढ़ धनुर्धरों की बाण-वर्षा का मुँह तोड़ उत्तर दे सकते थे, क्योंकि एक पदाति धनुर्धर (foot archer) अश्वारूढ़ धनुर्धर की अपेक्षा अधिक दूर तक और अधिक सही निशाना मार सकता था। पदाति सैन्य धावों के बीच अश्वारोही सेना के लिए ओट (shelter) प्रदान कर सकती थी। इसके अतिरिक्त वह शत्रु को आक्रमण करने का आकर्षक लक्ष्य प्रतीत होकर अश्वारोहियों की मार की पहुँच में आने के लिए ललचा सकती थी। जब भी धर्मयोद्धाओं (Crusaders) ने इस सबक को याद रखा, वे विजयी हुए। जब उन्होंने इसे भुला दिया, वे पराजित कर दिए गए। उदाहरणार्थ हम दो धर्मयुद्धों को ले सकते हैं, एक जिसमें पराजय हुई, और दूसरा जिसमें विजय हुई।

टाइबेरियास (Tiberias) के युद्ध में (११८७) एक धर्म-सेना ग्रीष्म-ऋतु में गेलिली (Galilee) के जलविहीन प्रदेश में घेर ली गई। जब शत्रु सैन्य दिखाई दी, प्यासी और थकी पदाति सेना बढ़ कर एक पहाड़ी पर चढ़ गई, और उसने अश्वारोहियों को लड़ने के लिए अकेला छोड़ दिया। इसके अवारणीय परिणाम-स्वरूप अश्वारोही सेना घेर ली गई और बाण-वर्षा का शिकार हुई। इसके बाद पदाति सेना की बारी आई और वह भी तुर्कों का सहज शिकार हो गई।

आरसफ (Arsuf) का संग्राम (११९१) इससे बहुत भिन्न था। रिचार्ड 'शेरदिल' (Richard the Lionheart) पुरानी रोमन सड़क द्वारा एक्रे (Acre) से जाफा (Jaffa) की ओर अग्रसरित हो रहा था, और सलादीन (Saladin) के भिड़न्तू सैनिक (skirmishers) उसे दोनों पार्श्वों पर परेशान कर रहे थे। जब धर्मयोद्धा आरसफ के वन के सामने पहुँचे, सम्पूर्ण तुर्की सेना ने हमला बोल दिया। रिचार्ड ने एक सेनाध्यक्ष के रूप में बड़े विवेक और संयम का प्रदर्शन किया, जिनका सम्बन्ध उसके चरित्र के साथ कोई भी व्यक्ति सामान्यतः नहीं जोड़ता। धर्मयोद्धाओं ने अपना अग्रसरण (march) जारी रखा। पदाति सैनिक और डोरीवाले धनुष धारण करने वाले सैनिक (Crossbowmen) सेना के बाएँ पार्श्व पर पंक्तिबद्ध हो गए, और तुर्कों के साथ अग्रसरित होते हुए लड़ते रहे। पदातियों की दाहिनी ओर चल रही अश्वारोही सेना को आदेश दिया गया कि जब तक भेरीनाद न हो जाए, वह आक्रमण न करे। रिचार्ड चाहता था कि उसके प्रत्याक्रमण के पूर्व तुर्क युद्ध में पूरी तरह फँस जाएँ। अगर वह प्रत्याक्रमण में शीघ्रता करता, वे भाग जाते और बाद में लौटकर उसे परेशान करते। अभाग्यवश सेना का पृष्ठभाग, जिस पर शत्रु का दबाव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक पड़ा, काबू के बाहर हो गया। 'होस्पिटलर्स' (Hospitallers) के एक दल ने असह्य रूप से दिक हो जाने पर बिना आदेश मिले ही धावा बोल दिया। तब रिचार्ड के पास अपने समस्त अश्वारोहियों को आक्रमण करने देने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह गया। उनका हमला कुछ और देर से होता तो अधिक प्रभावकर होता, लेकिन फिर भी उन्होंने शत्रु के अधिकांश अश्वारोहियों को सड़क और वन के मध्य घेर लिया और उन्हें हजारों की संख्या में गाजर-मूली की तरह काट डाला। आक्रमण की तेजी और भयंकरता ने तुर्कों की युद्ध-पिपासा को पूरी तरह मिटा दिया। धर्मदल (crusading host) ने जाफा की ओर अपना अग्रसरण निर्विघ्न रूप से जारी रखा। सलादीन को अच्छी तरह सबक मिल गया। इसके बाद उसने फिर कभी 'शेरदिल' के साथ प्रत्यक्ष युद्ध (pitched battle) लड़ने का साहस नहीं किया।

धर्म योद्धाओं की नई युद्धविधि को अपनाने में मन्थरता और भुलाने में सत्वरता भी समान रूप से विस्मयजनक हैं। जब वे वापिस लौटे, उनमें से किसी ने अपने फिलिस्तीन के अनुभव का प्रयोग यूरोपियन युद्धों में नहीं किया। तेरहवीं शती तक उन नगरों के पास जो उस समय विकसित हो रहे थे, सामुदायिक पदातियों (communal infantry) के सक्षम दल थे, लेकिन किसी सेनापति ने उनका समुचित उपयोग नहीं किया। बूवाइन्स् (Bouvines) के महत्त्वपूर्ण युद्ध में (१२१४) दोनों पक्षों के पास सामुदायिक लोक-सेनाओं की टुकड़ियाँ थीं जो बहुत अच्छी तरह लड़ीं, लेकिन उन्हें अश्वारोही सेना के साथ संयुक्त करने का प्रयास नहीं किया गया था, इसलिए उनका युद्ध के परिणाम पर निर्णायक प्रभाव नहीं पड़ा। अगली दो शताब्दी तक पदाति सैनिक समरक्षेत्र में अपने न्यायोचित स्थान को पुनः प्राप्त नहीं कर पाया, हालाँकि इस बीच में अश्वारूढ़ सैनिक के प्रभुत्व पर एक नए हथियार—लम्बे धनुष (the long bow)—द्वारा कड़ा आघात किया गया।

शतवर्षीय युद्ध (१३३७-१४५३)—सैनिक दृष्टिकोण से चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दियों के आँग्ल-फ्रान्सीसी युद्ध (Anglo-French Wars) मुख्यतः लम्बे धनुष के द्वारा प्राप्त समरतन्त्रीय (tactical) सफलताओं के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। यह अपेक्षया एक नया हथियार था। हेस्टिंग्ज के युद्ध में प्रयुक्त धनुष वक्ष तक खींचा जाने वाला लघु धनुष था। धर्म-युद्धों के समय 'डोरी वाले धनुष' (crossbow), या 'अर्बालेस्ट' (arbalest) का सामान्य रूप से प्रयोग होने लगा। लेकिन दुनिया को लम्बे धनुष के विषय में जानकारी तेरहवीं शताब्दी तक नहीं हुई। इसके आविष्कारक सम्भवतः वेल्श(Welsh) थे। यह कान तक खींचा जाता था और दूर तक और सही लक्ष्य-बेध करने में किसी भी अन्य तत्कालीन क्षेपणीय अस्त्र (missile weapon) से अच्छा था। वेल्श का अनुकरण कर अंग्रेजों ने इसे अपनाया, और अपने स्कॉटलैण्ड-वासियों के विरुद्ध लड़े गए युद्धों में इसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया। विचित्र बात तो यह है कि किसी अन्य राष्ट्र (nation) ने इसको नहीं अपनाया, और इंग्लैण्ड का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस पर व्यवहार में तब तक एकाधिकार बना रहा जब तक बारूद (gunpowder) के आविष्कार से युद्धकर्म का रूप नहीं बदल गया। इससे वह प्रथम कोटि की सैनिक शक्ति हो गया और फ्रान्स के युद्धक्षेत्रों में शानदार विजयें प्राप्त कर सका।

शतवर्षीय युद्ध (Hundred Years'War) में तीन असाधारण संग्राम लड़े गए जिनके पहले और बाद में सुदीर्घ काल तक अनिर्णीत और अनाकर्षक लड़ाइयाँ होती रहीं। हम पहले इन्हीं तीन संग्रामों पर विचार करेंगे।

(अ) क्रेॅसी (१३४६)—यह युद्ध का पहला महत्त्वपूर्ण संग्राम था। एडवर्ड तृतीय (Edward III) हमला करने के लिए नॉर्मण्डी के तट पर उतरा, आराम से उस प्रदेश का विध्वंस किया, और तब एक फ्रान्सीसी सेना के आ पहुँचने पर तेजी से फ्लेण्डर्स् (Flanders) की ओर लौट गया। कुछ कठिनाई से उसने अपने आदमियों को पहले सीन नदी (the Seine) के पार उतारा और फिर सोम (the Somme) के पार। लेकिन दोनों नदियों को पार करते ही, निस्सन्देह यह विश्वास हो जाने पर कि अगर उसकी पराजय हुई तो उसके प्रत्यावर्तन का मार्ग अनवरुद्ध है, वह पीछा करने वाली सेना का सामना करने के लिए मुड़ा। इसके बाद जो लड़ाई हुई उसमें एडवर्ड ने उसी समरनीति (tactics) का प्रयोग किया जो अंग्रेजों ने अपने स्कॉटलैण्डवासियों के विरुद्ध युद्धों में सीखी थी। सशस्त्र अश्वारोही (men-at-arms) घोड़ों से उतर गए और पैदल लड़े। वे पदातियों के साथ मिलकर क्रेॅसी (Crecy) और वादीकूर्त (Wadicourt) गाँवों के मध्य स्थित एक नीची पहाड़ी के साथ-साथ तीन प्रभागों (divisions) के रूप में फैल गए। दाहिना प्रभाग 'ब्लेक प्रिन्स' (Black Prince) के नियन्त्रण (command) में था, बायाँ 'अर्ल ऑव नॉर्थम्प्टन' के नियन्त्रण में और तीसरा, रक्षित प्रभाग (reserve division), सीधे राजा के व्यक्तिगत आदेश में। धनुर्धर सैनिक पदाति प्रभागों के आगे और पार्श्वों पर खड़े हो गए। समसामयिक विवरणों में उनकी "हैरो" विरचना (harrow formation) का उल्लेख है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि धनुर्धरों की पंक्ति पदातियों के पार्श्वों पर आगे की ओर एक कोण बनाती हुई निकली हुई थी जिससे दो पंक्तियों के बीच में मिलने पर एक कीलक (wedge) बन जाता था, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। या इसका मतलब यह हो सकता है कि धनुर्धर पाँच-पाँच के दलों में पँचकुनिया ढंग (quincunx fahion) में खड़े हुए थे। इनमें से किसी भी विधि के द्वारा अधिकतम सम्भव संख्या में धनुषों को क्रियारत किया जा सकता था, और वह एककेन्द्राभिमुख (converging) निशानेबाजी की जा सकती थी जिसे आधुनिक बन्दूकची (gunners) इतना प्रभावकर पाते हैं।

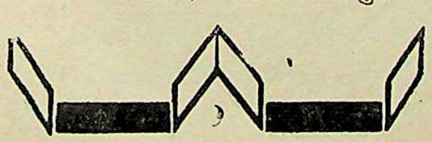

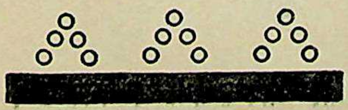

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ्रान्सीसी सेना, जो संख्या में अधिक थी, अगस्त में एक दिन तीसरे पहर रणक्षेत्र में पहुँची। अगर लड़ाई को अगले प्रभात तक स्थगित कर दिया जाता तो यह अधिक बुद्धिमानी की बात होती, लेकिन फ्रान्सीसी सरदारों की उत्सुकता को नियन्त्रण में रखना असम्भव हो गया। आक्रमण तत्काल कर दिया गया, यद्यपि पूरी फ्रान्सीसी सेना अभी तक रणक्षेत्र में नहीं आ पाई थी। इसकी टुकड़ियाँ थोड़े-थोड़े समय के अन्तर से आती रहीं और खण्डशः युद्धरत हुईं, जिससे फ्रान्सीसी अपने संख्याधिक्य का लाभ नहीं उठा सके। समर का प्रारम्भ अंग्रेज धनुर्धरों और फ्रान्सीसी पक्ष के जेनोआवासी (Genoese) कलदार धनुर्धारियों (crossbowmen) के संघर्ष से हुआ। जेनोआवासी, जो दूर तक निशाना मारने में शत्रु द्वारा बुरी तरह पछाड़ दिये गये और उसके तीन बाणों के उत्तर में केवल एक बाण चला पाये, अस्त-व्यस्त होकर पीछे लौट आए। इस पर, फ्रान्सीसी सरदारों ने उनकी भग्न पंक्तियों के बीच से घोड़े दौड़ाते हुए पहाड़ी की ढाल पर आक्रमण किया। शेष संग्राम फ्रान्सीसी अश्वारोही सेना द्वारा अंग्रेजी पंक्ति पर धावों का तांता मात्र था। उन्होंने बार-बार हमले किए। कम से कम पन्द्रह बार उन्होंने सुदृढ़ अंग्रेजी मोर्चे के समीप पहुँचने और उसे तोड़ने का प्रयास किया। लेकिन अंग्रेज धनुर्धरों की प्राणनाशक निशानेबाजी के कारण मैदान मृत अश्वों और मनुष्यों की लाशों से पट गया और अंग्रेज योद्धा लोहे की दीवार के समान डटे रहे। फ्रान्सीसियों के आक्रमण का विशेष प्रभाव, उनके आगमन की दिशा के कारण, अंग्रेजों के दाहिने बाजू पर पड़ा। एक बार तो 'ब्लेक प्रिन्स'

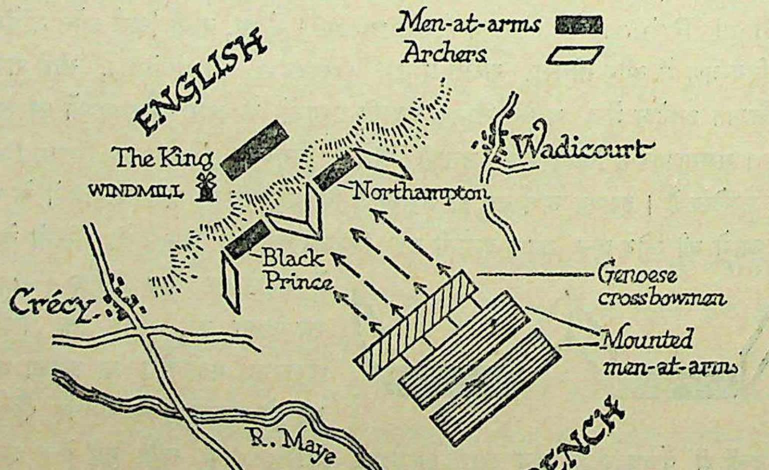

(Black Prince) संकटग्रस्त हो गया प्रतीत हुआ, और राजा से बलवर्धक सैन्य (reinforcements) भेजने का अनुरोध किया गया। लेकिन रणक्षेत्र को एक हवाई चक्की (windmill) में स्थित अपने निरीक्षण-स्थल (observation post)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ऊँचाई से देखकर एडवर्ड स्थिति को अधिक अच्छी तरह समझ सकता था। "लड़के को नाम कमाने दो", उसने उत्तर दिया, और केवल नगण्य सी सहायता भेजी। वह समझ गया कि राजकुमार भलीभाँति डटा हुआ है। रात्रि के आगमन तक मैदान मृतकों और मरणशीलों से इतना अवरुद्ध हो गया कि और हमले करना अव्यवहार्य हो गया और फ्रान्सीसी अश्वारोही निराश होकर लौट गए। इस समय तक फ्रान्सीसी सेना का अन्तिम भाग—पदाति दल—रणक्षेत्र में छोटी-छोटी टुकड़ियों में पहुँच रहा था। यह कुछ भी नहीं कर सका, और अग्रसरित होती हुई अंग्रेजी सेना द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया।

उत्कृष्टतर तीरन्दाजों से पाला पड़ने पर फ्रान्सीसी केवल एक काम कर सकते थे—चक्करदार प्रगमन (turning movement) का प्रयास। एडवर्ड को ऐसे आक्रमण की आशंका थी, यह उसके अपने पार्श्वों को सुरक्षित करने के लिए किए गए पूर्वोपायों (precautions) से स्पष्ट है। उसका दाहिना भाग क्रेसी (Crecy) ग्राम और माये (Maye) नदी द्वारा सुरक्षित था और बायां भाग वादीकूर्त (Wadicourt) ग्राम और सामान ढोनेवाली कवचधारी गाड़ियों के अड्डे से। दिन के अवसान के समीप फ्रान्सीसी सरदारों के एक दल ने अंग्रेजों के बाएँ पार्श्व पर हमला किया, लेकिन गाड़ियों के सुरक्षित अड्डे को भेदने में समर्थ शक्ति के साथ नहीं।

इस विजय से एडवर्ड को केवल यह लाभ हुआ कि उसे फ्लेण्डर्स् की ओर प्रत्यावर्तन जारी रखने का समय मिल गया। लेकिन उसने एक विशाल फ्रान्सीसी सैन्य को विनष्ट कर दिया था। इससे उसे कैले (Calais) का घेरा डालने का प्रोत्साहन मिला जिसे उसने लगभग एक वर्ष के घेरे उपरान्त जीत लिया। इस दैवायत्त लाभ के अतिरिक्त क्रेसी के युद्ध का कोई युद्धनीतिक (strategic) परिणाम नहीं निकला।

(ब) प्वाक्तियस्[१] (१३५६)—प्वाक्तियस्[१] (Poictiers) का संग्राम उस दूसरे हमले की अन्तिमावस्था था जो इस बार 'ब्लेक प्रिन्स' ने बोर्डो (Bordeaux) की ओर से किया था। लौटती बार एक फ्रान्सीसी सेना ने उसे प्वाक्तियस् के समीप घेर लिया और युद्ध करने के लिए बाध्य कर दिया। इसके परिणामस्वरूप जो संग्राम हुआ वह अपने प्रमुख लक्षणों की दृष्टि से क्रेसी के संग्राम का पुनरावर्तन था, सिवाय इसके कि इस बार फ्रान्सीसी सरदार अपने घोड़े छोड़कर पैदल लड़े। 'ब्लेक प्रिन्स' की स्थिति असाधारण रूप से दृढ़ थी। उसका अग्रभाग एक ऊँची झाड़ी और अंगूरों की वाटिकाओं की पंक्ति (line of vineyards) से सुरक्षित था जिसमें केवल दो स्थानों पर ऊबड़-खाबड़ सड़कों द्वारा प्रवेश किया जा सकता था। उसका एक पार्श्व (flank) नदी द्वारा रक्षित था और दूसरा सामान की कवचदार गाड़ियों के समूह से। अंग्रजों की विरचना (formation) क्रेसी के युद्ध के समान थी; और उनकी समरनीति (tactics) भी। उन्होंने संग्राम को धनुर्धरों की बाण-वर्षा से जीता।

---

१. इस स्थान का सही नाम प्वातियर्स (Poitiers) है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ्रान्सीसियों ने पहले आक्रमण किया। उन्होंने पदातियों और धनुर्धर सैनिकों के एक अग्रदल (vanguard) को आगे भेजकर, जिसके आगे ३०० अश्वारोही सरदार अंग्रेज धनुर्धरों को धर दबाने के लिए गए, युद्ध का आरम्भ किया। इस हमले को अनायास निष्फल कर दिया गया। अग्रदल के पीछे फ्रान्सीसी युवराज (Dauphin) के नेतृत्व में अश्वावरोही (dismounted) सशस्त्र योद्धाओं (men-at-arms) का एक प्रभाग (division) आया। उनकी अंग्रेजों से मुठभेड़ हो गई लेकिन उन्हें,

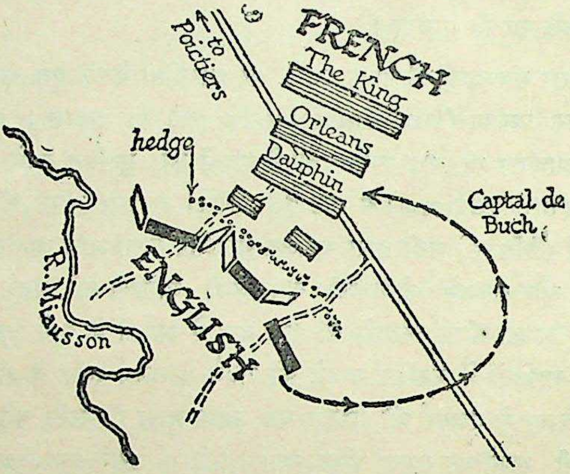

कुछ देर तक भीषण संघर्ष के उपरान्त, पीछे खदेड़ दिया गया। तत्काल ही एक दूसरा प्रभाग ड्यूक ऑव ऑर्लियन्स् के नेतृत्व में आ गया। अगर इस दल ने एकदम हमला कर दिया होता तो अनायास सुस्थिति प्राप्त कर लेता, क्योंकि फ्रान्सीसी युवराज के आदमियों के साथ दारुण संघर्ष के बाद अंग्रेज बहुत थक चुके थे। लेकिन अस्पष्ट कारणवश ऑर्लियन्स् बिना कोई आक्रमण किए अपने प्रभाग को कपटपूर्वक युद्धक्षेत्र के बाहर ले गया। इससे अंग्रेजों को राजा जॉन (King John) के नायकत्व में तीसरे फ्रान्सीसी प्रभाग (division) के आने के पूर्व साँस लेने का अवसर मिल गया। अब 'ब्लेक प्रिन्स' ने आक्रमण करना निरापद समझा। अपने सशस्त्र योद्धाओं (men-at-arms) तथा अधिक से अधिक सम्भव धनुर्धरों को अश्वारोहण कराकर, उसने अग्रसरित होती हुई फ्रान्सीसी पंक्ति पर धावा बोल दिया। उसी समय एक पार्श्वीय दल (flanking force) ने काप्ताल द बख (Captal de Buch) के नेतृत्व में फ्रान्सीसियों के पृष्ठभाग (rear) पर आघात किया। इन दो ठीक समय पर किए गए प्रहारों (well-timed blows) ने युद्ध का अन्त कर दिया। फ्रान्सीसी सेना के शेष भाग ने हथियार डाल दिए। राजा और उसके प्रमुख सामन्त बन्दी बना लिए गए।

पैदल लड़ाई करना फ्रान्सीसी सरदारों की भूल थी। वे आक्रमण में पहल कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रहे थे, और भारी कवचों के बोझ से दबे सशस्त्र योद्धा अंग्रेजी पंक्ति तक पहुँचने के लिए आधे मील तक ऊबड़-खाबड़ मैदान में चलने के बाद युद्ध करने योग्य नहीं रह गए थे। अगर वे अश्वारूढ़ रहे होते तो वे शत्रु के निकट और पहले और कम क्लान्तावस्था में पहुँच जाते। इसके अतिरिक्त, क्रेसी के युद्ध के समान, फ्रान्सीसी नरेश को जिस एक पैंतरे (manoeuvre) को आजमा कर देखना चाहिए था वह था चक्करदार प्रगमन (turning movement)। उसके पास इसे आजमाने के लिए पर्याप्त सैनिक भी थे, क्योंकि प्वाक्तियर्स् में दोनों सेनाओं के आकार के विषय में रीतिगत विवाद के बावजूद, इसमें कोई सन्देह प्रतीत नहीं होता कि फ्रान्सीसी संख्या में अंग्रेजों से कम से कम दुगने थे।

क्रेसी के युद्ध के समान इस बार भी अंग्रेजों को अपने अड्डे (base) तक शान्तिपूर्वक लौट जाने के अवसर के अलावा कोई लाभ नहीं हुआ। लेकिन वे अपने साथ एक बहुमूल्य पुरस्कार--फ्रान्सीसी नरेश—को ले गए। इस राजा की बन्दीजीवन के प्रति स्वाभाविक अरुचि का लाभ उठाकर ही एडवर्ड तृतीय (Edward III) फ्रान्सीसियों को ब्रटीनी की लाभप्रद सन्धि (Treaty of Bretigny) मानने के लिए विवश कर सका (१३६०)।

(ख) आगिन्कूर्त (१४१५)—यह युद्ध क्रेसी के युद्ध का लगभग प्रतिरूप था। हेनरी पञ्चम (Henry V) ने नॉर्मण्डी पर आक्रमण किया और फिर कैले (Calais) की ओर लौट पड़ा। आगिन्कूर्त (Agincourt) में उसने एक फ्रान्सीसी सेना को अपना मार्ग अवरुद्ध किए पाया। इस बार फ्रान्सीसियों ने आक्रमण करने में असामान्य हिचकिचाहट प्रदर्शित की, जिससे कुछ इतिहासकारों ने निष्कर्ष निकाला है कि उनकी

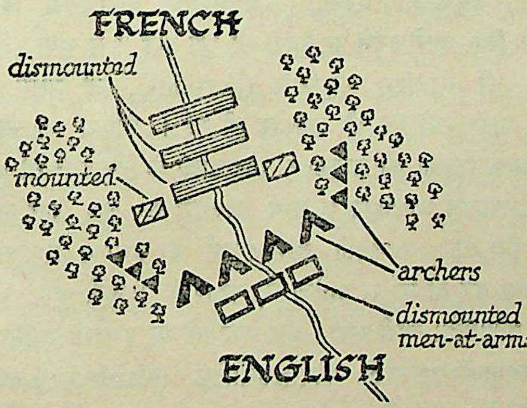

सेना अधिक दुर्बल थी, यद्यपि सभी समसामयिक विवरण इससे सर्वथा उल्टी बात कहते हैं। हेनरी ने क्रेसी के युद्ध की विरचनाओं (formations) तथा समरतन्त्र (tactics) का अनुकरण किया। उसने अपने अश्वावरोही (dismounted) योद्धाओं और धनुर्धरों को दो जंगलों के मध्य खड़ा किया जिससे उनके पार्श्व (flanks)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुरक्षित हो गए। धनुर्धर अपने साथ नोकदार डण्डे ले गए थे जिन्हें उन्होंने तीर चलाना प्रारम्भ करते समय अपने सामने गाड़ लिया, जिससे एक कठघरा सा बन जाए। और युद्धों की तरह इस बार भी अंग्रेजों ने रक्षात्मक युद्ध लड़ने की आशा की थी, इसलिए फ्रान्सीसियों की आक्रमण करने की अनिच्छा से नेताओं को कुछ उलझन हो गई। अन्ततोगत्वा हेनरी ने आदेश दिया "आगे बढ़ो !" (Banners advance!) और समस्त सैन्य-पंक्ति इतनी आगे बढ़ गई कि तीर शत्रु तक पहुँच सके। धनुर्धरों ने अपने डण्डे गाड़ दिए और बाण-वर्षा प्रारम्भ कर दी। इसके अभीष्ट परिणामस्वरूप फ्रान्सीसी सक्रिय होने के लिए बाध्य हो गए। अंग्रेजी पंक्तियों के निरीक्षकों ने एक ज्योति और शत्रु-सैन्य में हलचल होती देखी। यह उन बल्लमधारियों के कारण थी जो शेष सेना से अलग होकर आक्रमण करने स्थिति में आ रहे थे। इसके बाद फ्रान्सीसी सरदार उमड़ कर अपने विनाश के लिए आगे बढ़े। प्वाक्तियर्स् के युद्ध के समान यहाँ भी वे पैदल लड़े। भारी कवचधारी सशस्त्र योद्धा (men-at-arms) वर्षा के कारण दलदली भूमि में घुटनों तक धंस गए। अश्वारोहियों की पार्श्वों पर स्थित लघु टुकड़ियों ने धनुर्धरों से टक्कर लेने का प्रयास किया, पर सफल नहीं हुई। फ्रान्सीसी सरदारों के सामन्ती पूर्वाग्रहों (feudal prejudices) के कारण कलदार धनुर्धारियों (crossbowmen) का समुचित उपयोग न हो सका। मुख्य आक्रमण अश्वावरोही योद्धाओं (dismounted men-at-arms) के तीन प्रभागों (divisions) ने किया जो अंग्रेजों की बाण-वर्षा से भारी संख्या में हताहत होकर एक-एक करके अंग्रेजी सैन्य से टकरा कर छिन्न-भिन्न हो गए। कुछ स्थलों पर सन्निकटीय युद्ध (hand-to-hand fighting) बड़ा भीषण रहा। एक उत्तेजक अवसर पर राजा का भाई हम्फ्रे (Humphrey) 'ड्यूक ऑव एलेंसों' (Alencon) द्वारा गिरा दिया गया, और उसको बचाने के लिए आगे बढ़ने पर हेनरी को बुरी तरह पीटा गया। इस दुस्साहसिक भिड़न्त में राजा की रत्नजटित मुकुटिका (coronet), जो उसने अपने शिरस्त्राण (helmet) पर धारण की हुई थी, खसोट ली गई। लेकिन फ्रान्सीसियों का यह असीम साहस उनके शत्रुओं की उत्कृष्टतर तीरन्दाजी के विरुद्ध किसी काम न आया। उनके आक्रमण भयास्पद जनसंहार के साथ असफल कर दिए गए और उनकी सेना रणक्षेत्र से भाग निकली। फ्रान्सीसी सामन्त वर्ग की लगभग एक सम्पूर्ण पीढ़ी इस अभागे दिन विनष्ट कर दी गई। अंग्रेजों ने, यद्यपि वे विजयी हुए, कैले (Calais) के ओर अपना प्रत्यावर्तन जारी रखा और जलपोतों पर इंग्लैण्ड रवाना हो गए।

इन अभियानों का न तो कोई युद्धनीतिक (strategic) लक्ष्य था और न कोई युद्धनीतिक परिणाम ही निकला। ये हमले मात्र लूटपाट के लिये किए गए थे। इनकी निरर्थकता शानदार परन्तु निष्फल विजयों में, जो इनके दौरान प्राप्त की गईं, छिप गई। धनुर्धरों और अश्वावरोही योद्धओं (dismounted men-at-arms) का संयोजन (combination) चमत्कार पैदा कर सकता था, बशर्ते शत्रु को आक्रमण करने के लिए लालायित किया जा सकता। जब अंग्रेजों को पहले आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करना पड़ा, उनके समरतन्त्र (tactics) का लाभ बहुत कुछ तिरोभूत हो गया। उनकी सैनिक-व्यवस्था (military system) की यह एक घातक दुर्बलता थी। रक्षात्मक युद्ध लड़ने के लिए बाध्य होने के कारण वे संग्राम (battles) जीत सकते थे, अभियान (compaigns) नहीं; वे लूटपाट (raids) में सफलता प्राप्त कर सकते थे, प्रदेश विजय (conquest) में नहीं। जब ब्रटीनी की सन्धि (Peace of Bretigny) के उपरान्त फिर लड़ाई छिड़ी तो सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी सेनाध्यक्ष बर्त्रांद् दु गस्क्लें (Bertand du Guesclin) ने छापामार युद्धनीति (guerilla warfare) का अनुसरण किया। वह जम कर युद्ध लड़ने (pitched battles) से बचता रहा और अपने को शत्रु के कॉलमों को परेशान करने एवं उनकी रसद को रोकने तक सीमित रखा। कुछ ही वर्षों में अंग्रेज शत्रु-देश में बहुसंख्यक सेना द्वारा सामना किए जाने और अपनी युद्धनीतिक (strategic) दुर्बलता की समरनीतिक (tactical) विजयों द्वारा क्षतिपूर्ति करने में असमर्थ होने के कारण कुछ समुद्रतटीय नगरों को छोड़कर उन सभी फ्रान्सीसी प्रदेशों से निकाल दिए गए जिन को उन्होंने अधिकृत किया हुआ था।

आगिन्कूर्त के युद्ध के उपरान्त हेनरी पञ्चम ने फ्रान्स में अंग्रेजी प्रभुत्व पुनः स्थापित करने का विधिवत् प्रयास किया। उसने लोआर् (Loire) के उत्तर में स्थित प्रान्तों पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया, लेकिन अंग्रेजी सेना के शौर्य के कारण नहीं वरन् 'बर्गण्डियन' (Burgundians) नामक एक शक्तिशाली फ्रान्सीसी दल की सहायता से, जिसके साधन फ्रान्स के राजा के साधनों के लगभग बराबर थे। जब १४३५ में 'बर्गण्डियनों' ने फ्रान्सीसी नरेश के प्रति अपनी सहज निष्ठा (natural allegiance) फिर मान ली, अंग्रेज उत्तरी फ्रान्स से अपेक्षया अधिक सुगमता से निकाल दिए गए। इसके पूर्व ही जोॅन ऑव आर्क (Joan of Arc) के नेतृत्व में फ्रान्सीसी सैनिक शक्ति का असाधारण पुनरुत्थान हो चुका था। जोॅन (१४१२-३१) इतिहास की उन समस्याओं में से एक है जिनका समाधान नहीं हो पाया है। इतना समय व्यतीत हो जाने के कारण अब यह निश्चित करना असम्भव है कि उसमें खुद में सैनिक योग्यता थी अथवा वह फ्रान्सीसी सेनापतियों के हाथ में एक हथियार मात्र थी। इतना निश्चित है कि उसने फ्रान्सीसी सैनिकों के मनोबल (morale) को, जो विपत्तियों के एक सुदीर्घ क्रम के कारण टूट चुका था, नवजीवन प्रदान किया[1]।

---

१. जोॅन ऑव आर्क लोॅरेॅन के एक कृषक की कन्या थी। कहा जाता है कि जब अंग्रेजों ने ओर्लियन्स् का घेरा डाला हुआ था, जोॅन को दैवी प्रेरणा हुई कि वह फ्रान्स जाए और ओर्लियन्स् को स्वतन्त्र कराकर फ्रान्सीसी युवराज चार्ल्स् का अभिषेक कराए। जोॅन को इन उद्देश्यों की पूर्ति में आशातीत सफलता मिली। उसके आने के नौ रोज बाद ही ओर्लियन्स् नगर, जिसे शत्रु ने सात माह से अधिक से घेरा हुआ था, स्वतन्त्र हो गया (१४२९)। इसके अतिरिक्त जोॅन ने फ्रान्सीसी सैनिकों में निराशा के स्थान पर आशा और विश्वास का सञ्चार किया जिसके कारण युद्ध की स्थिति एकदम बदल गई और फ्रान्सीसियों ने अनेक महत्त्वपूर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन फ्रान्सीसियों के जोश (*elan*) के पुनरुज्जीवन के समान ही महत्त्वपूर्ण था दु`गस्क्लें (du Guesclin) द्वारा आविष्कृत छापामार समरनीति (guerilla tactics) का पुनरारम्भ और तोपों (cannon) का प्रयोग, जिससे लम्बे धनुष (long bow) का प्रभुत्व समाप्त हो गया। सैनिक स्थिति अंग्रेजों के प्रतिकूल कितने पूर्ण रूप से हो गई थी, यह शतवर्षीय युद्ध के अन्तिम दो संग्रामों से स्पष्ट हो जाता है। फॉर्मिनी (Formigny) के युद्ध (१४५०) में अंग्रेज अपनी रक्षात्मक स्थिति (defensive position) से गोलों की मार द्वारा हटने के लिए बाध्य कर दिए गए और उन्हें अलाभप्रद स्थिति में आक्रमण करना पड़ा। कास्तिलों (Castillon) के युद्ध (१४५३) में उन्होंने स्वेच्छा से आक्रमण किया, लेकिन फ्रान्सीसियों के पास ३०० तोपें थीं जिनसे उन्होंने आक्रमणकारियों को तहस-नहस करके उनके ढेर लगा दिए। जिन परिस्थितियों ने इंग्लैण्ड को विजयी राष्ट्र बनाया था, वे तिरोभूत हो चुकी थीं। दूर से मार कर सकने में श्रेष्ठत्व (fire superiority) अब एक नए हथियार के पास चला गया था, और सैनिक इतिहास का एक नवीन युग प्रारम्भ हो गया था।

'स्विस पाइकमेन'—इसके पूर्व कि बारूद (gunpowder) को सांग्रामिकता के क्षेत्र में अपना पूरा प्रभाव डालने का अवसर मिलता, एक नई बात हुई जिसे अश्वारोही सेनाओं के युग (cavalry age) का उपसंहार माना जा सकता है। यह थी एक ऐसी पदाति सैन्य का निर्माण जो आक्रमक-युद्ध (offensive) कर सकती थी, यहाँ तक कि अश्वारोही सेनाओं के विरुद्ध भी। लीजन के समय से पदाति-सैन्यों की यह भारी कमी रही थी कि वे आक्रमण नहीं कर पाती थीं, केवल रक्षात्मक युद्ध ही लड़ती थीं। इस दोष को दूर करने का श्रेय स्विट्ज़रलैण्डवासियों को प्राप्त है। स्विट्ज़रलैण्ड के केन्टनों (cantons) की सेना नागरिकों की लोकसेना (citizen-militia) थी। यह मेसीडोनवालों के सरिस्सा (*sarissa*) का स्मरण दिलानेवाले इक्कीस फुट लम्बे बर्छों अथवा 'पाइकों' (pikes) से सज्जित एक पदाति सैन्य थी। स्विट्ज़रलैण्डवालों की विरचना (formation) भी मेसीडोन के फॅलॅंक्स् का स्मरण दिलाती है। रक्षात्मक (defensive) युद्ध लड़ते समय वे विशाल वर्ग (squares) बनाते थे जिनमें कलदार धनुर्धर (crossbowmen) तथा भालाधारी सैनिक (halberdiers) कोनों पर रहते थे। आक्रमण करते समय वे चौड़े और गहरे कॉलमों में अग्रसरित होते थे। स्विट्ज़रलैण्ड के पदाति सैनिकों की विलक्षणता यह थी

सफलताएँ प्राप्त कीं। इसीलिए अंग्रेजों और उनके समर्थक बर्गण्डियनों (Burgundians) को वह चुड़ैल (witch) लगती थी और फ्रान्सीसी नरेश और उसके सैनिकों को देवी। १४३१ में वह शत्रुओं द्वारा पकड़ ली गई। उन्होंने उसे चुड़ैल घोषित करके रुएन के बाजार में जीवित जला दिया। जोॅन में दैवी शक्ति थी या नहीं यह प्रश्न विवादास्पद हो सकता है, लेकिन इतना निश्चित है कि अट्ठारह वर्ष की लड़की में सैनिक प्रतिभा नहीं रही होगी। उसकी सफलताओं के मुख्य कारण सम्भवतः उसका आत्म-विश्वास, जीवन के लक्ष्य की स्पष्टता और सैनिकों के मनोबल को बढ़ाने की क्षमता थी।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि वे अपनी व्यवस्था (alignment) को बिगाड़े बिना आगे बढ़ सकते थे, घूम सकते थे, दिशा-परिवर्तन कर सकते थे और पीछे लौट सकते (retire) थे। इन जटिल पैंतरों (complicated manoeuvres) को सम्पादित कर सकने की उनकी यह योग्यता सर्वतःपूर्ण और कठोर प्रशिक्षण (drilling) पर निर्भर थी। प्रत्येक स्वस्थ स्विट्ज़रलैण्डवासी युवावस्था से वृद्धत्व आने तक लोकसेना में सेवा करता था और अपना लगभग सम्पूर्ण अवकाश सैनिक अभ्यास में लगाता था। यह उसके मनोरञ्जन के ढंगों में से एक था। प्रशिक्षण (drill) की नीरसता को कम करने और सैनिक-संचलन (march) के अनुशासन को सुधारने के लिए स्विट्ज़रलैण्डवालों ने सैनिक-संगीत (military music) अथवा नगाड़े (drum) की ध्वनि पर कदम मिला कर चलने की प्रथा प्रचलित की।

समरक्षेत्र में स्विट्ज़रलैण्ड की सेना तीन प्रभागों (divisions) में—अग्रदल (advance-guard), मुख्य दल (main battle) तथा पिछला दल (rear-guard)—खड़ी होती थी। जब एक प्रभाग शत्रु पर आक्रमण करता और उसे उलझाता था, शेष प्रभाग उसके पार्श्वों और पृष्ठभाग पर हमला करते थे। वे अश्वारोही सैनिकों पर आक्रमण करने में नहीं हिचकिचाते थे और लगभग निरपवाद रूप से सफल होते थे। इस समरनीति (tactics) के द्वारा स्विट्ज़रलैण्ड ने लगातार कई शानदार विजयें प्राप्त कीं—मोर्गार्टेन (१३१५), लौपेन (१३३९), सेम्पाख (१३८६), नाफेल्स् (१३८८) ग्राँसों (१४७६), मोराट तथा नान्सी (१४७७)। उन्होंने ड्यूक ऑव ऑस्ट्रिया से अपनी स्वतन्त्रता अर्जित की और ड्यूक ऑव बर्गण्डी के विरुद्ध उसकी रक्षा की। उनके लड़ने के ढंग इतने प्रसिद्ध हो गए कि स्विट्ज़रलैण्ड के वेतनभोगी सैनिक यूरोप की सभी प्रमुख सेनाओं में भर्ती किए जाते थे। अश्वारोही सैनिक (mounted soldier) की श्रेष्ठता अन्तिम और पुनरलभ्य रूप से (irretrievably) उखाड़ फेंकी गई। लेकिन स्विट्ज़रलैण्डवालों की समरनीति भी सैन्य-विज्ञान और शस्त्रास्त्र (armament) की प्रगति होने पर पिछड़ गई। तोप (cannon) और दस्ती बन्दूक (musket) जैसे नए हथियारों के प्रयोग से यह असम्भव हो गया कि असाहाय्यित (unaided) बर्छीधारी सैनिक (pikemen) रणक्षेत्र में सफलताएँ अर्जित कर सकें। जब मारिग्नानो (Marignano) के युद्ध में (१५१५) स्विट्ज़रलैण्ड के वेतनभोगी सैनिकों का हमला फ्रान्सीसी तोपों द्वारा विफल कर दिया गया तो यह इस बात का चिह्न था कि उनके दिन लद चुके थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ४

आग्नेयास्त्रों का आविर्भाव

तोप और बन्दूक—बारूद (gunpowder) की खोज की तिथि स्थिर करना कठिन है। कम से कम एक सहस्र वर्ष पूर्व चीनियों को इसका ज्ञान था, क्योंकि उनके देश में शोरा (saltpetre), जो इसका मुख्य संघटक (ingredient) है, शुद्ध रूप में मिलता है[1]। लेकिन वहाँ इसका प्रयोग अघातुक आतिशबाजी तक सीमित था। तोप का आविष्कार, जो बारूद की विस्फोटक (explosive) शक्ति द्वारा गोलों (projectiles) को सवेग प्रक्षेपित करने (hurling) का एक यन्त्र है, यूरोप में १३०० के आसपास हुआ। प्राचीनतम तोपों का प्रयोग मुहासरों (sieges) में होता था और उनका पहला प्रभाव यह हुआ कि मध्यकालीन दुर्ग अव्यवहार्य (obsolete) हो गए। शतवर्षीय युद्ध के अन्तिम भाग में फ्रान्सीसियों ने अंग्रजों के नॉर्मण्डी (Normandy) तथा गुइने (Guienne) में स्थित किलों को तोपखाने (artillery) की सहायता से गिरा दिया। महान् नगर कुस्तुन्तुनिया (Constantinople) का भी, जिसने कितने ही हमलों को विफल कर दिया था, १४५३ में तुर्कों की मुहासरे की तोपों (siege guns) के सम्मुख पतन हो गया।

तोपखाने का रणक्षेत्र में प्रयोग बाद में प्रारम्भ हुआ। जैसा कि हमने देखा है, तोपों ने ही फॉर्मिनी (Formigny) तथा कास्तिलों (Castillon) के युद्धों का निर्णय किया था, लेकिन उनमें गतिशीलता (mobility) के अभाव के कारण वे केवल रक्षात्मक युद्धों के ही उपयुक्त रहीं। फ्रान्सीसियों ने, जो इतिहास के सबसे पहले तोपची (pioneer artillerists) थे, उनको आक्रमक-युद्धों के अनुकूल बनाया। उन्होंने तोपगाड़ी के अग्रभाग को संयुक्त करने के सिद्धान्त (principle of the limber) की खोज की और हल्की तोपों को छकड़ों (carts) में लगाना अथवा ठेलों पर लादना प्रारम्भ किया। सोलहवीं शती में इटालवी रणक्षेत्रों में फ्रान्सीसियों को उनके हल्के तोपखाने की गतिशीलता के कारण असाधारण विजयें प्राप्त हुईं।

---

१. बारूद का सबसे प्राचीन उल्लेख तांग युग के कीमियागरी (alchemy) पर लिखे गए एक ग्रन्थ में मिलता है। इसमें कहा गया है कि एक व्यक्ति ने गन्धक (sulphur), हरिताल (orpiment), शोरे (saltpetre) और मधु (honey) का मिश्रण बनाया और आग में डाल दिया। इसके परिणामस्वरूप उसने अपना मुँह और हाथ ही नहीं जला लिया, उसका मकान भी जलकर गिर पड़ा।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन इस समय तक एक प्रतिद्वन्द्वी का जन्म हो गया था जिससे विशाल आग्नेयास्त्रों (large firearms) का और अधिक विकास लगभग एक शती के लिये रुक गया। यह थी दस्ती बन्दूक (hand gun) अथवा 'आर्केबस' (arquebus), जिसे आधुनिक राइफल की पूर्वज कहा जा सकता है। लघु आग्नेयास्त्रों (small firearms) का सर्वप्रथम प्रयोग स्पेनवासियों ने किया। उनके महान् कैप्टेन (Great Captain), गोञ्जालो दि कार्दोबा (Gonzalo de Cardoba) ने दस्ती बन्दूक के लिए एक प्रभावशाली रणक्षेत्रीय नीति (field tactics) स्थिर की। उसने खाइयाँ खुदवाईं और कौशलपूर्वक शत्रु को आक्रमण करने के लिये लालायित किया। ऐसी खाइयों अथवा कठघरों पर, जिनमें आर्केबसधारी सैनिकों की पंक्ति रहती थी, बर्छीधारी सैनिक अथवा अश्वारोही योद्धा निष्फल ही आक्रमण करते थे। इस नवीन समरनीति की श्रेष्ठता बिकोका (१५२२) और पाविया (१५२५) के इटालवी युद्धक्षेत्रों में सिद्ध हो गई। स्पेनवासियों की लघु बन्दूकों की प्राणघातक अग्निवर्षा फ्रान्सीसियों की भारी तोपों से अधिक लाभकर सिद्ध हुई। सेनाध्यक्षों ने आर्केबसधारी सैनिकों को उनकी गतिशीलता (mobilty) के कारण अधिक पसन्द किया, जिसके परिणामस्वरूप तोपखाने में सुधार की अपेक्षा इस हथियार के विकास को प्राथमिकता मिली। सोलहवीं शताब्दी के अन्त में ऐसा प्रतीत होने लगा कि सम्भवतः अधिक लम्बी मार करने वाली मुस्केट (musket) आर्केबस (arquebus) का स्थान ले लेगी। लेकिन शुरू में, इसके वजन के कारण, इसे पायेदार टेक (forked rest) पर सहारा देना होता था, जिससे इसमें गोली भरने (loading) और चलाने (firing) में बड़ी देर लगती थी। इसलिये आर्केबसधारी सैनिक मुस्केटधारी सैनिकों के साथ सत्रहवीं शती में भी काफी समय तक रखे जाते रहे। अन्त में पिस्तौल (pistol) के आविष्कार से, जो एक लघु कर दी गई आर्केबस है, अश्वारोही सैनिक को एक सुविधापूर्ण आग्नेयास्त्र (firearm) मिला।

'मुस्केटियर' और 'पाइकमेन'—संगीन (bayonet) के आविष्कार तक आर्केबस अथवा मुस्केटधारी सैनिक सन्निकटीय संघर्ष (hand-to-hand encounter) में बहुत असहाय रहता था, विशेषतः अश्वारोही सैनिक के सामने। इसलिए मुस्केटधारी सैनिकों (musketeers) और बर्छीधारी सैनिकों (pikemen) को पारस्परिक सहायता के लिए एक साथ रखना आवश्यक था। वरना मुस्केटधारी सैनिक अश्वारोहियों द्वारा रौंद डाले जाते और बर्छीधारी सैनिक (pikemen) पिस्तौलधारी अश्वारोहियों द्वारा जो अपने को उनकी बर्छियों की मार के बाहर रखते। मुस्केटधारी और बर्छीधारी सैनिकों के मिश्रित गणों (companies) की सम्यक् विरचना की समस्या सोलहवीं शताब्दी में पर्याप्त सैनिक विचार-विमर्श का विषय रही। सबसे सामान्य व्यवस्था थी बर्छीधारियों का एक वर्ग (square) बनाना जिसके कोनों पर मुस्केटधारियों के दल (groups), जिन्हें "आस्तीन" ("sleeves") भी कहा जाता था, रहते थे। अगर शत्रु-अश्वारोही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुत निकट आ जाते थे तो मुस्केटधारी सैनिक या तो बर्छियों की शरण में आ जाते थे अथवा वर्ग में घुस जाते थे। लेकिन इससे बर्छीधारी सैनिकों (pikemen) की विरचना एक बड़े नाजुक अवसर पर अस्त-व्यस्त भी हो सकती थी। इस समस्या का कोई वस्तुतः सन्तोषप्रद समाधान तब तक नहीं मिला जब तक सत्रहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में संगीन (bayonet) के आविष्कार ने पदाति सैनिक को बर्छीधारी और मुस्केटधारी दोनों न बना दिया। शुरू में संगीन एक छुरा मात्र थी जिसे मुस्केट की नली के मुँह में लगा दिया जाता था। लगभग तत्काल ही इसका स्थान छल्ले अथवा सॉकेट वाली संगीन (ring or socket bayonet) ने ले लिया। यह नली में लगाई जाती थी और इसके लगे रहने पर मुस्केटों को छोड़ने में कोई बाधा नहीं पड़ती थी।

सोलहवीं शताब्दी में स्पेन की पदाति-सैन्य यूरोप में सर्वोत्तम थी। होलैण्ड के स्वतन्त्रता-संग्राम (Dutch War of Independence) में इसने खूब कीर्त्ति अर्जित की और अत्यधिक बहुसंख्यक शत्रुओं पर आक्रमण करने में कभी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। लेकिन सर्वत्र उसे एक बाधा—रक्षणात्मक उपायों (fortifications) के विकास का सामना करना पड़ा। मध्यकालीन दुर्ग का स्थान सर्वथा नवीन किलों और प्राचीरों से सुरक्षित नगरों (fortified towns) ने, जो तोपों के हमलों को विफल कर देते थे, ले लिया था एवं गत्यात्मक युद्धों (war of movement) का स्थान मुहासरा-युद्धों (siege warfare) ने। इञ्जीनियर का तोपची (artillerist) के साथ सुदीर्घ संघर्ष प्रारम्भ हुआ। पाविया (Pavia) के युद्ध (१५२५) के पश्चात् सोलहवीं शताब्दी में कोई आमने-सामने जम कर लड़ा जाने वाला महत्त्वपूर्ण संग्राम (pitched battle) नहीं हुआ। होलैण्ड में, जो नदियों (streams) और खातों (ditches) से कटा-फटा हुआ देश है, उसके निवासियों (Dutch) का स्वतन्त्रता-संग्राम मुहासरों की शृंखला जैसा हो गया, और महान् 'मॉरिस ऑव नासो' (Maurice of Nassau) ने मुहासरा-युद्ध-विशारद (master of siege warfare) के रूप में ही ख्याति अर्जित की। इससे, जैसा कि प्रतिरक्षा (defence) के आक्रमण (attack) से सबलतर होने पर हमेशा होता है, युद्धनीति (strategy) और समरतन्त्र (tactics) की प्रगति रुक गई। तीस वर्षीय युद्ध (Thirty Years' War) तक (१६१८-४८) युद्धकला का और आगे विकास न हो सका। युद्धकर्म के इतिहास का यह युग गुस्टावस अडोल्फस (Gustavus Adolphus) के महान् नाम के साथ सम्बद्ध है।

गुस्टावस अडोल्फस—गुस्टावस[1] के सैनिक सुधारों में कुछ प्रवृत्तियाँ, जो

१. गुस्टावस अडोल्फस स्वीडन के महानतम नरेशों में गिना जाता है। वह एक महान भाषाविद् (वह आठ भाषाएँ बोलता था), ऊर्जस्वी सैनिक, मतिमान् राजनीतिज्ञ और संयत महत्त्वाकांक्षाओं वाला शासक था। अपनी प्रतिभा से उसने स्वीडन को, कम से कम अल्पकाल के लिए, यूरोप का एक सम्मानित राष्ट्र बना दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोलहवीं शताब्दी में सक्रिय थीं, अपनी युक्तियुक्त परिणति (logical conclusion) को प्राप्त हुईं।

(अ) स्थायी सेनाओं की ओर पहले से ही झुकाव था। 'फ्रेञ्च ओर्डोनेन्स् कम्पनीज़' (French Ordonnance Companies) तथा 'स्पेनिश तरशिओज़' (Spanish Tercios) नियमित सैनिकों के प्रारम्भिक उदाहरण हैं। गुस्टावस इनसे और आगे बढ़ा। उसने एक राष्ट्रीय सेना (national army) का निर्माण किया जो प्रादेशिक लोकसेना (territorial militia) पर, जिससे उसे रंगरूट (recruits) मिलते थे, आधारित थी। स्वीडन में प्रत्येक स्वस्थ पुरुष से सैनिक सेवा ली जा सकती थी और प्रत्येक जिले से राजकीय आयुक्त (royal commissioners) स्थानीय न्यायज्ञों (local juries) की सहायता से आवश्यक संख्या में पुरुषों का चुनाव करते थे। लेकिन स्वीडन की आबादी बहुत कम थी और अनिवार्य भर्ती (conscription) से उससे आधे से अधिक सैनिक नहीं मिल पाते थे जितने एक समुद्र पार लड़े जाने वाले युद्ध के लिए आवश्यक थे। शेष सैनिक उन लोगों में से भर्ती किए जाते थे जो विदेशों से भाग्य आज़माने के लिए आते थे, विशेषतः स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड से आए साहसी योद्धाओं में से।

(आ) गुस्टावस ने पदाति-सैन्य का पुनर्गठन किया। अभी तक मुस्केटधारी सैनिकों (musketeers) की संख्या अधिक करने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। गुस्टावस ने अपनी पदाति-सैन्य के दो-तिहाई भाग को एक नए प्रकार की मुस्केट से, जो पहले से हल्की और छोटी थी और बिना सहारे के चलाई जा सकती थी, सज्जित किया और एक कारतूस (cartridge) का आविष्कार किया जिससे मुस्केट को भरने (loading) की प्रक्रिया सरल हो गई। अभी तक मुस्केटधारी सैनिक दस पंक्तियों में खड़े किए जाते थे और एक बार में एक पंक्ति गोली चलाती थी। प्रत्येक पंक्ति गोली चलाने के बाद पीछे हट जाती थी। गोली भरने की प्रक्रिया की मन्दता के कारण यही एक ऐसा उपाय था जिसके द्वारा पदाति-सैन्य गोली वर्षा को बिना रुके जारी रख सकती थी। गुस्टावस ने गोली भरने की प्रक्रिया की गति बढ़ाई और अपने मुस्केटधारी सैनिकों को छः पंक्तियों में खड़ा किया जिनमें तीन पंक्तियाँ एक साथ गोलीवर्षा करती थीं—पहली घुटनों के बल बैठकर, दूसरी झुककर और तीसरी सीधे खड़े रहकर। कभी-कभी छहों पंक्तियाँ मिलकर तीन पंक्तियों में खड़ी हो जाती थीं, और तब सब एक साथ भीषण गोली-वर्षा करती थीं।

(इ) गुस्टावस ने रैखिक-समर-तन्त्र (linear tactics) का सर्वप्रथम प्रयोग किया। उसने पदातियों के, स्पेनवालों द्वारा अनुगृहीत, पचास पंक्ति गहरे ठोस वर्गों (solid squares) को त्याग दिया और १२० सैनिकों के गण (companies) बनाए। ये तोपों के लिए लघुतर लक्ष्य होते थे और इनसे अधिक संख्या में मुस्केटों को क्रियारत किया जा सकता था। स्वीडन की पदाति-सैन्य दो लम्बी पंक्तियों में खड़ी की जाती थी जिनमें मुस्केटधारी और बर्छीधारी सैनिकों के गण (compa-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

nies) एक दूसरे के बाद एकान्तरिक (alternative) रूप से रहते थे। कुछ सैनिक आरक्षित (reserve) रखे जाते थे। मुस्केटधारी सैनिकों की पंक्ति कोनों पर समकोण बनाती हुई आगे निकली होती थी जिससे एक केन्द्राभिमुख (converging) अग्नि-वर्षा की जा सके। अगर उन पर आक्रमण होता था तो मुस्केटधारी सैनिक बर्छीधारी सैनिकों के पीछे आश्रय ले लेते थे, लेकिन उनसे आशा की जाती थी कि वे अपनी मुठियादार मुस्केटों (clubbed muskets) के साथ लड़ाई में भाग लेंगे।

(ई) गुस्टावस को रणक्षेत्रीय तोपखाने (field artillery) का जनक कहा जाना चाहिए। उसने एक हल्की तीन पौण्ड के गोले छोड़नेवाली तोप (three pounder gun) का आविष्कार किया जो मुस्केट के समान तेजी के साथ चलाई जा सकती थी, और एक घोड़े अथवा तीन आदमियों द्वारा खींची जाती थी। ऐसी दो तोपें प्रत्येक पदाति बटेलियन को दी जाती थीं; उनको एक स्थान पर एकत्र करके भी प्रयुक्त किया जाता था।

(उ) सोलहवीं शताब्दी में अश्वारोही सेनाओं का ह्रास हो गया था। पिस्तौल के आविष्कार से वे अनुपयोगी होती जा रही थीं। अब तलवार से आक्रमण करने के स्थान पर हर पंक्ति अपने घोड़े आगे बढ़ाती थी और शत्रु पर अपनी पिस्तौल छोड़ कर पृष्ठभाग (rear) की ओर लौट जाती थी। यही वह क्रिया थी जिसे 'काराकोल' (*caracole*) कहा जाता था। गुस्टावस ने इसे बन्द कर दिया। उसका अश्वारोही दस्ता छः से दस पंक्ति तक गहरा होने के बजाय केवल तीन पंक्ति गहरा होता था और दुलकी चाल से शत्रु पर आक्रमण करता था। इसकी केवल अग्रपंक्ति (front rank) पिस्तौल छोड़ती थी। अश्वारोही स्क्वाड्रनों (squadrons) में मुस्केट-धारी गण (companies) मिला दिए गए थे। यह आक्रमण (attack) और प्रतिरक्षा (defence) दोनों के लिए ही प्रभावकर बात थी। अश्वारोही सेना यद्यपि अब रणक्षेण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नहीं रह गई थी, लेकिन मुख्य आक्रमक दल (striking arm) अब भी यही थी, और सेना का एक तिहाई से लेकर आधा भाग तक अश्वारोही सैनिक ही होते थे।

ब्रीटेनफेल्ड (१६३१)—दो रणक्षेत्रों में, जिनमें उसने विजय प्राप्त की, गुस्टावस ने स्वीडन के नवीन युद्ध-यन्त्र की शक्ति को प्रदर्शित किया। ब्रीटेनफेल्ड (Breitenfeld) के युद्ध में उसका मुकाबिला साम्राज्य[1] के ज्ञानवृद्ध (veteran) सेनापति टिली (Tilly) ने किया जिसकी सफलताओं का लेखा (record) बड़ा शानदार और सुदीर्घ था। टिली ने अपनी अश्वारोही सैन्य को बाजुओं (wings) पर रखा और पदाति-सैन्य को १५००-२००० सैनिकों के ठोस वर्गों में व्यवस्थित करके मध्य में। गुस्टावस ने भी वैसी ही विरचना अपनाई, सिवाय इसके कि उसके पदाति सैनिक दो पंक्तियों में खड़े हुए और कुछ आरक्षित (reserve) रहे।

१. यहाँ 'साम्राज्य' से आशय 'पवित्र-रोमन-साम्राज्य' (Holy Roman Empire) से है। —अनु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वीडनवालों की बायीं ओर उनके मित्र सेॅक्सन (Saxons) स्पेनी ढंग के ठोस वर्गों में खड़े हुए थे।

युद्ध का प्रारम्भ तोपखानों के संघर्ष से हुआ जिसमें स्वीडनवालों ने साम्राज्यिक सेना (Imperial army) के एक गोले का उत्तर तीन गोलों से दिया। इसी बीच में गुस्टावस ने अपनी सेना को, सम्भवतः फैलाव के लिए अधिक स्थान पाने के हेतु, दाहिनी ओर खिसकाना प्रारम्भ किया। लेकिन साम्राज्यिक सेना का बायाँ भाग अपने को खतरे में महसूस करने लगा, और उसके नायक पापेनहीम (Pappenheim) ने स्वनिर्णयानुसार (on his own initiative) स्वीडनवालों पर अश्वारोही सेना के साथ आक्रमण कर दिया। टिली ने, इस शिकवे के साथ कि उसके मातहतों ने उसकी योजना पर पानी फेर दिया है, अपनी समस्त सेना को आक्रमण का आदेश दिया। उसकी दाहिनी ओर फुर्स्टेनबर्ग (Furstenberg) के नेतृत्व में साम्राज्यिक (Imperial) अश्वारोही सेना ने सेॅक्सनों (Saxons) को, जो गुस्टावस के दाहिनी ओर अग्रसरण के कारण कुछ अकेले पड़ गए थे, खदेड़ दिया। स्वीडनवालों का वाम पक्ष अब अरक्षित हो गया। टिली को लगा कि यह उसके लिए बड़ा अच्छा मौका है। उसने स्वीडनवालों के अरक्षित पार्श्व पर आक्रमण करने के हेतु अपनी पदाति-सैन्य को घुमाया। यह बड़ा खतरनाक पैंतरा था। इसके लिए गतिशीलता में साम्राज्यिक सैनिक (Imperials) अपने प्रतिस्पर्द्धियों से हीनतर थे। गुस्टावस ने प्रतिघात (counter-stroke) की तैयारी की। उसका दाहिना भाग पापेनहीम का आक्रमण निष्फल कर दिए जाने के कारण सुरक्षित था। संकटग्रस्त वाम भाग के पास बलवर्धक दल भेजते हुए उसने अपने दाहिने भाग को साम्राज्यिक सैन्य के पार्श्व पर आक्रमण करने के लिए घुमाया। अब दोनों सेनाओं में गति (speed) और पैंतरा बदलने की शक्ति (manoeuvring power) में स्पर्द्धा सी हो गई, जिसमें स्वीडनवालों ने विजय पाई। अपनी अश्वारोही सेना से वञ्चित (फुर्स्टेनबर्ग सेॅक्सनों का पीछा कर रहा था और पापेनहीम पलायन कर चुका था) साम्राज्यिक सेना के वर्गों (squares) ने अपने को शनैः शनैः अधिकाधिक घिरा हुआ पाया। वे बहादुरी से लड़े, लेकिन भारी मुस्केॅटों और तोपखाने की अग्निवर्षा के कारण उनकी पंक्तियाँ पतली हो गईं और अश्वारोहियों के लगातार आक्रमणों से उनकी विरचनाएँ (formations) बिगड़ गईं। जमकर युद्ध करने के उपरान्त समस्त साम्राज्यिक पदाति सैन्य उखड़ गई। स्वयं टिली घायल हो गया और कुछ बचे-खुचे सैनिकों के साथ उस पहले रणक्षेत्र से लौट गया जिसमें उसे पराजित होना पड़ा।

लुटजेन (१६३२)—गुस्टावस को अपने दूसरे महत्त्वपूर्ण युद्ध में उतनी निर्णायक सफलता नहीं मिली। साम्राज्यिक सेनाध्यक्ष वालेन्स्टीन (Wallenstein) ने अपनी सेना, जिसका दाहिना प्रभाग लुटजेन (Lutzen) ग्राम के सहारे-सहारे था, लीपज़िग (Leipzig) को जाने वाले राजपथ पर तैनात की। साम्राज्यिक सेना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की विरचना बहुत कुछ ब्रीटेनफेल्ड के सदृश थी, लेकिन वालेन्स्टीन ने स्वीडन-वासियों की कुछ बातें सीख ली थीं। उसने मुस्केटधारी सैनिकों को अश्वारोही-सैन्य में मिला दिया, पदातियों की विरचना कम चौड़ी कर दी, और सड़क के किनारे खुदी खाइयों के सहारे-सहारे कुशल निशानेबाज (harpshooters) खड़े किए। जिस दिशा से गुस्टावस आ रहा था, उसके कारण वह वालेन्स्टीन के दाहिने पार्श्व पर आ पहुँचा। परन्तु उसने इस स्थान से शत्रु पर आक्रमण करने का प्रयास नहीं किया। अगर वह ऐसा करता तो उसे दलदल से भरे हुए मैदान को पार करना पड़ता और जलते हुए लुटजेन ग्राम से होकर गुजरना पड़ता जिससे उसके आदमी निश्चयतः अव्यवस्थित हो जाते। उसने आगे बढ़ते जाना और अपने सैनिकों को सड़क के दूसरी ओर साम्राज्यिक सैनिकों के समानान्तर तैनात करना पसन्द किया। लुटजेन का युद्ध बहुत सरल था। इसमें सामरिक पैंतरेबाजी का प्रयोग बहुत कम हुआ। वालेन्स्टीन रक्षात्मक युद्ध करता रहा और स्वीडनवासियों ने उसकी स्थिति (position) पर लगातार कई बार घातक आक्रमण किए। पापेनहीम (Pappenheim) बलवर्धक सैन्य लेकर आ रहा था; और वालेन्स्टीन को देरी करने में लाभ ही लाभ था। भाग्य ने उसका साथ दिया, क्योंकि रणक्षेत्र पर गहरा कुहरा छाया हुआ था और स्वीडनवाले दोपहर होने के पूर्व तक अपना पहला धावा न कर सके। अपने प्रचण्ड आक्रमण के कारण वे सड़क के पार साम्राज्यिक सेना की तोपों के बीच में आ पहुँचे। वालेन्स्टीन ने तत्काल प्रत्याक्रमण किया। स्वीडनी सेना के पदाति प्रभाग और दाहिने पक्ष के अश्वारोही दल के बीच एक रिक्त स्थान बन गया, और साम्राज्यिक सेना के कवचधारी अश्वारोही (Imperial cuirassiers) उसमें घुस पड़े। स्वीडनी सेना की पूरी पंक्ति पीछे हट गई। गुस्टावस, जो दाहिने पक्ष से पदाति सैन्य को पुनः सुव्यवस्थित करने के लिए अश्वारूढ़ चला आ रहा था, कुहरे में अपने रक्षकों से बिछुड़ गया और कुछ साम्राज्यिक कवचधारी सैनिकों से जा टकराया जिन्होंने उसे तत्काल मार गिराया। उसके घोड़े के सैन्य-पंक्ति की ओर सवेग परन्तु सवारविहीन लौटने से स्वीडनी सेना को उसकी मृत्यु का ज्ञान हो गया। वेईमार के बर्नार्द (Bernard of Weimar) ने तत्काल नेतृत्व सम्भाल लिया और दूसरी बार धावा बोलने का आदेश दिया। स्वीडनवालों ने एक बार पुनः लड़ते हुए सड़क पार की और साम्राज्यिक तोपखाने को अधिकृत किया। लेकिन इस समय तक पापेन-हीम की अश्वारोही सैन्य आ पहुँची थी, और साम्राज्यिक सेना ने दूसरी बार प्रत्याक्रमण करके खोई स्थिति को फिर हस्तगत कर लिया। हत्याकाण्ड बड़ा भीषण रहा। दोनों सेनाएँ क्लान्तावस्था के समीप पहुँच रही थीं, लेकिन स्वीडनवालों की द्वितीय पंक्ति अभी तक अक्षुण्ण थी और बर्नार्द ने एक और धावे का आदेश दे दिया। स्वीडन-वाले साम्राज्यिक सेना के विरुद्ध तीसरी बार झपटकर आगे बढ़े। अन्तिम भीषण मुठभेड़ में दोनों सेनाएँ कुछ देर तक दोलायमान स्थिति में रहीं। लेकिन स्वीडनवालों के पास शक्ति का वह स्वल्प आधिक्य था जिससे किसी संग्राम का निर्णय हो जाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। साम्राज्यिक सेना का कठोर प्रतिरोध अन्त में टूट गया और वालेन्स्टीन ने अपने सैनिकों को अव्यवस्थित अवस्था में समरक्षेत्र से पीछे हटा लिया। रात्रि होते-होते पापेनहीम के पदाति सैनिक आ पहुँचे—मगर इतनी देर में ही अवसर हाथ से निकल चुका था। अगर वे एक घण्टा पूर्व आ गए होते तो वे शायद उस दिन के युद्ध का पांसा साम्राज्यिक सेना के पक्ष में पलट देते।

गुस्टावस एक युद्धनीतिज्ञ के रूप में—सत्रहवीं शताव्दी में युद्धनीतिक पैंतरों (strategical manoeuvre) के लिए अधिक अवसर नहीं था। सेनाएँ छोटी होती थीं और तंग हालत में भी अपने देश से दूर रह सकती थीं। उस समय शत्रु की संचार-रेखाओं (lines of communication) को काट देना उसके लिए इतना भीषण आघात नहीं होता था जितना बाद में होने लगा। इसके अतिरिक्त सेनाएँ एक-एक 'ब्लॉक' (blocks) के रूप में लड़ती थीं, इसलिए शत्रु को घेर कर उसे लड़ने के लिए बाध्य कर देना दुष्कर रहता था। उस समय युद्धों की स्थिति 'ड्राफ्ट' (draughts) के खेल की उस स्थिति के समान रहती थी जिसमें हर खिलाड़ी के पास केवल एक मुहरा—बादशाह—रह जाता है, और खेल अन्त हुए बिना चलता रहता है। अभियान पैंतरेबाजी (manoeuvring) से नहीं संग्रामों (battles) में, जब हर पक्ष अपने भाग्य की परीक्षा के लिए तैयार हो जाता था, जीते जाते थे। इसलिए गुस्टावस का युद्धकौशल (strategy) उत्कृष्ट प्रतीत नहीं होता। उसके आलोचक इस बात पर बल देते हैं कि उसने उत्तरी जर्मनी में अपने अड्डे (base) को दृढ़ करने में पन्द्रह मास गंवाने के बाद ही आगे बढ़ने का साहस किया। जब सेॅक्सन (Saxons) उससे आकर मिले वह लड़ने के लिए तैयार अवश्य हो गया था, लेकिन उस समय तक टिली (Tilly) भी सन्नद्ध हो चुका था। इसके परिणामस्वरूप ब्रीटेन-फेल्ड का युद्ध लड़ा गया। गुस्टावस को इसमें पूर्ण विजय प्राप्त हुई, लेकिन वह यह नहीं समझ पाया कि वह अपनी सफलता का किस प्रकार यथोचित लाभ उठाए। वह वीयना (Vienna) पर आक्रमण कर सकता था, और आस्ट्रिया की राजधानी में सन्धि की इच्छानुकूल शर्तें तय कर सकता था। इसके विपरीत उसने हट कर राइन (Rhine) प्रदेशों का दमन करना पसन्द किया। इस प्रकार उसने एक ही आघात में युद्ध समाप्त करने का अवसर खो दिया। यह सही है कि राइन प्रदेश से वह डेन्यूब नदी (Danube) के किनारे-किनारे आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के लिए बढ़ा, लेख (Lech) के अवरोधक (barrier) को तोड़ दिया एवं टिली को पराजित किया और मार डाला। लेकिन नए साम्राज्यिक सेनापति (Imperialist general) वालेन्स्टीन के रूप में उसे एक ऐसा प्रतिद्वन्द्वी मिला जो युद्धनीतिक सम्भावनाओं (strategic possibilities) के प्रति अधिक जागरूक था। स्वीडनवालों का सामना डेन्यूब के किनारे करने के बजाय वह सेॅक्सनी (Saxony) प्रदेश चला गया। इससे गुस्टावस को अपने मित्र सेॅक्सनी की रक्षा के हेतु अति शीघ्रतापूर्वक उत्तर की ओर चले आना पड़ा। लेकिन वालेन्स्टीन ने उस स्थल पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लड़ाई नहीं की और हताश गुस्टावस को बाध्य किया कि वह वालेन्स्टीन के ऊपर नूरेम्बर्ग (Nuremberg) के निकट (जहाँ वालेन्स्टीन की स्थिति दृढ़रूपेण सुरक्षित थी) आक्रमण करे। स्वीडनवालों को भारी हानि के साथ पीछे ढकेल दिया गया, और गुस्टावस की प्रतिष्ठा को क्षतिकर आघात लगा। अगले वर्ष वालेन्स्टीन ने सेॅक्सनी पर आक्रमण करके उन्हें फिर उत्तर की ओर आने के लिए विवश कर दिया। साम्राज्यिक सेनाध्यक्ष अब भी आमने-सामने जम कर युद्ध करने (pitched battle) का खतरा उठाने को प्रस्तुत नहीं था, और गुस्टावस किसी उपाय से भी उसे अपने निश्चय से नहीं डिगा पाया। मौसम समाप्तप्रायः था और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे स्वीडनी सेना अपने शीतावास (winter quarters) की ओर लौट गई। वालेन्स्टीन ने सोचा कि युद्ध समाप्त हो गया है और उसने मोरिट्ज़बर्ग (Moritzburg) का घेरा डालने के लिए पापेनहीन (Pappenheim) को सेना का एक भाग ले जाने की अनुमति दे दी। लेकिन गुस्टावस तो केवल झपट्टा मारने की ताक में था। तेज़ी से अग्रसरण (rapid march) करके उसने वालेन्स्टीन को लुटजेन स्थान पर जा पकड़ा। पापेन-हीम, जिसे जल्दी से वापिस बुलाया गया, देर से पहुँचा और साम्राज्यिक सेना पराभूत हुई। यह एक शानदार वार था, लेकिन स्वीडनवालों को गम्भीर क्षति पहुँची, और सबसे अधिक बड़ी बात तो यह कि राजा की मृत्यु से प्रोटेस्टेन्ट पक्ष (Protestant cause) को विनाशक आघात लगा। उसकी मृत्यु के उपरान्त पद ग्रहण करने वाले सेनाध्यक्षों में वह ओज और साहस नहीं थे। नोॅर्ड्लिन्जेन (Nordlingen) के युद्ध (१६३४) में स्वीडनी सेना की ऐसी पराजय हुई जिससे पुरानी सफलताओं का प्रभाव अधिकांशतः मिट गया। स्वीडन के हस्तक्षेप से जर्मन प्रोटेस्टेन्ट विनाश से बच गए, लेकिन इससे उन्हें वह विजय उपलब्ध नहीं हुई जो एक समय सम्भव प्रतीत होने लगी थी। तीस वर्षीय युद्ध (Thirty Years War) का अन्त हार-जीत का फैसला हुए बिना ही हो गया।

आलिवर क्रोॅमवेॅल—इंग्लैण्ड के सैनिक इतिहास में क्रॉमवेॅल का ऊँचा स्थान है, लेकिन युद्धकला के सामान्य इतिहास में उसका स्थान कम महत्त्वपूर्ण है। वह गुस्टावस के समान मौलिक-सैन्य-प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति (original military genius) नहीं था। युद्धकला में कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं है जिसे उसकी देन माना जा सके। उसने अपना सैनिक जीवन काफी आयु व्यतीत हो जाने के उपरान्त प्रारम्भ किया और अपने अधिकांश साथियों और प्रतिस्पर्द्धियों के समान लड़ाई की स्वीडनी विधि (Swedish method of fighting) का अनुकरण करके सन्तुष्ट रहा। लेकिन उसने जो कुछ सीखा उसका सही ढंग से और बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयोग किया। उसने सर्वप्रथम एक अश्वारोही पदाधिकारी के रूप में ख्याति प्राप्त की। उसके द्वारा संसदीय अश्वारोही सैन्य (Parliamentary horse) के चतुरतापूर्वक संचालित किए जाने के कारण ही मार्स्टन मूर (Marston Moor) और नाज़ेबाई (Naseby) के संग्रामों में संसदीय पक्ष (Parliamentary cause)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए विजय प्राप्त की जा सकी। एक बात में उसने गुस्टावसीय परम्परा (Gustavasian tradition) का परित्याग कर दिया। उसने अपने कवचधारी अश्वारोहियों (cuirassiers) के धावे के प्रभाव पर विश्वास रख कर उनमें मुस्केटधारी सैनिक (musketeers) नहीं मिलाए। इस विषय में वह प्रिंस रुपर्ट (Prince Rupert) से, जिसने पुरातन विधि का अनुसरण किया, भिन्नमत था। लेकिन उसके प्रतिद्वन्द्वी की तुलना में उसकी मुख्य उपरिकता (superiority) उसके अपने आदमियों के ऊपर नियन्त्रण में थी। प्रत्येक आक्रमण के उपरान्त वह उन्हें व्यवस्थित करने की सावधानी बरतता था, जबकि रुपर्ट के सैनिक रणक्षेत्र से अपने घोड़ों पर अन्धाधुन्ध भागते थे। मार्स्टन मूर (Marston Moor) के युद्ध (१६४५ ई०) में वह अपनी कला में भलीभाँति पारंगत नहीं हो पाया था। रुपर्ट की द्वितीय पंक्ति (second line) के सामने उसके आदमी विचलित हो गए और बिखर गए, लेकिन डेविड लेज़ली (David Leslie) के नेतृत्व में (जिसकी सामयिक सहायता के साथ क्रोमवेल ने इस संग्राम के अपने लिखित विवरण में न्याय नहीं किया है) स्काटलैण्डवालों के एक आरक्षित अश्वारोही दल (reserve horse) ने राजसमर्थक सैनिकों (royalists) के पार्श्व पर आक्रमण करके संकट का निवारण कर दिया। नाज़ेबाई (Naseby) के युद्ध में (१६४५) उसका समरतन्त्र (tactics) अधिक सफल रहा। राजसमर्थक सैन्य के वाम पक्ष पर स्थित लैंग्डेल की अश्वारोही टुकड़ी (Langdale's horse) का सफाया करते हुए उसने अपने 'आयरनसाइड्स्' (Ironsides) की सहायता से राजा के आरक्षित अश्वारोही दल (king's reserve of cavalry) पर आक्रमण किया (जो अकीर्तिकर रूप से दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ), और तदनन्तर राजसमर्थक पदाति सैन्य (Royalist infantry) के पृष्ठभाग पर टूट पड़ा। इस बीच में रुपर्ट आयरटन (Ireton) के सैनिकों का, जिन्हें उसने दूसरे पक्ष (wing) की ओर विश्रृंखलित कर दिया था, पीछा करते हुए मीलों दूर जा चुका था। इन दोनों में से किसी संग्राम में भी क्रोमवेल के हाथ में सर्वोच्च नियन्त्रण नहीं था, लेकिन इन दोनों ही में अपनी अश्वारोही सेना को घुमाकर शत्रु की पदाति-सैन्य के पृष्ठभाग की ओर ले आने में उसकी चतुरता निर्णायक सिद्ध हुई।

डुन्बर ड्रीव—एक स्वाधीन सेनाध्यक्ष के रूप में क्रोमवेल भाग्यवान् था क्योंकि उसे लगभग सदैव ही अपने से दुर्बल विपक्षी से लड़ना पड़ा। वह संग्राम जिसमें सम्भावनाएँ (odds) उसके प्रतिकूल थीं, और जिसमें उसे समरतन्त्री (tactician) के रूप में अपनी महान् योग्यता को प्रदर्शित करने का अवसर मिला डुन्बर (Dunbar) का संग्राम (१६५०) था। दोषपूर्ण युद्धनीति (strategy) के कारण, जिसकी हम अभी चर्चा करेंगे, उसने अपने को उस लघु प्रायद्वीप में फँसा दिया था जिसमें डुन्बर नगर बसा हुआ है। समुद्र के अतिरिक्त उसके पास तक रसद पहुँचने के सभी मार्ग अवरुद्ध हो गए और उसके आदमी पेचिश तथा अल्पाहार (meagre rations) से बुरी तरह त्रस्त थे। स्काटलैण्ड के सैनिक, जो संख्या में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक थे, दून की पहाड़ी (Doon Hill) पर एक अनाक्रम्य (unassailable) स्थिति में तैनात थे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए अंग्रेजी सैन्य की दुर्दशा उपायातीत (desperate) होती गई। ऐसा प्रतीत होने लगा मानो उसके सन्मुख आत्म-समर्पण

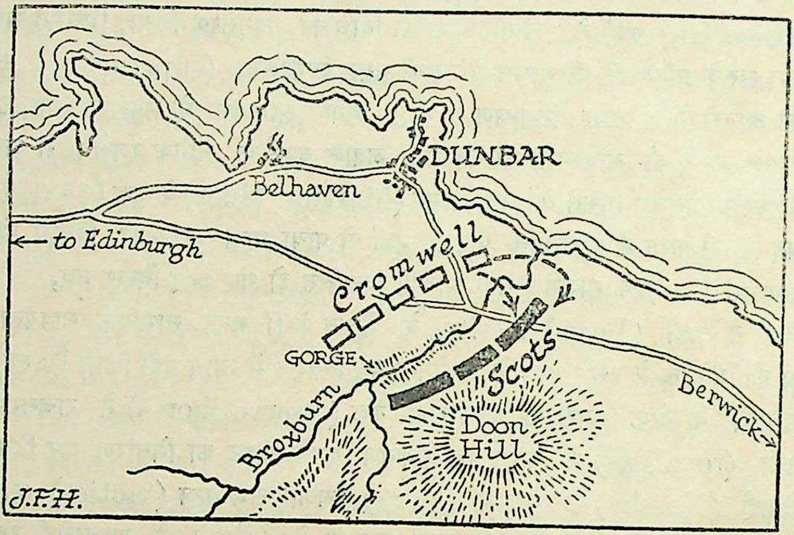

अथवा विनाश के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह गया था। लेकिन क्रॉमवेॅल दृढ़ता पूर्वक जमा रहा, और अन्ततोगत्वा उसकी अचलता पुरस्कृत हुई। स्काटलैण्ड का सेनाध्यक्ष डेविड लेॅजली (David Leslie) जो मार्स्टन मूर के युद्ध में क्रॉमवेॅल का साथी (Comrade-in-arms) रह चुका था, अधीर हो उठा। यह समझ कर कि अंग्रेजी सैन्य आहारभाव और बीमारी से इतनी दुर्बल हो गई है कि उस पर बिना किसी प्रकार की हानि उठाए आक्रमण किया जा सकता है, और इस भय से कि वह समुद्री मार्ग से भाग निकलने का प्रयास कर सकती है, उसने उसे लड़ने के लिए बाध्य करने का निश्चय किया। अपने आदमियों को दून की पहाड़ी से नीचे उतार कर उसने उन्हें इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड की सेनाओं को विभाजित करने वाली ब्रॉक्सबर्न (Broxburn) नामक छोटी-सी नदी के किनारे-किनारे तैनात कर दिया। उसका इरादा अगले दिन आक्रमण करने का था। लेकिन क्रॉमवेॅल उससे आगे रहा। स्काटलैण्ड-वालों की नई स्थिति का अध्ययन करके उसने एक समरतन्त्रीय आघात (tactical blow) करने का अवसर खोज निकाला। ब्रॉक्सबर्न की धारा मुहाने के समीप—अर्थात् स्काटलैण्डवालों की दाहिनी ओर—बहुत उथली थी जिससे सैनिकों को आगे बढ़ने में कोई बाधा नहीं होती थी। लेकिन ऊपर की ओर, स्काटलैण्डवालों की बाईं तरफ, यह एक गहरी द्रोणी (gorge) से होकर बहती थी जिसे पार करना कठिन था। इसके अतिरिक्त मैदान का ढाल (steepness) इस प्रकार का था कि अगर स्काटलैण्डवालों के दाहिने बाजू पर आक्रमण किया जाता तो उनका बायाँ बाजू सहायतार्थ शीघ्रता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से आने में असमर्थ रहता। क्रो`मवे`ल ने तत्काल निर्णय किया। उसने आदेश दिया कि अगले दिन अरुणोदय के समय आक्रमण किया जाय, और रात में अपने अधिकांश सैनिकों को स्काटलैण्डवालों के दाहिने बाजू के सम्मुख एकत्र कर लिया। उनके बाएँ बाजू को सँभाले रखने के लिए उसने द्रोणी के पार अपने सम्पूर्ण तोपखाने द्वारा साहाय्यित (aided) एक छोटी-सी टुकड़ी को छोड़ दिया। योजना पूर्णतः सफल रही। सितम्बर के एक प्रभात के धुँधलके में स्काटलैण्ड की सेना आश्चर्यान्वित कर दी गई। उसके दाहिने बाजू पर सामने और पार्श्व की ओर से आक्रमण हुआ। उत्तेजित क्रो`मवे`ल पार्श्वीय दल के साथ था। जैसे ही उदीयमान सूर्य की किरणें समुद्र के वक्ष पर चमचमाईं वह आह्लादित होकर चिल्लाया, "प्रभु जागें, उसके शत्रु छिन्न-भिन्न हों!" और फिर, जब अंग्रेजी आक्रमण के कारण स्काटलैण्ड की सैन्य-पंक्तियाँ टूटने लगीं वह चिल्लाया, "वे भाग रहे हैं, मैं दावा करता हूँ वे भाग रहे हैं।" स्काटलैण्डवालों का दाहिना बाजू बाईं ओर ढकेल दिया गया और उनकी समस्त सेना दून की पहाड़ी (Doon Hill) और ब्रो`क्सबर्न की द्रोणी (Broxburn gorge) के मध्य संकीर्ण स्थान में निरुपायावस्था में फँस गई। अत्यधिक ठसाठस रूप से भरे होने के कारण लड़ने में असमर्थ और सैन्य-विरचनाओं (formations) के आशारहित रूप से अव्यवस्थित हो जाने के कारण स्काटलैण्डवाले एक सुसंगठित सेना नहीं रह गए और अपने पीछा करने वालों से अन्धाधुन्ध रूप से सब दिशाओं में भागकर बचने की कोशिश करने वाले भगोड़ों की भीड़ बन गए। क्रो`मवे`ल ने अपने अश्वारोहियों को ११७ वें 'साम्' के सुर पर एकत्र किया और शत्रुओं का पीछा किया। एक घण्टे से कम में ही ले`जली की सतर्क युद्धनीति (careful strategy) का सम्पूर्ण प्रभाव विलुप्त हो गया और स्वयं सेनापति (ले`जली) अपनी जीवन-रक्षा के हेतु घोड़े पर सवार होकर एडिनबर्ग मार्ग (Edinburg road) से भाग निकला। उसकी गलती, यह ध्यान रखना चाहिए, पहाड़ी से उतर आना नहीं थी। अगर उसका इरादा आक्रमण करने का था तो ऐसा करना अनिवार्य था। उसकी गलती थी वह न कर पाना जो क्रो`मवे`ल ने किया, अर्थात् अपने सैनिकों को ब्रो`क्सबर्न के मुहाने पर एकत्र करना और पहले आक्रमण करना। यह पैंतरा (manoeuvre) उसके सामने भी उतना ही स्पष्ट था जितना उसके विपक्षी के सामने। लेकिन इसमें त्वरा (speed) अपरिहार्य थी। अंग्रेजी सैन्य के मनोबल (morale) तथा लड़ने की सामर्थ्य के विषय में गलत धारणा बनाकर ले`जली ने देर कर दी जिससे उसके अधिक स्फूर्तिवान् शत्रु ने उसके पैंतरे का उसी पर पूर्व-प्रयोग कर दिया।

क्रो`मवे`ल की युद्धनीति—एक युद्धनीतिज्ञ (strategist) के रूप में क्रो`मवे`ल की सबलता और दुर्बलता उसके स्काटलैण्ड के विरुद्ध लड़े गए दो युद्धों (१६५०-५१) से आँकी जा सकती हैं। इनमें पहले का अन्त डुन्बर की विजय में हुआ, लेकिन इस संग्राम के पूर्व तक यह युद्ध पूर्णरूपेण विफल रहा। ले`जली की सेना एडिनबर्ग के आस-पास पहाड़ियों पर सुरक्षित रूप से तैनात थी, और उसे ऐसी स्थिति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में युद्ध करने के लिए नहीं उकसाया जा सकता था जिसमें क्रोॅमवेॅल को विजय का अवसर मिल जाता। इसी बीच में अंग्रेज सैनिक नम मौसम तथा आहार की कमी से बुरी तरह पीड़ित हो रहे थे। क्रोॅमवेॅल डुन्बर बन्दरगाह चला गया था। शीत ऋतु आनेवाली थी, लेकिन वह युद्ध बन्द करने के विषय में निश्चित मत नहीं हो पाया था। इस आशा में कि लेॅजली को शायद तब भी लड़ने के लिए लालायित किया जा सके, उसने डुन्बर में एक सुरक्षित शिविर (fortified camp) स्थापित करने का निश्चय किया। लेकिन उसने एक घातक भूल की। उसने इंग्लैण्ड से अपना सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने दिया। डुन्बर (Dunbar) से बरविक (Berwick) जाने वाला मार्ग कोकबर्न्स्पाथ (Cockburnspath) के पास पहाड़ियों और समुद्र के मध्य एक ऐसे संकीर्ण दर्रे से गुजरता है जहाँ, जैसा स्वयं क्रोॅमवेॅल ने कहा था, "रास्ता पार करने की कोशिश करने वाले चालीस सैनिकों से रास्ता रोकने वाले दस सैनिक बेहतर हैं।" अक्षम्य अनवधानतावश उसने स्काटलैण्ड-वालों को इस दर्रे पर अधिकार कर लेने दिया और समुद्र के अतिरिक्त इंग्लैण्ड के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाले इस एक मात्र मार्ग से हाथ धो बैठा। अब रसद के लिए उसे केवल अपने जलपोतों पर निर्भर रहना पड़ा और उसकी सेना पर आहारा-भाव द्वारा विनष्ट होने का भयंकर संकट आ गया। लेॅजली के अधैर्य और लापरवाही से उसे इस भयंकर युद्धनीतिक भूल (strategic blunder) को सुधारने का कैसे अवसर मिला, यह हम पहले ही देख चुके हैं।

स्काटलैंड के विरुद्ध दूसरे युद्ध में क्रोॅमवेॅल ने अधिक दूरदर्शिता से कार्य किया। स्काटलैण्ड की सेना स्टर्लिंग (Stirling) और पर्थ (Perth) के मध्य स्काटलैण्ड के केन्द्रीय प्रदेश को अधिकृत किए हुई थी। क्रोॅमवेॅल ने समुद्री मार्ग से अपने आदमी फाइफ (Fife) भेज दिए, और स्काटलैण्ड की सेना का उसके उत्तर में स्थित अड्डे (base) से सम्बन्ध विच्छेद करते हुए उसके बाएँ बाजू को घेर लिया। यह एक साहसपूर्ण परन्तु आपदामय पैंतरा (manoeuvre) था। इससे क्रोॅमवेॅल का एडिन-बर्ग से सम्बन्ध स्थापित करने वाला मार्ग अरक्षित हो गया जिसे स्काटलैण्डवाले अनायास काट सकते थे। और इससे भी बुरा यह हुआ कि लन्दन स्थित राजनीतिज्ञों की दृष्टि में इसके कारण स्काटलैण्डवालों और इंग्लैण्ड के मध्य कोई अंग्रेजी सेना नहीं रह गई। लेकिन क्रोॅमवेॅल जानता था कि वह क्या कर रहा था। वह स्काटलैण्डवालों को इंग्लैण्ड में प्रविष्ट होने के लिए प्रलुब्ध करना चाहता था क्योंकि उसे निश्चय था कि वह उन्हें वहाँ घेर सकता और परास्त कर सकता था, जब कि स्काटलैण्ड में वह उन्हें लड़ने के लिए बिल्कुल बाध्य नहीं कर सकता था। स्काटलैण्डवाले उसके जाल में फँस गए। इस आशा में कि कम से कम उत्तरी 'काउन्टीज़' (counties) अपने को द्वितीय चार्ल्स् (Charles II) के पक्ष में घोषित कर देंगी, उन्होंने सीमा पार करके आक्रमण कर दिया। उनकी आशा दुःखप्रद रूप से निर्मूल सिद्ध हुई। कुछ ही रंगरूट (recruits) उनके पक्ष समर्थन के लिए आए, मुश्किल से उन भगोड़ों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बराबर जो उनका साथ छोड़ गए थे। इस बीच में क्रॉमवेल पूर्वी समुद्रतटीय प्रदेश में भरसक तेजी से प्रयाण (forced marches) कर रहा था, भयभीत संसद (Parliament) को सान्त्वना देने वाले पत्र लिख रहा था और संसदीय सेनाओं के एकत्रीकरण (concentration) के लिए अग्रिम आदेश भेज रहा था। इसका अन्त वरसेस्टर (Worcestor) के समीप हुआ जहाँ निराश स्काटलैण्डवालों ने रुकने और लड़ने का निश्चय किया। लेकिन शत्रु सेना के दूनी होने के कारण उनके जीतने की किञ्चित भी आशा न थी, और वे श्रेष्ठतर अंग्रेजी सेना द्वारा अनायास कुचल दिए गए।

चतुर्दश लुई की सेना—सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक स्पेन के स्थान पर फ्रान्स यूरोप की प्रमुख सैनिक शक्ति बन गया था। रॅक्रॉय (Rocroy) के युद्ध में (१६४३) गुस्टावस का अनुकरण करके बनाई गई फ्रान्सीसी रैखिक सैन्य-विरचनाओं (linear formations) द्वारा स्पेनी 'तरशिओज़' (tercios) वीरतापूर्वक लड़ते हुए परास्त हुए। चतुर्दश लुई (Louis XIV) की सेना, जिसका पुनर्गठन उसके महान् युद्धमन्त्री लुवुआ (Louvois) ने किया था, यूरोप में सर्वोत्तम हो गई। यह निश्चयतः एक राजसत्तावादी सेना थी, जिसका पोषण और नियन्त्रण स्वयं राजा के हाथ में था। पुरातन स्वामीय-प्रणाली (proprietary system), जिसके अनुसार सामान्य व्यक्ति गणों (companies) और रेजिमेन्टों (regiments) के स्वामी हुआ करते थे, अधिकांशतः (यद्यपि पूरी तरह नहीं) समाप्त कर दी गई, और सैनिक-व्यय राष्ट्रीय बजट की एक नियमित मद बन गया। पहले चार वर्ष तक सेना में भर्ती स्वेच्छा पर निर्भर रही, लेकिन १६८८ के बाद एक ऐसी सेना (militia) अस्तित्व में आई जिसमें सेवा करना अनिवार्य था। इसके लिए रंगरूटों का चुनाव मतपत्र (ballot) द्वारा होता था। फिर भी नियुक्ति केवल २५,००० की ही की गई, जब कि नियमित सेना (regular army) में लगभग १२०,००० आदमी थे। यूरोप में इतनी विशाल स्थायी सेना कभी नहीं रही थी। दूसरे देश वैसा ही करने के लिए विवश हो गए, और रणक्षेत्र में लड़ने वाली स्पर्द्धी सेनाओं की विशालता से युद्धकर्म का रूप परिवर्तित हो गया। इतने विशाल मानव समूहों की उदरपूर्ति की भलीभाँति व्यवस्था करना आवश्यक था। अब, संकटकालीन अवसरों को छोड़कर, देश के बाहर रहना सम्भव नहीं रह गया। सैन्य-पंक्तियों के पीछे सुविधाजनक स्थानों पर भोज्य-पदार्थ और चारे के भण्डार (magazines) रखने होते थे। भण्डार-प्रणाली (magazine system) से सैनिकों की नियमित उदरपूर्ति होनी तो निश्चित हो गई, मगर इससे उनके गमनागमन (movements) में बाधा पड़ी और युद्ध की गति (tempo) शिथिल हो गई। दुर्ग-निर्माण-विद्या की प्रगति का (जिसको फ्रान्सीसी इञ्जीनियर वोबान ने इतनी महत्त्वपूर्ण देन दी) भी यही परिणाम हुआ। अभियान निर्णायक संग्राम हुए बिना समाप्त होने लगे; युद्ध दुर्गों का घेरा डालने की चेष्टाओं के तांते से अधिक नहीं रह गए। युद्धतन्त्र (strategy) में एक नया फैशन चल पड़ा। अब किसी सेनापति की योग्यता उसकी लड़ाई से बचने में चतुरता द्वारा आंकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाती थी। उसका लक्ष्य शत्रु को किसी क्षेत्र से बिना लड़े निकाल देना रहता था। संग्राम का, जब कभी वे लड़े जाते थे, बहुत कम निर्णय हो पाता था। कुछ ही सेनाएँ लड़ने के लिए तैयार होती थीं, जब तक कि उनके पास अधिक संख्या में सैनिक नहीं होते थे या वे दृढ़ स्थिति (strong position) में नहीं होती थीं; पराजित सेना सदैव सम्भल सकती थी और किसी भी सुरक्षित स्थान अथवा दुर्ग-प्रणाली के पीछे अपने को पुनर्गठित कर सकती थी। इसलिए, यद्यपि सत्रहवीं शताब्दी में फ्रान्स में एक के बाद एक करके अनेक प्रतिभाशाली सेनाध्यक्ष हुए—कोण्दे (Conde, तुरेन (Turenne), लक्जेम्बूर्ग (Luxembourg), कातिनात (Catinat), वेन्दोमे (Vendome)—उसकी सेनाओं को उनके युद्धकौशल के अनुपात में बहुत कम सफलता मिली। निर्णायक सफलताएँ प्राप्त करने में फ्रान्सीसी युद्ध-यन्त्र की असमर्थता का असाधारण उदाहरण लीग ऑव आग्सबर्ग (League of Augsburg) का युद्ध (१६८८-९७) था। तृतीय विलियम और उसके मित्र बार-बार पराजित किए गए—फ्लूरस (Fleurus) स्टीनकिर्क (Steinkirk) और नियरविन्डेन (Neerwinden) में—लेकिन वे सदैव अपनी सेनाओं को पुनर्गठित करने और नए युद्ध के लिए मैदान में उतरने में सफल रहे। धीरे-धीरे युद्ध बहुत देर तक लड़ने वाले के पक्ष में (war of attrition) होने लगा, और अपने साधनों को धीरे-धीरे क्षीण होता महसूस करके शत्रुओं पर घातक वार करने में असमर्थ हुई अन्ततोगत्वा सन्धि करने के लिए ऐसे तैयार हो गया मानों वह विजयी नहीं पराजित हो रहा था। जिन कारणों ने युद्धों की अनिर्णयात्मकता में वृद्धि की, वे अट्ठारहवीं शती के लगभग अन्त तक बने रहे, यद्यपि उन पर दो महान् सेनाध्यक्षों ने, जिनके सैनिक जीवन का हमें आगे अध्ययन करना है, अंशतः काबू पा लिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ५

मार्लबोॅरो और फ्रेॅडेरिक

स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध (१७०१-१३)—जिस युद्ध में मार्लबोॅरो (Marlborough) ने कीर्ति अर्जित की वह एक अतिशक्तिशाली राष्ट्र (:reat military Pov er) और अपनी सुरक्षा और स्वतन्त्रता के लिए चौकन्ने हो गए अपेक्षया कम शक्तिशाली राष्ट्रों के सघ के मध्य संघर्ष था। यह, अगर पुराने कूट-नीतिक पद का प्रयोग किया जाए, "शक्ति सन्तुलन" (balance of pov er) के लिए संघर्ष था—युद्ध का वह प्रकार जिससे यूरोप को आगामी दो शताब्दियों में अभाग्यवश अत्यधिक परिचित होना पड़ा। एक ओर फ्रान्स और उसके दुर्बल सहायक स्पेन तथा बवेरिया थे; दूसरी ओर ब्रिटेन, हॉलैण्ड, डेन्मार्क, सेवोॅय, साम्राज्य, और अधिसंख्यक जर्मन राजे। परवर्ती युद्धों के समान, इस युद्ध में भी लड़ने वाले देशों की संख्या के कारण संघर्ष-क्षेत्र (field of l ostilitie) की सीमाएँ परिवर्धित हो गईं। फ्लेण्डर्स , जर्मनी और स्पेन में लड़ाई के मोर्चे थे। भूमध्यसागर में जलयुद्ध (naval battles) लड़े गए। एशिया और अमरीका में भी दोनों पक्ष टकराए। युद्ध का साम्राज्यिक पक्ष (imperial aspect) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। इसमें यूरोपियन कूटनीतिज्ञों के अनुमान से कहीं अधिक गम्भीर मसले (issues) दाँव पर थे। यूरोप में शक्ति-सन्तुलन को फ्रान्सीसी राजतन्त्र का दमन करके पूर्ववत् किया गया। लेकिन, यूरोप के बाहर, इसके कारण ब्रिटेन की विश्व-साम्राज्य (world empire) की पहली अवस्था की ओर प्रगति प्रारम्भ हुई।

युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों की संख्या की दृष्टि से, ब्रिटेन का स्थल युद्ध में भाग उसकी सम्पत्ति और जनसंख्या के अनुपातानुरूप नहीं था। मूल देयता (original undertaking) के अनुसार उसने ऑस्ट्रिया के ९०,००० और हॉलैण्ड के १००,००० की तुलना में ४०,००० सैनिक दिए; और ब्रिटेन से वेतन पाने वाले सैनिकों में आधे से अधिक जर्मन थे। परन्तु ब्रिटेन का गुणात्मक सहयोग (qualitative contribution) उससे कहीं अधिक था जितना इन आँकड़ों से संकेतित है। ब्रिटेन की देशी 'रेजिमेण्ट्स' (native regiments) मित्रसेनाओं के लिए 'शॉक ट्रूप्स्' (shock troops) थीं, और ब्रिटेन ने वह अप्रतिम सेनाध्यक्ष प्रदान किया था जिसके कारण मित्र पक्ष (allied cause) को विजय मिली।

मार्लबोॅरो, तुरेन के समान, जिसका वह शिष्य था और जिसके साथ वह जर्मनी में युद्धों में भाग ले चुका था, युद्ध का निर्णय 'सैनिक शतरञ्ज' (military

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

chess) के स्थान पर संग्राम (battle) द्वारा करना पसन्द करता था, लेकिन, जैसा कि हम आगे देखेंगे, तत्कालीन परिस्थितियों और रूढ़िवादी सैनिक विचारधाराओं ने इस समय सर्वाधिक साहसी सेनापतियों पर भी बन्धन लगा रखे थे। तुरेन के समय से हुआ सबसे बड़ा सैन्य-सुधार था छल्ले या सॉकेटवाली संगीन (ring or socket bayonet) के आविष्कार के परिणामस्वरूप 'पाइक' (pike) का लगभग पूर्णतः विलोप। दूसरा सुधार 'मैचलॉक' बन्दूकों (matchlock) के स्थान पर 'फ्लिंटलॉक' (flintlock) अथवा 'फायरलॉक' (firelock) बन्दूकों का प्रयोग था जिससे बन्दूकों को अधिक तेजी और नियमितता से चलाना सम्भव हो गया और जिससे 'शॉक पावर' से 'फायर पावर' कुछ श्रेष्ठतर हो गई। पदाति सैन्य-विरचनाएँ कम सघन होने लगीं और रैखिक समर-तन्त्र (linear tactics) की उपरिकता (supremacy) सुनिश्चित हो गई। मुस्केटधारी सैनिक अब पंक्तियों (ranks) के स्थानों पर प्लेटूनों (platoons) के रूप में गोली वर्षा करते थे। मार्लबोरो ने बन्दूक चलाते समय अनुशासन की महत्ता को समझा, और अपने आदमियों को प्लेटूनों के रूप में गोलीवर्षण करने का अभ्यास कराया एवं उनके गोलीवर्षण को झण्डे और ढोल के संकेतों द्वारा नियन्त्रित किया। समरक्षेत्र में लड़ाई की प्रचण्डता अब पदाति-सैन्य को सहन करनी होती थी, लेकिन अभी तक केवल अश्वारोही-सैन्य द्वारा ही शत्रु पर विनाशक प्रहार किया जा सकता था। अतः यह समस्त सेना का एक तिहाई अथवा एक चौथाई भाग बनी रही। यहाँ मार्लबोरो ने पिस्तौल (pistol) अथवा 'केरबाइन' (carbine) के प्रयोग को निरुत्साहित करते हुए और इस बात पर बल देते हुए कि अश्वारोही सैनिक हाथ में तलवार लेकर आक्रमण करें, 'फायर पावर' से 'शॉक पावर' को अधिक महत्त्व दिया। उसके सब संग्रामों में, विशेषतः उनकी अन्तिमावस्था में, अश्वारोही सेना ने निर्णायक भाग लिया। तोपखाने में गुस्टावस के समय से बहुत कम तकनीकी प्रगति हुई थी, लेकिन मार्लबोरो एक कुशल तोपची (gunner) था, और अपने 'आर्टिलरी ब्रिगेडियर' के रूप में स्वयं कार्य करता था। ब्लेनहीम (Blenheim) के युद्ध में उसने सब तोपों को स्वयं लगाया था।

ब्लेनहीम—१७०४ तक युद्ध का रुख मित्रराष्ट्रों के विपरीत था। उन्हें इटली और राइन के किनारे पराजय का मुख देखना पड़ा था, और फ्लेण्डर्स् (Flanders) में वे सशक्त फ्रान्सीसी रक्षा-पंक्तियों द्वारा रोक दिए गए थे। बवेरिया के 'एलेक्टर' (Elector of Bavaria) ने फ्रान्स के पक्ष में युद्ध की घोषणा कर दी थी और डेन्यूब की घाटी के मार्ग से आस्ट्रिया पर आक्रमण सम्भव कर दिया था। इससे मित्र राष्ट्रों (Allies) के लिए अत्यधिक संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई। हंगेरी के एक विद्रोह में फँसे रहने के कारण सम्राट् अपने निजी प्रदेशों (home territories) पर होने वाले आक्रमण का प्रभावकर रूप से प्रतिरोध करने की स्थित में नहीं था।[1] अगर,

---

१. 'सम्राट्' (The Emperer) से आशय पवित्र-रोमन साम्राज्य के स्वामी से है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसा कि सर्वथा सम्भव प्रतीत हो रहा था, वह परास्त हो जाता और आस्ट्रिया को युद्ध से बाहर होने के लिए विवश कर दिया जाता तो मित्र राष्ट्रों का महान् संघ (Grand Alliance) चकनाचूर हो जाता। वीयना पर होने वाले आक्रमण का परिहार

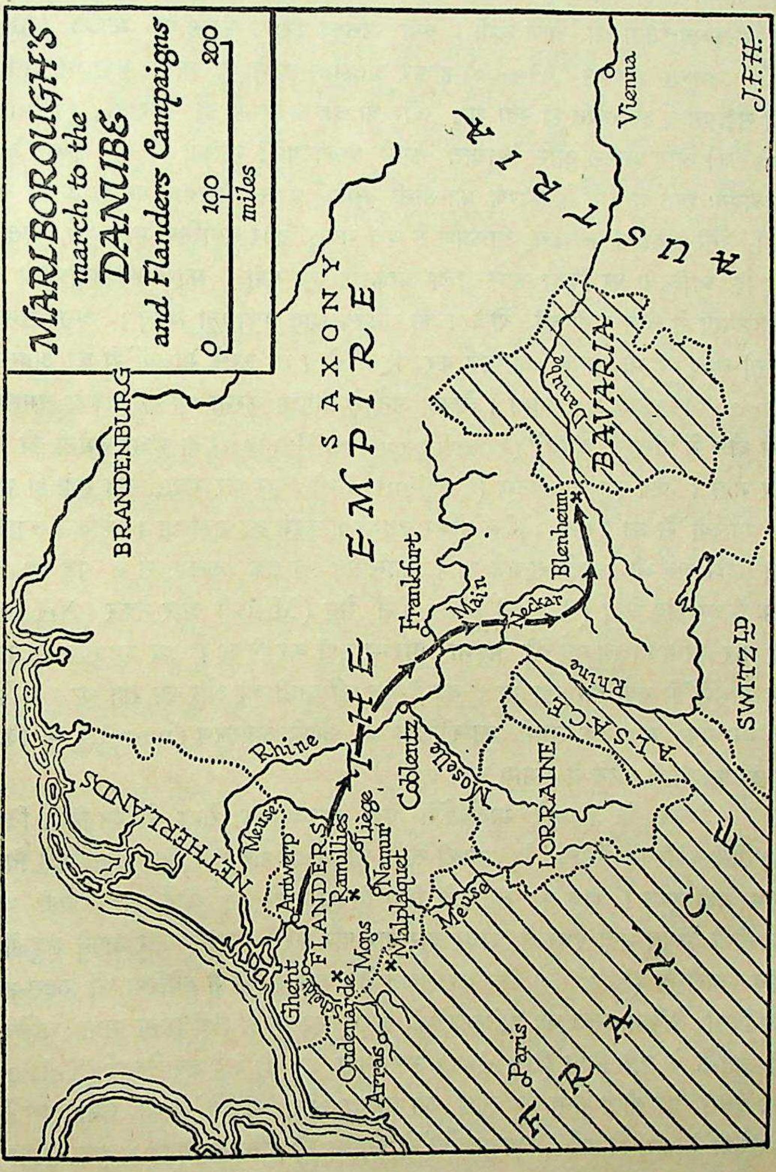

अत्यावश्यक था। लेकिन अन्य मित्रराष्ट्रीय मोर्चों (Allied fronts) को भयास्पद-रूपेण निर्बल किए बिना संकटग्रस्त सम्राट् को किस प्रकार सहायता पहुँचाई जा सकती थी?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्लबोरो की प्रखर बुद्धि ने इस समस्या को सुलझाया। मई १७०४, में विश्व को ज्ञात हुआ कि वह नीदरलैण्ड्स (Low Countries) से राइन (Rhine) की ओर ५०,००० आदमियों की एक एंग्लो-डच सेना सहित (जिसमें १६,००० ब्रिटिश थे) अग्रसरित हो रहा है। तत्काल फ्रान्सीसी 'हैडक्वार्टर्स' में उसके इरादों के विषय में अटकलबाजियाँ की जाने लगीं। क्या उसका इरादा फ्रान्स पर मोज़ेल (Moselle) अथवा आल्सेस (Alsace) होकर आक्रमण करने का था? क्या वह सम्राट् की सहायतार्थ अग्रसरित हो रहा था, और या वह अचानक ही फ्लेण्डर्स (Flanders) की ओर पलटने और आघात करने वाला था? मार्लबोरो का यथार्थ लक्ष्य निश्चयतः ज्ञात न होने के कारण फ्रान्सीसी सेनाएँ फ्रान्स की सीमा पर ही अचल बनी रहीं; सैनिकविहीन फ्लेण्डर्स आक्रमण से बच गया; और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह कि आस्ट्रिया पर किया जाने वाला आक्रमण रुक गया। फ्रान्सीसी सेनाध्यक्षों की निष्क्रियता से मित्र राष्ट्रों की योजना को अप्रत्याशित सहायता मिली। अगर उन्होंने किसी स्थल पर भी प्रबल आघात कर दिया होता तो उससे मार्लबोरो का अग्रसरण (march) तत्काल रुक जाता। लेकिन उन्होंने प्रतीक्षा करना अधिक अच्छा समझा। इस बीच में "सिंदूरी झांझा" (Scarlet caterpillar)* रगता हुआ जर्मनी को पार कर गया। जब वह कोब्लेन्ट्ज (Coblentz) को पार कर गया, यह स्पष्ट हो गया कि मार्लबोरो का इरादा मोज़ेल होकर आक्रमण करने का नहीं था। लेकिन आल्सेस का प्रदेश अब भी उसके सामने था। फ्रान्सीसी तब तक असमञ्जस में पड़ रहे जब तक मित्रराष्ट्रीय सेना (Allied army) ने मेन (Main) और नेकर (Neckar) को पार करके दक्षिण-पूर्व की बढ़ना प्रारम्भ नहीं कर दिया। तब यह स्पष्ट हो गया कि मार्लबोरो क्या कर रहा था। वह डेन्यूब की घाटी की ओर जा रहा था। लेकिन लगभग एक माह तक उसने फ्रान्सीसियों को अपने अग्रसरण (march) के विषय में अटकलबाजी करने में लगाए रखा।

डेन्यूब के किनारे मार्लबोरो एक साम्राज्यिक सेना से जा मिला जिससे फ्रान्सीसी बवेरियन सेनाओं से उसकी सेना अधिक हो गई। लेकिन इससे उसे विशेष लाभ नहीं हुआ। शत्रु को लड़ने के लिए विवश करने का कोई उपाय नहीं था। फ्रान्सीसी डेन्यूब नदी इधर से उधर बार-बार पार करके अपने और अपने शत्रुओं के बीच अवरोधक (barrier) पैदा कर सकते थे। मार्लबोरो ने बवेरिया को तहस-नहस कर दिया, लेकिन इससे वह 'एलेक्टर' को अपने निश्चय से नहीं डिगा पाया। एलेक्टर की फ्रान्स के प्रति निष्ठा (loyalty) उस समय दृढ़ हो गई जब तैलार्द (Tellard) एक दूसरी फ्रान्सीसी सेना के साथ आ पहुँचा और मार्लबोरो की सेना शत्रु सेना से संख्या में कम हो गई। अब मार्लबोरो को या तो प्रतिकूल स्थिति में युद्ध करना था या बवेरिया से चला जाना चाहिए था। परिवर्धित फ्रान्सीसी-बवेरियन सेनाओं ने उसकी संचार-रेखाओं (lines of communications) को रोक दिया। तैलार्द

* 'मार्लबोरो, हिज़ लाइफ एण्ड टाइम्स', भाग २, पृ० ३२४ पर विन्स्टन चर्चिल द्वारा प्रयुक्त पद।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निश्चित मत था कि मित्रराष्ट्रीय सेना वापस लौट जाएगी। तत्कालीन सैन्य-सिद्धान्त के अनुसार उसके लिए कोई और चारा ही नहीं था। लेकिन अप्रत्याशित घटना घटी। राजकुमार यूजीन (Prince Eugene), जिसे आल्सेस में विलेरोय (Villeroy) की गति-विधि का निरीक्षण करने के लिए छोड़ दिया गया था, एक चक्करदार अग्रसरण (circuitous march) द्वारा उसे धोके में डालकर मार्लबोरो से आ मिला और मित्रराष्ट्रीय सेना की संख्या फ्रान्सीसी-बवेरियों के ६०,००० की तुलना में ५६,००० हो गई। अब स्थिति उसके बहुत प्रतिकूल नहीं थी, इसलिए मार्लबोरो ने युद्ध का दाँव खेलने का निश्चय किया। १३ अगस्त की सुबह फ्रान्सीसी यह देखकर अवाक् रह गए कि जिस सेना को वे बवेरिया से खदेड़ने की तैयारी कर रहे थे, वह उन पर आक्रमण करने के लिए बढ़ रही थी।

फ्रान्सीसी सैन्य-पंक्तियाँ डेन्यूब और उत्तरी पहाड़ियों के मध्य चार मील तक फैली हुई थीं। उनका अग्रभाग नेबेल (Nebel) नदी और दलदलों द्वारा सुरक्षित था। तैलार्द दाहिनी ओर था, एलेक्टर अपने फ्रांसीसी-बवेरी सैनिकों सहित बाईं ओर। दोनों सेनाओं के अश्वारोही प्रभाग पार्श्वों (flanks) की ओर थे जिसके कारण, तत्कालीन रिवाज के विपरीत फ्रान्सीसी सेना के मध्य प्रभाग में कुछ पदाति बटेलियनों द्वारा साहाय्यित अश्वारोही दल हो गया। उनकी दाहिनी ओर स्थित ब्लेनहीम (Blenheim) ग्राम सैनिकों और बाड़े द्वारा दृढ़रूपेण सुरक्षित था। तैलार्द इसे रणक्षेत्र का निर्णायक स्थल (keypoint) मानता था। मित्रराष्ट्रीय सेना का दाहिना भाग यूजीन के नेतृत्व में था और बायाँ मार्लबोरो के। मार्लबोरो की मूल योजना थी दाहिने भाग से शत्रु को उलझाए रखने के लिए कूटाक्रमण करना और बाएँ भाग से पूरा दबाव डालना। तैलार्द के समान वह भी ब्लेनहीम को रणक्षेत्र का निर्णायक स्थल मानता था, और उसने १०,००० सैनिकों के पदाति दल को उस पर आक्रमण करने के लिए भेजा भी। दो घण्टे तक यह दल गाँव पर प्रहार करता रहा, परन्तु सब बेकार। ब्लेनहीम प्रत्यक्ष आक्रमण द्वारा अभेद्य था। दाहिनी ओर यूजीन को भी विशेष सफलता नहीं मिली। उसके सैनिकों को जरा भी आगे नहीं बढ़ने दिया गया, और एक स्थल पर तो मित्रराष्ट्रीय सैन्य-पंक्ति लगभग तोड़ ही दी गई। उस क्षण मित्रराष्ट्रों की विजय की सम्भावना बिल्कुल प्रतीत नहीं हो रही थी। "मुझे लगा", बाद में मार्लबोरो के पादरी ने लिखा था, "कि हम परास्त हो गए हैं।" लेकिन जब मार्लबोरो ने संग्राम की योजना को संशोधित करने और आक्रमण के दबाव को ब्लेनहीम के स्थान पर फ्रान्सीसी सेना के दुर्बल केन्द्र पर डालने का निश्चय किया, तो परिस्थिति परिवर्तित हो गई। अपने बाजुओं (wings) से समधिक सैन्य-दल (additional force) बुलवा कर उसने धीरे-धीरे सशक्त अश्वारूढ़ और पदाति टुकड़ियाँ नेबेल के पार भेजीं, और अन्त में अपने नेतृत्व में ८,००० अश्वारोहियों के साथ फ्रान्सीसी पंक्ति पर आघात किया। इस स्थल पर शत्रु के पदाति सैनिकों ने शानदार प्रतिरोध किया, लेकिन उसके अश्वारोही सैनिकों का प्रदर्शन असन्तोषजनक रहा और शीघ्र ही मित्र-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रीय 'स्क्वाड्रन' फ्रान्सीसी सैन्य-पंक्ति को भेदने में सफल हो गए। फ्रान्सीसी सेना दो टुकड़ों में विभाजित हो गई। ब्लेनहीम में १२,००० सैनिक घेर लिए गये और वीरता-पूर्वक प्रतिरोध करने के उपरान्त आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिए गए। फ्रान्सीसी-बवेरी सेना, जिसका दाहिना पार्श्व (flank) अरक्षित हो गया था, पीछे लौट

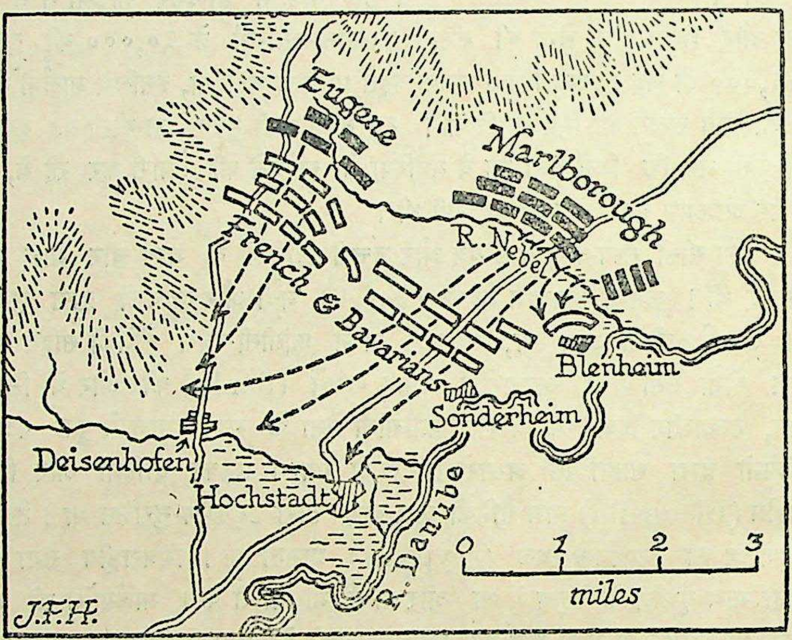

गई, लेकिन बिना अव्यवस्थित हुए। तुलनात्मक दृष्टि से उसके हताहतों की संख्या भी कम रही। इसके विपरीत तैलार्द की सेना लगभग विनष्ट कर दी गई। स्वयं मार्शल बन्दी बना लिया गया और मार्लबोॅरो की गाड़ी में रखा गया। "मैं तुम्हें बधाई देता हूँ", उसने अपने पकड़ने वाले से कहा, "क्योंकि तुमने विश्व के सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को पराजित किया है।"

एक समरतन्त्री (tactician) के रूप में मार्लबोॅरो ने सबसे पहले शत्रु के सबलतम स्थल ब्लेनहीम पर आक्रमण करके भूल की, लेकिन उसने अपनी गलती महसूस कर ली और उसे सुधार दिया। युद्धनीतिज्ञ के रूप में उसने अभियान को शानदार ढंग से प्रारम्भ किया, लेकिन बाद में उसे भी युद्धकर्म (warfare) पर तत्कालीन परिस्थितियों के कारण लगे बन्धनों से परेशान होना पड़ा। वह संख्या की दृष्टि से दुर्बल फ्रान्सीसी-बवेरी सेना को लड़ने के लिए तब तक विवश नहीं कर सका जब तक तैलार्द उससे (फ्रान्सीसी-बवेरी सेना से) नहीं आ मिला। एक किंचित् विपत्तिसंकुल संग्राम को लड़े बिना वह तैलार्द के, मित्रराष्ट्रीय सेना को बवेरिया से बाहर निकाल देने के, प्रयास को रोकने में भी असमर्थ रहा। और उसे यह संग्राम लड़ने का अवसर कभी न मिलता, अगर तैलार्द को यह अन्धविश्वास न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता कि मित्रराष्ट्रीय सेना निश्चयतः वापस लौट जाएगी। डेन्यूब की घाटी की ओर उसका शानदार अग्रसरण पूर्ण विनाश के रूप में परिणत होने से बाल-बाल बचा। लेकिन ब्लेनहीन की समरतन्त्रीय विजय (tactical victory) से सब हिसाब चुकता हो गया। इसके परिणामस्वरूप एक विशाल फ्रान्सीसी सेना का विनाश हुआ, वियना की रक्षा हो गई और बवेरिया चतुर्दश लुई के पक्ष से अलग हो गया। फ्रान्स की सैनिक प्रतिष्ठा, जो रोक्रो`य के संग्राम से अब तक अमन्द रूप से दमक रही थी, युद्ध-कौशल के इस महान् प्रदर्शन की प्रभा के सम्मुख धुंधली पड़ गई।

फ्लेण्डर्स् अभियान—मार्लबो`रो के शेष युद्ध फ्लेण्डर्स् (Flanders) में लड़े गए। दुर्गों से परिपूर्ण और जलधाराओं से कटे-फटे देश फ्लेण्डर्स् में गत्यात्मक युद्ध (mobile warfare) लड़ना कठिन है। यहाँ फ्रान्सीसी खाइयों और बांधों की एक रक्षात्मक व्यवस्था—तथा-कथित ब्राबांत्-पंक्तियों (Lines of Brabant) के पीछे जमे हुए थे। म्यूज़ (Meuse) से शेल्ड्ट (Scheldt) तक विस्तृत इस स्थिति (position) पर पीछे से आघात करना असम्भव था। कुछ बातों में इससे १९१४ में समुद्र से लेकर आल्प्स् (Alps) तक विस्तृत खाइयों की पंक्ति का स्मरण हो आता है। मार्लबो`रो की ब्राबांत्-पंक्तियों को भेदने में सफलता प्रदर्शनीय (spectacular) न होते हुए भी बड़ी शानदार (brilliant) थी। इसे उसने वांघे (Wanghe) के सामने, जहाँ कोई महत्त्वपूर्ण जलबाधा न थी, सेना को शीघ्रता से परन्तु गुप्तरूपेण एकत्र कर के प्राप्त किया। इस स्थल पर रक्षात्मक व्यवस्था टूट गई, और फ्रान्सीसियों को डायल की पंक्ति (line of the Dyle) की ओर लौट जाना पड़ा।

इसके बाद रामिलीज़ (Ramillies) का संग्राम (१७०६) हुआ। इस अभियान में युद्धनीति (strategy) का कोई प्रश्न ही नहीं था। दोनों पक्षों की सेनाएँ अनजाने में परस्पर जा टकराईं और मार्लबो`रो विजयी हुआ, क्योंकि भूमि के कुछ उठी होने के कारण वह शत्रु को दिखाई नहीं दिया और अपनी समस्त अश्वारोही सेना दाहिने से बाएँ बाज़ू की ओर भेज कर फ्रान्सीसियों पर घातक प्रहार कर सका। इस विजय से मित्रराष्ट्रों का स्पेनी नीदरलैण्ड्स (Spanish Netherlands) पर अधिकार हो गया।

ऊदेनार्द (Oudenarde) का संग्राम (१७०८) अधिक जटिल था। इस वर्ष फ्रान्सीसियों ने आक्रमण में पहल की और घेन्ट (Ghent) पर अधिकार कर लिया। शेल्ड्ट नदी के ऊपर की तरफ ऊदेनार्द का दुर्ग अभी तक मित्रराष्ट्रों के हाथ में था, और वेन्दोम (Vendome) इसका घेरा डालने के लिए बढ़ा। मुहासरे की सुरक्षा के लिए उसने अपनी मुख्य सेना ले`सिनिज़ (Lessines) की ओर भेजी। लेकिन मार्लबो`रो ने उससे अधिक फुर्ती दिखाई और उसके पहुँचने के पूर्व ही नगर पर अधिकार कर लिया। फ्रान्सीसी शेल्ड्ट की ओर लौट पड़े और मित्रराष्ट्रीय सेना ने उनका पीछा किया। जैसे ही मित्रराष्ट्रीय सैन्य-दल एकत्र हुए, मार्लबो`रो ने उन्हें नदी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार करने और शत्रु को उलझाने का आदेश दिया। यह एक विपत्तिसंकुल योजना थी। मित्रराष्ट्रीय सेनाओं ने सम्पूर्णतः विनष्ट हो जाने का खतरा मोल लिया था। अगर वेन्दोम की चली होती, तो निश्चित रूप से यही होता भी। लेकिन फ्रान्सीसी सेना का बराये नाम सेनाध्यक्ष था स्वयं युवराज, ड्यूक ऑव बर्गण्डी (Duke of Burgundy) जो वाल्तेयर (Voltaire) के शब्दों में "एक ऐसा राजकुमार था जो मनुष्यों को सुखी बनाने के लिए उत्पन्न हुआ था"—लेकिन उनका संग्राम में नेतृत्व करने के लिए नहीं। हर कदम पर उसने वेन्दोम की योजनाओं में गड़बड़ी पैदा की, मित्रराष्ट्रीय सेना को कुचलने के अमूल्य अवसरों को गँवा दिया और अन्त में रात्रि में पीछे लौट गया, यद्यपि उसके सैनिक उस समय तक पराजित नहीं हुए थे। इस परिस्थिति में ऊदेनार्द के संग्राम को मित्रराष्ट्रों की विजय कहा जाता है, यद्यपि इसमें मित्रराष्ट्र पराजय से बाल-बाल ही बच पाए। अभिभूत फ्रान्सीसी अपनी सीमा पर लौट गए।

अगले वर्ष मार्लबोॅरो विलार (Villars) द्वारा दुआई (Douai) और बेथून (Bethune) के मध्य निर्मित सुरक्षा-पंक्ति की ओर अग्रसरित हुआ। इसके उपक्रम स्वरूप उसने तूरनाई (Tournai) पर अधिकार कर लिया और मोंस (Mons) का घेरा डाल दिया। मोंस को बचाने के लिए विलार अपनी सुरक्षा-पंक्ति से निकल आया और मालप्लाके (Malplaquet) का भीषण संग्राम (१७०९) लड़ा। इसमें भारी हत्याकाण्ड हुआ। मित्रराष्ट्रीय सेना ने फ्रान्सीसी स्थिति (position) पर सीधे प्रहार किया और विजयी हुई; यद्यपि शत्रु की तुलना में उसके दुगने सैनिक खेत रहे। कुछ ऐसी सत्यानाशी विजयें और मिलतीं तो मित्रराष्ट्रीय पक्ष समाप्त हो जाता। फिर भी फ्रान्सीसियों को स्कार्प (Scarpe) के समीप 'ने पल्स अल्ट्रा' रेखा (Ne Plus Ultra Lines) तक हट जाना पड़ा। १७११ में मार्लबोॅरो ने इस रक्षात्मक व्यवस्था (defensive position) को आरा (Arras) के समीप एक ऐसे पैंतरे (manoeuvre) से तोड़ डाला जिसकी तुलना उसकी १७०५ में बांधे में प्राप्त सफलता से की जा सकती है। यह उसके सैनिक जीवन की अन्तिम महत्त्वपूर्ण घटना थी। अब गृह-राजनीति (home politics) ने ऐसा मोड़ लिया जिससे लड़ाई को आगे चलाना असम्भव हो गया। टोरी दल, जो उन दिनों शान्ति स्थापित करने के पक्ष में था, सत्तारूढ़ हो गया और मार्लबोॅरो को वापस बुला लिया गया। सक्रिय सैनिक कार्यवाही स्थगित कर दी गई और ऊट्रेख्ट (Utrecht) की सन्धि (१७१३) कर ली गई।

मार्लबोॅरो में कूटनीतिज्ञों और सैनिकों के गुणों का अनोखा सम्मिश्रण था। एक सेनाध्यक्ष और मध्यस्थ के रूप में वह 'महान् मित्र संघ' (Grand Alliance) को संग्रथित रखने वाली कड़ी था। उसी के निदेशन के कारण युद्ध सफलतापूर्वक समाप्त हो सका। मित्रराष्ट्रीय सेनाध्यक्षों में केवल उसने विभिन्न मोर्चों के पारस्परिक सम्बन्ध और विभिन्न सेनाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता को समझा। ब्लेनहीम का युद्ध एक सेनाध्यक्ष के रूप में उसके सर्वोत्तम रूप को उपस्थित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है। लेकिन वह निर्दोष नहीं था। उसने स्पेन में मित्रराष्ट्रीय सेनाओं की सफलता की सम्भावनाओं को वास्तविकता से अधिक आँका; और इसके लिए फ्लेण्डर्स् के अति महत्त्वपूर्ण युद्धक्षेत्र से कुछ सैन्य-दलों को हटाने तक की अनुमति दे दी। यह गम्भीर भूल थी। स्पेनवाले पूरे हृदय से अपने नए नरेश पंचम फिलिप (Philip V) के साथ थे, और आइबेरी प्रायद्वीप (Iberian Peninsula) की भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी कठिनाइयों के बीच एक राष्ट्रीय प्रतिरोध पर काबू पाने की चेष्टा करना विशुद्ध पागलपन था। नेपोलियन से सौ वर्ष पूर्व मार्लबोरो को इस 'स्पेनी नासूर' (Spanish ulcer) का अनुभव हुआ; लेकिन उसके लिए यह प्राणनाशक सिद्ध नहीं हुआ।

फ्रेडेरिक महान्—महान् सेनाध्यक्षों की हमारी सूची में अगला नाम जिस व्यक्ति का है, वह देखने में सैनिक जैसा बिल्कुल नहीं लगता था। प्रशा (Prussia) के फ्रेडेरिक (Frederick) का कद छोटा, शरीर दुर्बल, आदतें गन्दी और सूरत मलिन थी। अगर वह एक सामान्य नागरिक रहा होता तो सैनिक भर्ती करने वाले किसी भी सार्जेण्ट ने उसे गोली-बारूद के योग्य न समझा होता। अगर वह एक राजा न रहा होता तो उसे एक सेना का नेतृत्व करने का अवसर कभी न मिला होता। वास्तव में शायद उसे सैनिक जीवन अपनाने की अनुमति ही न मिलती, न सैनिक के रूप में न अफसर के रूप में। नेपोलियन (Napoleon) के समान वह एक ऐसे विशुद्ध बौद्धिक सेनाध्यक्ष का उदाहरण था जिसे प्रकृति ने एक योद्धा की समस्त शारीरिक विशेषताओं से वञ्चित कर दिया था। ऐसे व्यक्ति सैन्य पदाधिकारी के रूप में सर्वोच्च पद तक विरलतः ही पहुँच पाते हैं, लेकिन जब वे पहुँचते हैं तो इतिहास के प्रवाह को परिवर्तित कर देते हैं।

फ्रेडेरिक ने अपने पिता से ९०,००० आदमियों की सेना उत्तराधिकार में प्राप्त की। उसने इस संख्या को परिवर्धित करके १५०,००० कर दिया। अब प्रशा के पास, जिसके निवासियों की संख्या ३,०००,००० से कम थी, उतने ही सैनिक थे जितने १३,०००,००० की जनसंख्या वाले आस्ट्रिया और २० ०००,००० की जनसंख्या वाले फ्रान्स के पास। देश की जनशक्ति पर यह एक दुःसह्य भार था। इसके केवल आधे सैनिक जन्म से प्रशावासी थे। शेष स्वेच्छा से भर्ती हुए अथवा अधिक सम्भव है, बेरी लिण्डन (Barry Lyndon) के समान रंगरूट भर्ती करने वाले किसी प्रशियायी एजेण्ट के द्वारा अपहृत विदेशी। नागरिक जब्त करने की प्रणाली (impressment system), जिसके द्वारा फ्रेडेरिक अन्य राजाओं के नागरिकों को छीन लिया करता था, उस नरेश के लिए शोभनीय नहीं थी जो अपने मानवीय गुणों पर गर्व करता था।

फ्रेडेरिक के राज्यारोहण (१७४०) के समय प्रशियायी पदाति-सैन्य यूरोप में सर्वोत्तम थी। इसे फ्रेडेरिक के उग्र अनुशासक पिता ने बेदर्दी के साथ प्रशिक्षित किया था। यह तत्कालीन युग के जटिल सामरिक परिवर्तनों, जैसे अग्रसरण (advan-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

cing), प्रविस्तारण (deploying), कॉलम में विभाजन (breaking into column) घूमकर पंक्ति बनाना (wheeling back into the line) आदि को सम्पादित करने में पूर्णतः दक्ष थी। इस गतिशीलता से समरक्षेत्र में इसकी स्थिति श्रेष्ठतर हो गई, जब कि बन्दूक भरने के लिए लोहे की छड़ (iron ramrod) के प्रयोग से यह आस्ट्रियायी जैसी सेनाओं की तुलना में, जो बन्दूक भरने के लिए अभी तक लकड़ी की छड़ (wooden ramrod) प्रयुक्त करती थीं, तिगुनी तेजी से गोली-वर्षा करने में समर्थ हो गई। अश्वारोही सैन्य प्रारम्भ में घटिया थी। मोॅल-विट्ज (Mollwitz) के समीप फ्रेॅडेरिक द्वारा लड़े गए प्रथम संग्राम (१७४१) में यह राजा को अपने साथ लिए भाग खड़ी हुई, और उस दिन फ्रेॅडेरिक की पराजय हो गई होती अगर श्वेरिन (Schwerin) के नेतृत्व में पदाति-सैन्य धैर्य न रखे रहती। फ्रेॅडेरिक ने इस कमी को दूर करने के लिए तत्काल सुधार किए, और शीघ्र ही सीडलिट्ज (Seidlitz) और जीथेन (Zeithen) के नेतृत्व में प्रशियायी अश्वारोही सैन्य आस्ट्रियायी अश्वारोही सैन्य (hussars) के जोड की हो गई। मार्लबोॅरो के समान फ्रेॅडेरिक भी एक उत्साही तोपची था। वह उन प्रथम व्यक्तियों में एक था जिन्होंने ऊँचे कोण से गोलन्दाजी (high-angle fire) के महत्त्व को समझा। सप्तवर्षीय युद्ध (Seven Years' War) में उसकी तोपों में उच्च कोण पर दूर तक गोला फेंकने वाली तोपों (high-shooting howitzers) की संख्या एक-तिहाई थी।

तिर्यक् गति—यह वह समरतन्त्रीय कार्यवाही (tactical operation) है जिसका श्रेय परम्परागत रूप से फ्रेॅडेरिक को दिया जाता है, यद्यपि उसने इसे केवल एक रणक्षेत्र में सही ढंग से कार्यान्वित किया था। ल्यूथेन (Leuthen) के संग्राम (१७५७) में प्रशा वाले कॉलम के रूप में आस्ट्रिया के दाहिने बाजू की तरफ अग्रसरित हुए; इसके बाद वे एक पहाड़ी की आड़ में दाहिने घूम गए और आस्ट्रियायी सेना के मोर्चे के सामने होकर आगे बढ़े; अन्त में, पंक्तियों में विभाजित होकर वे शत्रु के वाम पार्श्व पर तिर्यक् गति से (Obliquely) टूट पड़े। एक सामान्य व्यक्ति भी इस पैंतरे में निहित संकट को अनायास समझ सकता है। किसी सेना को शत्रु के मोर्चे के सामने से एक ओर से दूसरी ओर ले जाना विनाश को निमन्त्रित करना है, जब तक कि सेना की गति-विधि छिपी हुई न हो और या शत्रु को उसके स्थान पर अचल न कर दिया गया हो। इन दोनों में कोई एक स्थिति उत्पन्न हो जाएगी, इस पर वास्तव में अत्यन्त विरलतः ही भरोसा किया जा सकता है। इसलिए स्वयं फ्रेॅडेरिक के द्वारा 'तिर्यक् गति' (oblique order) का अगर सफलतापूर्वक उपयोग न किया जा सका तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। कोॅलिन (Kolin) के संग्राम (१७५७) में शत्रु के सामने से गुजरते हुए प्रशियायी कॉलम को आस्ट्रियायी मोर्चे के सामने स्थित गाँवों में झड़पने वाले शत्रु-सैनिकों (skirmishers) ने इतना परेशान किया कि उसका एक भाग अनुकूल समय के पूर्व ही घूमकर पंक्तिबद्ध हो गया, और परिणामस्वरूप उसका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिर्यक् आक्रमण (oblique attack) सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) हो गया। रोजबाख़ (Rossbach) की विजय (१७५७), जो फ्रेडेरिक की सबसे बड़ी विजय थी, फ्रान्सीसी सेनाध्यक्ष सूबाइस (Soubise) द्वारा 'तिर्यक् आक्रमण' को सुचारु रूप से कार्यान्वित न किए जाने के कारण प्राप्त हुई थी। यह सोचकर कि

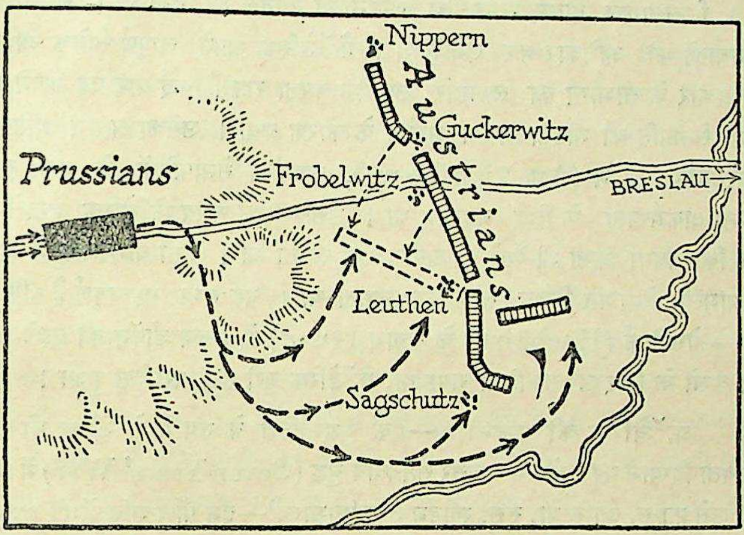

प्रशा वाले लौट रहे हैं, सूबाइस ने उनकी बगल से घूमकर जाने और पार्श्व पर आक्रमण करने का प्रयास किया। लेकिन फ्रेडेरिक ने, जो इस योजना को ताड़ गया था, अपने आदमी एक पहाड़ी के पीछे तैनात कर दिए और जैसे ही फ्रान्सीसी वहाँ से गुजरे, उन्हें धर दबाया। उन दिनों प्रचलित बेलोच सैन्य-विरचनाओं (stiff-formations) के कारण जिस सेना के पार्श्व पर जरा जोरदार आक्रमण हो जाता था, उसके लिए बचने का कोई अवसर नहीं रहता था। इसलिए फ्रेडेरिक को उसकी यह सर्वाधिक गौरवपूर्ण विजय केवल कुछ सौ सैनिकों की क्षति उठाने पर ही मिल गई।

फ्रेडेरिक के अधिकांश संग्रामों के विवरण मन में इस धारणा को जन्म देते हैं कि तिर्यक् गति (oblique order) का प्रयोग करने के कादाचनिक प्रयासों के अतिरिक्त जो सामान्यतः असफल हुए अथवा शत्रु के दोनों बाजुओं पर बारी-बारी से किए गए प्रहारों के रूप में परिवर्तित हो गए—फ्रेडेरिक ने श्रेष्ठ सेनापतित्व का प्रदर्शन नहीं किया और प्रधानतः अपने सैनिकों के युद्ध-कौशल (fighting qualities) पर निर्भर रहा। कभी-कभी उसने भयंकर भूलें कीं, यद्यपि वह इतना भाग्यशाली था कि उनके गम्भीरतम दुष्परिणामों से बच जाता था। तोरगाओ (Torgau) के युद्ध में (१७६०) उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित करने और आस्ट्रिया की ठोस इकाई के रूप में एकत्र सेना पर एक दूसरे से पर्याप्त दूर दो स्थलों से आक्रमण करने की भयंकर मूर्खता की। जैसा कि स्वाभाविक था ये परस्पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

असम्बद्ध आक्रमण विफल रहे और फ्रेडेरिक अपने को पराजित समझकर पीछे लौट आया। लेकिन जब अन्धकार हुआ, जीथेन (Ziethen) के नेतृत्व में उसकी सेना के एक भाग ने पुनः आक्रमण कर दिया और उस पहाड़ी पर अधिकार कर लिया जिसे आस्ट्रियायी सेनापति समरक्षेत्र का निर्णायक स्थल (hey position) मानता था। निरुत्साहित होकर उसने पीछे लौटने का आदेश दे दिया और समरक्षेत्र पर प्रशावालों को अधिकार कर लेने दिया। फ्रेडेरिक अपने सम्पूर्ण सैनिक जीवन में इस प्रकार के सौभाग्य का लगातार उपभोग करता रहा। कई बार वह अपने प्रतिस्पर्द्धी सेनापति की भीरुता अथवा मूर्खता के कारण बचा। उसका प्रधान प्रतिद्वन्द्वी, आस्ट्रियायी डोन (Austrian Daun), अकर्मण्य सेनापतियों के उस युग में अपनी अकर्मण्यता के लिए बदनाम था। उससे लड़ते समय फ्रेडेरिक हस्तक्षेप का भय किए बिना किसी भी पैंतरे का प्रयोग कर सकता था। ऐसी परिस्थिति में मामूली से मामूली सेनापति विजय लाभ कर सकता था। यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि एक बार—होखकिर्क (Hochkirk) के संग्राम (१७५८) में—जब डोन को पहले आक्रमण करने के लिए उकसा दिया गया था, फ्रेडेरिक बुरी तरह पराजित हुआ।

फ्रेडेरिक की युद्धनीति—एक युद्धनीतिज्ञ के रूप में फ्रेडेरिक को अपनी योग्यता दिखाने का सर्वोत्तम अवसर सप्तवर्षीय युद्ध (Seven Years' War) में मिला, जब उसे फ्रान्स, आस्ट्रिया, रूस, स्वीडन तथा 'साम्राज्य'—इन पाँच शक्तियों (Powers) से एक साथ लड़ना पड़ा। इन में अन्तिम दो देश विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं थे, और फ्रान्स ने, जिसकी सेनाओं को 'फर्डिनेण्ड ऑव ब्रन्सविक' (Ferdinand of Brunswick) के नेतृत्व में एक आँग्ल-हनोवरी सेना ने अटका रखा था, फ्रेडेरिक को रोज़बाख के संग्राम के उपरान्त कभी परेशान नहीं किया। उसके दो प्रमुख प्रतिस्पर्द्धी रूस और आस्ट्रिया थे। फ्रेडेरिक को आन्तरिक रेखाओं पर कार्य करने (operating on interior lines) का लाभ प्राप्त था, लेकिन उसने अपनी स्थिति का उस प्रकार लाभ नहीं उठाया जैसे नेपोलियन ने उठाया होता। युद्ध प्रारम्भ होने के समय, आस्ट्रियायी सेनाओं के समरक्षेत्र में भलीभाँति स्थिति ग्रहण करने के पूर्व, उसे मोरेविया (Moravia) के मार्ग से आस्ट्रिया पर भीषण आघात करने का शानदार अवसर मिला। इस दिशा से तेजी से अग्रसरित होने पर उसे शायद वियना (Vienna) के द्वार खटखटाने का अवसर मिल जाता और वह हेब्सबर्ग[1] (Habsburg) राजधानी में सन्धि की मनोनुकूल शर्तें तय कर पाता। लेकिन अपने पीछे सेक्सनी और बोहेमिया को अविजित छोड़ जाने का साहस उसमें नहीं था। उसका यह भय निराधार था क्योंकि वियना की प्राचीर की छाया में प्राप्त विजय से इन प्रान्तों का प्रतिरोध तो अपने आप टूट जाता। लेकिन फ्रेडेरिक ने सेक्सनी को पददलित करना और फिर बोहेमिया पर आक्रमण करना पसन्द किया। अग्रसरण के दौरान उसके द्वारा सेना की टुकड़ियों

---

१. आस्ट्रिया के राजवंश का नाम। —अनु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का स्थान-निर्धारण (dispositions) जितना त्रुटिपूर्ण था उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। प्रशा वाले एक दूसरे से पर्याप्त दूर कॉलमों के रूप में प्राग (Prague) पहुँचे। अगर आस्ट्रियायी सेनाध्यक्ष राजकुमार चार्ल्स (Charles) में जरा भी ऊर्जस्विता होती तो वह इन कॉलमों पर बारी-बारी से आक्रमण करता, और फ्रेडेरिक को अपने जीवन की सबसे बड़ी आपदा का स्वाद चखना पड़ जाता, लेकिन, अपने यथारीति सौभाग्यानुसार, वह अपनी सेनाओं को शत्रु की आँखों के लगभग सामने संयुक्त करने और प्राग (Prague) का संग्राम (१७५७) जीतने में सफल हो गया। लेकिन यह आक्रमण विफल रहा, क्योंकि कुछ सप्ताह उपरान्त कोलिन (Kolin) के युद्ध (दे० पृ० ८६) में भारी पराजय होने के कारण प्रशावाले इस प्रान्त को खाली करने के लिए विवश हो गए।

युद्ध के शेष भाग में फ्रेडेरिक रक्षात्मक रूप से लडाई करता रहा। उसकी युद्धनीति (strategy) उसके एक अव्याख्येय दोष के कारण बिगड़ गई। वह उस समय तक सैन्यव्यूहन (manoeuvring) प्रारम्भ नहीं करता था जब तक आस्ट्रिया और रूस वाले उसकी सीमा पर नहीं आ पहुँचते थे। लेकिन रूसी सेना लम्बे मार्गों को धीरे-धीरे पार करती हुई प्रशा में युद्ध-ऋतु प्रारम्भ होने के तीन मास व्यतीत हो चुकने के पूर्व, नहीं पहुँच पाती थी। इन तीन मास तक फ्रेडेरिक के लिए अपनी समस्त सेना को आस्ट्रिया के विरुद्ध उतारने का अमूल्य अवसर रहता था। उसने अपनी स्थिति की इस आद्य-श्रेष्ठता (initial advantage) से कभी लाभ नहीं उठाया। यह सही है कि एक बार दोनों शत्रुओं के सम्मुख आ जाने के उपरान्त वह अपनी सेना को दोनों के विरुद्ध बारी-बारी से संकेन्द्रित (concentrate) करते हुए बड़ी ऊर्जस्विता के साथ पैंतरे बदलता था; लेकिन उसकी समस्त चतुरता उनके सांख्यिक श्रेष्ठत्व (numerical superiority) के निराकरण के लिए अपर्याप्त थी। धीरे-धीरे उन्होंने उसकी शक्ति को जर्जर कर दिया। रूसियों द्वारा कुनेर्स्डोर्फ (Kunersdorf) के युद्ध (१७५९) में भीषण रूप से पराजित होने पर बर्लिन का मार्ग अवरुद्ध हो गया। फ्रेडेरिक ने अपने को हारा हुआ मान लिया, सिंहासन त्यागने का प्रस्ताव रखा और आत्महत्या की बात करने लगा। लेकिन मित्रपक्षीय सेनाध्यक्षों के आलस्य और सेन्टपीटर्सबर्ग (St. Petersburg) तथा वियना (Vienna) के मतभेदों के कारण मित्रपक्षीय सेना का अग्रसरण रुक गया और उसे साँस लेने का अवसर मिल गया। अब वह उस समय तक संघर्ष करते रहने योग्य हो गया जब तक उसकी व्यक्तिगत शत्रु सम्राज्ञी (Tsarina) एलिजाबेथ (Elizabeth) की मृत्यु के कारण रूस मित्रसंघ (coalition) से अलग नहीं हो गया और युद्ध का अन्त उसके पक्ष में होने की सम्भावना नहीं बढ़ गई। जो नरेश १७५९ में विनाश के निकट था, १७६३ में एक सन्तोषप्रद सन्धि करने योग्य हो गया। लेकिन इस सुखद परिणाम का श्रेय फ्रेडेरिक की युद्धक्षेत्र में प्राप्त सफलताओं को देना दुष्कर है।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जा रहा है इस महान् नरेश की सैनिक ख्याति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कम होती जा रही है। विद्वेषी आलोचक उसकी पराजयों की संख्या, विजयों की महार्घता (costliness), युद्धनीति की दुर्बलताओं और उसके प्रतिद्वन्द्वी सेनापतियों की मूर्खताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। निस्सन्देह उसकी प्रतिष्ठा बहुत कुछ निकटवर्ती प्रदेशों में अच्छे सेनापति न होने के कारण थी। वह उस युग में उत्पन्न हुआ था जब सैन्य-प्रतिभा का घोर अभाव था। उसकी प्रतिभा का उसकी सफलताओं की दीप्ति से चौंधियाए समकालिक व्यक्तियों की अपेक्षा आज हम अधिक सही मूल्याङ्कन कर सकते हैं। हम उसे एक ऐसा सेनाध्यक्ष पाते हैं जिसमें बहुत से गुण थे परन्तु जिसे सहजात मतिप्रकर्ष (genius) नहीं कहा जा सकता; जो अन्य सफल सेनापतियों की अपेक्षा अपने सौभाग्य का अधिक ऋणी था। उसका सबसे बड़ा सौभाग्य था उसका राजवंश में उत्पन्न होना। उसके राजपद के कारण उसे केवल वही नहीं मिला जो उसके प्रतिद्वन्द्वियों को अनुपलब्ध था—सैनिकों पर अबाध नियन्त्रण—वरन्, जिन गलतियों के करने पर किसी और सामान्य पदाधिकारी के सैनिक जीवन का अकस्मात् अन्त हो जाता, उनको करके भी वह च्युत होने से बचा रहा।

नेपोलियनी युद्धकला की ओर संक्रमण—सप्तवर्षीय युद्ध के उपरान्त आने वाले युग में अनेक सेनाध्यक्षों ने, विशेषतः फ्रान्स में, फ्रेडेरिकी युद्धनीति और समरतन्त्र (Frederician strategy and tactics) को, जो कुछ हद तक बेलोच (rigid) थे, नया रूप देने और लड़ने का एक अधिक गतिशील ढंग प्रचलित करने का प्रयास किया। वे नेपोलियन (Napoleon) के पुरोगामी (forerunners) थे। उनके तीन सुधार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(अ) झड़पनेवाले सैनिक (skirmishers)—उत्तरी अमरीका में इण्डियनों[1] (Indians) और उपनिवेशकों (colonists) के विरुद्ध लड़े गए बर्तानवी (British) युद्धों से यह स्पष्ट हो गया था कि नियमित सैनिकों (regulars) की बेलोच पंक्तियाँ ((stiff lines) ओट से गोली-वर्षा करनेवाले निशानेबाजों (sharp-shooters) की लचीली विरचनाओं (loose formations) के मुकाबले में प्रायः असहाय्य सिद्ध होती थीं। इस भय के निवारणार्थ खुली विरचनाओं में लड़ने वाले कुशल निशानेबाजों (crack-shots) की विशेष बटालियनें संगठित की गईं। यह प्रथा अन्य सेनाओं में भी प्रचलित हो गई। अगर अँग्रेजों के पास 'राइफिलमेन' (riflemen) थे, तो फ्रान्सीसियों के पास 'शासुर' (chasseurs) और जर्मनों के पास 'जागेर' (jagers)। इनके अतिरिक्त प्रत्येक सामान्य पदाति बटालियन के साथ झड़पने वाले

---

१. जब कोलम्बस ने उत्तरी अमेरीका की खोज की तो उसने उसे भ्रमवशात् भारतवर्ष समझ लिया था। तब से यूरोपवाले और अमेरिका में बसे श्वेतजातीय जन अमेरिका के मूल निवासियों को 'इण्डियन' कहते आए हैं। इस अर्थ में यह शब्द अब रूढ़ हो चुका है। इसलिए अमेरिका के मूल निवासियों का उल्लेख करते समय उनके लिए हिन्दी में भी 'इण्डियन' शब्द का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। इस रूढ़ अर्थ में इसके स्थान पर 'भारतीय' शब्द का प्रयोग अनुचित और अशुद्ध है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सैनिकों (skirmishers) के एक या दो दल (companies) रहते थे जिन्हें आक्रमक अथवा रक्षक सैन्य-पंक्ति के आगे भेज दिया जाता था। इस प्रकार हल्की और भारी पदाति सेनाओं में भेद उत्पन्न हुआ जो उन्नीसवीं शती के अन्तिम भाग तक बना रहा और जिसके चिह्न कुछ आधुनिक रेजीमेन्ट्स् के नामों में अभी तक मिलते हैं।

(आ) 'लाइन' बनाम 'कॉलम' (Line *v.* Column)—अट्ठारहवीं शती के अन्तिम भाग में इन दो परस्पर विरोधी विरचनाओं के लाभ भारी वादविवाद का विषय रहे। प्रशा वालों द्वारा रैखिक-विरचना (line-formation) का जिस रूप में प्रयोग किया जाता था, उसका लाभ यह था कि उससे मुस्केटों को सर्वाधिक सम्भव संख्या में क्रियारत किया जा सकता था। इससे सेना की गोली-वर्षा करने की शक्ति उत्कृष्टतर हो गई, लेकिन 'शॉक पावर' (shock power) कुछ घट गई। उबड़-खाबड़ भूमि पर अग्रसरित होते हुए सैनिकों की पंक्ति कठिनता से नियन्त्रित हो पाती थी, आसानी से अव्यवस्थित की जा सकती थी और शत्रु-सैनिकों की विरचना के अधिक गहरी और सघन होने पर अनायास टूट जाती थी। अतएव सैन्य-विद्या-विशारदों का एक वर्ग इसके स्थान पर लघु पदाति कॉलमों के प्रयोग को, जिनके आगे झड़पने वाले सैनिकों (skirmishers) की टोलियाँ रहती थीं, अधिक समीचीन मानता था।

फ्रान्स में इस विवाद का अन्त निश्चित रूप से कॉलम के पक्ष में हुआ। यद्यपि १७९१ के पदाति-सैन्य-नियमों में विस्तारित बटालियनों की पंक्ति को सही युद्ध-विरचना स्वीकृत किया गया, लेकिन इस आदेश की लगभग पूर्णतः उपेक्षा की जाती रही। नेपोलियन और उसके पहले क्रान्तिकारी सेनाध्यक्षों ने कॉलमों का प्रयोग किया, पहले बटालियनों के कॉलम, फिर ब्रिगेडों के और अन्त में गणों (divisions) के, जिन्होंने वाटरलू (Waterloo) के युद्धक्षेत्र में ठोस समूह के रूप में ब्रिटिश वर्गों (square) पर सवेग आक्रमण किया। इसके विपरीत ब्रिटिश सेनाध्यक्ष रैखिक-विचरना में विश्वास रखते रहे। १८०३-४ में शोर्नक्लिफ केम्प (Shorncliffe camp) के युद्ध में सुप्रसिद्ध सैन्य-संगठक (military organizer) सर जॉन मूर (Sir John Moore) ने एक ऐसी रैखिक-विरचना (linear formation) का विकास किया जिसमें लोच और सघनता दोनों थीं। फ्रेडेरिकी सैन्य-पंक्ति के समान इसमें भी तीन कतारें होती थीं। लेकिन वेलिंग्टन (Wellington) ने प्राय-द्वीप (स्पेन) में स्वभावानुसार केवल दो पंक्तियों का ही प्रयोग किया जिनके सामने झड़पने वाले सैनिकों (skirmishers) का दल रहता था। जहाँ कहीं भी सम्भव होता था वह अपने सैनिकों को किसी पहाड़ी के शिखर के पीछे छिपा देता था। झड़पने वाले सैनिक शत्रु-कॉलम के आगमन की पीछे लौटकर दौड़ते हुए सूचना देते थे। जैसे ही वह कॉलम पहाड़ी पर पहुँचा था उस पर गोलियों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बौछार की जाती थी और आक्रमण कर दिया जाता था। सैन्य पंक्ति के दोनों सिरे मुड़कर शत्रु-कॉलम के पार्श्वों को घेर लेते थे। कॉलम विरचना रैखिक-आक्रमण (line attack) का सामना कदाचित् ही कर पाती थी। लेकिन यह स्मरणीय है कि वेलिंग्टन के आदमी ज्ञानवृद्ध (seasoned veterans) थे, नेपोलियन के जबरदस्ती भर्ती किए गए अधकचरे रंगरूट। नौसिखिए सैनिकों के लिए कॉलम सर्वोत्तम विरचना है। इसमें वे आगे बढ़ पाते हैं और उनमें आत्म-विश्वास उत्पन्न होता है। रैखिक-विरचना में युद्ध करने के लिए शान्त-चित्तता और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है जिनकी आशा नए रंगरूटों में नहीं की जा सकती।

(इ) 'डिवीज़नल' सिद्धान्त (The Divisional Principle)—अट्ठारहवीं शती की युद्धकला में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आधारभूत परिवर्तन था। अभी तक सेनाएँ एकल खण्डों (single blocks) के रूप में युद्ध करती थीं। अब उन्हें गणों (divisions) में विभाजित किया जाने लगा। प्रत्येक गण में पदाति और अश्वारोही सैनिक एवं तोपखाना तीनों रहते और वे स्वतन्त्ररूपेण, लघु सेनाओं के समान, पैंतरें बदल सकते थे। इस नई व्यवस्था में छितराने की सामर्थ्य (power to disperse) और एक होने की सामर्थ्य (power to unite) दोनों का समन्वय था। इसके द्वारा कोई सेना जो संकटस्थ (threatened) स्थानों की सुरक्षा के हेतु विस्तृत प्रदेश में छितराई हुई होती थी, शत्रु के आक्रमण का सामना करने के लिए शीघ्रतापूर्वक एकत्र संगृहीत की जा सकती थी। उतनी ही सुविधा से उसे आक्रमणार्थ एकत्र किया जा सकता था। और यह शत्रु को लड़ने के लिए भी विवश कर सकती थी। इसे करने का सर्वोत्तम ढंग था उसकी रसद, युद्ध-सामग्री एवं रंगरूटों के स्रोतों को बन्द करते हुए उसकी संचार-रेखाओं (lines of communication) को काट देना। इसके पहले, जब सेनाएँ एकल खण्डों में अग्रसरण करती और लड़ती थीं, शत्रु और उसके अड्डे (base) के बीच विघ्न डालने से कभी कोई विशेष लाभ नहीं होता था। वह लगभग सदैव कोई और मार्ग ढूँढ़ निकालने में सफल हो जाता था। वास्तव में सेनाएँ प्रायः शत्रुदेश की ओर पीठ करके ही युद्ध करती थीं और सेनापति इसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं करते थे। वाल्मी (Valmy) का युद्ध (१७९२) इस प्रकार का अन्तिम संग्राम था। लेकिन अब शत्रु-सैन्य को एक विस्तृत मोर्चे में बिखरे गणों (divisions) द्वारा घेरा जा सकता था, और अगर वह किसी स्थल पर घेरे को तोड़ने का प्रयास करता था तो कुछ गण उसे उस समय तक सफलतापूर्वक उलझाए रखते थे जब तक दूसरे गण नहीं आ जाते थे। या शत्रु सेना को दो खण्डों में तोड़ दिया जाता था, जिनमें एक खण्ड को कुछ गण उलझाए रहते थे और दूसरे को बाकी गण कुचल डालते थे। पैंतरे बदलने की सामर्थ्य दस गुनी बढ़ गई। अब सेनाएँ "एक भुजाविहीन बेलोच शरीर" ('a rigid armless body') के बजाय "एक अष्टपाद जिसकी सब भुजाएँ हिलती रहती हैं और उनमें से कोई एक शत्रु को जैसे ही पकड़ती है, शेष भी स्वचेष्टया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसको दबोच लेती हैं" अथवा "एक ऐसा तरल पदार्थ जो किसी बाधा से टकराते ही पारे की बूँदों के समान अचानक परस्पर मिलकर घनीभूत हो जाता है" हो गई* ।

'डिवीजनल' सिद्धान्त का जन्म फ्रान्स में हुआ । इसको ब्रोग्ली (Broglie) जैसे सेनाध्यक्षों, बूरसेत् (Bourcet) जैसे स्टाफ-ऑफिसरों, गुईबर्त (Guibert) जैसे सैन्य-विद्या-विशारदों और कार्नोत् (Carnot) जैसे युद्ध-मन्त्रियों ने पूर्ण रूप प्रदान किया । इसको सर्वप्रथम व्यावहारिक रूप प्रदान करने का श्रेय क्रान्ति के समर्थक सेनाध्यक्षों को प्राप्त है, लेकिन उनमें अधिकांश के लिए यह अत्यधिक जटिल सिद्ध हुआ । मोरो (Moreau), जूर्दं (Jourdain), पिशेरू (Pichegru), और होशे (Hoche) अपनी सेनाओं को छितरा सकते थे, लेकिन आवश्यकता होने पर एकत्र संग्रहीत नहीं कर पाते थे । यहाँ तक कि कार्नोत् भी, जो सिद्धान्त में सेनाओं को एकत्र संग्रहीत करने का अथक रूप से उपदेश देता था, व्यवहार में बहुधा सेनाओं के विस्तारण (dispersal) का ही आदेश देता रहा । वास्तव में युवक बोनापार्ट के आविर्भाव तक इस नई प्रणाली की निर्दोष व्याख्या कोई भी नहीं कर पाया ।

---

* लिडेल हार्ट, दि घोस्ट ऑव नेपोलियन, पृ० ६६-६७ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

नेपोलियन और वेलिंग्टन

नेपोलियनी युद्धनीति—नेपोलियनी युद्धकला के सिद्धान्तों का वर्णन संक्षेप में चार भागों में किया जा सकता है।

(१) संख्या (Numbers)—बड़ी बटालियनें सदैव विजय प्राप्त करती हैं। रणक्षेत्र में आपका शत्रु से अधिक शक्तिशाली होना नितान्त आवश्यक है। केवल युद्धनीतिक पैंतरों (strategic moves) से युद्धों में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। श्रेष्ठ युद्धनीति (strategy) में यह विरोधाभास निहित है कि अगर आप विजयी होते हैं तो यह आप को शत्रु को विनष्ट कर देने का अवसर प्रदान करती है, लेकिन अगर पराजित हो जाते हैं तो उसे आप को नष्ट कर देने का अवसर दे देती है। उदाहरणार्थ अगर आप शत्रु के पृष्ठभाग पर आक्रमण कर देते हैं तो उसका उसके अड्डे के साथ सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। अगर वह पराजित हो गया तो नष्ट हो जाएगा। लेकिन मान लीजिए कि पराजय आप की होती है। तब शत्रु आपके और आप के अड्डे के मध्य होगा। वे सब कड़वे फल जो आपने उसके लिए एकत्र किए हैं, आप को खुद चखने पड़ेंगे।

(२) संकेन्द्रण (Concentration)—शत्रु से संख्या में श्रेष्ठतर होने के लिए प्रत्येक उपलब्ध रण-समर्थ व्यक्ति को रणक्षेत्र में एकत्र करना आवश्यक है। यह बात प्रारम्भिक विस्तारण (initial dispersion) के साथ असंगत नहीं है। आप अपने सैनिकों को शत्रु को घेर लेने अथवा उसकी संचार-रेखा को काटने के लिए भेज सकते हैं। लेकिन आप में लड़ाई प्रारम्भ होने की घड़ी आते ही प्रत्येक बटालियन, प्रत्येक स्क्वाड्रन, प्रत्येक तोप को तत्काल रणक्षेत्र में लौटा लेने की सामर्थ्य होनी चाहिए। अगर इस संकेन्द्रण (concentration) से आप शत्रु-सेना से संख्या में श्रेष्ठतर हो जाते हैं तो आप उसे घेरने की चेष्टा प्रारम्भ करेंगे। अगर आप को यह श्रेष्ठत्व नहीं मिलता, तो आपको उसे खण्डित करने और प्रत्येक खण्ड को पृथक्तः पराजित करने का प्रयास करना चाहिए।

(३) एकता (Unity)—प्रत्येक युद्धक्षेत्र (theatre of war) में केवल एक सेनाध्यक्ष होना चाहिए, और उसकी सेना को केवल एक ध्येय को प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। विभक्त नेतृत्व (divided commands) एवं दोहरी परिचालन रेखाओं (double lines of operations) से सेना छितरा जाती है और दुर्बल हो जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) गति (Speed)—आपको सदैव अपने शत्रु से अधिक गतिशील होना चाहिए। अगर उसकी योजना आपकी योजना के समान ही उत्कृष्ट है, तब भी उसे कार्यान्वित करने में अधिक द्रुतगति द्वारा आप उसे पराजित करने में समर्थ होंगे। शुरुआत करने में पहल करो और बराबर करते रहो।

नेपोलियन की युद्धनीति उसके इटालवी अभियानों (Italian campaigns) में पूर्णतः प्रस्फुटित रूप में मिलती है। उसने बाद में उसमें कोई सुधार नहीं किए। उनके बाद लड़े गए युद्ध पुनरावृत्ति मात्र थे। उसका अन्तिम युद्ध प्रथम युद्ध का प्रतिरूप था। एक सेनाध्यक्ष के रूप में "उसका विकास नहीं हुआ; वह ढली हुई मूर्ति की तरह यथावत् बना रहा।"

इटली (१७९६-९७)—१७९६ में इटली में स्थित फ्रान्सीसी सेना, जिसमें ३०,००० सैनिक थे, लाइगुरियन आल्प्स् के दक्षिण में इटालवी रिविएरा (Italian Riviera) के किनारे-किनारे तैनात थी। उसके विपक्ष में उत्तर-पूर्व में ब्यूल्यू (Beaulieu) के नेतृत्व में आस्ट्रिया वाले थे और, उत्तर-पश्चिम में कोली (Colli) के नेतृत्व में सार्डीनिया वाले। इन दोनों सेनाओं से एक साथ युद्ध करना विनाश को निमन्त्रित करना था। उन दोनों में मिलाकर ६०,००० सैनिक थे। नेपोलियन की योजना थी उन दोनों के सन्धि-स्थल (point of junction) पर आघात करना, उन्हे विलग कर देना और पृथक्तः पराजित करना।

उसकी योजना को उस भूखण्ड की बनावट से सहायता मिली। सवोना (Savona) से उत्तर की ओर लाइगुरियन आल्प्स् चार घाटियों में विभाजित हो गए हैं, जिनके दक्षिणी सिरे उस पहाड़ी द्वारा संयुक्त हैं जो सवोना-कारकेयर-केवा मार्ग (Savona-Carcare-Ceva road) के सहारे-सहारे चली गई है। इन घाटियों में ऊपर की ओर बढ़ने वाली सेना अपने आप विभाजित हो जाती है, जबकि पहाड़ी को अधिकार में रखने वाला शत्रु एक घाटी से दूसरी घाटी में अनायास आ जा सकता है और शत्रु-सैन्य के परस्पर पृथक् दलों पर आघात कर सकता है। यह सम्भावना नेपोलियन की योजना का आधार थी।

आस्ट्रिया वालों ने पहले गतिशील होकर उसकी योजना को सरलतर कर दिया। सेर्वोनी (Cervoni) के नेतृत्व में एक फ्रान्सीसी ब्रिगेड को देखकर, जो समुद्रतटीय सड़क द्वारा जेनोओ (Genoa) की ओर जा रही थी, ब्यूल्यू यह समझा कि फ्रान्सीसी उसके वाम पार्श्व को घेरने का प्रयास कर रहे हैं। यह बात नेपोलियन की योजना के अन्तर्गत नहीं थी क्योंकि ऐसा करने से आस्ट्रियायी सेना सार्डीनिया की सेना की तरफ मुड़ जाती और दोनों सेनाएँ, जिन्हें वह पृथक् करना चाहता था, संयुक्त हो जातीं। लेकिन ब्यूल्यू ने अपनी भ्रमपूर्ण धारणा के कारण शत्रु के चक्करदार प्रगमन (turning movement) का उसी पर पूर्व-प्रयोग करना (anticipate) निश्चित किया। तत्कालीन सभी आस्ट्रियायी सेनाध्यक्षों के समान उसने इसका प्रारम्भ अपनी सेना के विभाजन से किया। वह स्वयं अपने अधिकांश सैनिकों के साथ समुद्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तटीय मार्ग से सवोना की ओर बढ़ा, जबकि आर्जेन्तो (Argenteau) के नेतृत्व में एक सशक्त दल (detachment) चारों घाटियों में सबसे अधिक पूर्व की ओर स्थित एस्सो (Esso) नामक घाटी में बढ़ा। नेपोलियन ने तत्काल झपट्टा मारा। ब्यूल्यू को उलझाए रखने के लिए सेवोंनी को छोड़कर, उसने शीघ्रता से आर्जेन्तो के विरुद्ध सैन्य-संकेन्द्रण (concentration) किया और उसे मोन्तेनोत्त (Montenotte)

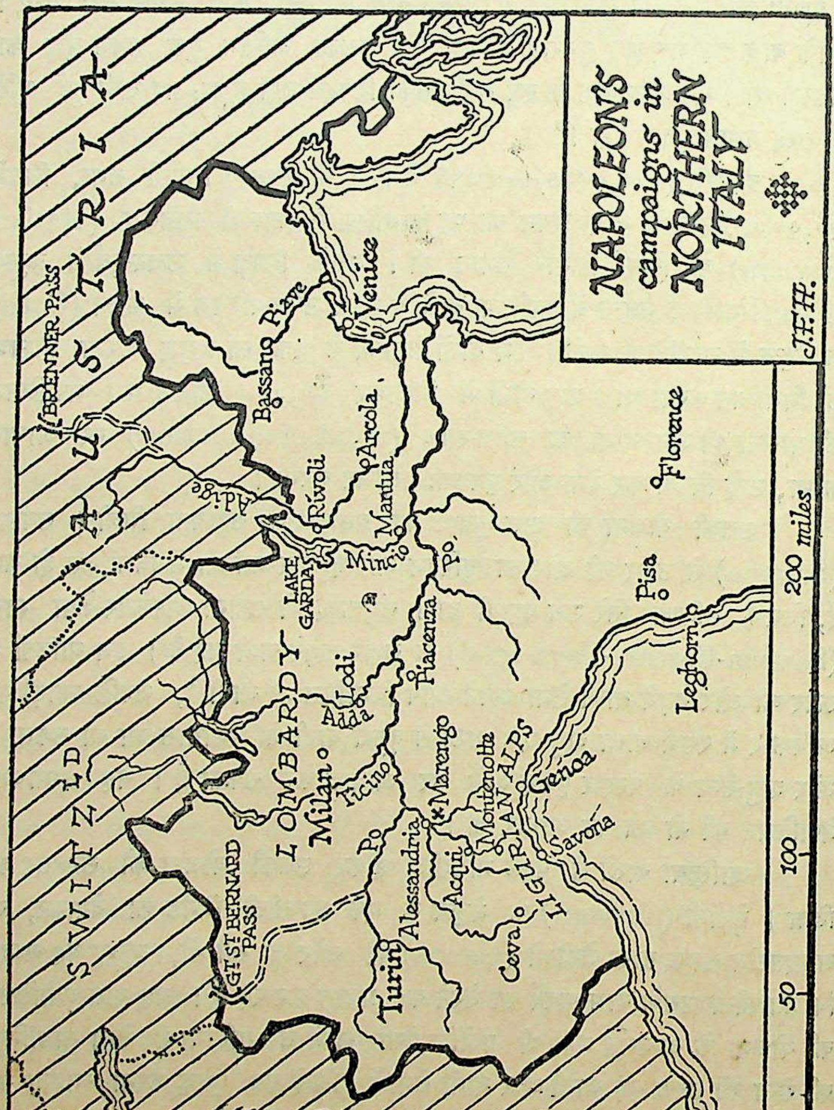

के समीप पराजित कर दिया। ब्यूल्यू उस पहाड़ी के कारण, जो उसे उसके सहायक से पृथक् किए हुए थी, कोई मदद न दे सका। वह पीछे लौट पड़ा और उसने बोमिंदा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(Bormida) की लघु घाटी में देगा (Dega) के समीप सैन्य-संकेन्द्रण का आदेश दिया। लेकिन नेपोलियन उससे एक कदम आगे रहा। उसने देगा को अधिकृत कर लिया और आस्ट्रिया वालों को पीछे, एक्वाई (Acqui) की ओर, धकेल दिया। यहाँ वे मिलेसिमो (Millesimo) के समीप सार्डीनिया वालों से पूर्णतः पृथक् कर दिए गए। आस्ट्रिया वालों पर दृष्टि रखने के लिए एक छोटा सा सैन्य-दल छोड़ कर, नेपोलियन अब कोली (Colli) पर टूट पड़ा। उसने उसे त्यूरिन (Turin) की ओर धकेल दिया और एक युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया। ब्यूल्यू, जो अपनी मित्र-सेना से मिलने की आशा में पश्चिम की ओर बढ़ आया था, अब पो (Po) नदी की तरफ लौट पड़ा और उसने अपनी सेना टिसिनो (Ticino) के पीछे तैनात कर दी। एक पखवाड़े में युद्ध का प्रथम अंक समाप्त हो गया। सार्डीनिया वाले युद्ध से पृथक् कर दिए गए और नेपोलियन अपने दूसरे शत्रु से निपटने के लिए तैयार हो गया।

फ्रान्सीसियों के पास अब शत्रु से अधिक सेना थी। नेपोलियन ने आस्ट्रियायी सेना और उसके अड्डे के मध्य पहुँचने की योजना बनाई। बाईं ओर से आक्रमण करने का बहाना करता हुआ वह पूर्व में पिएसेन्ज़ा (Piacenza) की ओर अग्रसरित हुआ और आस्ट्रियायी सैन्य के पृष्ठभाग पर टूट पड़ने की आशा में उसने पो नदी पार कर ली। परन्तु समय से चेतावनी मिल जाने के कारण ब्यूल्यू, लोदी (Lodi) के समीप पृष्ठरक्षी-सक्रिया (rearguard action) के उपरान्त, आद्दा (Adda) नदी पार कर बच निकला और उसने अपनी सेना मिन्सियो (Mincio) के पीछे तैनात कर दी। जब अग्रसरित होती हुई फ्रान्सीसी सैन्य ने इस स्थान पर भी धावा बोला तो उसने मान्तुआ (Mantua) के दुर्ग में एक रक्षक दल छोड़कर शेष इटली को पूर्णतः खाली कर देने का निश्चय किया। नेपोलियन ने, जो अभी तक आस्ट्रिया पर सीधे आक्रमण करने योग्य शक्तिशाली नहीं हो पाया था, मान्तुआ का घेरा डाल दिया।

युद्ध का शेष भाग आस्ट्रिया वालों की मान्तुआ को सहायता पहुँचाने के प्रयासों की कहानी है जो, उनकी सेनाओं को विभाजित कर देने की विनाशक आदत के कारण, निष्फल हुए। नेपोलियन के विरुद्ध चार सेनाएँ भेजी गईं—लेकिन अनुक्रमशः, एक साथ नहीं। इनमें प्रत्येक सेना इतनी विशाल थी कि फ्रान्सीसियों पर अकेले हावी हो जाए, लेकिन हर बार आस्ट्रियायी सेनाध्यक्ष ने अपनी सेना की संख्या की श्रेष्ठता को आक्रमण के समय उसे दो भागों में बाँट कर नष्ट कर दिया। वुर्मसेर (Wurmser) ने, जिसने उत्तर की ओर से आक्रमण किया, अपनी आधी सेना गर्दा झील (Lake Garda) के पूर्व की ओर से भेजी और आधी पश्चिम की ओर से। लोनातो (Lonato) और कास्तिग्लियोन (Castiglione) स्थलों के समीप नेपोलियन ने दोनों दलों को एक-एक करके पराजित कर दिया। दूसरे प्रयास में वुर्मसेर ने अपनी सेना का एक भाग आदिगे (Adige) घाटी के मार्ग से भेजा, और शेष भाग डेविडोविख (Davidowich) के नेतृत्व में ब्रेनेर दर्रे (Brenner Pass) के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्ग से। नेपोलियन ने डेविडोविश को रोवेरेडो (Roveredo) के युद्ध में परास्त किया और फिर वुर्मसेर को बासानो (Bassano) के युद्ध में। तीसरा प्रयास आल्विन्ज़ी (Alvinzi) द्वारा किया गया जिसने पूर्व से प्यावे (Piave) को पार करके आक्रमण किया जब कि डेविडोविश उत्तर की ओर से आया। आल्विञ्ज़ी आरकोला (Arcola) के युद्ध में परास्त हुआ और डेविडोविश ब्रेनेर के मार्ग से लौटने के लिए विवश कर दिया गया। इसी प्रकार के अन्तिम प्रयास में आल्विन्ज़ी रिवोली (Rivoli) के समीप परास्त हुआ और एक अन्य सेना प्रोवेरा (Provera) के नेतृत्व में मान्तुआ दुर्ग की प्राचीर के समीप बन्दी बना ली गई। एक पखवाड़े के उपरान्त (फर्वरी २, १७९७) दुर्ग का पतन हो गया। नेपोलियन अपने सैनिकों को आस्ट्रियायी सीमा के पार ले गया, और लिओबेन (Leoben) के समीप, वियना से १०० मील दूर, आस्ट्रियायी राजदूतों ने उससे मिल कर युद्ध-विराम-सन्धि की याचना की।

मारेङ्गो (१८००)—दूसरा इटालवी अभियान नेपोलियन की युद्धनीति के वैकल्पिक रूप का उदाहरण है। इस बार संख्याधिक्य का लाभ प्राप्त होने के कारण उसने शत्रु-सैन्य को विभाजित करने और उस पर उत्तरोत्तर आघात करके उसे विनष्ट करने के स्थान पर उसे घेरने और एक ही बार में कुचल देने की चेष्टा की। १८०० में आस्ट्रिया वाले मेलास् (Melas) के नेतृत्व में लगभग उसी स्थिति में थे जिसमें वे १७९६ में थे, लेकिन नेपोलियन ने उन पर एक अन्य दिशा से आक्रमण किया। वह अपनी सेना उत्तर की ओर से ग्रेट सेंट बर्नार्ड दर्रे (the Great St. Bernard Pass) से लाया। मेलास् की संचार-रेखा की ओर तत्काल बढ़ जाने पर आस्ट्रिया वाले पूर्व की ओर हट जाते, लेकिन नेपोलियन का उद्देश्य यह नहीं था। उसकी आकांक्षा आस्ट्रियायी सेना को घेर लेना और सम्पूर्णतः विनष्ट कर देना थी। तदनुसार, कुछ हट कर मिलान (Milan) की ओर बढ़ते हुए और सेंट गोथार्ड (St. Gothard) के मार्ग से जर्मनी से आई बलवर्धक सैन्य को साथ लेते हुए वह दक्षिण में पो (Po) नदी की ओर गया और आस्ट्रिया वालों के विरुद्ध पूर्व दिशा की ओर से अग्रसरित हुआ। इस बीच में मेलास् ने अपनी सेना को अलेसेण्ड्रिया (Alessandria) के पास संकेन्द्रित (concentrated) कर लिया था। नेपोलियन को, जिसे युद्ध के परिणाम के विषय में पूर्ण विश्वास था, केवल एक डर था—कहीं आस्ट्रिया वाले उसके चङ्गल से निकल न जाएं। पूर्व की ओर से निकल भागने के सब मार्ग अवरुद्ध करने के लिए उसने अपने सैनिकों को एक संकटास्पद रूप से क्षीण पंक्ति के रूप में फैला दिया, और अन्तिम क्षण एक दल पो की रक्षा के हेतु भेज दिया और दूसरा (देसेक्स् के नेतृत्व में) जेनोआ-मार्ग पर दृष्टि रखने के लिए। तभी अप्रत्याशित घटना घटी। मेलास् ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ फ्रान्सीसी घेरे पर धावा बोल दिया। मारेङ्गो (Marengo) के समीप १८,००० फ्रान्सीसियों पर पर ३१,००० आस्ट्रियायी सैनिकों ने आक्रमण किया और उन्हें मैदान से खदेड़

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया। नेपोलियन ने अपने सैनिकों के साथ अत्यधिक विस्तृत रूप में छितराई हुई अवस्था में घर लिए जाने की अक्षम्य भूल की थी। वह केवल एक चमत्कार द्वारा ही बच सका। तीसरे पहर, जब मेलास् आस्ट्रियायी सरकार को अपनी विजय का विवरण लिखने बैठ चुका था, देसेक्स्, जिसे नेपोलियन ने शीघ्रता से वापस बुला लिया था, रणक्षेत्र में आ पहुँचा। उसके ५,००० आदमी उस दिन के युद्ध के परिणाम को बदलने के लिए पर्याप्त नहीं थे, लेकिन सौभाग्य की सहायता से उन्होंने पराजय को विजय में परिणत कर दिया। आस्ट्रियावाले धीरे-धीरे थककर चूर होते जा रहे थे। देसेक्स् के पार्श्वीय आक्रमण ने आस्ट्रियायी सेना के मुख्य कॉलम को झकझोर दिया और केलेरमान (Kellermann) की अश्वारोही-सैन्य द्वारा दूसरे पार्श्व पर किए गए धावे ने उसे चकनाचूर कर दिया। फ्रान्सीसी पुनः एकत्र हो गए और उन्होंने अपनी खोई स्थिति प्राप्त कर ली। इस भाँति उस दिन उद्धार हो गया, परन्तु अप्रतिकार्य विनाश का भय पूर्णतः दूर नहीं हो पाया था। आस्ट्रियावाले न तो पराजित हुए थे और न हतोत्साह, और अगर वे अगले दिन पुनः लड़ाई प्रारम्भ कर देते तो उसका परिणाम क्या होता इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। नेपोलियन ने कुछ क्षण बड़ी बेचैनी से व्यतीत किए; जब तक कि उसे यह सुनकर राहत नहीं मिल गई कि आस्ट्रियायी सेनापति ने युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) की प्रार्थना की है। उसकी यह प्रार्थना तत्काल स्वीकृत कर ली गई। आस्ट्रियावालों ने लोॅम्बार्डी को खाली कर दिया, लेकिन वह सेना जिसे नेपोलियन ने विनष्ट कर देने की आशा की थी, अपनो सब तोपों और गोला-बारूद के साथ निकल गई। इस प्रकार मारेङ्गो (Marengo) का युद्ध केवल आंशिक रूप से सफल रहा। आस्ट्रियायी सेना अक्षत बच गई और यद्यपि फ्रान्सीसियों का लोॅम्बार्डी पर अधिकार हो गया, इस प्रान्त को बिना रक्तपात के प्रारम्भ में ही केवल मेलास् की संचार-रेखा को नष्ट करने का भय दिखा कर खाली कराया जा सकता था।

परवर्ती युद्ध—१८०० ई० तक नेपोलियन की युद्धनीति की रूप रेखा पूर्णतः स्पष्ट हो गई थी। तत्कालीन युग के महान् सैन्य-विद्या-विशारद जोमिनी (Jomini) ने इसका रहस्य ज्ञात कर लिया था, और इसके सिद्धान्तों का विवेचन १८०४ में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'महान् सैन्य-संक्रियाओं के लक्षण' (*Traite des Grandes Operations Militaires*) नामक ग्रन्थ में किया था। नेपोलियन के परवर्ती युद्ध दो में से किसी एक प्रकार के अन्तर्गत आते हैं। जब नेपोलियन शत्रु से दुर्बल होता था, वह आन्तरिक रेखाओं (interior lines) पर कार्य करता था, जैसा उसने १८९६ में इटली में किया था। जब वह अधिक शक्तिशाली होता था, वह शत्रु को घेरने का प्रयास करता था, जैसा उसने मारेङ्गो में किया। प्रथम प्रकार में एखमुहल-वेग्राम (१८०९), रूस (१८१२), लीपजिग (१८१३), फ्रान्स (१८१४) एवं वाटरलू (१८१५) के युद्ध आते हैं। दूसरे प्रकार में उल्म-आस्टेर्लिट्ज़ (१८०५), जेना (१८०६) तथा इयलौ-फ्रीडलैण्ड (१८०७) के युद्ध रखे जा सकते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं। अगर इस सरल वर्गीकरण के कुछ स्पष्ट अपवाद हैं, तो इसका कारण था नेपोलियन का सदैव ठीक वही नहीं कर पाना जो वह करना चाहता था। वेग्राम (Wagram) के बाद उसकी भूलों की संख्या और सीमा बढ़ गई। रूस में, आन्तरिक रेखाओं पर कार्य करने के बावजूद वह बाग्राशन (Bagration) और बार्कले द तोली (Barclay de Tolly) के नेतृत्व में बढ़ती हुई रूसी सेनाओं के मिलाप (junction) को नहीं रोक पाया। एक ही युद्ध-ऋतु (campaigning season) में मास्को पहुँच जाने का निश्चय उसकी एक अन्य भूल थी। इसका अर्थ था अपनी संचार-रेखाओं को सैकड़ों मील लम्बी कर देना और सैनिकों के लिए रसद की गम्भीर कमी उत्पन्न कर लेना। 'ग्रेण्ड आर्मी' (Grand Army) की क्षति भयावह सीमा तक पहुँच गयी। उन पाँच लाख आदमियों में से, जिनके साथ नेपोलियन चला था, मुश्किल से १७५,००० मास्को पहुँचे। इनको २६०,००० रूसी सैनिकों का सामना करना पड़ा। दोनों पक्षों की शक्ति में इतना अधिक अन्तर होने के कारण आक्रमण को जारी रखना असम्भव हो गया, और रक्षात्मक युद्ध में भी खतरे उत्पन्न हो गए। फ्रान्सीसियों को लौटना ही पड़ता, चाहे रूसी मास्को को भस्मीभूत करते या नहीं। प्रत्यागमन (retreat) के आतंक का कारण इतनी शीतऋतु की ठण्डक नहीं थी (जो उस वर्ष असामान्य विलम्ब से प्रारम्भ हुई), जितना रसद की लगातार चलने वाली कमी और शत्रु की राजधानी से प्रतिगमन करने के कारण हतोत्साह फ्रान्सीसी सैनिकों में संचलन-अनुशासन (march discipline) का भंग हो जाना थे। रूस में नेपोलियन को ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जिनसे वह सर्वथा अपरिचित था—एक ऐसा देश जहाँ न सड़कें थीं और न रसद उपलब्ध थी, और एक ऐसे बेढंगे शरीर जैसा राज्य जिसका कोई हृदय-स्थल नहीं था जिस पर वह घातक प्रहार कर सकता। इस असामान्य वातावरण के अनुकूल अपने को ढालने में उसकी असफलता को उसके अधिकांश आलोचकों ने इस बात का निर्णायक प्रमाण माना है कि उसकी प्रतिभा (genius) रचनात्मक नहीं थी। वह किसी भी युद्ध-यन्त्र (military machine) को अविश्वसनीय कौशल के साथ संचालित कर सकता था। लेकिन एक नये युद्ध-यन्त्र का आविष्कार करना उसके लिए असम्भव था।

लीपज़िग (Leipzig) के युद्ध में नेपोलियन को एक ऐसे युद्ध को संचालित करने का पुनः अवसर मिला जिसमें सुदीर्घ अभ्यास के कारण वह सुदक्ष हो गया था। अब वह एक ऐसे देश में आन्तरिक रेखाओं (inner lines) पर कार्य कर रहा था जहाँ अच्छी सड़कों के कारण द्रुत-संक्रियाएँ (rapid movements) सम्भव थीं। फिर भी उसने भूलें कीं। वस्तुतः उसने आन्तरिक रेखाओं पर कार्य करने के सब नियमों को ठुकरा दिया। उसने अपने शत्रुओं पर अनुक्रमशः (successively) आक्रमण करने के बजाय एक साथ आक्रमण किए; वह पराजित शत्रु दलों का पीछा करने और उनका विनाश करने में असफल रहा; उसने राजनीतिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजधानी ड्रेसडेन (Dresden) में आवश्यकता से अधिक रुककर अपनी गमनागमन-स्वतन्त्रता को सीमित कर लिया; और जब शत्रु का जाल उसकी तरफ कसता जा रहा था, उसने उससे बच निकलने के स्थान पर अपने को उसके मध्य कर लिया। भूलों की इस शृङ्खला का अन्त लीपज़िग के विनाशपूर्ण युद्ध में हुआ, जिसमें नेपोलियन २००,००० आदमियों के साथ घेर लिया गया और मित्रराष्ट्रों (Allies) द्वारा, जिनके पास ३००,००० सैनिक थे, पराभूत कर दिया गया।

१८१४ के युद्ध में भी, जिसे सामान्यतः आन्तरिक रेखाओं पर कार्य करने का सर्वोत्तम उदाहरण बताया जाता है, उसने अव्याख्येय भूलें की। मित्रराष्ट्रीय सेनाओं के लिए जो सीन (Seine), ओबे (Aube), मार्ने (Marne) और एस्ने (Aisne) की घाटियों से होकर अग्रसरित हो रही थीं, ऐसी सड़कों को प्रयोग में लाना अपरिहार्य था जो इन नदियों को अनेक स्थलों पर पार करती हुई गुजरती थीं। पुलों के सिरों (bridge heads) पर अधिकार करके नेपोलियन एक शत्रु-सैन्य को रोके रहता था और उस बीच में दूसरी शत्रु-सैन्य पर भीषण आघात करता था। इस प्रकार उसने मोण्टमिराइल (Montmirail) और मोण्टेरो (Montereau) युद्धों में विजयें प्राप्त कीं। लेकिन ला रोथिएरे (La Rothiere), लाओन (Laon), तथा आर्सिस-सुर-ओबे (Arcis-sur-Aube) स्थलों पर वह जल्दबाजी में बहुसंख्यक शत्रुओं को ललकार बैठा और बुरी तरह परास्त हुआ। अन्त में, शत्रु के पृष्ठभाग पर आक्रमण करने के एक प्रयास में उसने पेरिस को अरक्षित छोड़ दिया। अगर पेरिस मात्र एक सैनिक दुर्ग होता तो इससे कोई हानि नहीं होती। लेकिन यह फ्रान्स का राजनीतिक स्नायु-केन्द्र (political nerve-centre) था। इसलिए इस पर मित्रराष्ट्रों का अधिकार हो जाने से साम्राज्य का विनाश हो गया। तीन सप्ताह उपरान्त नेपोलियन एल्बा की ओर जा रहा था।

नेपोलियनी संग्राम—समरक्षेत्र (battlefields) में नेपोलियन का मुख्य लक्ष्य विपक्षी के पार्श्व अथवा पृष्ठभाग पर आक्रमण करना रहता था। यह कार्य या तो शत्रु को घेरने के लिए सैन्य-पंक्ति के एक सिरे को आगे मोड़ कर किया जा सकता था अथवा (और इस विधि को वह अधिक अच्छी समझता था) सैनिकों की एक टुकड़ी को घूम कर शत्रु के पीछे आने के लिए शेष सेना से पृथक् करके। जब तक पार्श्वीय आक्रमण (frontal attack) नहीं हो जाता था, शत्रु को सामने की ओर हलचल रखकर व्यस्त रखा जाता था। जब पार्श्वीय आक्रमण करने वाली सेना की तोपें उसके सही स्थिति में तैनात हो जाने की सूचना दे देतीं थी, पार्श्वीय आक्रमण पर जोर डाल दिया जाता था और आरक्षित सैनिक (reserves) युद्धरत कर दिए जाते थे।

नेपोलियन ने इस रूढ़िबद्ध पैंतरे (stereotyped manoeuvre) को मोन्तेनोत्त (Montenotte) और उसके बाद वस्तुतः अपने लगभग सभी संग्रामों में प्रयोग में लाने का प्रयास किया। कभी-कभी उस के पास शत्रु को घेर लेने के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं होते थे, और उसे समानान्तर (parallel) अथवा रक्षात्मक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(defensive) लड़ाई लड़नी पड़ जाती, जैसी रिवोली (Rivoli) में। कभी कभी पार्श्वीय सैन्य-दल बहुत देर से पहुँच पाता था अथवा बिल्कुल ही नहीं पहुँच पाता था, जैसे इयलौ (Eylau) और लिग्नि (Ligny) में। यदा-कदा शत्रु-सैन्य का मध्य भाग अधिक आक्रमणीय (vulnerable) स्थल प्रतीत होता था, जैसे आस्टेर्लिट्ज़ (Austerlitz) और वाटरलू (Waterloo) में। लेकिन ये अपवाद हैं। शत्रु के पार्श्व पर प्रहार नेपोलियन का विजय प्राप्त करने का रामबाण नुस्खा था। उसके ही शब्दों में, "संग्राम शत्रु के ऊपर घूम कर पार्श्वीय आक्रमण कर के जीते जाते हैं।"

अपनी पदाति-सैन्य के लिए नेपोलियन कॉलम-विरचना का प्रयोग करता रहा, लेकिन 'फायर' और 'शॉक पावर' का समन्वय करने के लिए उसने उसे कुछ सुधार दिया। अर्द्ध-गहरी विरचना (half-deep order अथवा *ordre demi-plein*) एक प्रकार से रैखिक और कॉलम विरचनाओं का मिश्रण थी और कभी-कभी मिश्रित-विरचना (*ordre mixte*) कहलाती थी। इसमें एक बटालियन को पंक्ति (line) के रूप में विस्तारित (deployed) कर दिया जाता था और एक-एक बटालियन उसके दोनों पार्श्वों

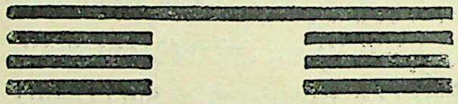

(flanks) पर दोहरी कम्पनियों (double companies) के कॉलमों के रूप में तैनात कर दी जाती थीं। यह एक ऐसी विरचना थी जिसका असीम रूप से विस्तार किया जा सकता था—पंक्ति और कॉलम को बारी-बारी से रखते हुए। लेकिन अपने परवर्ती युद्धों में नेपोलियन पंक्तिविहीन ठोस कॉलमों (solid columns) पर, जो उन ठोस पदाति-समूहों के समान थे जो मेक्डोनाल्ड (Macdonald) के नेतृत्व में आस्ट्रिया वालों के विरुद्ध वेग्राम (Wagran) के युद्ध में लड़े, अधिकाधिक निर्भर रहने लगा था।

नेपोलियन की अश्वारोही-सेना के उपयोग में लाने की विधि पर विशेष टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। वह उसे बड़े-बड़े दलों में शत्रु को अन्तिम रूप से समाप्त करने, उसका पीछा करने और यदाकदा संकटग्रस्त पदाति-सैन्य को सहायता देने के लिए भेजा करता था जैसा कि उसने इयलौ और वाटरलू के युद्धों में किया। उसकी तोपखाने के प्रयोग की विधि अधिक मौलिक थी। यद्यपि वह स्वयं एक तोपची-अफसर (artillery officer) था, तथापि वह प्रारम्भ में सेना के इस अंग की सम्भावनाओं का सही अन्दाज नहीं लगा सका। क्रान्तिकारी सेना (Revolutionary army) से उसने ग्रिबोवाल (Gribeauval) द्वारा संगठित गतिक्षम्य तोपखाना (mobile artillery) प्राप्त किया था; उसके शिक्षक और मित्र दु थेल्स (Du Theils) ने उसे मुहासरों-युद्धों (seige warfare) में बहुत-सी तोपों की केन्द्रीभूत गोलाबारी (massed fire) के लाभ सिखाए थे और उसने इस पाठ का उपयोग तूलों (Toulon) में किया भी था लेकिन यह समझने में कि इसी प्रकार की विधियों का प्रयोग रणक्षेत्रों में भी किया जा सकता है, उसे पर्याप्त समय लग गया। इयलौ के युद्ध में रूसियों के तोपखाने की केन्द्रीभूत गोलाबारी (massed fire)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से इतना भयंकर जनसंहार हुआ कि उसकी आँखें खुल गईं, और उसने तत्काल अपने तोपखाने को समुन्नत करने की चेष्टा प्रारम्भ कर दी। उसके अन्तिम युद्धों में उसके पास प्रति १००० सैनिकों के लिए तीन या चार तोपें थीं। उस काल के लिए यह अनुपात बहुत ऊँचा था। वेग्राम और उसके बाद के युद्धों में वह शत्रु-पंक्ति के प्रहार्य (vulnerable) स्थलों पर आघात करने के लिए तोपें संकेन्द्रित रखता था, और पदाति आक्रमण की तैयारी गोलाबारी के बवण्डर के साथ करता था। वस्तुतः वह धीरे-धीरे पैंतरेबाजी (manoeuvring) की कुछ उपेक्षा-सी करके इन विधियों पर अत्यधिक विश्वास करने लगा। वह उच्चकोणीय गोलन्दाजी (high-angle fire) के लाभ को समझने में भी असफल रहा, यह कुछ आश्चर्यजनक बात है। होविट्ज़र[1] तोपों के विषय में दुर्बल होने के कारण छिपे हुए शत्रु-सैनिकों पर आक्रमण करते समय उसे बड़ी असुविधा होती थी, जैसे बोरोदिनो (Borodino) और वाटरलू (Waterloo) के युद्धों में।

प्रायद्वीपीय युद्ध (१८०८-१४)—स्पेन[2] में, जो एक ऐसा देश है जहाँ लघु सेनाएँ पराजित हो जाती हैं और विशाल सेनाएँ भूखों मरती हैं, युद्ध करने की कठिनाइयाँ मुहावरा बन चुकी हैं। फ्रान्सीसियों की कठिनाई यह थी कि उस देश में जीवित रहने के लिए उन्हें अपने सैनिकों को यत्रतत्र फैलाना पड़ता था, और जब वे ऐसा करते थे उनके बिखरे हुए सैन्य-दल स्पेनी छापामार सैनिकों (guerillas) के शिकार हो जाते थे। दूसरे, रूस के समान स्पेन में भी राजधानी पर अधिकार कर लेने से राष्ट्रीय प्रतिरोध दुर्बल नहीं हुआ। स्पेन की शक्ति प्रान्तों में थी, जहाँ केन्द्रीय सरकार के आत्म-समर्पण कर देने के उपरान्त स्थानीय परिषदें (juntas) प्रतिरोध को संगठित करती रहती थीं। प्रायद्वीप में स्थित लघु ब्रिटिश-सेना का उद्देश्य राष्ट्रीय प्रतिरोध को दृढ़तर करना था। समुद्र-शक्ति (sea-power) पर अधिकार होने से यह सुदीर्घ स्पेनी समुद्र-तट पर इच्छानुसार कहीं भी आघात करने में समर्थ थी; इसकी रसद-व्यवस्था उत्कृष्ट होने के कारण यह फ्रान्सीसियों की तुलना में, जो सैन्य-सामग्री के लिए स्थानीय स्रोतों पर निर्भर थे, अधिक लोच के साथ पैंतरे बदल सकती थी; अन्ततः, इसका नेतृत्व एक अत्यन्त योग्य सेनापति के हाथ में था। मार्लबॉरो के समय से ब्रिटिश सेनाध्यक्ष एक विशिष्ट सामाजिक वर्ग से लिए जाते थे, और उनकी उन्नति बहुधा राजनीतिक प्रभाव के कारण होती आई थी। वेलिंग्टन (Wellington) इसका अपवाद नहीं था। वह एक श्रीमन्त (lord) का पुत्र था और एक राजनीतिक गुट (political clique) ने उसे निर्वाचित किया था। लेकिन, ब्रिटिश साम्राज्य के सौभाग्य से, उसके पास सैन्य-प्रतिभा पर्याप्त उदार मात्रा में थी, जिसके कारण वह उन द्वितीय श्रेणी

---

१. मन्दगति से दूर तक गोला फेंकने वाली तोपें। —अनु०।

२. स्पेन और पुर्तगाल यूरोप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित प्रायद्वीप के अंग हैं। इसलिए इन देशों में लड़े गए युद्धों को प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular War) कह दिया जाता है। —अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(second-rate) के सेनापतियों को जिनसे, एक सुप्रसिद्ध अवसर को छोड़कर, उसका सदैव पाला पड़ा, बराबर पराभूत करता रहा।

युद्ध (war) के दो अभियानों (campaigns) का ब्रिटिश दृष्टिकोण से असन्तोषप्रद अन्त हुआ। १८०८ में वेलिंग्टन पुर्तगाल में उतरा और उसने जूनोत् (Junot) को विमिएरो Vimiero) के युद्ध में परास्त किया। लेकिन शीघ्र ही उसके ऊपर एक और सेनापति की नियुक्ति हो गई जिसने फ्रान्सीसी सेना को विनष्ट करने के बजाय सिन्ट्रा-अनुबन्ध (Convention of Cintra) के अनुसार स्पेन चले जाने दिया। वर्ष के अन्तिम भाग में सर जॉन मूर नेपोलियन की सञ्चार-व्यवस्था संकटस्थ करता हुआ लिस्बन से उत्तर-पूर्व की ओर अग्रसरित हुआ। लेकिन ऐसा करके उसने स्वयं अपनी सञ्चार-व्यवस्था (communications) अरक्षित कर दी। नेपोलियनने, जो मध्य स्पेन में स्पेनी सेनाओं के विरुद्ध क्रियाशील था, अचानक घूमकर ८०,००० सैनिक उत्तर की ओर ब्रिटेन वालों का उनके अड्डे के साथ सम्पर्क तोड़ने के प्रयास में भेज दिए। एक अत्यक उत्तेजक दौड़ प्रारम्भ हो गई, जिसका लक्ष्य बेनेवेन्ता (Beneventa) था[1]। अगर नेपोलियन वहाँ पहले पहुँच जाता तो ब्रिटिश सेना की हालत खराब हो जाती। मुकाबला बराबर का था। फ्रान्सीसी अश्वारोही सेना नगर में ठीक उस समय घुसी जिस समय ब्रिटिश सेना का पृष्ठरक्षी दल (rearguard) उसे पार कर रहा था। उस समय तो मूर फिलहाल सुरक्षित हो गया। उसने अपने रसदादि ढोने वाले जहाजों को कोरुन्ना पहुँचने का आदेश दिया और अपने नए अड्डे (base) के लिए प्रस्थान कर दिया। लेकिन फ्रान्सीसी उसके पीछे लगे रहे, और भयंकर शीत में गेलिशिया के पर्वतों (Galician mountains) से होकर इतनी द्रुतगति से अग्रसरित होने के कारण उसकी सेना लगभग भीड़ जैसी हो गई। कोरुन्ना में ब्रिटिश सेना ने अपने को पुनः व्यवस्थित किया और सूल्त (Soult) द्वारा किए गए एक आक्रमण को विफल कर दिया। लेकिन यह छोटी-सी विजय ऐसे अन्धाधुन्ध पलायन के अपमान की यथोचित क्षतिपूर्ति नहीं थी।

१८०९ में वेलिंग्टन पुनः स्पेन स्थित सेना का अध्यक्ष बना। प्रारम्भ में उसने इस कार्य में निहित कठिनाई की अवमानना की। नेपोलियन अपने वेग्राम के अभियान में व्यस्त था, अतः वेलिंग्टन ने सोचा कि वह मेड्रिड (Madrid) की तरफ बेखटके बढ़ सकता है। लेकिन राजधानी पर संकट आते ही समस्त बिखरे हुए फ्रान्सीसी सैन्य-दल उसकी सुरक्षा के हेतु गोलियों की बौछार करते हुए आ पहुँचे। स्पेनी सड़क-व्यवस्था में मेड्रिड की केन्द्रीय स्थिति से उन्हें इसमें बहुत सुविधा हुई।

---

१. लिस्बन से उत्तर-पूर्व की तरफ आने वाली ब्रिटिश सेना के लिए स्पेन के उत्तर-पश्चिम में स्थित कोरुन्ना (Corunna) तक पहुँचने के लिए बेनेवेन्ता (Beneventa) नगर से गुजरना अनिवार्य था। अगर फ्रान्सीसियों का इस नगर पर अधिकार हो जाता तो वे ब्रिटिश सेना को कोरुन्ना जाने से अनायास रोक देते। इसलिए अंग्रेजों के लिए फ्रान्सीसियों के आगमन के पूर्व ही इस नगर को पार कर लेना आवश्यक था। —अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेलिंग्टन का उसके अड्डे से लगभग सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया, और तालवेर (Talavera) का रक्षात्मक संग्राम लड़ने के उपरान्त उसे अत्यन्त द्रुतगति से पीछे लौट आना पड़ा।

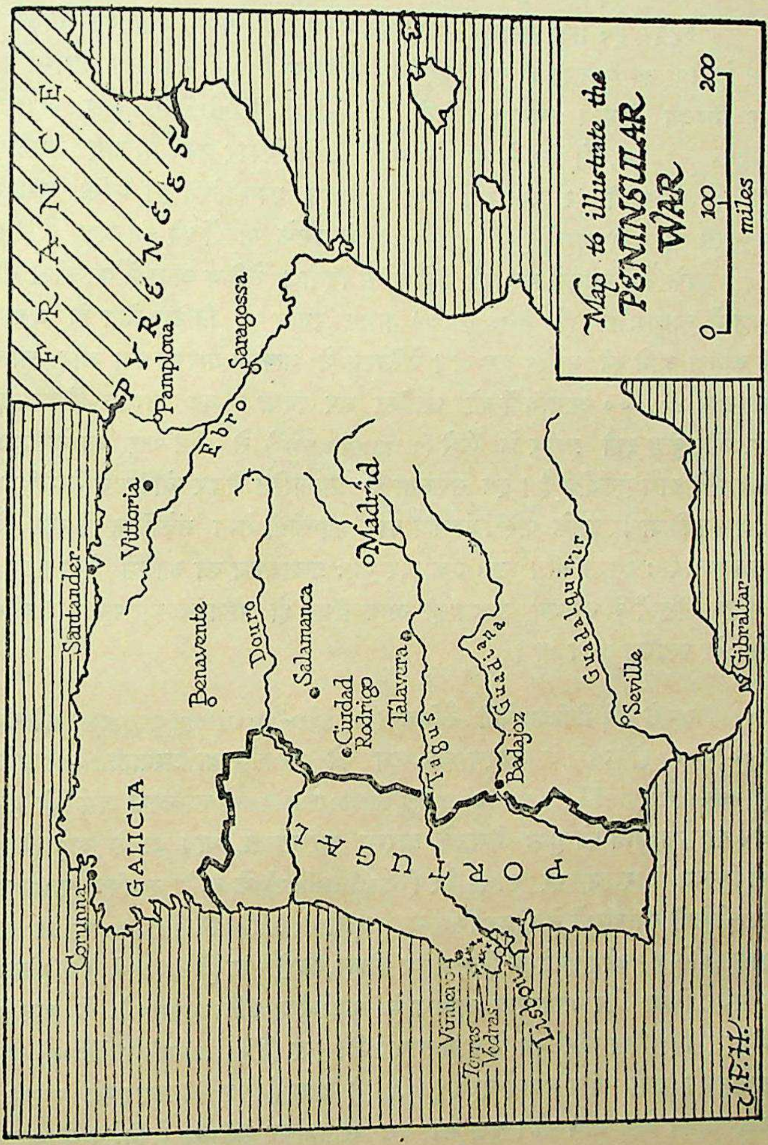

अगले दो वर्ष तक उसे रक्षात्मक युद्ध करते रहना पड़ा। आस्ट्रिया पर काबू पा लेने के उपरान्त नेपोलियन ने स्पेन में सेनाएँ भेजनी शुरू कर दीं और लघु ब्रिटिश सैन्य-दलों के सम्मुख विनाश का गम्भीर संकट उपस्थित हो गया। वेलिंग्टन को बचाया तोरेस वेड्रास (Torres Vedras) की सुरक्षा-रेखा ने, फ्रान्सीसी सैनिकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के सम्मुख उपस्थित रहने वाले सनातन आहाराभाव ने, और फ्रान्सीसी सेनापतियों में, जो नेपोलियन की अनुपस्थिति में निष्ठापूर्वक एक साथ काम करने में असमर्थ थे, पारस्परिक सहयोग के अभाव ने।

१८१२ ई० तक सम्राट् (अर्थात् नेपोलियन) को प्रत्येक अतिरिक्त सैनिक की रूस के लिए आवश्यकता हो गई, इसलिए वेलिंग्टन ने पुनः आक्रमण प्रारम्भ करने का निश्चय किया। स्यूदाद रोद्रिगो (Ciudad Rodrigo) और बादाजोज़ (Badajoz) पर, जो स्पेन के द्वार के समान हैं, अधिकार करने के बाद उसने दूरो (Douro) घाटी पर आक्रमण किया। लेकिन फ्रान्सीसियों की शक्ति अभी तक उत्कृष्टतर थी, और मारमोंत् (Marmont) ने उसके पार्श्वों को संकटस्थ (threaten) करके पैंतरे बदलते हुए उसे पीछे धकेल दिया। लेकिन अन्त में फ्रान्सीसी सेनाध्यक्ष ने सालामांका (Salamanca) नामक स्थान पर ब्रिटिश सेना के अग्रभाग के सम्मुख आने की मूर्खता कर दी। वेलिंग्टन ने तत्काल प्रहार किया और चालीस मिनट में ४०,००० आदमियों को पराजित कर दिया। यह उसका सर्वोत्तम संग्राम था, और कुछ इसी प्रकार के पैंतरे (manoeuvre) से जीते गए आस्टेलिट्ज़ के संग्राम के साथ तुलनीय है। इस सफलता से प्रोत्साहित होकर वेलिंग्टन ने मेड्रिड पर आक्रमण किया। इसके परिणामस्वरूप वहाँ फ्रान्सीसी सेना संकेन्द्रित हो गई, जैसी कि सामान्यतः आशा थी। उसे एक बार पुनः प्रत्यागमन का आदेश देना पड़ा, जो अन्तिम मञ्जिलों में लगभग उतना ही अव्यवस्थित हो गया जितना मूर का कोरुन्ना की ओर पलायन हुआ था।

अगले वर्ष, ब्रिटिश-स्पेनी सैनिक (Anglo-Spanish troops) की संख्या १००,००० हो जाने के कारण वेलिंग्टन को अन्ततोगत्वा प्रश्नातीत संख्याधिक्य (unquestionable superiority in numbers) का लाभ प्राप्त हो गया। अब वह आक्रमण को पुनः बेखटके प्रारम्भ कर सकता था। अपने अड्डे (base) को लिस्बन के स्थान पर सान्तान्देर (Santander) के समीप स्थापित करके उसने फ्रान्सीसियों को पार्श्वों से होकर किए गए प्रहारों (outflanking movements) द्वारा पीछे की ओर हटने के लिए बाध्य किया, विट्टोरिया (Vittoria) के संग्राम में पराजित किया और अस्तव्यस्त अवस्था में पाइरेनीज़ (Pyrenees) के पार भगा दिया। विट्टोरिया के संग्राम के साथ प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular War) वस्तुतः समाप्त हो गया। शेष लड़ाई सूल्त (Soult) द्वारा ब्रिटिश अग्रसरण को रोकने की अप्रभावकर चेष्टा मात्र थी। युद्ध की इस मञ्जिल पर वेलिंग्टन ने विशेष योग्यता नहीं दिखाई। एकाधिक बार उसने लापरवाही से अपने सैनिकों को विभाजित कर दिया और संकटास्पद प्रत्याक्रमणों (counter-strokes) के लिए अपने को अरक्षित कर लिया। लेकिन सूल्त के अस्थिरमतित्व ने, जो उस मार्शल का एक सेनापति के रूप में सब से बड़ा दोष था, उसे बचा दिया। और फिर संख्याधिक्य के लाभ का प्रभाव तो पड़ना था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही। फ्रान्स की भूमि पर तूलूज़ (Toulouse) के समीप लड़े गए संग्राम (१८१४) में अन्तिम बार पराजित होने के उपरान्त फ्रान्सीसी सेना ने संघर्ष करना छोड़ दिया।

वाटरलू अभियान*—जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, नेपोलियन का अन्तिम अभियान उसके प्रथम अभियान का प्रतिरूप था। १७९६ में उसने मोन्तेनोत्त में आस्ट्रियायी और सार्डीनियायी सेना के मध्य आघात किया था। १८१५ में उसने शार्लेरोई (Charleroi) में ब्रिटेन और प्रशा की सेनाओं के मध्य आघात किया, और इसका उद्देश्य भी वही था—दोनों को एक दूसरे से पृथक् कर देना और अलग-अलग पराजित करना। फ्रान्सीसी सेना का संकेन्द्रण (concentration) बड़े गुप्त रूप से किया गया, और इसके पूर्व कि मित्रराष्ट्रीय सेनाध्यक्ष (Allied Commanders) यह जान पाते कि क्या हो रहा है, फ्रान्सीसी सेना ने १५वीं जून को सांब्रे (Sombre) नदी पार ली। नेपोलियन की युद्ध नीति ने विशेष रूप से वेलिंग्टन को पूर्णतः भुलावे में डाल दिया। १७९६ में ब्यूल्यू (Beaulieu) के समान वह भी यही समझा कि फ्रान्सीसी उसका उसके ओस्तेन्द (Ostend) स्थित अड्डे से सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिए उस पर पार्श्वीय आक्रमण करने की चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए उसने अपने सैनिकों को अपनी दाहिनी ओर संकेन्द्रित रखा और अपने और प्रशा वालों के मध्य, जिन्हें ब्लूखेर (Blucher) लिग्नि (Ligny) में एकत्र कर रहा था, काफी विशाल रिक्त स्थान छोड़ दिया। कात्र ब्रास (Quatre-Bras) की ओर बढ़ने का आदेश उसने १६वीं जून की सुबह को दिया। इस पर अधिकार करना ब्लूखेर के साथ सम्पर्क बनाए रखने के लिए अपरिहार्य था। यह मित्रराष्ट्रों के लिए सौभाग्य की बात थी कि फ्रान्सीसी सेनापति ने (Ney) ने अत्यधिक सतर्क रहने के आवेश में युद्धनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस स्थल (strategic point) को १५ वीं जून के तीसरे पहर अधिकृत नहीं कर लिया था।

१६वीं जून को नेपोलियन ने शार्लेरोई-ब्रूसेल्स मार्ग से उत्तराभिमुख अग्रसरण प्रारम्भ किया। उसे आशा नहीं थी कि उसे उस दिन लड़ाई लड़नी पड़ेगी। उसके अनुमानानुसार उसके मित्रराष्ट्रीय सेनाओं के मध्य घुस आने से मित्रसेनाएँ अलग-अलग दिशाओं में अपने-अपने अड्डे की ओर पीछे हट गई थीं—ब्रिटिश सेना ओस्तेन्द (Ostend) की ओर और प्रशा की सेना नामुर (Namur) की ओर। उसे आशा थी कि वह उनको उचित समय पर अनुक्रमशः परास्त कर देगा। इस बीच में उसका विचार ब्रूसेल्स (Brussels) पर अधिकार करने का था। यह योजना ब्लूखेर के लिग्नि के समीप लड़ने के निश्चय के कारण गड़बड़ा गई। यह निश्चय बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं था। मित्रराष्ट्रीय सेनाध्यक्षों का सर्वोच्च ध्येय अपनी सेनाओं को संयुक्त रखना होना चाहिए था। शत्रु की लगभग उपस्थिति में मिलने का प्रयास करने के बजाय अगर वे पीछे हट जाते और ब्रूसेल्स के सामने अथवा यहाँ तक कि उसके पीछे

* वाटरलू के अभियान में सेनाओं की संख्या इस प्रकार थी: फ्रान्सीसी १२४,०००; प्रशावाले ११६,०००; ब्रिटिश, ९३,०००।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी मिलते तो अधिक उचित होता। लेकिन वेलिंग्टन ने ब्लूख़ेर के निर्णय का अनुमोदन किया और वचन दिया कि अगर स्वयं ब्रिटिश सेना पर आक्रमण नहीं हुआ तो वह उस की सहायता के लिए आ जाएगा। लेकिन घटनाचक्रवशात् यह वचन निभाया नहीं जा सका, और प्रशा वालों को अकेले युद्ध करना पड़ा।

नेपोलियन को उस समय आश्चर्य हुआ जब वह प्रशा की लिग्नि में संकेन्द्रित सैन्य से जा टकराया। लेकिन उसने अति शीघ्रता से निर्णय किया। उस का दाहिना बाजू (right wing) उसके अपने नेतृत्व में प्रशा की सेना की स्थिति पर सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) करता। उस का बायां बाजू ने (Ney) के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना को कात्र-ब्रास (Quatre-Bras) से बहिष्कृत करता और फिर एक सैन्य-दल अलग कर के प्रशा वालों पर पार्श्वीय आक्रमण करता। ने (Ney) की मूढ़ता के कारण यह योजना विफल हो गई। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, वह कात्र-ब्रास में १५वीं जून के तीसरे पहर ही प्रविष्ट हो सकता था, लेकिन उसे भय हो गया कि कहीं प्रशा वाले उस पर पार्श्वीय आक्रमण न कर दें। इसलिए उसने अपना अग्रसरण अगले दिन के दो बजे तक के लिए स्थगित कर दिया। लेकिन तब तक कात्र-ब्रास में ८,००० ब्रिटिश सैनिकों का दल आ चुका था और युद्ध प्रारम्भ होने के बाद बलवर्धक ब्रिटिश सैन्य-दल ब्रूसेल्स मार्ग से बराबर आते रहे जिसके कारण फ्रान्सीसी सैनिक नगर पर अधिकार करना तो दूर रहा निश्चतरूपेण उससे दूर खदेड़ दिये गए। फिर भी ने (Ney) कम से कम वेलिंग्टन को ब्लूख़ेरके पास सहायता भेजने से रोके रहा। लेकिन वह स्वयं भी नेपोलियन के पास कोई सहायता नहीं भेज पाया। इसका कारण एक गलतफहमी थी। देर्लों (D'Erlon) के सैन्य-दल (corps) को, जो ने (Ney) के नेतृत्व के अन्तर्गत था और शार्लेरोई से उस के पीछे-पीछे आ रहा था, नेपोलियन के स्टाफ का एक अफसर मिला जिसने उसे चौराहे से लिग्नि (Ligny) की ओर अग्रसरित होने का आदेश दिया। नेपोलियन का इरादा इसके द्वारा प्रशा वालों के पार्श्व पर प्रहार करने का था। लेकिन ने (Ney) ने, जो उस समय ब्रिटिश सैन्य से बुरी तरह उलझा हुआ था और यह महसूस कर रहा था कि वह तब तक किसी सैनिक को निवृत्त नहीं कर सकता जब तक ब्रिटिश कात्र-ब्रास से निकाल नहीं दिए जाते, नेपोलियन के आदेश को रद्द करके विपरीताज्ञा प्रदान की। देर्लों, जो लिग्नि के रणक्षेत्र के सन्निकट पहुँच चुका था, तत्काल वापस लौट पड़ा। वह कात्र-ब्रास इतनी देर से पहुँचा कि वहाँ की लड़ाई में बिल्कुल भाग नहीं ले पाया, जब की ने (Ney) के मूर्खतापूर्ण प्रत्यादेश (countermand) ने उसे लिग्नि के युद्ध में भाग लेने से असमर्थ कर दिया। बीस सहस्र व्यक्ति दो रणक्षेत्रों के मध्य व्यर्थ में इधर से उधर घूमते रह गए!

इस बीच फ्रान्सीसी और प्रशा वाले लिग्नि के जलते हुए खण्डहरों में समस्त अपराह्न संघर्ष करते रहे।* नेपोलियन के पास 'ओल्डगार्ड' (Old Guard) आर-

* नेपोलियन के पास ७',००० आदमी थे; ब्लूख़ेर के पास, उसके चार सैन्य-दलों (corps) में एक के समय से न आने के कारण, ८३,०००।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षित दल (reserve) के रूप में थे, लेकिन वह उन्हें मैदान में उतारने के पूर्व देलों के पार्श्वीय आक्रमण के प्रारम्भ होने की प्रतीक्षा करता रहा। अन्ततोगत्वा शाम होने पर पार्श्वीय आक्रमक दल दिखाई दिया, लेकिन तत्काल और अव्याख्येयरूपेण वह घूमकर वापस लौट गया। पूर्णतः आश्चर्यस्तब्ध नेपोलियन ने निश्चित किया कि अब 'गार्ड्स' (the Guard) को मैदान में उतारे बिना चारा नहीं है। इन अनुभवी सैनिकों के धावे से शत्रु सेना का मध्य भाग अस्तव्यस्त हो गया और प्रशा वाले रण-

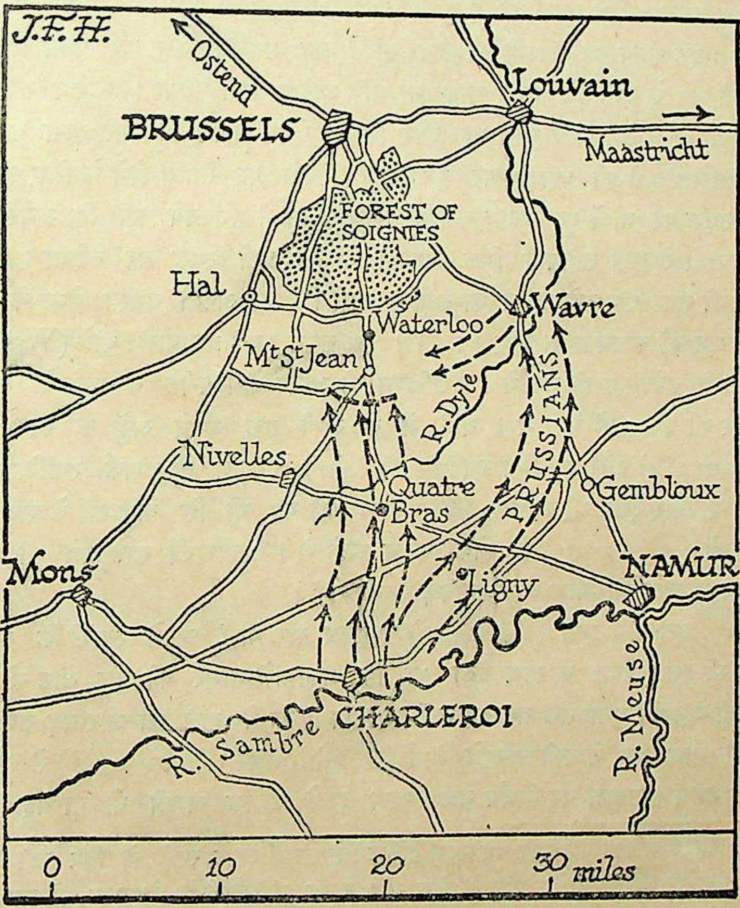

क्षेत्र से हटने के लिए विवश हो गए। लेकिन पार्श्वीय आक्रमण (flank attack) की योजना कार्यान्वित न होने के कारण शत्रु को व्यवस्थित रूप में पीछे लौटने का अ सर मिल गया और उसका रणोत्साह (fighting spirit) अक्षुण्ण बना रहा। अगर देलों (D'Erlon) ने सम्राट् के आदेश का पालन किया होता तो प्रशा वाले पूर्व में राइन की ओर भागने वाले भगोड़ों की भीड़ में परिवर्तित हो जाते। लिग्नि के युद्ध में यह अस्थिरता सम्राट् की योजना में सबसे पहली बाधा थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकिन नेपोलियन युद्ध के परिणाम से बहुत अधिक असन्तुष्ट नहीं था। उसने फिलहाल प्रशा वालों को युद्ध से विरत कर दिया था, और उसे इस बात का विश्वास था कि वे अपनी सञ्चार-रेखा (line of communications) के मार्ग से नामूर (Namur) की ओर लौट जाएँगे, और वेलिंग्टन की सेना से उनकी दूरी प्रत्येक क्षण बढ़ती जाएगी। उन्हें उनके मार्ग पर हाँकने के लिए उसने ग्रूची (Grouchy) को ३३,००० सैनिकों के दल के साथ अलग कर दिया, और इस प्रकार अपने दाहिने पार्श्व को सुरक्षित करके अपने दूसरे शत्रु से निपटने के लिए मुड़ा। इस समय वह अपनी सामान्य स्फूर्ति का प्रदर्शन नहीं कर पाया। उसने १७वीं जून के दो बजे तक आक्रमण का आदेश नहीं दिया। लेकिन तब तक वेलिंग्टन हाथ से निकल चुका था और ब्रिटिश सेना अपने सेनापति द्वारा वाटरलू (Waterloo) की पहाड़ी पर चुनी हुई स्थिति पर तैनात होने के लिए ब्रूसेल्स की सड़क पर मीलों दूर जा चुकी थी। वेलिंग्टन ने निश्चय किया कि अगर उसे प्रशावालों से कुछ सहायता मिल जाएगी तो वह इसी स्थल पर लड़ेगा। १८वीं जून की सुबह एक बजे ब्लूखेर का सन्देश आया कि वह अपनी समस्त सेना के साथ वेलिंग्टन की सहायता के लिए आएगा। इस समय तक प्रशावाले वात्रे (Wavre) के समीप संकेन्द्रित हो गए थे। नेपोलियन की आशा के विपरीत वे पूर्व के बजाय उत्तर की ओर चले गए थे। वात्रे में वे अभी तक अपने अड्डे के साथ लूवें (Louvain) और माएस्ट्रिख़्ट (Maestricht) के मार्ग से सम्पर्क स्थापित किए हुए थे, और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह थी कि वेलिंग्टन के पास कई चौराहों (crossroads) से होकर पहुँच सकते थे। प्रशावालों का वात्रे की ओर जाना वाटरलू अभियान का निर्णायक पैंतरा था*।

इस बीच ग्रूची (Grouchy) क्या कर रहा था? अपने स्वामी के समान वह भी इस विश्वास के साथ चला था कि प्रशावाले नामूर की ओर लौट रहे हैं। १८वीं जून की सुबह तक वह यह नहीं समझ पाया कि वे वात्रे की ओर बढ़ गए हैं। इसके बाद वह गेम्बलोक्स-वात्रे मार्ग (Gembloux–Wavre road) से उनके पीछे भागा। उसका यह निर्णय गलत था। इससे अधिक अच्छी योजना यह होती

* विचित्र बात तो यह है कि यह कदम वेलिंग्टन से सम्पर्क बनाए रखने के लिए नहीं उठाया गया था। इसका आदेश प्रशा के चीफ ऑव स्टाफ नीसेनौ (Gneisenau) ने उस समय दिया था जब ब्लूखेर अस्थायी रूप से अस्वस्थ पड़ा हुआ था (वह लिग्नि के युद्ध में एक अश्वारोही धावे के समय घोड़े से गिरा दिया गया था)। नीसेनौ का कहना था कि नामूर की ओर जाने से उस पर फ्रान्सीसी सेना द्वारा पार्श्वीय आक्रमण सम्भव हो जाता, जब कि वात्रे जाने पर लूवें और माएस्ट्रिख़्ट के मार्ग से प्रशा के अड्डे के साथ सम्पर्क रखा जा सकता था। उसकी इच्छा वेलिंग्टन को सहायता देने की बिल्कुल नहीं थी। उसका वेलिंग्टन पर बिल्कुल विश्वास नहीं था और उसे यकीन था वेलिंग्टन ब्रिटिश हित के लिए प्रशा की सम्पूर्ण सेना की बलि चढ़ा सकता है। वाटरलू की ओर अग्रसरण का आदेश ब्लूखेर ने पुनः नेतृत्व ग्रहण करने के उपरान्त दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि वह डायल (Dyle) नदी को पार कर उसके बाएँ किनारे की ओर चला जाता, जहाँ से वह या तो प्रशावालों को नेपोलियन से दूर किए रहता और अगर वे तिर्यक्-अग्रसरण (transverse march) की चेष्टा करते तो उन पर पार्श्वीय आक्रमण करता अथवा आवश्यकता होने पर मुख्य फ्रान्सीसी सेना से मिल जाता। ग्रूची की भूल की गरिमा कम करने के लिए यह कहा जाना चाहिए कि न तो उसे और न ही नेपोलियन को विश्वास था कि प्रशावाले तिर्यक्-अग्रसरण का खतरा मोल लेंगे। १८वीं जून के सवेरे जिस समय वह वाव्रे-मार्ग पर बढ़ा जा रहा था, वाटरलू में प्रारम्भ हुई तोपों की गड़गड़ाहट उसके कानों में पड़ी। उसके कुछ सहायकों ने उससे तत्काल उन तोपों की ओर चलने का आग्रह किया। किन्तु उसने प्रशावालों का पीछा करने की जो आज्ञा उसे मिली थी उसका शब्दशः पालन करना अधिक उचित समझ कर उनके आग्रह को अस्वीकृत कर दिया। वाव्रे में उसने प्रशा के एक सैन्य-दल को लड़ाई में उलझा लिया, लेकिन शेष तीन उसके पहले ही वाटरलू की ओर प्रस्थान कर चुके थे। पाँच बजे उसे मुख्य सेना के साथ सम्मिलित हो जाने का नेपोलियन द्वारा प्रेषित आशुग आदेश (express order) मिला (जिसे उसके पास तक पहुँचने में कई घण्टे लग गए थे)। लेकिन इस समय तक बहुत देर हो चुकी थी। अगर वह वाटरलू की तोपों की पहली आवाज सुन कर ही उस ओर चल पड़ा होता, तब भी वह समय से पहुँच पाता, इसमें सन्देह है। इस प्रकार नेपोलियन को अभियान (campaign) का यह नाजुक संग्राम (battle) अपनी एक चौथाई सेना के बिना लड़ना पड़ा, जब कि वेलिंग्टन को दिन के परवर्ती भाग में प्रशावालों से महत्त्वपूर्ण बलवर्धक सैन्य-दल मिल गए थे।*

वाटरलू का संग्राम—इस संग्राम को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(१) होजोमोंत् (Hougomont) की गढ़ी पर, जो ब्रिटिश सेना के दाहिने पार्श्व के सम्मुख थी, आक्रमण के साथ सुबह साढ़े ग्यारह बजे लड़ाई प्रारम्भ हुई। इसको केवल एक कूटाक्रमण (feint attack) के रूप में सीमित रखने का इरादा था, लेकिन इसने योजना से कहीं अधिक विशाल रूप धारण कर लिया, और एक पूरा गण (division) जलते हुए भवन में स्थित सैन्य-दल को खदेड़ने के निष्फल प्रयास में व्यस्त हो गया। डेढ़ बजे नेपोलियन ने अपना मुख्य आक्रमण प्रारम्भ किया। अपने मार्शलों (marshals) की इस सलाह की अवहेलना करके कि ब्रिटिश सेना के पार्श्व की ओर धावा बोलना चाहिए, उसने सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) द्वारा शत्रु सैन्य के मध्य भाग को विशृंखलित करने का निश्चय किया। तोपों की

* वाटरलू के संग्राम में नेपोलियन के पास ७४,००० सैनिक थे; वेलिंग्टन के पास ६७,०००। वेलिंग्टन ने १७,००० आदमी हाल (Hal) में अपने दाहिने पार्श्व की रक्षा के लिए तैनात किए हुए थे। उन्होंने लड़ाई में भाग नहीं लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
भीषण गोलाबारी के उपरान्त देर्लों का सैन्य-दल (corps) ठोस कॉलमों के रूप में पहाड़ी पर तैनात अंग्रेजी सेना की ओर बढ़ा। ब्रिटिश रैखिक-विरचना (line-formation) ने उसका प्रतिरोध किया और उसे पीछे धकेल दिया तथा ब्रिटिश अश्वारोही सेना के धावे ने उसके धुर्रे उड़ा दिए।

(२) कुछ समय शान्ति रहने के उपरान्त संग्राम का दूसरा भाग प्रारम्भ हुआ जो चार से छः बजे तक चला। इन दो घण्टों में फ्रान्सीसी अश्वारोही सेना ने ब्रिटिश वर्गों (squares) पर अनुक्रमशः कई बार धावे किए। ये अकालतः ही कर दिए गए थे। ब्रिटिश सेना के पृष्ठभाग में कुछ भटके हुए सैनिकों की गतिविधि से (Ney) के मन में यह भ्रान्त धारणा बन गई कि ब्रिटिश सेना पीछे हटने की तैयारी कर रही है और इसलिए उसने उस पर अपनी अश्वारोही सेना से आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सैनिकों ने इस अश्वारोही-आक्रमण को अपेक्षया अनायास पीछे धकेल दिया, लेकिन बीच-बीच में फ्रान्सीसी तोपखाने की गोलाबारी से उनकी भारी क्षति हुई। उस युग की थोड़ी दूर तक मार करने वाली मुस्केटों के कारण पदाति-सैन्य के लिए पंक्तिबद्ध रूप में अश्वारोहियों की चपेट में आ जाना बड़ा खतरनाक होता था, और ब्रिटिश सेना को अपने वर्ग (squares) बनाए रखना आवश्यक था जो फ्रान्सीसी तोपचियों के लिए बड़े सुलभ निशाने सिद्ध हुए। अगर अश्वारोहियों को अपने आक्रमण में पदाति सैनिकों का सहयोग मिला होता तो शायद ब्रिटिश सेना, जिसे अपनी विरचना वर्ग से पंक्ति और पंक्ति से वर्ग के रूप में जल्दी-जल्दी परिवर्तित करनी पड़ती, अलाभकर स्थिति में धर ली जाती। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया और वेलिंग्टन के आदमी इस अग्नि-परीक्षा से हतोत्साह हुए बिना निकल आए।

(३) छः बजे के लगभग नेपोलियन ने ने (Ney) को ब्रिटिश पंक्ति के मध्य स्थित ला हाए सेंते (La Haye Sainte) के प्रक्षेत्रगृह (farmhouse) पर धावा बोलने का आदेश दिया। यह ब्रिटिश स्थिति (position) का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थल था और इसकी ओर नेपोलियन का ध्यान इसके बहुत पहले जाना चाहिये था। वेलिंग्टन ने, जो इसके महत्त्व को समझने में असफल रहा, इसकी रक्षा का मामूली-सा ही प्रबन्ध किया था। यह एक पक्की निशानेबाज जर्मन लीजन के, जिसमें अधिकांशतः हनोवरवासी सैनिक थे, हाथ में था। यह दल सारे दिन वीरतापूर्वक लड़ा था लेकिन अब, एक पूरे गण (division) द्वारा आक्रमण कर दिये जाने और उसकी अपनी गोली-बारूद समाप्त हो जाने के कारण उसे पीछे हट जाना पड़ा। फ्रांसीसियों ने प्रक्षेत्र-भवनों (farm buildings) पर अधिकार कर लिया।

यह संग्राम का नाजुक क्षण था। ला हाए सेंते में तोपें चढ़ाकर फ्रान्सीसी तोपचियों ने ब्रिटिश सेना के बाएँ मध्य भाग को भेद दिया। ने (Ney) ने बलपूर्वक सैन्य-दल भेजने के लिए नेपोलियन से अविलम्बनीय माँग (urgent demand) की, और अगर वे आ गये होते तो यह लगभग निश्चित है कि वेलिंग्टन पहाड़ी से खदेड़ दिया जाता। लेकिन इस तक फ्रांसीसी पार्श्व (French flank) को प्रशा की सेना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के दबाव का अनुभव होने लगा था। बुलो (Bullow) के नेतृत्व में मुख्य सैन्य-दल लगभग चार बजे युद्धरत हो चुका था, और जिस समय ने (Ney) का सन्देश पहुँचा, उसने प्लांसेनोआ (Plancenoit) ग्राम पर दूसरा धावा किया ही था। नेपोलियन के पास अभी तक 'ओल्ड गार्ड' (Old Guard) अप्रयुक्त थे, लेकिन जब तक उसके दाहिने पार्श्व की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो जाती, वह उसे आगे भेजने का साहस नहीं कर सकता था। 'ओल्ड गार्ड' की दो बटालियनों द्वारा प्लांसेनोआ से प्रशावालों के खदेड़ दिये जाने के बाद वह इस विषय में कुछ कर सकने योग्य हो गया। लेकिन तब तक अनुकूल क्षण हाथ से निकल चुका था। वेलिंग्टन ने अपनी पंक्ति में पैदा हो गए रिक्त स्थल को भर लिया था, और प्रशा का एक अन्य सैन्य दल उसके बायें भाग की सहायतार्थ ओहेन (Ohain) की सड़क से आ रहा था, जबकि तीसरा बुलो के पीछे प्लांसेनोआ की ओर अग्रसरित हो रहा था।

(४) सात बजे तक नेपोलियन की स्थिति उपायातीत हो गई। ब्रिटिश सेना का अग्रभाग अक्षुण्ण था; प्रशा वाले उसके पार्श्व की ओर डट चुके थे; और ग्रूची का कुछ पता नहीं था। (Ligny) के संग्राम के समान इस बार भी अब 'ओल्ड गार्ड' को मैदान में उतारे बिना कोई चारा नहीं रह गया था। इस 'श्रेष्ठ-सैन्य-दल' अथवा 'कोर देलीत्' (*corps d'elite*) की पाँच बटालियनें सेंट जीन पर्वत (Mont St. Jean) के ढलानों (slopes) पर ऊपर चढ़ने लगी। वे वर्गों के कॉलमों (columns of squares) की विचित्र विरचना (formation) में थीं—सम्भवतः इस आशंका के कारण कि उन पर शत्रु की अश्वारोही सैन्य के आक्रमण होंगे। जैसे ही ये सैनिक पहाड़ी के सम्मुख पहुँचे, उनका ब्रिटिश पदाति-सैन्य की अस्त-व्यस्त कर देने वाली गोलीवर्षा ने स्वागत किया। उन पर सामने और पार्श्वों की ओर से आक्रमण हुआ और वे नीचे लुढ़कते गए। जैसे ही 'गार्डों ने हार मान ली' नारा बुलन्द हुआ, फ्रान्सीसी सैनिकों में अनुशासन (discipline) और मनोबल (morale) मानो जादू के जोर से समाप्त हो गए। समस्त सेना में आतंक और घबड़ाहट छा गए और वह अव्यवस्थित होकर भयातुर भगोड़ों के रूप में भाग निकली। प्रशावालों ने उनका तेजी के साथ पीछा किया। केवल ग्रूची (Grouchy) अपने सैन्य दल को अक्षत रूप में निकाल ले आने में सफल रहा। अत्युत्तम प्रत्यावर्त्तन (masterly retreat) द्वारा वह अपने सैनिकों को पेरिस ले आया। उसका विचार था कि वह देश की शुभ कामनाओं का अधिकारी था और उसे आशा थी कि इसके लिए उसकी प्रशंसा होगी और पुरस्कार मिलेगा। इसके बजाय उसने पाया कि उस पर जीवन भर के लिए यह कलंक लग गया कि वह तोपों के सामने जाने से डर गया था।

वाटरलू अभियान में सभी सम्बद्ध सेनापतियों ने भयंकर भूलें कीं। ब्लूखेर ने ब्रिटिश सहायता मिलने का निश्चित आश्वासन पाए बिना लिग्नि में लड़ने की मूर्खता की। उसका वाटरलू की ओर तिर्यक्-गमन (transverse march) भी अन्ततो-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गत्वा सफल हो जाने के बावजूद, एक भयावह पैंतरा था। वेलिंग्टन का कात्र ब्रास (Quatre Bras) में सैन्य-संकेन्द्रण संकटास्पद रूप से शिथिल था और उसका वाटरलू में लड़ने के लिए उद्यत हो जाना अविश्वसनीय जल्दबाजी। वह ब्लूखेर की सहायता मिलने के विषय में निर्भ्रम कैसे हो सकता था—वह जो लिग्नि के युद्ध में ब्लूखेर की सहायता करने में असमर्थ रहा था? और जब वाटरलू का महत्त्वपूर्ण संग्राम लड़ा जा रहा था, उसने हाल (Hal) में १७,००० सैनिक क्यों छोड़े हुए थे? उसका कहना था कि ऐसा उसने ओस्तेंद (Ostend) के साथ अपनी सम्पर्क-व्यवस्था की सुरक्षा के लिए किया था। लेकिन मान लीजिए कि वह पराजित हो जाता, तो सैनिकों का यह लघुदल उसकी सहायता के लिए क्या कर पाता? और अगर वह विजयी होता तो सम्पर्क-व्यवस्था की सुरक्षा की चिन्ता करना व्यर्थ ही था। इन १७,००० सैनिकों को वाटरलू के संग्राम में भाग लेना चाहिए था। उन्होंने संग्राम के परिणाम पर गम्भीर प्रभाव डाला होता। नेपोलियन की प्रमुख भूल लिग्नि के संग्राम के उपरान्त अपनी पूरी सेना के साथ प्रशावालों का पीछा न करना थी। उसने १८१३ की भूल को दोहराया। उसने शत्रु-सैन्य के एक भाग को पराजित कर दिया परन्तु उसे विनष्ट करने में असमर्थ रहा, जिससे लड़ाई के नाजुक क्षण वह उसके विरुद्ध पुनः आ खड़ा हुआ। वाटरलू के संग्राम में उसकी मुख्य भूल लड़ाई को देर से आरम्भ करना (उसने वर्षा से गीली हो गई भूमि के सूखने की प्रतीक्षा की) और ला हाए सेंते को अपने आक्रमण का लक्ष्य प्रारम्भ से ही न बनाना रहीं। अगर उसने इस महत्त्वपूर्ण स्थल के ऊपर अपना ध्यान संकेन्द्रित किया होता तो ब्लूखेर के आने के पूर्व ही वेलिंग्टन की निश्चित रूप से पराजय हो गई होती। भूलों के इस गोल-माल में विजय दोनों में किसी पक्ष की भी हो सकती थी। लेकिन नेपोलियन अन्त तक अपनी पराजय को अव्याख्येय (inexplicable) मानने का आग्रह करता रहा। "यह दुर्भाग्य ही था," उसने सेंट हेलेना में कहा था, "क्योंकि सब बातों के बावजूद उस संग्राम में विजय मुझे ही मिलनी चाहिए थी।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ७

ग्राण्ट और ली

'राइफिल' और 'ब्रीचलोडर'—वाटरलू के युद्ध के उपरान्त की अर्द्ध-शताब्दी में आग्नेयास्त्रों में दो युग-प्रवर्त्तक सुधार हुए। इनमें पहला था राइफ्लिंग (rifling) का श्रीगणेश। अब पुरानी चिकने छेदवाली मुस्केटों (smooth-bore muskets) की नलिका (barrel) में सर्पिलाकार खाँचे (spiral grooves) खराद दिए जाने लगे, जिससे गोली नलिका में सीधे जाने के बजाय घूमती हुई द्रुततर गति से, अधिक सीधे और अधिक दूर तक जाने लगी। राइफ्लिंग का यह सिद्धान्त सोलहवीं शती से ही ज्ञात था, यद्यपि तकनीकी कठिनाइयों ने उसे व्यवहार में लाना दुष्कर कर दिया था। १८०० में ब्रिटिश सेना की कुछ चुनी हुई रेजिमेण्टों (regiments) को राइफिलें (जो बहुत सक्षम नहीं थीं) प्रदान की गई थीं, लेकिन यथार्थतः उपयोगी राइफिल का आविष्कार १८४८ में ही हो पाया, जब फ्रान्सीसी कैप्टेन मीनी (Minie) ने गोलाकार (spherical) की बजाय नुकीली-बेलनाकार गोली (cylindro-conoidal bullet) का प्रचलन किया। १८५१ में ब्रिटिश सेना मीनी राइफिलों से सुसज्जित की गई।

चिकने छेदवाली तोपों की नलिकाओं में सर्पिलाकार खाँचे बनाने (rifling) से उनकी मार की दूरी १,७०० से ४,००० गज हो गई। 'राइफिल' की हुई अर्थात् नलिका में सर्पिलाकार खाँचे बनी हुई तोपों का प्रयोग उन्नीसवीं शती के मध्य से प्रारम्भ हुआ। ये ब्रिटिश सेना के पास सेबस्टोपोल (Sebastopol) के युद्ध (१८५५) में थीं, और फ्रान्सीसियों तथा ऑस्ट्रिया वालों के पास १८५९ के युद्ध में।

दूसरा महत्त्वपूर्ण सुधार आग्नेयास्त्र को पीछे की ओर से भरने (breech-loading) के सिद्धान्त का आविष्कार था। पहली ब्रीचलोडिंग राइफिल 'नीडिल-गन' (needlegun) थी, जिसे प्रशावालों ने १८४१ में अपनाया। इसके बाद शासेपोत् (chassepot), नीडेर, (Snider) मार्टिनी-हेनरी (Martini-Henry), और मौज़ेर (Mauser) नामक 'ब्रीचलोडिंग' राइफिलें बनीं। मेगेज़ीन (Magazine) अथवा 'रिपीटिंग' राइफिलों[1] का आविर्भाव १८६१ में हुआ। ये नये हथियार २५० से ६०० गज दूर तक मार कर सकते थे। चिकने छेदवाली मुस्केटें, जैसे 'ब्राउन बेस' (Brown Bess) नाम की पुरानी ब्रिटिश मुस्केट, प्रभावकर रूप से १०० गज से कम दूर तक ही मार कर पाती थीं।

१. ऐसी बन्दूक जिसमें कार्तूस स्वतः निकल कर यथास्थान छूटते जाते हैं।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रीचलोडिंग (breechloading) सिद्धान्त पर बनी तोपों का सामान्य प्रचलन इस्पात (steel) के उत्पादन से सम्बद्ध तकनीकी कठिनाइयों के कारण उन्नीसवीं शती के नवें दशक तक विलम्बित हो गया, यद्यपि क्रुप (Krupp) कारखाने ने ब्रीचलोडर तोपों का उत्पादन सातवें दशक में ही प्रारम्भ कर दिया था। तोपखाने से सम्बद्ध इस युग का दूसरा सुधार तोपों में प्रयुक्त होने वाले ठोस गोलों (solid cannon balls) का खोखले गोलों (hollow projectiles) अथवा खोलों (shells) के सम्मुख, जो 'टाइम फ़्यूज़' (time fuse) द्वारा अथवा टकराने पर विस्फोटित होते थे, विलुप्त हो जाना था।

नया समरतन्त्र—इन परिवर्तनों के कारण समरतन्त्र (tactics) में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। नए अस्त्रों की मार (range) अधिक लम्बी और लक्ष्य वेधने की शक्ति अधिक अचूक होने के कारण आक्रमण से सुरक्षा अत्यधिक महत्तर और विगत दिनों की ठोस पदाति-विरचना (solid infantry formation) अव्यवहार्य (obsolete) हो गई। रैखिक और कॉलम विरचना के विषय में विवाद अनावश्यक हो गया। कठोर अनुभव द्वारा सैनिकों ने यह सीखा कि झड़पने वाले सैनिकों (skirmishers) की शिथिल पंक्ति (loose line) ही एक मात्र सम्भव आक्रमक विरचना है। यहाँ तक कि उन्हें (झड़पने वाले सैनिकों को) भी सम्मुखीय आक्रमण में क्षति बर्दाश्त करनी पड़ती थी। आक्रमण केवल शत्रु-सेना से अपनी सेना के अत्यधिक बहुसंख्यक होने पर और पार्श्वीय अथवा चक्करदार प्रगमन (flanking or turning movement) की सहायता से ही सफल हो सकता था। दूसरा परिणाम यह हुआ कि अश्वारोही सेना का आक्रमण-दल के रूप में महत्त्व समाप्त हो गया। राइफिलधारी सैनिकों के सम्मुख, चाहे वे पंक्ति में ही क्यों न होते थे, अश्वारोही सैनिक असहाय हो गए। अब वे मात्र स्काउट रूप में कार्य करने लगे, जैसे सेना को शत्रु द्वारा देखे जाने से बचाना और शत्रु-सेना की संख्या और स्थिति के बारे में समाचार भेजना।

इन परिवर्तनों का महत्त्व समझने में सेनापतियों को कुछ समय लगा। क्रीमियायी (Crimean) और फ्रान्सीसी-आस्ट्रियायी (Franco-Austrian) युद्ध वेलिंग्टनी और नेपोलियनी सिद्धान्तों के अनुसार ही लड़े गए थे। प्रशा-आस्ट्रियायी (Austro-Prussian) और फ्रान्सीसी-जर्मन (Franco-German) युद्धों में पदाति सेनाओं ने सघन पंक्तियों (dense lines) के रूप में आक्रमण किए और अश्वारोही सेनाओं ने साहसपूर्ण धावे बोलने के प्रयास किए यहाँ तक कि १८७७ में भी प्लेवना (Plevna) के युद्ध में रूसी सैनिक 'रिपीटिंग' राइफिलों से सज्जित तुर्कों के विरुद्ध ठोस कॉलमों में ही अग्रसरित हुए थे। सैनिक मस्तिष्क (military mind) अपनी रूढ़िवादिता के लिए बदनाम है, फिर भी एक दूसरे महाद्वीप[1] में एक ऐसा युद्ध हुआ था

१. अमरीका का सैनिक इतिहास तेरह अमरीकी उपनिवेशों के ब्रिटिश आधिपत्य के विरुद्ध संघर्ष से प्रारम्भ होता है। १७७५ ई० में इन उपनिवेशों की द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस (Continental Congress) ने कर्नल जॉर्ज वाशिंग्टन को अमरीकी सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति नियुक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिससे, अगर उसका भलीभाँति अध्ययन किया जाता, समरतन्त्र (tactics) के इतिहास में एक नए युग का प्रारम्भ स्पष्ट हो जाता। अमरीका का गृह-युद्ध (American Civil War 1861-65) से जो सबक मिले वे १९१४ तक शिक्षाप्रद रहे। लेकिन इसे उन लोगों ने लड़ा था जो पेशेवर सैनिक नहीं थे, इसलिए यूरोप के पेशेवर सैनिकों ने इससे कोई भी लाभ उठाना अस्वीकृत कर दिया।

संघवादी और प्रसंघी[1]—समस्त युद्ध के दौरान संघवादी (federal)

किया और ४ जुलाई १७७६ को स्वतन्त्रता की घोषणा की गई। तब से लेकर गृह-युद्ध (१८६१-६५) के प्रारम्भ तक अमरीकी सेनाएँ बराबर विशालतर, अधिक सक्षम और सबलतर होती गईं। १८१२ ई० में उनको ब्रिटेन से पुनः युद्ध करना पड़ा, जिसमें अमरीकियों ने ब्रिटेन के विरुद्ध स्थल युद्धों में ही नहीं वरन् अनेक जलयुद्धों में भी सफलता प्राप्त की। इस प्रसंग में अमरीकी फ्रिगेट 'कोन्स्टीट्यूशन' द्वारा केप्टन हल के नेतृत्व में ब्रिटिश जहाज 'गैरियर' और अमरीकी स्लूप 'वास्प' द्वारा ब्रिटिश स्लूप 'फ्रौलिक' का विनाश, १८१२-१३ की शरद और शीत ऋतु में अमरीकी 'प्राइवेटियरों' का ५०० ब्रिटिश जहाजों को पकड़ लेना और ईरी झील के युद्ध में केप्टेन ऑलिवर पैरी का ब्रिटिश जलबेड़े को परास्त करना उदाहरणीय हैं। ये सफलताएँ ऐसी थीं जिनसे सारा संसार चकित रह गया। इस संघर्ष के उपरान्त अमरीका ने दूसरा महत्त्वपूर्ण युद्ध १८४६ में मेक्सिको (Mexico) के विरुद्ध लड़ा जिसमें अमरीकी सर्वोच्च सेनापति विन्फील्ड स्कॉट (Winfield Scott) ने बहुत ख्याति अर्जित की। उसने मेक्सिको नगर को अधिकृत करने के लिए पहले अमरीकी जल और स्थल सेनाओं की सहायता से (यह प्रथम अवसर था जब अमरीका की जल और स्थल सेनाओं ने एक साथ कार्य किया) वेरा क्रूज (Vera Cruz) में अपनी सेना को उतारा और इस स्थान को अपना अड्डा बना कर शत्रु की राजधानी की ओर १०,००० सैनिकों के साथ, जिनमें आधे अप्रशिक्षित स्वयंसेवक थे, २६० मील का फासला शत्रु से कहीं भी पराजित हुए बिना छः माह में पूरा किया। १८६१-६३ में इसी फासले को ३०,००० फ्रान्सीसी सैनिकों ने १८ माह में पूरा किया था और मार्ग में वे एक बार अपने से दुर्बल सेना द्वारा बुरी तरह पराजित भी हुए थे।—अनु०।

१. संयुक्त-राज्य-अमरीका (United States of America) एक संघ राज्य है। उन्नीसवीं शती के मध्य इसके सदस्य राज्यों में गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गए, जिनके परिणामस्वरूप १८६१-६५ में सुप्रसिद्ध 'अमरीकी गृह-युद्ध' हुआ। इस मतभेद का मूल कारण आर्थिक था। अमरीका के उत्तरी राज्यों की अर्थ-व्यवस्था मुख्यतः उद्योग-धन्धों पर आधृत थी। वे मैदा, जूते, सूती कपड़े, शहतीर और लकड़ी के अन्य सामान, यन्त्र एवं चमड़े और ऊन की वस्तुएँ तैयार करते थे। इसके विपरीत दक्षिणी राज्यों की आय के मुख्य साधन चावल, गन्ने, तम्बाकू और मुख्यतः कपास की खेती थे। स्पष्टतः दोनों प्रदेशों के स्वार्थ भिन्न थे और दोनों संघीय सरकार से भिन्न प्रकार की नीति का अनुसरण करने की अपेक्षा करते थे। आर्थिक हितों के संघर्ष की इस समस्या को दास-प्रथा ने जटिलतर कर दिया। दक्षिणी राज्यों के बड़े-बड़े जमींदार दासों से कपास की खेती कराते थे। औद्योगिक-क्रान्ति (Industrial Revolution) के कारण इंग्लैण्ड का वस्त्र-उद्योग विकसित हो जाने से कपास की माँग बढ़ गई थी, इसलिए दक्षिणी राज्यों के लिए दास-प्रथा और भी अधिक आवश्यक हो गई। लेकिन उत्तरी राज्यों में दासों की कोई आवश्यकता नहीं थी और वे इस प्रथा को रोकना चाहते थे। इसका कारण राजनीतिक था। संयुक्त-राज्य-अमरीका का पश्चिम की ओर प्रसार हो रहा था और नए राज्य बराबर संघ में मिलते जा रहे थे। प्रश्न था कि उन्हें संघ का सदस्य दास-प्रथा को मानने वाले राज्यों के

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पक्ष की स्थिति सेना की संख्या और धन की दृष्टि से अत्यधिक श्रेष्ठतर रही। उत्तरी राज्यों ने अपनी विशाल जनसंख्या में से २,०००,००० व्यक्तियों को सेना में भर्ती किया; दक्षिणी राज्यों ने मुश्किल से १,०००,००० को। दोनों पक्षों में औद्योगिक वैषम्य, जो अब युद्धकर्म पर अत्यधिक प्रभाव डालने लगा था, और भी अधिक था। दक्षिण वालों ने औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन बहुत ही कम किया; इनके लिए वे विदेशों से आयात पर निर्भर रहे। इस दृष्टि से उत्तरी राज्यों के समुद्र पर नियन्त्रण का अपार महत्त्व था। इसके कारण दक्षिण वालों को न केवल समुद्र पार के देशों से आने वाले शस्त्रास्त्र (munitions) और अन्य आवश्यक सामग्री मिलनी बन्द हो गई, वरन् वे रूई का निर्यात् करने में भी, जो उनकी आर्थिक सम्पत् का मुख्य स्रोत था, असमर्थ हो गए। दक्षिणी राज्यों की परिसम्पत् (assets) उनके सैनिकों का उत्कृष्टतर युद्ध-कौशल (fighting quality), युद्ध की प्रथम अवस्थाओं में उनके सेनापतियों की श्रेष्ठतर योग्यता, और जनता में एकता की भावना थे। दक्षिण में शान्ति चाहने वाला कोई दल नहीं था। उनकी 'कॉनफेडेरेसी' (Confederacy) का उद्देश्य सीमित था—संघवादियों (federals) का जब तक सामना करते रहना जब तक उत्तरी राज्यों में युद्धक्लान्ति (war weariness) न छा जाए और वे संघर्ष से हाथ न खींच लें। लिंकन (Lincoln) से कम दृढ़-निश्चय वाला कोई और व्यक्ति अगर राष्ट्रपति (President) होता तो ऐसा आसानी से हो भी जाता।

युद्ध के संग्राम—इस युद्ध (war) के कुछ आदर्शभूत संग्रामों (typical battles) से लड़ाई की नई विधि का आभास मिलेगा और उन दो महान् सेनाध्यक्षों, ग्राण्ट (Grant) तथा ली (Lee), की समरनीति (tactics) स्पष्ट होगी जिनके व्यक्तित्व उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के सर्वोत्तम गुणों के प्रतीक थे।

(अ) फ्रे`डेरिक्सबर्ग (१८६२)—इस संग्राम से सुरक्षित स्थितियों (fortified positions) पर सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) करने की

रूप में बनाया जाय या दास-प्रथा विहीन राज्यों के रूप में। उत्तरी राज्य उन्हें अपने समान दास-प्रथा विहीन सदस्यों के रूप में भर्ती करना चाहते थे जिससे संघीय सरकार पर उनका नियन्त्रण रहे। इस स्थिति में १८५२ में हैरियट बीचरस्टो नामक लेखिका के उपन्यास 'टॉम काका की कुटिया' (Uncle Tom's Cabin) ने, जिसमें दासों के साथ किए जाने वाले नृशंस व्यवहार का चित्रण है, जनमत को दास-प्रथा के विरुद्ध अत्यधिक उभाड़ दिया। एक वर्ष में ही इसकी ३ लाख प्रतियां बिकीं। १८५७ में अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने दास-प्रथा को विधान-सम्मत घोषित कर स्थिति और खराब कर दी। १८६१ में अमरीका में राष्ट्रपति का चुनाव हुआ जिसमें रिपब्लिकन दल का उम्मीदवार अब्राहम लिंकन (Abraham Lincon) जो दास-प्रथा का विरोधी था, विजयी हुआ। दक्षिणी राज्यों ने इसका उत्तर अपने को संघ से अलग घोषित करके और 'कॉनफेडेरेट स्टेट्स ऑव अमेरीका' (Confederate States of America) का संगठन करके दिया। इन राज्यों को ही 'प्रसंघी' अथवा 'कॉनफेडेरेट्स' (Confederates) कहा जाता है। लिंकन, जिसने दक्षिणी राज्यों की पृथकता अस्वीकृत कर दी, और उसके सहायक राज्य 'संघवादी' अथवा 'फेडेरल्स्' (federals) कहलाए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्खता स्पष्ट होती है। ली के आदमी (८०,०००) रप्पाहन्नोक नदी (R. Rappahnnock) के दक्षिण में एक पूर्णतः सुरक्षित पहाड़ी पर तैनात थे। बर्नसाइड (Burnside) ने १२०,००० सैनिकों के साथ उनका विरोध किया। संघीय (federal) सेनाध्यक्ष ने अपने आदमियों से नदी पार करवा कर प्रत्यक्ष आक्रमण द्वारा शत्रु को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया। नदी को पार करना प्रथम कठिनाई थी। इसमें दो दिन लग गए, जिससे ली को रक्षा के हेतु अपनी समस्त सेना संकेन्द्रित (concentrate) करने का पर्याप्त अवसर मिल गया। मुख्य आक्रमण ८०,००० आदमियों ने ब्रिगेडों के कॉलमों में किया। उनके आगे झड़पने वाले सैनिक थे। पैंतरे बदलने (manoeuvring) अथवा पार्श्वों को घेरने (outflanking) की कोई चेष्टा नहीं की गई। यह एक विशुद्ध मूर्खतापूर्ण आक्रमण मात्र था। दिसम्बर के उस लघु दिवस अभेद्य प्रसंघीय (Confederate) स्थिति पर निरर्थक रूप से धावे पर धावे किए गए। दिन के अन्त में संघीय (federal) सेना अव्यवस्थित अवस्था में नदी की ओर लौट गई। उसके १२,००० सैनिक हताहत हुए। प्रसंघीयों की क्षति केवल ५,००० रही। अगर ली (Lee) ने तत्काल प्रत्याक्रमण कर दिया होता तो वह अपने शत्रु को विनष्ट करने में सफल हो जाता, लेकिन उसने एक और आक्रमण की आशंका होने के कारण प्रतीक्षा की जिससे बर्नसाइड (Burnside) को अपनी छिन्न-भिन्न सेना रप्पाहन्नोक के पार ले जाने का अवसर मिल गया।

(आ) शांसेलोरविए (१८६३)—१८६३ की वसन्त ऋतु में १३०,००० सैनिकों की एक संघीय सेना हूकर (Hooker) के नेतृत्व में रप्पाहन्नोक के उत्तरी किनारे पर तैनात थी। ली ६३,००० आदमियों के साथ नदी के दक्षिण में खाइयाँ खोद कर डट गया। फ्रेडेरिक्सबर्ग (Fredericksburg) के अनुभव से प्रबोधित हूकर ने सम्मुखीय आक्रमण के स्थान पर चक्करदार प्रगमन (turning movement) आजमाने का निश्चय किया। इसके अनुसार जनरल सेजविक (Sedgwick) को तीन सैन्य दलों (army corps) के साथ फ्रेडेरिक्सबर्ग से नीचे नदी पार करके ली (Lee) की सेना के अधिकांश को उलझा लेना था, जब कि हूकर तीन अन्य सैन्य दलों के साथ कुछ ऊपर की ओर हट कर शांसेलोरविए (Chancellorsville) के समीप नदी पार करके प्रसंघीयों (Confederates) के पार्श्वों और पृष्ठभाग पर आघात करता। यह कोई बुरी योजना नहीं थी। यद्यपि इसको कार्यान्वित करते समय सेना को विभाजित करना अपरिहार्य था, तथापि हूकर की सेना संख्या में अधिक होने के कारण यह विभाजन पर्याप्त निरापद था।

संघीय सेना की गतिविधि ली को स्पष्टतः दिखाई दे रही थी। उसने प्रत्याक्रमण की तैयारी की। सेजविक को रोकने के लिए १०,००० आदमी छोड़कर, वह संघीय सेना के दाहिने पार्श्व की ओर मुड़ा। यहाँ हूकर ने ७०,००० सैनिक संकेन्द्रित किए हुए थे और वह लाभप्रद स्थिति में आक्रमण कर सकता था। परन्तु यह सोच कर कि ली या तो लौट जाएगा और या उसकी स्थिति पर सम्मुखीय आक्रमण करेगा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह रक्षात्मक(defensive) स्थिति अपनाए रहा। अपनी समस्त अश्वारोही सेना रिश्मोण्ड (Richmond) की ओर लूटपाट के लिए भेज देने के कारण उस के पास शत्रु की गतिविधि की सही सूचना नहीं थी। इसलिए जिस समय ली उस के विनाश की योजना बना रहा था, वह शांसेलोरविए में अचल बैठा रहा।

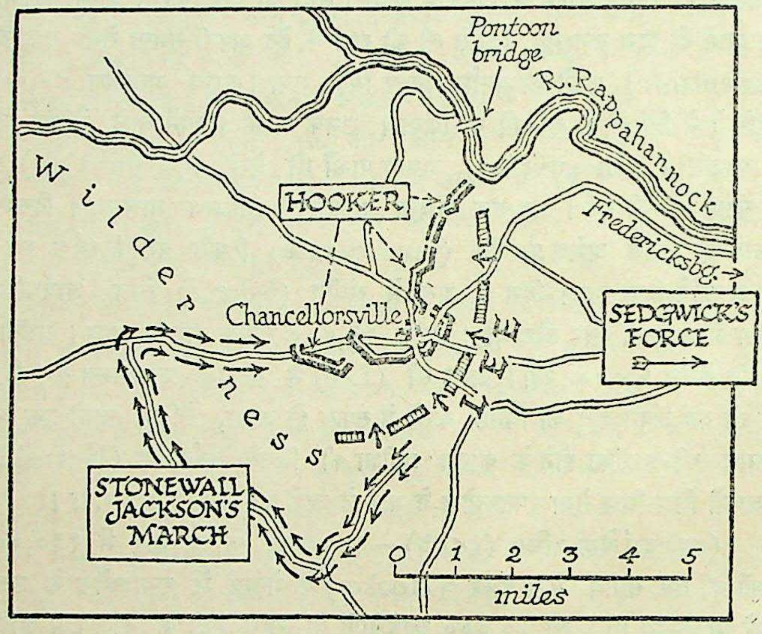

शत्रु के पार्श्वों की टोह लेने पर प्रसंघीय (Confederate) अश्वारोही-सैन्य ने पाया कि संघीय (Federal) सेना का दाहिना पार्श्व प्राकृतिक अथवा कृत्रिम किसी प्रकार की रुकावट से सुरक्षित नहीं है। ली ने इसी स्थल पर मार्मिक आघात करने का निश्चय किया। स्टोनवाल जेक्सन (Stonewall Jackson) को आज्ञा दी गई कि वह ३२,००० आदमियों के साथ संघीय सेना का चक्कर लगा कर उसके अरक्षित पार्श्व पर धावा बोले। वह पौ फटने के समय रवाना हुआ परन्तु पन्द्रह मील चलने में उसने दस घण्टे लगा दिए। इस बीच ली अत्यन्त संकटास्पद स्थिति में रहा। उसकी सेना तीन भागों में बँटी हुई थी। १०,००० सैनिक सेजविक का प्रतिरोध कर रहे थे, २१,००० हूकर के सामने डटे हुए थे और ३२,००० जेक्सन के साथ अग्रसरित हो रहे थे। अगर हूकर ने इस समय आक्रमण कर दिया होता तो प्रसंघीय सेना समूल नष्ट हो जाती। लेकिन वह चुप बैठा रहा, और जेक्सन सायंकाल प्रसंघीय गण (division) के दाहिने पार्श्व पर टूट पड़ा और उसे अस्तव्यस्त अवस्था में पीछे मार भगाया। संघीय सेना इस अप्रत्याशित आघात से कभी प्रकृतिस्थ नहीं हो पाई, और विशेषतः उसका सेनापति अपना आत्म-नियन्त्रण खो बैठा। प्रसंघीय सेना अगले दिन भी भयावह स्थिति में रही। जेक्सन का सैन्य-दल (जेक्सन को दैवात् अपने ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदमियों की गोली लग जाने के कारण इसका नेतृत्व अब स्टुअर्ट कर रहा था) शेष प्रसंघीय सेना से अभी तक अलग बना हुआ था, जबकि सेजविक के आक्रमण से मजबूर होकर ली को एक गण (division) अलग करके अपने दाहिने पक्ष की ओर भेज देना पड़ा जिससे उसका मध्य भाग संकटपूर्ण रूप से दुर्बल हो गया। अगर संघीय सेना साहस करके हमला कर देती तो विजय उसी की होती। लेकिन हूकर की विजिगीषा मर चुकी थी, जिसके कारण उसने अपने सैनिकों को रप्पाहन्नोक के पार लौट आने का आदेश दे दिया।

कहा जाता है कि "जिस प्रकार ल्यूथेन (Leuthen) का संग्राम अट्ठारहवीं शताब्दी के अत्युत्कृष्ट समरतन्त्र (tactical masterpiece) का उदाहरण है उसी प्रकार शांसेलोरविए का संग्राम उन्नीसवीं शताब्दी का"।* लेकिन यह एक ऐसी विजय थी जो युद्ध-कला के समस्त सही सिद्धान्तों का उल्लंघन करके प्राप्त की गई थी। ली ने युद्ध का प्रारम्भ अपनी सेना को तीन भागों में बाँट कर किया, और फिर चक्कर लगा कर जाने वाला एक दल भेज दिया जो सम्पूर्ण दिन मुख्य सेना से सम्पर्कविहीन रहा। उसके पक्ष में कहा गया है कि जेक्सन का चक्करदार प्रगमन वाइल्डरनेस (Wilderness) के वन में छिप गया था। वस्तुतः ऐसा नहीं था, लेकिन हूकर ने अपने दुर्भाग्यवश उसको (जेक्सन की गतिविधि को) देख कर यह सोचा कि प्रसंघीय सेना पीछे हटना आरम्भ कर रही है। यह तर्क भी रखा गया है कि ली (Lee) अपने प्रतिद्वन्द्वी के चरित्र को समझता था और जानता था कि वह (उसका प्रतिद्वन्द्वी) आक्रमण नहीं करेगा। परन्तु हूकर एक निष्क्रिय सेनापति के रूप में बदनाम नहीं था। संघीय सेना में वह 'युद्धप्रिय जो' (Fighting Joe) कहा जाता था। सब बातों को दृष्टि में रखते हुए हम यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि ली ने अनुचित खतरे मोल लिए, और उसकी विजय उसके अपने सैन्य-विन्यास (dispositions) के कारण नहीं वरन् उसके प्रतिद्वन्द्वी की भूलों के कारण हुई। प्रतिद्वन्द्वी सेनापति का मूर्ख होना विजय प्राप्त करने का सर्वाधिक अचूक नुस्खा है।

गेटिस्बर्ग (१८६३)—यह संग्राम आकस्मिक मुठभेड़ के कारण हुआ। दोनों सेनाएँ एक दूसरे से अकस्मात् टकरा गईं, और संघीय सैनिकों (Federals) ने गेटिस्बर्ग (Gettysburg) से होकर लौटते समय नगर के दक्षिण की ओर स्थित तीन मील लम्बी पहाड़ी पर अधिकार कर लिया। अगले दिन ली ने मुख्याक्रमण (main assault) द्वारा इस स्थिति को छीनने की चेष्टा की। संघीय सेना उस समय तक संकेन्द्रण की प्रक्रिया (process of concentration) में थी, और उस पर उसी समय प्रहार करना नितान्त महत्त्वपूर्ण था। ली के एक सहायक सेनापति ने पार्श्वीय आक्रमण करने का सुझाव दिया, परन्तु उस समय तक अग्रसरित हो रहे शत्रु-सैनिकों के विषय में कोई निश्चित सूचना पाए बिना ली इस पैंतरे को लेने में डर रहा था।

---

* जी० एफ० आर० हेण्डर्सन, स्टोनवाल जेक्सन, भाग २, पृ० ४७०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और यह सूचना उसे मिल नहीं सकती थी क्योंकि शांसेलोरविए के संग्राम में हूकर के समान उसने भी अपनी अश्वारोही सेना लूटपाट के लिए भेज दी थी। अतः सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) ही एक मात्र विकल्प था। ली ने अपने आक्रमण को संघीय (Federal) सेना के बाज़ुओं (wings) पर संकेन्द्रित किया। उसे यह आशा थी कि वह पहाड़ी के किनारों पर, जहाँ से वह शत्रु की स्थिति पर गोलाबारी कर सकता था, जम सकने में सफल हो जाएगा। लेकिन प्रसंघीयों (Confederates) के धावे बड़ी देर से हुए और ठीक तरह समन्वित (co-ordinated) नहीं थे। इसलिए दिन का अवसान हो गया, लेकिन उत्तर में स्थित 'कुल्प्स् हिल' (Culp's Hill) को छोड़ कर शेष सम्पूर्ण पहाड़ी संघीय सेना के अधिकार में बनी रही। यह छोटी सी हानि भी संघीय सेनाध्यक्ष मिएड (Mead) को प्रत्यावर्तन (retreat) पर विचार करने के लिए विवश कर देने के हेतु पर्याप्त थी। लेकिन वह जमा रहा, और अगले दिन उसकी सम्पूर्ण सेना पहाड़ी पर या उसके पीछे एकत्र हो गई। ली ने यह देख कर कि संघीय सैनिक बाज़ुओं पर संकेन्द्रित हो रहे हैं, मध्य भाग पर आघात करने का निश्चय किया। मुख्याक्रमण १५,००० आदमियों ने किया। वे तीन लम्बी पंक्तियों में अग्रसरित हुए जो शीघ्र ही एक चीत्कारी समूह (yelling mass) के रूप में परिणत हो गई। उनके धावे के पूर्व प्रसंघीय (Confederate) तोपखाने ने भयंकर गोलबारी की, लेकिन जैसे ही आक्रमणकारी आगे बढ़े, प्रसंघीय तोपों की गोलाबारी बन्द हो गई और संघीय (Federal) तोपखाने ने आग बरसाना प्रारम्भ कर दिया। एक आक्रमणकारी ब्रिगेड संघीय सैन्य-पंक्ति तक पहुँचने और उसे भेदने में सफल हो गई, लेकिन शीघ्र ही उसे घेर लिया और भून डाला गया। अन्य ब्रिगेडें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल रहीं। तोपों और राइफिलों की अग्निवर्षा से काफी क्षति हो जाने के कारण वे रुकीं, कुछ देर तक दोलायमान स्थिति में रहीं और तदनन्तर अव्यवस्थित अवस्था में पहाड़ी के नीचे उतर आईं। इस संग्राम में ली को अपने लगभग आधे आदमियों— ७०,००० में से ३०,००० से हाथ धोना पड़ा। संघीय सेना की क्षति भी बहुत अधिक, ८०,००० में २३,००० रही जिससे लड़ाई की उग्रता का पता चलता है। लौटती हुई प्रसंघीय सेना पोटोमाक नदी (Potomac) में बाढ़ आई होने के कारण कई दिन तक रुकी रही और उस समय उसका अनायास विनाश किया जा सकता था। लेकिन गृहयुद्ध (Civil War) के अन्य अनेक सेनापतियों के समान मिएड भी शत्रु का निष्ठुरतापूर्वक पीछा करने के महत्त्व को नहीं समझ पाया।

(ई) शिलोह (१८६२)—१८६२ की बसन्त ऋतु में ग्राण्ट के पास, कोरिंथ के महत्त्वपूर्ण रेलवे जंक्शन पर आक्रमण करने की तैयारी करते समय, टेनेसी (Tennessee) नदी और स्नेक (Snake) नामक एक लघु सहायक नदी द्वारा निर्मित कोण मे ३३,००० आदमी थे। भावी आक्रमण की तैयारी करने में पूर्णतः रत रहने के कारण उसके दिमाग में यह विचार नहीं आ पाया कि स्वयं उस पर आक्रमण हो जाएगा। तदनुसार, जब प्रसंघीय (Confederate) सेनापति ए० एस० जॉनस्टन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(A. S. Johnston) ने पौ फटने के समय ४५,००० आदमियों के साथ संघीय (Federal) शिविर पर धावा बोल दिया, तो सोते हुए सैनिक आश्चर्य से स्तब्ध रह गए। अतिमानवीय प्रयासों द्वारा उनके अफसरों ने नेक (Snake) से टेनेसी तक विस्तृत सैन्य-पंक्ति बनवाने में सफलता प्राप्त की और हेडक्वार्टर्स (headquarters) से आकर ग्राण्ट ने मोर्चे को दृढ़ करने और उस तक युद्ध-सामग्री पहुँचाने की ओर ध्यान दिया। उग्र संघर्ष के उपरान्त संघीय (Federal) सैनिक कोण के सिरे (apex) की ओर धकेल दिए गए, लेकिन इससे उनकी पंक्ति लघुतर और दृढ़तर हो गई। तीसरे पहर जॉनस्टन मारा गया और प्रसंघीय सेना स्थिति यथावत् बनाए रखने की चेष्टा में लग गई। इस बीच संघीय पक्ष के पास बलवर्धक सैन्य-दल बराबर पहुँच रहे थे। रात में एक गण (division) को नाव से नदी के पार पहुँचाया गया, और दूसरा ग्राण्ट के दाहिने पहुँच गया। अगले दिन संघीय सैनिक संख्या में अत्यधिक शक्तिशाली हो गये और उन्होंने प्रत्याक्रमण कर दिया। प्रसंघीय पक्ष के नए सेनाध्यक्ष बोरगार्ड् (Beauregard) ने पूर्ण प्रत्यागमन का निश्चय किया। यद्यपि ग्राण्ट को पर्याप्त संकटों का सामना करना पड़ा, परन्तु अपनी धीरता और दृढ़संकल्पता के द्वारा वह एक भारी आपदा से बच निकला।

(उ) शत्तानूगा (१८६३)—यह शिलोह (Shiloh) से अधिक सन्तोषप्रद विजय थी। ब्राग (Bragg) के सेनापतित्व में प्रसंघीयों (Confederates) ने शत्तानूगा (Chattanooga) के पश्चिम में स्थित 'मिशनरी' नामक पहाड़ी (Missionary Ridge) तथा दक्षिण की ओर स्थित 'लुकआउट' नामक पर्वत (Lookout Mountain) पर अधिकार कर लिया। ग्राण्ट इन स्थितियों को अपने हाथ में करना चाहता था। उसकी योजना वैसी ही थी जैसी गेट्टिस्वर्ग में ली की थी। पहले शत्रु के पार्श्वों पर अपने सैन्य-दल स्थापित करना और तब उसके मध्य-भाग पर धावा बोलना। उसका भाग्य ली से अधिक प्रबल था क्योंकि कुहरे के कारण मौसम धुँधला हो जाने से आक्रमणकारियों को बड़ी सुविधा हुई। शेरमान (Sherman) ने 'मिशनरी' पहाड़ी के उत्तरी सिरे पर स्थित 'टनल हिल' (Tunnel Hill) पर अधिकार कर लिया, और दाहिनी ओर हूकर ने 'लुकआउट' पर्वत पर धावा बोल दिया। अगले दिन सम्पूर्ण मोर्चे पर चढाई करने का आदेश दिया गया। हूकर को शत्तानूगा नदी में बाढ़ आ जाने के कारण देर लग गई, परन्तु शेरमान ने बाईं ओर से आक्रमण कर दिया और टॉमस ने मध्य भाग पर भारी दबाव डाला। जब अन्ततोगत्वा हूकर ने भी दाहिनी ओर दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया, तो प्रसंघीय सैनिकों का मनोबल टूट गया और वे पहाड़ी (ridge) को छोड़ कर चले गए। इस विजय का भारी मूल्य चुकाना पड़ा। सम्मुखीय आक्रमण करने के कारण शत्रु की तुलना में ग्राण्ट के अधिक आदमी हताहत हुए—२,५०० की तुलना में ५,८००। लेकिन ४,००० प्रसंघीय सैनिकों ने आत्म-समर्पण कर दिया था।

युद्ध का सामान्य युद्धतन्त्र—उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच की सीमा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को एलेवेनी (Allegheny) पर्वतों ने दो युद्धक्षेत्रों (theatres of war) में विभाजित कर दिया था। राजनीतिक दृष्टि से इनमें पूर्वी क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इसी में वाशिंग्टन (Washington) और रिचमोण्ड (Richmond), दोनों राजधानियाँ स्थित थीं। लेकिन युद्धतन्त्रीय (strategic) दृष्टि से पश्चिमी क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण था और संघीय (Federal) सेना को इसी क्षेत्र में प्राप्त सफलता से युद्ध का निर्णय हुआ।

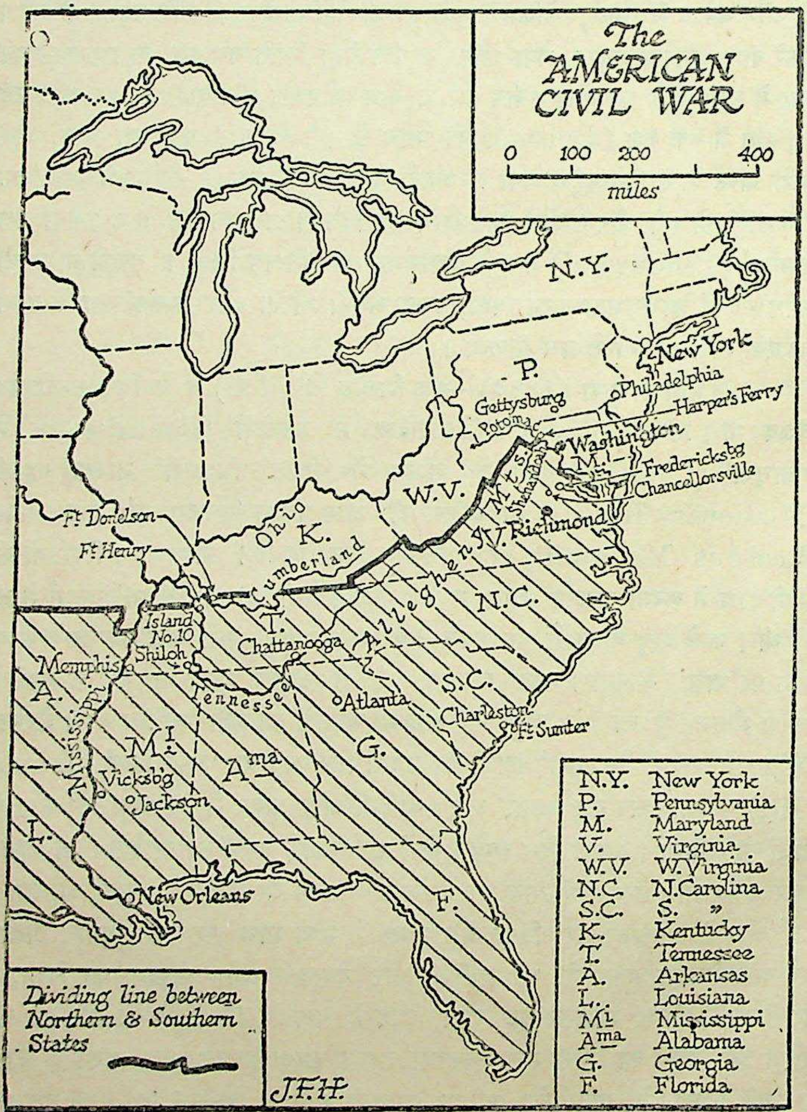

(अ) पूर्वी युद्धक्षेत्र (The Eastern Theatre)—इसका अधिकांश वर्जीनिया (Virginia) राज्य के उत्तर में था। पहले तीन अभियानों में संघीय पक्ष ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिच़्मोण्ड पहुँचने का निष्फल प्रयास किया और तदनन्तर प्रसंघीय (Confederate) पक्ष ने उतनी ही असफलतापूर्वक उत्तरी राज्यों पर आक्रमण करने का। एक भौगोलिक विरचना जिसने प्रसंघीय पक्ष को सहायता दी, 'ब्लु रिज़' पर्वतों (Blue Ridge Mountains) और 'एलेघेनी' पर्वतों (Alleghenies) के मध्य स्थित शेनानदोआह (Shenandoah) नदी की १४० मील लम्बी घाटी थी। 'ब्लु रिज़' पर्वतों की आड़ में प्रसंघीय सेनाएँ मेरीलैण्ड (Maryland) अथवा पेन्सिल्वानिया (Pennsylvania) में घुस सकती थीं अथवा (बहुत से दर्रों में से किसी एक के द्वारा) स्वयं वाशिंग्टन को संकटग्रस्त कर सकती थीं।

पहली मुटभेड़ 'बुल रन' ((Bull Run) के समीप (१८६१) हुई। उत्तरी लोकसैन्य के अप्रशिक्षित आदमियों के एक दल को राजनीतिज्ञों और पत्रकारों ने रिच़्मोण्ड पर अकालिक आक्रमण करने का प्रयास करने के लिए उभाड़ दिया। उनका संख्या में हीनतर प्रसंघीय सेना ने 'बुल रन' में प्रतिरोध किया। संग्राम का निर्णय 'हार्पर्स् फेरी' (Harper's Ferry) से १०,००० प्रसंघीय (Confederate) सैनिकों के आ पहुँचने से हुआ, जो उन पर दृष्टि रखने वाले संघीय (Federal) सेनापति की आँख में धूल झोंककर चले आए थे। उत्तरी राज्यों की सेना के पार्श्व पर धावा बोल कर उन्होंने उसे अपमानपूर्वक पलायित होने के लिए विवश कर दिया।

अगले वर्ष संघीय पक्ष ने रिच़्मोण्ड पर अधिकार करने का सुसंगठित और कृतनिश्चय प्रयास किया जो सफल होने से बाल-बाल बचा। २००,००० आदमियों की एक सेना को मेक्लेलान (M'Clellan) ने सम्पूर्ण शीत ऋतु भर सम्यक्रूपेण प्रशिक्षित किया और उनके साथ शत्रु की राजधानी पर एक अप्रत्याशित दिशा से आक्रमण कर दिया। उत्तरी राज्यों के समुद्र पर नियन्त्रण का लाभ उठाकर मेक्लेलान ने अपने सैनिक जलपोतों द्वारा योर्कटाउन प्रायद्वीप (Yorktown peninsula) भेज दिए और रिच़्मोण्ड पर आक्रमण करने के लिए वह दक्षिण-पूर्व की ओर से अग्रसरित हुआ। उसकी टुकड़ियाँ नगर से चार मील दूर रह गईं और दक्षिणी राज्यों की सरकार पलायन के लिए तैयार होने लगी। लेकिन उसी समय मेक्लेलान के चरित्र की एक घातक दुर्बलता प्रकट हुई। वह आक्रमण करने का निर्णय कभी नहीं कर सकता था। उसकी सेना शत्रु-सेना से दुगुनी थी, और उसे विजय प्राप्त करने के लिए मात्र आक्रमण करने की आवश्यकता थी। लेकिन मेक्लेलान शत्रु की शक्ति का सदैव अतिरञ्जित अनुमान करता था, और उसे अपनी सेना की शक्ति कभी यथेष्ट प्रतीत नहीं होती थी। स्टोनवाल जेक्सन के शेनानदोआह घाटी में किए गए धावे से वाशिंग्टन सरकार चिन्तित हो उठी थी और लिंकन ने ४६,००० की एक सेना संघीय राजधानी की रक्षा के लिए रोक ली थी। मेक्लेलान ने क्रुद्ध होकर तब तक आक्रमण करने से इन्कार कर दिया जब तक वे सैनिक उसके पास न भेज दिए जाते। इस बीच में ली (Lee) ने जेक्सन के सैन्य दल को शीघ्रतापूर्वक वापस बुलाया और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संघीय सेना के पार्श्व पर टूट पड़ा जिसे उसने 'सप्तदिवसीय संग्राम' (Seven Days' Battle) में बुरी तरह पराजित किया (१८६२)।

लेकिन खेल अभी तक खत्म नहीं हो गया था। यद्यपि मेक्लेलान को पीछे हटना पड़ा था, लेकिन उसे अभी तक संख्याधिक्य, अच्छी स्थिति ओर समुद्र तट पर सुरक्षित अड्डे के लाभ प्राप्त थे। वह संघर्ष को सफलतापूर्वक पुनः आरम्भ कर सकता था। लेकिन संघीय सरकार के अति सिद्धान्तवादी (pedant) ओर कठोर नीति परायण (straitlaced) सैनिक सलाहकार (military adviser) हैलेक (Halleck) ने, जिसका सैनिकों ने "ओल्ड ब्रेन्स्" (Old Brains) नाम रखा हुआ था, यह निष्कर्ष निकाला कि अभियान असफल हो गया है और मेक्लेलान को आज्ञा दी कि वह अपने आदमियों को समुद्री मार्ग से वाशिंग्टन के आस-पास लौटा लाए। जिस समय यह समुद्रीय-संक्रिया (maritime operation) चल रही थी, ली ने उत्तर की ओर आक्रमण किया। उसने वाशिंग्टन की रक्षा करने वाली एक सेना को 'बुल रन' के दूसरे संग्राम में परास्त किया, लेकिन संघीय राजधानी को छोड़ कर उसने मेरीलैण्ड (Maryland) का रास्ता पकड़ा। मेरीलैण्ड दास-प्रथा को मानने वाला राज्य था जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण 'कॉनफेडेरेसी'[1] में सम्मिलित नहीं हो पाया था। ली को आशा थी कि उसकी जनता उसके समर्थन में विप्लव कर देगी, लेकिन वहाँ के निवासियों ने कोई भी सहायता देने से इन्कार कर दिया और उसे लौट आना पड़ा। मेक्लेलान ने उसका पीछा किया और एन्टिएटम (Antietam) स्थान पर उससे भिड़ गया। इसके परिणामस्वरूप जो संग्राम लड़ा गया, वह समरतन्त्रीय दृष्टि से (tactically) अनिर्णीत रहा, लेकिन युद्धतन्त्रीय दृष्टि से (strategically) इसमें उत्तरी राज्यों की विजय रही क्योंकि इसके कारण ली को रिछमोण्ड लौट आना पड़ा।

(आ) पश्चिमी युद्धक्षेत्र (The Western Theatre)—यहाँ लड़ाई का पहला दृश्य उपरली मिसीसिपी (Mississippi) और उसकी तीन सहायक नदियों—ओहियो (Ohio), कम्बरलैण्ड (Cumberland) और टेनेसी (Tennessee) के कांठों में अभिनीत हुआ। यह प्रदेश दक्षिण में प्रविष्ट होने का द्वार था। अगर संघीय सैनिक (Federals) इस पर अधिकार कर लेते तो वे मिसीसिपी के मार्ग से दक्षिण की ओर बढ़ जाते और दक्षिणी राज्यों के प्रसंघ (Confederacy) को दो भागों में बाँट देते। इसके विपरीत अगर इस प्रदेश में दक्षिणी राज्यों को सफलता मिलती तो इससे उत्तरी राज्य अरक्षित हो जाते और शत्रु के लिए उनके हृदय-स्थल पर आघात करना सरल हो जाता। संघीय पक्ष की ओर से अधिकांश लड़ाई ग्राण्ट ने लड़ी, यद्यपि प्रारम्भ में केवल एक सहायक सेनापति के रूप में। १८६२ में नदीय प्रदेश में स्थित दक्षिणी पक्ष के महत्त्वपूर्ण दुर्गों—टेनेसी

---

१. दे० पृ० ११७, फु० नो० १।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर स्थित 'फोर्ट हेनरी' (Fort Henry), कम्बरलैण्ड पर स्थित 'फोर्ट डोनेल्सन' (Fort Donelson) तथा मिसीसिपी पर स्थित 'आइलैण्ड नम्बर टेन' (Island Number Ten) को जीतने का श्रेय उसी को प्राप्त है। इसके बाद शिलोह (Shiloh) की दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी, लेकिन इसके बावजूद संघीय सैनिकों ने शत्रु को कोरिंथ (Corinth) और मेम्फिस (Memphis) से खदेड़ने और मिसीसिपी के उपरले कांठे (Upper Mississippi) को रिच्मोण्ड तथा चार्ल्स्टन (Charleston) से जोड़ने वाले रेलपथ (railway) को काटने में सफलता प्राप्त की।

अगला महत्त्वपूर्ण कार्य मिसीसिपी नदी के मार्ग पर अधिकार करना था। इस समय तक संघीय जलसेना फेरागुत (Farragut) के सेनापतित्व में न्यू आर्लियन्स् (New Orleans) पर अधिकार कर चुकी थी। लेकिन इसके पूर्व कि उत्तरी पक्ष की दोनों सेनाएँ परस्पर मिल पातीं, दक्षिण के महान् दुर्ग विक्सबर्ग (Vicksburg) को जीतना अपरिहार्य था। नदी के दोनों ओर दलदलों के आधिक्य के कारण यह कार्य बड़ा दुष्कर था। अपने आदमियों के लिए यथोचित भूमि प्राप्त करने के लिए ग्राण्ट ने पहले मिसीसिपी पार कर की, उसके बाद पश्चिमी तट के सहारे-सहारे दक्षिण की ओर बढ़ा और तदनन्तर पुनः नदी पार करके पूर्व की ओर आया। इस बीच में उसके साथ चलने वाला जलबेड़ा भी तेजी से विक्सबर्ग की तोपों की मार से निकल भागा। दक्षिण की ओर से दुर्ग भेद्य सिद्ध हुआ। ग्राण्ट ने नदी पर स्थित अपने अड्डे को छोड़कर दुर्ग की सहायता के लिए आने वाले एक बलवर्धक प्रसंघीय सैन्य-दल को जेक्सन स्थान के समीप मार भगाया (जब कि विक्सबर्ग की रक्षक सेना उसकी अस्तित्वविहीन सञ्चार-रेखा पर निष्फल आघात करती रही), और उसके बाद लौटकर दुर्ग को घेर लिया और छः सप्ताह के घेरे के उपरान्त उसे आत्म-समर्पण करने के लिए विवश कर दिया। मिसीसिपी की पूरी घाटी संघीय पक्ष के हाथ में आ गई, और दास-प्रथा को मानने वाले पश्चिमी राज्य शेष दक्षिणी राज्यों से पृथक् कर दिए गए। इसके उपरान्त शत्तानूगा के संग्राम में प्राप्त विजय से ग्राण्ट को 'कॉनफेडेरेसी' के हृदय-स्थल अलबामा (Alabama), ज्योर्जिया (Georgia) और दक्षिणी केरोलिना (South Carolina) पर आक्रमण करने के लिए एक बहुमूल्य अड्डा मिल गया। इसके बाद दक्षिणी राज्यों की पराजय एक निश्चित बात हो गई, प्रश्न केवल यह रह गया कि वे अपनी पराजय स्वीकृत करने के लिए कब तक विवश किए जा सकेंगे।

'कॉनफेडेरेसी' का पतन—१८६४ में ग्राण्ट संघीय सेनाओं का 'जनरलिस्सिमो' (Generalissimo)[1] नियुक्त किया गया। उसने तत्काल अभियान की संयुक्त योजना प्रस्तुत की। इस के अनुसार जिस समय वह स्वयं रिच्मोण्ड पर उत्तर की ओर से आघात करता रहता, शेरमान (Sherman) को 'कॉनफेडेरेसी' पर पश्चिमी की ओर से आक्रमण करना था। बाह्य रेखाओं (exterior lines) पर कार्य करना अब

---

१. संयुक्त जल, स्थल (और वायु) सेनाओं का सेनाधिपति—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्भव हो गया था क्योंकि अब संघीय सेना शत्रु-सेना की तुलना में संख्या में बहुत अधिक थी। दोनों मुख्य संघीय सेनाओं में प्रत्येक स्वयं समस्त प्रसंघीय सेना से अधिक शक्तिशाली थी। ग्राण्ट के वर्जीनिया-अभियान ने उसकी कीर्ति में विशेष वृद्धि नहीं की। वह स्थल मार्ग से सम्मुखीय संग्राम (frontal battles) लड़ता हुआ और भारी क्षति सहन करता हुआ अग्रसरित हुआ, परन्तु वह ली (Lee) को रिख़मोण्ड की ओर धकेलने और पीटर्सबर्ग का, जो दक्षिणी राजधानी का शेष 'कॉनफेडेरेसी' के साथ सम्पर्क जोड़ने वाली रेखा की महत्त्वपूर्ण कड़ी था, घेरा डालने में अवश्य ही सफल हो गया। इस बीच शेरमान ने सम्मुखीय आक्रमण को बचाते हुए और चक्करदार प्रगमनों (turning movement) का उपयोग करते हुए दक्षिणी रेलपथ प्रणाली (railway system) के केन्द्र एटलाण्टा (Atlanta) पर अधिकार किया। वहाँ से एटलाण्टा और सवन्ना (Savannah) के मध्य स्थित वन्य-प्रदेश को तहस-नहस करते हुए उसने अपनी सुप्रथित समुद्राभिमुख यात्रा की। तदुपरान्त संघीय जलबेड़े से सम्पर्क स्थापित करके वह केरोलिना राज्यों से होते हुए उत्तर की ओर गया और जॉनस्टन के नेतृत्व में आई हुई एक दक्षिणी सेना को बे`न्तनविए (Bentonville) के समीप परास्त किया।

१८६५ के प्रारम्भ तक दक्षिणी सेनाओं के चारों तरफ शत्रु का जाल धीरे-धीरे परन्तु कठोरतापूर्वक कसता जा रहा था। ली की एक मात्र आशा थी अपनी आन्तरिक स्थिति (interior position) का उपयोग करना, जॉनस्टन से मिल जाना और शेरमान को पराभूत कर देना। लेकिन आन्तरिक रेखाओं (interior lines) पर सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए इस बात की आवश्यकता होती है कि उस को करने वाला सेनापति किसी एक स्थान से बँधा न रहे, और ली रिख़मोण्ड से बँधा हुआ था। दोनों प्रसंघीय (Confederate) सेनाएँ कभी संयुक्त नहीं हो पाईं और अलग-अलग कुचल दी गईं। पीटर्सबर्ग के पतन के उपरान्त ली को रिख़मोण्ड खाली कर देना पड़ा। उसकी चारों ओर से घिरी हुई सेना ने एप्पोमाटोक्स (Appomattox) में हथियार डाल दिये। कुछ सप्ताह उपरान्त जॉनस्टन ने शेरमान के सामने आत्म-समर्पण कर दिया, और युद्ध समाप्त हो गया।

रिख़मोण्ड के कारण वर्जीनिया में बहुत अधिक सैनिक रखना दक्षिण वालों की भूल थी। अगर राजधानी मोण्टगोमेरी (Montgomery) पर छोड़ दी जाती तो प्रसंघीय सेनाओं को पश्चिम में संकेन्द्रित किया जा सकता था, जहाँ से वे या तो उत्तरी राज्यों पर सफल आक्रमण करतीं अथवा सुदीर्घ काल तक रक्षात्मक युद्ध जारी रख सकती थीं। मिसीसिपी और समुद्र के मध्य स्थित विस्तृत प्रदेशों में दक्षिणी सेनाओं को पकड़ना मुश्किल रहता और संघर्ष अनिश्चित काल तक चल पाता। उत्तरी राज्यों ने भी पूर्वी युद्धक्षेत्र को अत्यधिक महत्त्व देने की प्रारम्भिक भूल की, लेकिन इस भूल को ग्राण्ट ने सुधार दिया। संघीय सैनिकों के लिए सब से बड़ी कलंक की बात यह है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धन और सैन्य संख्या में अत्यधिक उत्कृष्ट होते हुए भी वे और शीघ्रता से विजय प्राप्त न कर सके। उनके फूहड़पन और घपलेबाजी करने से युद्ध चार वर्ष तक चलता रहा, जिसके कारण उत्तरी राज्यों की जनता में संग्रामविमुखता (defeatism) की भावना उस भयावह सीमा तक छा गई जिससे संघीय सरकार को सब लाभ अपने पक्ष में होते हुए भी शायद युद्ध से मुख मोड़ लेना पड़ जाता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ८

मोल्ट्के

प्रशा की सेना—सर्वगत सैनिक सेवा (universal military service) का सिद्धान्त, जो फ्रान्सीसी राजक्रान्ति (French Revolution) का एक सन्दिग्ध परिणाम था, युक्तियुक्त रूप में सर्वप्रथम प्रशा में लागू किया गया। १८१४ से प्रशा का प्रत्येक नागरिक २० से २३ वर्ष की आयु तक नियमित (regular) सेना में, २४ से २५ तक आरक्षित (reserve) सेना में और २६ से ३९ तक 'लैण्डवेह्र' (landwehr) में सेवा करने के लिए वाध्य हो गया। सेना में प्रतिवर्ष भर्ती किये जाने वाले रंगरूट (recruits) की संख्या ४०,००० निश्चित की गई, जिससे बहुतों को अनिवार्य सैनिक सेवा से छूट मिलनी सम्भव हो गयी। लेकिन १७ से ४९ वर्ष के बीच की आयु वाले वे सब लोग जो न नियमित सेना में लिए जाते थे और न 'लैण्ड-वेह्र' में, 'लैण्डस्टर्म' (lansturm) में, जो ऐसे सैनिकों की द्वितीय पंक्ति थी जिनसे युद्धकाल में दुर्गरक्षा का कार्य (garrison duty) कराया जाता था, सेवा करने के लिए वाध्य होते थे। १८६० में राजा प्रथम विलियम ने (William I) प्रतिवर्ष भर्ती किए जाने वाले रंगरूटों की संख्या बढ़ा कर ६३,००० कर दी और दो प्रकार के स्थान पर चार प्रकार के आरक्षित (reservists) सैनिक सम्मिलित करके नियमित सेना को विशालतर कर दिया। इससे इसके सैनिकों की संख्या २००,००० से बढ़ कर ४००,००० हो गई।

इस युग का दूसरा महत्त्वपूर्ण सैनिक सुधार बर्लिन (Berlin) में 'ग्रेट जनरल स्टाफ' (Great General Staff) की स्थापना था, जिसका अध्यक्ष (Chief) वस्तुतः जर्मन सेनाओं का जनरलिस्सिमो (generalissimo) होता था। 'स्टाफ' के कर्त्तव्य थे सेना का प्रशिक्षण, अभियानों की योजना का विधान, और युद्धकाल में सैनिक कार्यवाहियों का निदेशन। यह संस्था शरत्कालीन पैंतरेबाजी, 'स्टाफ राइड्स्' (staff rides), समरनीतिक अभ्यास (tactical exercises) आदि की व्यवस्था करती थी और प्रशा के पड़ोसी देशों के साथ सम्भव युद्धों की युद्धतन्त्रीय (strategical) योजनाएँ तैयार करती थी। स्टाफ के सदस्य स्थायी रूप से नियुक्त नहीं किए जाते थे। आवर्तिक (periodic) 'रेजिमेण्टल' (regimental) कर्त्तव्य पूरा करने के लिए उनका नियमपूर्वक तबादला होता रहता था। इस प्रकार सम्पूर्ण सेना में एक सामान्य सैनिक सिद्धान्त (general military doctrine) और एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विशिष्ट दृष्टिकोण (point of view) विकसित किए गए जिससे रणक्षेत्र में सैनिक-संक्रियाओं का निर्वहन अत्यधिक सुविधापूर्ण हो गया।

१८५७ में मोल्ट्क (Moltke) 'चीफ ऑव स्टाफ' (Chief of Staff) नियुक्त किया गया। वह उन लोगों में था जिन्होंने सर्वप्रथम यह अनुभव किया कि रेलपथों (railways) और तारयन्त्र (telegraph) के कारण युद्ध का प्रवेग (tempo) कितना बढ़ गया है और वह सेना कितने फायदे में रहती है जो युद्ध के लिए शीघ्रतापूर्वक तैयार (mobilize) हो सकती है। उसके निदेशन (direction) में प्रशा की सेना के युद्धार्थ तैयार होने (mobilizatin) का समय ४२ से घट कर १९ दिन हो गया। एक महत्त्वपूर्ण विषय में उसने नेपोलियनी युद्धतन्त्र में परिवर्तन किया। वह सेनाओं को रणक्षेत्र में पहुँचने के पूर्व संयुक्त करने के बजाय उन्हें स्वयं रणक्षेत्र में लाकर एकस्थ (converge) करने लगा। यह सदैव एक संकटपूर्ण प्रक्रिया मानी गई है, लेकिन मोल्ट्क बिना किसी विपत्ति को आमन्त्रित किए इसे पूरा करने में सफल रहा। प्रशा के सभी अफसरों के समान वह भी क्लॉज़-विट्ज़ (Clausewitz) से अत्यधिक प्रभावित था। क्लॉज़विट्ज़ का महान् ग्रन्थ 'ऑन वार' (*On War*) उसकी मृत्यूपरान्त १८३२ में प्रकाशित किया गया। कुछ की दृष्टि में यह निराशाजनक पुस्तक है और सभी जर्मन साहित्यिक कृतियों के समान अत्यधिक अस्पष्ट और उबाने वाली है। लेकिन इसने सैनिकों की कई पीढ़ियों को प्रेरणा दी है। जोमिनि (Jomini) के विपरीत क्लॉज़विट्ज़ पैंतरेबाजी (manoeuvring) से घृणा करता था। पार्श्वीय (flank) और पृष्ठीय (rear) आक्रमणों से विजय-फल में वृद्धि हो जाती है, लेकिन शत्रु को केवल लड़कर ही पराजित किया जा सकता है। युद्धतन्त्र (strategy) का सर्वश्रेष्ठ नियम यह है कि अपने शत्रु के विरुद्ध सीधे आगे बढ़ो और उसे श्रेष्ठ शक्ति द्वारा पराभूत कर दो। इस सिद्धान्त को बुद्धिहीनतापूर्वक लागू करने से भारी विपत्ति आ सकती है, जैसा १९१४ में फ्रान्सीसियों के साथ हुआ। लेकिन इसमें ये आधारभूत सत्य प्रतिष्ठापित हैं कि युद्ध में अन्ततोगत्वा केवल आक्रमण करने से ही सफलता मिलती है और संग्राम मानचित्र पर चिह्नित चातुर्य्यपूण चालों द्वारा नहीं वरन् घोर संघर्ष द्वारा जीते जाते हैं। जर्मन सेना पर क्लॉज़विट्ज़ का प्रभाव आज तक सातिरेक रहा है।

सात सप्ताह का युद्ध (१८६६)—इस संघर्ष में प्रशा को एक दुर्बल मित्र इटली की सहायता से आस्ट्रिया, सैक्सनी, बवेरिया, हनोवर और 'जर्मन कॉनफेडेरेशन' (German Confederation) के कई अन्य राज्यों के विरुद्ध लड़ना था। जनरल स्टाफ ने निर्णय किया, और उसका यह निर्णय सही था, कि मुख्य प्रतिद्वन्द्वी आस्ट्रिया है। अतएव उसने अपनी सेनाएँ बोहेमिया की सीमा पर एकत्र कीं। ५०,००० सैनिकों का एक दल आस्ट्रिया के जर्मन मित्रों से निपटने के लिए अलग कर दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया और इटालवियों ने तीन आस्ट्रियायी सैन्य-दलों (corps) को वेनेशिया (Venetia) में उलझा लिया।

जनरल स्टाफ आस्ट्रिया पर तीव्रता के साथ आक्रमण करना पसन्द करता, लेकिन प्रशा नरेश ने, जो आक्रमणकारी प्रतीत होना बिल्कुल नहीं चाहता था, इसे अस्वीकृत कर दिया। तदनुसार प्रशा की सेनाएँ आस्ट्रिया द्वारा पहले आक्रमण किए जाने की प्रतीक्षा में सीमा पर खड़ी रहीं—एल्ब (Elbe) की सेना पश्चिम में, राजकुमार फ्रेडेरिक चार्ल्स के नेतृत्व में प्रथम सेना (I. Army) मध्य में और युवराज (Crown Prince) के नेतृत्व में द्वितीय सेना (II. Army) पूर्व में। ये सैन्य दल संकटास्पद रूप से छितराए हुए थे, लेकिन सम्भव आस्ट्रियायी आक्रमण के विरुद्ध समस्त सीमा को सुरक्षित रखने के लिए ऐसा करना अनिवार्य था।

अन्ततोगत्वा जब १५ वीं जून को युद्ध की घोषणा हुई, मोल्ट्क (Moltke) ने प्रशा की तीनों सेनाओं को पृथक्-पृथक् मार्गों से बोहेमिया (Bohemia) पर आक्रमण करने का आदेश दिया। इस प्रकार उसने वही भूल की जो १७५६ में बोहेमिया पर आक्रमण करते समय फ्रेडेरिक ने की थी। उसका कहना था कि उसकी सेनाएँ इतनी विशाल थीं कि उनका एक मार्ग से जाना सम्भव नहीं था। इन परस्पर पृथक् सेनाओं को गिट्स्चीन (Gitschin) स्थान पर संयुक्त होने की चेष्टा करनी थी, और यह आशा की जाती थी कि आस्ट्रिया वालों के हस्तक्षेप कर सकने के पूर्व ही उनका एकीकरण पूरा हो जाएगा। पश्चिम में एल्ब की सेना ने सेक्सनी को पददलित कर डाला, सेक्सन सेना को बोहेमिया में खदेड़ दिया और शत्रु-देश में प्रथम सेना (I. Army) के साथ मिलने में (२५वीं जून) सफल हो गई। लेकिन युवराज अभी तक रीजेन्जेबिर्ज (Riesengebirge) की संकीर्ण घाटी (defile) में मार्ग तलाश कर रहा था। दोनों सैन्य दल एक दूसरे से सत्तर या अस्सी मील लम्बे विस्तृत प्रदेश द्वारा पृथक् हो गए। आस्ट्रिया वाले, जो आइज़र (Iser) और एल्ब (Elbe) नदियों के मध्य स्थित पठार (tableland) में संकेंद्रित थे, आन्तरिक रेखाओं पर पैंतरे बदलने और प्रशा की परस्पर पृथक् सेनाओं पर बारी-बारी से आक्रमण करने की स्थिति में थे। लेकिन आस्ट्रियायी सेनाध्यक्ष बेनेडेक (Benedek) में युद्ध-कौशल कण मात्र भी नहीं था। वह हिचकिचाया। पहले उसने रक्षात्मक लड़ाई लड़ने का निश्चय किया और फिर प्रथम सेना के विरुद्ध अग्रसरित हुआ। अन्त में उसने द्वितीय सेना पर आक्रमण किया, लेकिन बिखरे हुए सैन्य-दलों द्वारा। ये नाखोड (Nachod), सूर (Soor) और स्कालिट्ज़ (Skalitz) स्थानों पर अलग-अलग पराभूत कर दिए गए (२७-२८वीं जून)। आस्ट्रिया वाले पीछे हट गए और प्रशा की तीनों सेनाएँ ३०वीं जून को गिट्स्चीन के समीप मिल गईं। अभियान के प्रथम चरण का अन्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोल्ट्क जो अभी तक तारयन्त्र (telegraph) द्वारा युद्ध का संचालन कर रहा था, अब प्रशा-नरेश के साथ रणक्षेत्र के प्रधान कार्यालय (field head-quarters) आ गया। उसे यह बिल्कुल पता नहीं था कि आस्ट्रियायी सेना कहाँ थी, क्योंकि प्रशा की अश्वारोही सेना पीछे थी और टोह लेने का काम बिल्कुल नहीं कर रही थी। इसलिए उसने यह मान लिया कि बेनेडेक ने वही किया होगा जो उसे करना चाहिए था—अर्थात् उसने लौटकर एल्ब के बाएँ तट पर स्थिति ग्रहण कर ली होगी। राजकुमार फ्रेडेरिक चार्ल्स को आदेश दिया गया कि वह इस स्थिति (position) के विरुद्ध अग्रसरित हो, जब कि युवराज को उत्तर की ओर शत्रु के दाहिने पार्श्व पर धावा करने के लिए भेजा गया। इस प्रकार प्रशा की सेनाएँ जैसे ही संयुक्त हुई, मोल्ट्क ने उन्हें पुनः विभाजित कर दिया। मोल्ट्क ने प्रस्ताव रखा कि अगर शत्रु का पार्श्व इतना शक्तिशाली है कि उस पर प्रहार न किया जा सके तो प्रशा की समस्त सेनाएँ दक्षिण की ओर बढ़ें, पार्डुबिट्ज़ (Pardubitz) के समीप एल्ब नदी को पार करें और शत्रु-सैन्य के पृष्ठभाग (rear) पर टूट पड़ें। इस संक्रिया (operation) का अर्थ था (फ्रेडेरिक द्वारा कोलिन के युद्ध में प्रयुक्त संक्रिया के समान) शत्रु सेना के ठीक सामने से होकर अग्रसरित होना। लेकिन उसके भाग्य से घटनाचक्र में कुछ परिवर्तन हो गया। बेनेडेक ने अपनी सेना को एल्ब के बाईं ओर नहीं, वरन् उसकी दाहिनी ओर, एल्ब और बिस्ट्रिट्ज़ (Bistritz) के मध्य, तैनात किया था। यह बात प्रथम सेना के अग्रगामी सैनिकों (forward troops) को ज्ञात हो गई। इस पर राजकुमार फ्रेडेरिक चार्ल्स ने एक अपनी योजना बना डाली। इसके अनुसार द्वितीय सेना को उसके बाएँ पार्श्व की रक्षा करनी थी, एल्ब की सेना को शत्रु के बाएँ पार्श्व पर प्रहार करना था जब कि उसे स्वयं आस्ट्रियायी सेना के मध्य भाग पर धावा बोलना था। अगर यह योजना कार्यान्वित कर दी गई होती तो प्रशा वाले निश्चयतः बुरी तरह पराजित हुए होते, क्योंकि इसके अनुसार राजकुमार फ्रेडेरिक चार्ल्स की सेना को अकेले सम्पूर्ण आस्ट्रियायी सेना का सामना करना पड़ जाता। लेकिन जब यह योजना मोल्ट्क के सम्मुख पेश की गई तो उसने इसमें एक महत्त्वपूर्ण संशोधन कर दिया। इसके अनुसार युवराज को प्रथम सेना के पार्श्व की रक्षा मात्र करने के स्थान पर उसकी सहायता अपनी सम्पूर्ण सेना के साथ करनी थी। ३री जुलाई को प्रातःकाल आक्रमण करना निश्चित हुआ। अभाग्यवश तारयन्त्र (telegraph) जिस पर मोल्ट्क को इतना विश्वास था, टूट गया और उसे अपने आदेश को अश्वारोही अफसरों द्वारा भेजना पड़ा। युवराज को उसके निर्देश प्रातः लगभग चार बजे मिले और उसके सैनिक आठ बजे के लगभग अग्रसरण प्रारम्भ कर पाए। उनका दोपहर बाद तक रणक्षेत्र में पहुँच पाना सम्भव नहीं था। उस समय तक प्रथम सेना को असाहाय्यित रूप में संघर्ष जारी रखना था। यह संग्राम एक दूसरा वाटरलू हो गया जिसमें राजकुमार फ्रेडेरिक चार्ल्स वेलिंग्टन की भूमिका अभिनीत कर रहा था और युवराज ब्लूख़ेर की।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोनिग्ग्राट्ज़ अथवा सेडोवा[1]—इस संग्राम में बेनेडेक के पास २०५,००० आस्ट्रियायी और सेक्सन सैनिक थे। प्रशा वालों की संख्या २२१,००० थी, लेकिन इन में ९७,००० युवराज के साथ थे और पर्याप्त देरी तक उनके आने की सम्भावना नहीं थी। इस बीच में आस्ट्रिया वालों के पास सम्मुख उपस्थित शत्रु को कुचल देने का अवसर था। लेकिन बेनेडेक इस अवसर से लाभ उठाने में पूर्णतः असफल रहा। उसने प्रतिरक्षात्मक (defensive) लड़ाई लड़ना पसन्द किया और उसे दोषपूर्ण ढंग से लड़ा। उसने बिस्ट्रिट्ज़-रेखा (line of Bistritz) की रक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध नहीं किया; उसने अपने पार्श्वों को काफी सहायता नहीं दी; और उसने अपनी एक चौथाई सेना को व्यर्थ में आरक्षित (reserve) रखा। इसके बावजूद दोपहर के पूर्व का समय प्रशा वालों के लिए कष्टकर रहा। फ्रेडेरिक चार्ल्स ने, जिस के हृदय में अभी तक यह विचार जमा हुआ था कि वह अपने आप संग्राम जीत सकता है, एल्ब की सेना (Army of the Elbe) को शत्रु के बाएं पार्श्व पर आघात करने का आदेश दिया और फ्रान्सेकी (Fransecky) के डिवीज़न (division) को अकेले ही एल्ब के पार आस्ट्रियायी सैन्य के दाएँ पार्श्व की शक्ति जाँचने के लिए भेज दिया। यह दल तत्काल कठिनाईग्रस्त हो गया। दो आस्ट्रियायी सैन्य-दल (corps) (२रा और ४था) उस पर टूट पड़े। उसकी सहायतार्थ प्रशा के अन्य डिवीज़नों को नदी के पार भेजा गया, लेकिन उन पर आस्ट्रिया की पेंचदार नलिका वाली तोपों (rifled cannon) ने अग्निवर्षा प्रारम्भ कर दी और उन्हें भारी क्षति उठानी पड़ी। प्रशा की चिकने छेद वाली तोपों (smooth bores) की मार की दूरी उनसे निराशाजनक रूप से कम रह गई। कुछ समय के लिए प्रशा के प्रधान कार्यालय (headquarters) में गहरा विषाद छा गया। प्रशा नरेश, बिस्मार्क और मोल्ट्क लड़ाई को डुब (Dub) नामक पहाड़ी से देख रहे थे, और बिस्मार्क स्पष्टतः चिन्तित था। लेकिन मोल्ट्क ने, चाहे सच्चे हृदय से अथवा दिखावे के लिए, संघर्ष के परिणाम के विषय में पूर्ण विश्वास प्रकट किया। "महाराज", उसने कहा, "आज आप केवल एक संग्राम (battle) में ही नहीं वरन् अभियान (campaign) में विजय प्राप्त करेंगे।" यह भविष्यवाणी निश्चित रूप से गलत सिद्ध हो जाती अगर बेनेडेक को आक्रमण करने में पहल करने के लिए उकसाया जा सका होता। लेकिन वह दोपहर बाद तक, जब युवराज के सैनिक उसके दाहिने पार्श्व की ओर पहुँचने प्रारम्भ हो गए, शिथिल रूप से लड़ता रहा। इसके बाद उसने एक गम्भीर भूल कर दी। इसके बजाय कि वह अपने पर्याप्त संख्या में आरक्षित सैनिकों (reserves) को नवागन्तुकों का प्रतिरोध करने के लिए भेजता, उसने २रे और ४थे सैन्य-दलों (corps) को फ्रान्सेकी के डिवीज़न (division) के विरुद्ध अपने विजयोन्मुख संघर्ष को छोड़ने और पीछे हट कर तैनात होने की आज्ञा दी। इससे उन्हें अग्रसरित हो रही शत्रु-सैन्य के सामने से गुज़रने के लिए बाध्य होना

१. इस संग्राम को प्रशा वालों ने कोनिग्ग्राट्ज़ (Koniggratz) नाम दिया और उनके शत्रुओं एवं फ्रान्सीसियों ने सेडोवा (Sadowa)—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़ा, और इसके परिणामस्वरूप उनकी जो क्षति हुई उसके कारण वे संग्राम से वस्तुतः अलग से हो गए। इस बीच में अव्यवस्था का लाभ उठा कर प्रशा के 'गार्ड' (Guard) ने कुल्म (Chulm) नामक पहाड़ी पर, जो आस्ट्रियायी स्थिति (position) का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थल थी, अधिकार कर लिया; और दूसरे बाजू पर एल्ब की सेना (Army of the Elbe) ने सुदीर्घ संघर्ष के उपरान्त नदी पार कर ली और शत्रु के वाम पार्श्व पर आक्रमण कर दिया। मध्यवर्ती भाग में फ्रेडेरिक चार्ल्स ने अपनी समस्त सेना झोंक दी। इस भारी दबाव के कारण आस्ट्रियायी मोर्चा टूट गया और सेना एल्ब के पार लौट गई। प्रत्यागमन के समय अश्वारोही सेना और तोपखाने ने सराहनीय निष्ठापूर्वक उसकी सहायता की। प्रशा वाले इतना थक गए थे कि उसका पीछा नहीं कर पाए।

पहले के समान इस बार भी, अश्वारोही सैन्य द्वारा टोह लेने में त्रुटि किए जाने के कारण, प्रशा के स्टाफ (Prussian staff) का आस्ट्रियायी सेना के साथ सम्पर्क बिल्कुल टूट गया और ६टी जुलाई के पहले उसके ठौर-ठिकाने का पता नहीं लग पाया। बेनेडेक (Benedek) ओल्मुट्ज़ (Olmutz) के दुर्ग में लौट गया था। मोल्ट्क ने तत्काल अग्रसरित होने का आदेश दिया। उसके दो उद्देश्य थे—आस्ट्रिया की सेना का वीयना (Vienna) से सम्बन्ध-विच्छेद कर देना और उसका इटली से बुलाई गई बलवर्धक-सैन्य (reinforcements) के साथ मिलाप न होने देना।* इन दोनों में कोई भी उद्देश्य पूरा न हो सका। आस्ट्रियायी सेनाएँ वीएना की प्राचीर के नीचे संकेन्द्रित होने में सफल हो गईं और एक दूसरा भारी संग्राम छिड़ता प्रतीत हुआ। लेकिन तभी, २१वीं जुलाई को, युद्ध-विराम-सन्धि द्वारा लड़ाई अचानक समाप्त कर दी गई।

कोनिग्ग्राट्ज़ (Koniggratz) के संग्राम से प्रशा वालों के रणकौशल के अनेक गम्भीर दोष प्रकट हुए। उनकी सेना के विभिन्न अङ्गों (different arms) में समन्वय का अभाव था; अश्वारोही सेना पृष्ठभाग में रखी जाती थी; तोपखाना पदाति-सैन्य को कोई सहायता नहीं देता था। विजय लगभग पूर्णरूपेण छोटे कार्तूस की बन्दूकों अथवा 'निडिल गन्स्' (needle-guns) के कारण मिली थी। ब्रीचलोडर (Breechloader) होने से प्रशा के सैनिक राइफिलों को अधोमुख स्थिति में भी भर सकते और चला सकते थे। आस्ट्रिया वालों को बन्दूकें भरने के लिए खड़ा होना पड़ता था। इन्केर्मान (Inkerman) के समान कोनिग्ग्राट्ज़ भी पदाति सैनिक का संग्राम था। इसमें किसी भी पक्ष के सर्वोच्च सेनापतियों ने सामान्य सैनिकों को विशेष सहायता नहीं दी।

---

* इटली में आर्कड्यूक अलबर्ट ने इटालवियों को कुस्टोज़ा (Custozza) के संग्राम में गहरी पराजय दी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फ्रान्सीसी-जर्मन युद्ध (१८७०-७१)—लड़ाई छिड़ते ही (१५वीं जुलाई) प्रशा की तीन सेनाएँ शीघ्रता के साथ मोज़ेल (Moselle), सार (Saar) तथा राइन (Rhine) नदियों द्वारा निर्मित त्रिकोणाकार प्रदेश में संकेन्द्रित कर दी गईं। दाहिनी

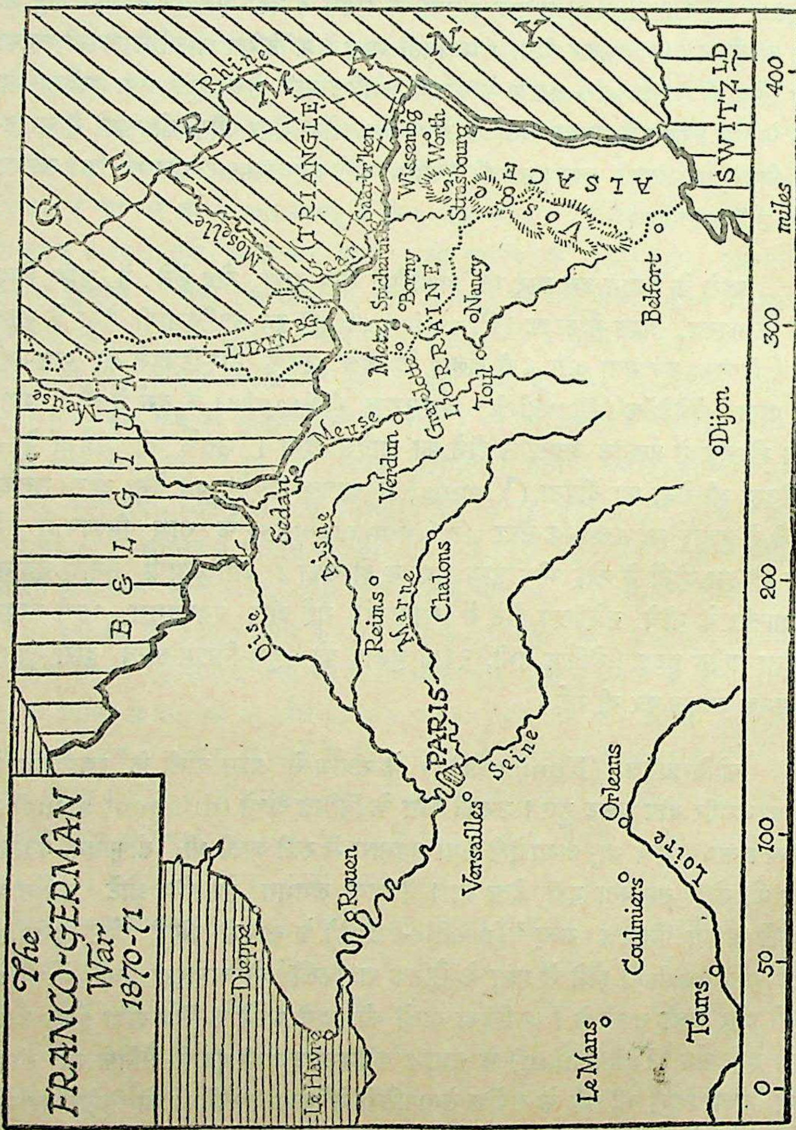

ओर प्रथम सेना थी (स्टीनमेट्ज के नेतृत्व में ६०,०००); मध्य में द्वितीय सेना थी (फ्रेडेरिक चार्ल्स के नेतृत्व में १३१,०००); बाईं ओर तृतीय सेना थी (युवराज के नेतृत्व में ९९,०००)। इस स्थिति से या तो वे दक्षिणी जर्मनी पर आक्रमण करने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ्रान्सीसी सेना के पार्श्व पर धावा कर सकती थीं; अथवा बेल्जियम से होकर आने वाले शत्रु को पीछे धकेल सकती थीं—अगर तृतीय नेपोलियन (Napoleon III) बेल्जियम की तटस्थता का उल्लंघन करने का निश्चय करता।

फ्रान्स में सार्वजनीन सैनिक सेवा (universal service) सिद्धान्ततः स्वीकृत होने के बावजूद व्यवहार में उपेक्षित थी। रंगरूटों का चुनाव, जिन्हें सात वर्ष तक सेवा करनी होती थी, 'लॉट' (lot) डाल कर किया जाता था। लेकिन कोई व्यक्ति भी, जिसका गलत नम्बर निकल आता था, अपना स्थापन्न (substitute) भेज सकता था। इस प्रणाली में आरक्षित सैनिकों (reserves) के लिए विशेष स्थान नहीं था, लेकिन इससे सुदीर्घ अनुभव वाले २४०,००० व्यावसायिक सैनिकों की एक शान्तिकालीन सेना की व्यवस्था हो गई। इस अनुभवी सेना की सहायता से तृतीय नेपोलियन जर्मन सेना के युद्ध के लिए सन्नद्ध होने (German mobilization) के पूर्व दक्षिणी जर्मनी में अप्रत्याशितरूपेण प्रविष्ट होने की आशा लगाए हुए था। छः सैन्य दलों को द्रुतगति से सीमा पर भेज दिया गया, लेकिन उनके पीछे आरक्षित दलों (reserves), अश्वों, युद्ध-सामग्री तथा गोला-बारूद आदि भेजने के प्रयास से घोर अव्यवस्था उत्पन्न हो गई इसके कारण, जबतक सम्राट् नेतृत्व भार सम्भालने आया, यह स्पष्ट हो गया कि सेना आयोजित आक्रमण को कार्यान्वित करने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। सारब्रुकेन (Saarbrucken) के समीप निष्फल रूप से टोह लेने (२री अगस्त) के उपरान्त फ्रान्सीसी सेना शत्रु द्वारा आक्रमण किए जाने की प्रतीक्षा करने लगी।

वर्थ तथा स्पिकेरेन—अगस्त के प्रारम्भिक दिनों में जर्मन सेनाओं का युद्धतन्त्रीय विस्तारण (strategic deployment) पूर्ण हो गया, और मोल्ट्क ने आक्रमण में पहल कर दी। उसकी योजना बड़ी सरल थी। प्रथम और द्वितीय सेनाओं (I. and II. Armies) को शत्रु पर सामने की ओर से आक्रमण करना था, तृतीय सेना (III Army) को पार्श्व की ओर से। इसमें एक प्रकार से कोनिग्ग्राट्ज़ संग्राम की योजना की पुनरावृत्ति होने वाली थी, अर्थात् एक निर्णायक रणक्षेत्र पर कई ओर से एक केन्द्राभिमुख (convergent) धावा। सर्वप्रथम युवराज ने आक्रमण किया। विज़ेनबूर्ग (Wissenbourg) के समीप एक फ्रान्सीसी डिवीज़न (division) को पीछे धकेलते हुए उसने मेक्मेहोन (Macmahon) के सैन्य-दल पर वर्थ (Worth) के समीप धावा किया (६ठी अगस्त)। फ्रान्सीसी सेना शत्रु सेना की तुलना में निराशाजनक रूप से कम रह गई। मेक्मेहोन की सहायता के लिए भेजा गया दूसरा सैन्य-दल समय से पहुँचने में असमर्थ रहा और मेक्मेहोन को केवल ४०,००० आदमियों के साथ कम से कम ९०,००० से लड़ना पड़ा। जर्मनों ने उस की सेना के पार्श्वों को घेर लिया और उसके मध्य भाग में घुस गए। इस स्थिति में बहुत अधिक देर तक रुके रह कर उसने अपनी समस्त सेना के विनाश का खतरा मोल ले लिया। फ्रान्सीसी सैनिकों ने रणक्षेत्र से अव्यवस्थित रूप में खदेड़ दिए जाने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर २०० मील दूर स्थित शालोँस् (Chalons) के प्रधान अड्डे पर पहुँच कर ही दम लिया।

उसी दिन, और अधिक उत्तर की ओर, फ्रान्सीसियों को एक और हार खानी पड़ी। स्पिकेरेन(Spicheren) के समीप फ्रोसार्द् (Frossard) की सेना पर प्रथम और द्वितीय सेनाओं के कुछ दलों ने धावा बोला। पृष्ठभाग में स्थित बाज़ेन की सेना (Bazaine's corps) ने उसे कोई सहायता नहीं दी और उसे पीछे हटना पड़ा। अग्रगामी सैनिकों (forward troops) के अकस्मात् टकरा जाने के कारण लड़ी गई यह लड़ाई मोल्ट्क की योजना के अन्तर्गत नहीं थी। लेकिन इसने और वर्थ के संग्राम के परिणाम ने सामान्य फ्रान्सीसी सैनिकों का मनोबल (morale) तोड़ दिया और उनके जनरल स्टाफ (General Staff) को बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने में असमर्थ कर दिया।

ग्रावेलोत्त और सेँडन—अगले कुछ दिनों शान्ति रही। इस बीच मोल्ट्क हमेशा की तरह शत्रु की स्थिति से अनभिज्ञ रहा। उसने यह अनुमान किया कि फ्रान्सीसी मोज़ेल (Moselle) के पश्चिम की ओर हट गए हैं, और जब तृतीय सेना (III. Army) ने वोस्गीज़ (Vosges) को पार कर लिया, उसने अपनी तीनों सेनाओं को इस नदी की सैन्य-पंक्ति की ओर अग्रसरित होने का आदेश दिया। प्रथम सेना (I. Army) के सैनिकों को मोज़ेल के पूर्व में, मेट्ज़ (Metz) के सामने, सशक्त फ्रान्सीसी सैन्य-दल मिले और उनका उनसे बोँर्नी (Borny) के समीप एक अनिर्णीत संग्राम (१४वीं अगस्त) हुआ जिसमें फ्रान्सीसी अपनी स्थिति सुरक्षित रखने में सफल रहे। इस समाचार ने मोल्ट्क को आश्चर्यान्वित और उसे अपनी योजनाओं में संशोधन करने के लिए बाध्य कर दिया।

वस्तुतः लोँरेन में स्थित समस्त फ्रान्सीसी सेनाएँ मेट्ज़ में संकेन्द्रित हो गई थीं जहाँ उनका नेतृत्व बाज़ेन ने, जो एक वीर सैनिक परन्तु अयोग्य सेनाध्यक्ष था, सम्भाल लिया था। उसके लिए सीधे शालोँस् (Chalons) की ओर बढ़ कर मेक्मेहोन से मिल जाना निस्सन्देह सर्वोत्तम योजना होती, और मोल्ट्क ने सोचा था कि वह यही करेगा भी। फ्रान्सीसी सेनाओं के संख्या में दुर्बल होने के कारण उन्हें संयुक्त रखना नितान्त आवश्यक था। लेकिन मेट्ज़ के दुर्ग द्वारा मुग्ध हो जाने कारण बाज़ेन उस को छोड़ कर जाने में अत्यधिक हिचकिचाया। जब १४वीं अगस्त को उसने अन्ततोगत्वा पीछे हटने का फैसला किया, बोँर्नी (Borny) के संग्राम के कारण इसमें बाधा पैदा हो गई। अगले दिन उसने पुनः प्रत्यागमन प्रारम्भ किया, परन्तु अफसरों की अयोग्यता के कारण सब फ्रान्सीसी सैन्य-दल एक ही सड़क पर एकत्र हो गए जिससे उन की प्रगति मन्द हो गई। मोल्ट्क ने, जो अभी तक फ्रान्सीसियों की सही स्थिति से अनभिज्ञ था, यह अनुमान किया कि वे व्यवस्थित रूप में वर्दुन (Verdun) की सड़क से होकर शीघ्रतापूर्वक लौट रहे होंगे। इसलिए उसने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय सेना (II. Army) को घुमाया और उसे शत्रु को रोकने अथवा उसके पृष्ठभाग को परेशान करने का आदेश दिया। वस्तुतः अग्रगामी फ्रान्सीसी सैन्य-दल मेट्ज़ (Metz) के पश्चिम में केवल दस मील दूर थे। १६ वीं तारीख को एक जर्मन सैन्य-दल अप्रत्याशित रूप से समस्त फ्रान्सीसी सैन्य से जा टकराया। इसके परिणाम-स्वरूप मार्स-ला-तूर (Mars-la-Tour) का संग्राम हुआ। जर्मन, जो शत्रु सेना की तुलना में संख्या में बहुत कम थे, केवल समस्त सेना के साथ आक्रमण कर देने में बाज़ेन की असफलता के कारण ही विनाश से बच पाए। वह अनायास वर्दुन की ओर जा सकता था, परन्तु भयभीत होकर रुक गया और ग्रावेलोत्त (Gravelotte) की पहाड़ी पर एक रक्षात्मक स्थिति में तैनात हो गया। मोल्ट्क ने कल्पना की कि वह मेक्मेहोन (Macmahon) के साथ जा मिलने के लिए एक घुमावदार मार्ग द्वारा उत्तर की ओर बढ़ गया है, अतएव वह उसका पीछा करने के इरादे से अग्रसरित हुआ। असली स्थिति प्रकाश में तभी आई जब द्वितीय सेना ने फ्रान्सीसी सैनिकों को अपने दाहिने पार्श्व की ओर पाया। जर्मन कॉलम तत्काल पहाड़ी पर तैनात फ्रान्सीसी सेना पर आक्रमण करने के लिए पूर्व की ओर घूम पड़े।

ग्रावेलोत्त (Gravelotte) के संग्राम (१८ वीं अगस्त) में जर्मन पराजित होने से बाल-बाल बचे। सारे दिन वे पहाड़ी पर सम्मुखीय आक्रमण (frontal attacks) करके अपने को थकाते रहे। फ्रान्सीसियों की शासेपोत (Chassepot) बन्दूकों की मार जर्मनों की 'निडिल गनों' से लम्बी होने के कारण आक्रमणकारियों की भयंकर जनक्षति हुई। जर्मनों को अपने प्रयास में सफलता की झलक उस समय तक नहीं मिली जब तक दिन के अवसान के समीप एक सेॅक्सन (Saxon) ब्रिगेड ने रोँकूर्त (Roncourt) के समीप फ्रान्सीसी सैन्य के दाहिने बाज़ू को घेर नहीं लिया और इस स्थान से सैन्य-दल पीछे नहीं हट गए। फ्रान्सीसियों के लिए यह पराजय भी उपायातीत (desperate) नहीं थी। बाज़ेन के पास इस चक्करदार प्रगमन (turning movement) को रोकने के लिए अथवा सामने स्थित निरुत्साह जर्मन सेना को समाप्त करने के लिए पर्याप्त आरक्षित सैनिक (reserves) थे। लेकिन उसने इन दोनों में से कोई काम नहीं किया। अगले दिन अपनी भूलों के सिलसिले की मुकुटमणि स्वरूप वह मेट्ज़ लौट गया जहाँ उसकी सेना २८ वीं अक्टूबर को आत्मसमर्पण करने तक निश्चलीकृत स्थिति (immobilized) में पड़ी रही।

मेट्ज़ पर घेरा डालने के लिए एक सैन्य-दल छोड कर मोल्ट्क ने शालो स् (Chalons) की ओर, जहाँ वर्थ से आए हुए १२०,००० आरक्षित सैनिक, 'गार्द् मोबाइल्स्' (garde mobiles) और भगोड़े एकत्र हो गए थे, पुनः अग्रसरण प्रारम्भ किया। पेरिस सरकार ने मेक्मेहोन (Macmahon) को, उसके अपने विवेक के विरुद्ध, इस सेना को बाज़ेन की सहायतार्थ उत्तर-पूर्व की ओर ले जाने के लिए बाध्य किया। इस कार्यवाही को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए सहायतार्थ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाने वाले सैनिकों का द्रुतगति से अग्रसरित होना और बाज़ेन का मेट्ज़ के घेरे को तोड़ने का प्रयास करना कर्त्तव्य थे। ये दोनों शर्तें ही पूरी नहीं की गईं। बाज़ेन ने आक्रमणकारी जर्मनों के घेरे को तोड़ने का कोई गम्भीर प्रयास नहीं किया और मेक्मेहोन के अविश्वसनीय सैनिक क्षुब्धकर मन्दगति से चले। मेक्मेहोन की गतिविधि का मोल्ट्क को पहली बार ज्ञान २५वीं अगस्त को हुआ। उसने जर्मन कॉलमों के मुख तत्काल उत्तर की ओर मोड़ दिए। जर्मन सेनाओं का एक भाग मेक्मेहोन और मेट्ज़ के मध्य स्थिति ग्रहण करने के लिए म्यूज़ (Meuse) को पार करके उसके पूर्वी तट पर चला गया। शेष सेना फ्रान्सीसी सञ्चार-रेखा की ओर अग्रसरित हुई। मेक्मेहोन ने यह समझते ही कि १९०,००० सैनिक उसका पीछा कर रहे हैं, इस उपक्रम (enterprise) को त्याग कर उत्तर की ओर लौट जाना चाहा, लेकिन पेरिस से आए अतिपाति (urgent) सन्देश उसे अपने मार्ग पर बढ़ते रहने को विवश करते रहे। ३०वीं अगस्त को जर्मन सेनाओं ने बोमो ँत् (Beaumont) नामक स्थान पर उसके पार्श्व पर आक्रमण किया और वह म्यूज़ के सहारे-सहारे से ँडन (Sedan) की ओर चला गया। यहाँ उसने दो दिन ठहरने का आश्चर्यप्रद निर्णय किया जिससे जर्मनों को उसे घेर लेने के लिए पर्याप्त समय मिल गया। २री सितम्बर को, संक्षिप्त से संघर्ष के उपरान्त, समस्त फ्रान्सीसी सेना ने, अपने सम्राट् सहित आत्म-समर्पण कर दिया।

लोआर की सेना—युद्ध की अन्तिम अवस्थाओं का अधिक संक्षेप में वर्णन हो सकता है। कहानी का मुख्य सूत्र पेरिस को, जिसे जर्मनों ने १९ वीं सितम्बर को घेर लिया था, सहायता पहुँचाने के प्रयासों का सिलसिला है। फ्रान्स की आधी सेना से ँडन में बन्दी कर ली गई थी और उसका शेष आधा भाग मेट्ज़ में घिरा हुआ था, लेकिन नई राष्ट्रीय-सुरक्षा-सरकार (Government of National Defence) तत्काल एकत्र किए गए लगभग पाँच लाख सैनिकों की सेनाएँ तैयार करने और उन्हें सुसज्जित करने में सफल हो गई। नए सैनिकों को नाम मात्र का प्रशिक्षण प्राप्त हो पाया था, परन्तु उन्होंने बहुत अच्छा काम किया और अगर हाई कमाण्ड (high command) ने भयंकर भूलें न की होतीं तो शायद वे पराजय को विजय में परिणत करने में सफल हो जाते। उसी पुरानी गलती—सेनाओं के विस्तारण (dispersion)—के कारण यह नवीन प्रयास भी विफल हो गया। पेरिस में स्थित जर्मन मध्यवर्ती स्थिति में थे और आन्तरिक रेखाओं (inner lines) पर कार्य कर सकते थे जबकि फ्रान्सीसी सेनाएँ समस्त पश्चिमी, उत्तरी, और दक्षिण-पूर्वी प्रदेशों में फैली हुई थीं। 'लोआर की सेना' (Army of Loire) मुख्य फ्रान्सीसी आक्रमक सेना थी। इसने एक बवेरी (Bavarian) सेना को कूलमिएर (Coulmiers) के युद्ध में (९ वीं नवम्बर) परास्त किया और आर्लियन्स् (Orleans) पर अधिकार कर लिया। लेकिन तभी मेट्ज़ (Metz) का पतन हो जाने के कारण द्वितीय जर्मन सेना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(II. German Army) स्वतन्त्र हो गई। उसने आगे बढ़कर एक विशाल प्रदेश में बिखरे हुए विजयी फ्रान्सीसी डिवीज़नों को बारी-बारी से परास्त कर दिया और आर्लियन्स् पर पुनः अधिकार कर लिया। आर्लियन्स् के पतन से लोआर की सेना (Army of Loire) दो भागों में बँट गई। दोनों भागों को पुनः संयुक्त करने का प्रयास करने के स्थान पर दक्षिणी भाग को बूरबाकी (Bourbaki) के नेतृत्व में बेल्फोर्ट (Belfort) को सहायता देने के लिए भेज दिया गया, लेकिन जर्मनों ने उसे सीमा के पार स्विट्ज़रलैण्ड में खदेड़ दिया। उत्तरी भाग शान्ज़ी (Chanzy) के नेतृत्व में ले मॉस् (Le Mans) स्थान पर छः दिन के संग्राम के उपरान्त पराजित हुआ। तीसरा फ्रान्सीसी सैन्य-दल, 'आर्मी ऑव दि नॉर्थ (Army of the North), जो फेद्हर्ब (Faidherbe) के नेतृत्व में था, भलीभाँति लड़ा परन्तु निर्णायक सफलता प्राप्त न कर सका। पेरिस को सहायता देने के सब प्रयास विफल हो जाने पर नगर ने २८ जनवरी १८७१ को आत्म-समर्पण कर दिया और एक विराम-सन्धि द्वारा युद्ध समाप्त कर दिया गया।

फ्रान्सीसियों की पराजय का मुख्य कारण उनका अल्पसंख्यक होना था, जिसे उन्होंने अपनी सेनाओं को विभाजित करके सबलतर कर दिया। दो सेनाएँ वर्थ (Worth) और ग्रावेलोत्त (Gravelotte) में पृथक्-पृथक् पराजित कर दी गईं; एक आरक्षित सेना (reserve army) से डन में बन्दी कर ली गई; और स्वयं-सेवकों की तीन सेनाएँ १८७०-७१ की शीत ऋतु में अलग-अलग कुचल दी गईं। अगर फ्रान्स ने अपनी समस्त शक्ति एक ही प्रयास में लगा दी होती तो उसे कितनी शानदार सफलता मिली होती? उसके पतन में मोल्ट्क का जो योग रहा है उसे पर्याप्त स्वीकृति दी जा चुकी है; उसके और बखान की आवश्यकता नहीं है। उल्टे, क्योंकि उसकी ख्याति ने एक आख्यान (legend) का रूप धारण कर लिया है, इस बात पर बल देना आवश्यक है कि उसका सेनापतित्व (generalship) निर्दोष नहीं था। उसके युद्धों की प्रगति उसके द्वारा आनुमानित योजना के अनुसार विरलतः ही होती थी; शत्रु की गतिविधि के सम्बन्ध में उसके अनुमान बहुधा गलत सिद्ध हुए; उसने कई बार बड़े नाजुक अवसरों पर अपनी सेनाओं को विभाजित कर देने की भूल की; रणक्षेत्र में वह सैन्य गतिविधि पर प्रायः नियन्त्रण नहीं रख पाता था, जैसे ग्रावेलोत्त के संग्राम में, जहाँ वह दाहिने बाज़ू में रहा और तब तक यह विश्वास करता रहा कि उसकी पराजय हो गई है जब तक कि आधी रात को सेक्सनों के सफल पार्श्वीय आक्रमण का समाचार नहीं आ गया। इसके बावजूद उसमें महान् गुण थे, यद्यपि उसकी विशेष योग्यता दूरदर्शिता अथवा सही निर्णय लेने की क्षमता न होकर विस्तरशः योजनाएँ बनाने की असीम शक्ति थी। सामान्य जनता के लिए वह परमोत्कृष्ट वैज्ञानिक सेनापति था जो अपने डेस्क पर बैठे-बैठे तारयन्त्र (telegraph) की सहायता से सेनाओं को शतरञ्ज के मुहरों की तरह चलाता रहता था। लेकिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह इससे भी कुछ अधिक था। वह एक ऐसा जन्मजात योद्धा था जिसका सैनिक अन्तर्बोध (military instinct) सजग था, जो खतरे उठाने के लिए प्रस्तुत रहता था, जिसमें विजय प्राप्त करने का अटल निश्चय था और जो अपनी विजय होने में पूर्ण विश्वास रखता था। संक्षेप में, वह एक सैनिक के दृढ़ मनोबल और अपार साहस से युक्त एक पूर्ण योद्धा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ९

रूसी-जापानी युद्ध, १९०४-५

गोली बनाम संगीन—फ्रान्सीसी-जर्मन युद्ध से राइफिलधारी सैनिकों द्वारा गृहीत स्थितियों पर सम्मुखीय आक्रमण (frontal attacks) करने की मूर्खता पूर्णतः सिद्ध हो गई। यह देखा गया कि कभी कोई सम्मुखीय आक्रमण सफल नहीं हुआ। प्रतिरक्षात्मक प्रयासों पर विजय सर्वत्र चक्करदार अथवा पार्श्वीय प्रगमन (turning or flanking movement) द्वारा मिली। लेकिन इस सबक के महत्त्व पर यूरोप के सैनिक अधिकारियों (military authorities) ने कोई ध्यान नहीं दिया। वे संगीन (bayonet) से किए जाने वाले आक्रमण के लाभों के गुण गाते रहे। १९१४ तक फ्रान्सीसी और जर्मन, दोनों सेनाओं के नियमों में सघन विरचना में (close order) में अग्रसरित होने का निर्देश बना रहा, यद्यपि मेगज़ीन राइफिल (magazine rifle) के आविष्कार और धुम्रविहीन बारूद का प्रयोग प्रारम्भ हो जाने के कारण प्रतिरक्षात्मक प्रयासों की सबलता सौ गुनी बढ़ गई थी। पहली सेना जिसे शत्रु के छिपे हुए राइफिलधारी सैनिकों द्वारा आक्रमक-दलों को दिए गए भयंकर दण्ड का अनुभव हुआ, दक्षिण अफ्रीकी युद्ध (South African War) में लड़ने वाली (१८९९-१९०२) ब्रिटिश सेना थी। ब्रिटिश अफसरों द्वारा की गई प्रारम्भिक गलतियों को कुछ क्षम्य माना जा सकता है। क्रीमियायी युद्ध (Crimean War) के समय से ब्रिटेन के मुख्य शत्रु बर्बर ज़ूलू (Zulus) या देर्विश (Dervishes) रहे थे जिनके साथ विशेषतः इस भय को दूर करने का प्रयास करना होता था कि कहीं असामान्य शारीरिक शक्ति वाले विशालकाय जंगली जन अचानक हमला न कर दें। इसलिए ब्रिटिश सैनिक वर्गों (squares) में अग्रसरित होते और लड़ते थे, क्योंकि यह विरचना (formation) ऐसे शत्रुओं के विरुद्ध बिना किसी हानि की आशंका के प्रयोग में लाई जा सकती थी जिनके पास या तो आग्नेयास्त्र कम होते थे अथवा जो कुशल निशानेबाज नहीं होते थे। लेकिन बोअरों (Boers) जैसे कुशल निशानेबाजों के विरुद्ध सघन विरचना का प्रयोग करना आत्मघातक था, जैसा कि ब्रिटिश सैनिकों ने तुगेला (Tugela) और मोडेर (Modder) नदियों एवं माजेर्स्फोण्टीन (Magersfontein) के युद्धों में भारी मूल्य चुका कर सीखा। शत्रु की प्रतिरक्षात्मक (defensive) स्थिति पर काबू पाने के दो ही उपाय थे, तोपों से अग्निवर्षा करना और चक्करदार प्रगमन (turning movements)। इनमें पहला उपाय प्रभावहीन सिद्ध हुआ, मुख्यतः इसलिए क्योंकि जैसे ही पदाति सैन्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ती थी, तोपें गोलाबारी बन्द कर देती थीं। इसके विपरीत ऐसे शत्रुओं के विरुद्ध जो पीछे हटने के मार्ग (line of retreat) के विषय में सदैव चिन्तित रहता था, चक्करदार प्रगमन कभी विफल नहीं हुए। जब जनवरी १९०० में लॉर्ड रोबर्ट्स् ने सेनापतित्व ग्रहण किया, उसने शत्रु को घेरने की नीति (encircling strategy) अपनाई, जिसके बड़े द्रुत (swift) और निर्णायक (decisive) परिणाम निकले। पाँच महीने से कम में ही बोअर सेनाओं का प्रतिरोध टूट गया और शत्रु की दो राजधानियों पर अधिकार कर लिया गया, यद्यपि यह भी सही है कि ब्रिटेन वालों को उनकी सेना के संख्या में बहुत अधिक होने और बोअरों (Boers) की युद्धनीति साहसहीन होने से भी सहायता मिली। नगरनिवासी (burghers) बराबर रक्षात्मक लड़ाई लड़ते रहे और अपनी किसी भी सफलता का लाभ उठाने में पूर्णतः असमर्थ रहे। किसी भी परिस्थिति में वह कोई अभियान (campaign) नहीं जीत सकते थे, युद्ध (war) की तो बात ही क्या। बोअरों की पराजय के उपरान्त दो वर्ष तक छापामार (guerilla) लड़ाई चलने के कारण ब्रिटेन वालों की विजय की निर्णयात्मकता कुछ अस्पष्ट हो गई। लेकिन फिर भी यह विजय यथार्थ (real) थी इसमें सन्देह नहीं। बोअर छापामार सैनिकों की छोटी-मोटी सफलताओं से न उनकी सेनाओं की भारी पराजयों से हुई हानि की पूर्ति हो सकती थी और न मुख्य युद्ध के परिणाम को बदला जा सकता था। उनसे अन्तिम रूप से होने वाला आत्मसमर्पण स्थगित किया जा सकता था, उसका निराकरण नहीं हो सकता था।

रूसी-जापानी युद्ध (१९०४-५)—इस युद्ध के विषय में दो सामान्य बातें विचारणीय हैं।

(अ) यह एक ऐसा युद्ध था जिसका उद्देश्य सीमित था। जापानी कभी यह आशा नहीं कर सकते थे कि वे रूस की शक्ति को पूर्णतः विनष्ट कर देंगे। उनके नियमित सैनिकों की संख्या ४००,००० से कम थी, और उनके पास उपयुक्त आरक्षित सैनिक (reserves) भी नहीं थे। इसके विपरीत रूसियों के पास दस लाख सैनिकों की सक्रिय सेना थी और २५ लाख आरक्षित सैनिक। जापान को एक लाभ यह प्राप्त था कि यह युद्ध मञ्चूरिया में, रूस से ५,००० मील दूर, लड़ा गया जहाँ प्रारम्भ में रूसियों के पास २०,००० सैनिकों का रक्षक-दल मात्र था। बलवर्धक-सैन्य साइबेरियन रेलपथ की इकहरी लाइन (single line) से, जो प्रारम्भ में एक माह में केवल २०,००० से ४०,००० आदमी तक ही पहुँचा पाती थी, भेजनी पड़ी। यह स्पष्ट था कि आरम्भ में जापानियों को रणक्षेत्र (theatre of war) में संख्याधिक्य का लाभ प्राप्त रहेगा। उनकी योजना थी रूसियों को मञ्चूरिया से खदेड़ देना और उन्हें आशा थी कि इस पराजय से वह सन्धि करने के लिए बाध्य हो जाएँगे। लेकिन रूस अगर अन्तिम रूप से फैसला करने की जिद करता तो जापानियों के लिए विजय की कोई आशा न रहती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ब) इस युद्ध में जल-सैन्य-शक्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी। मञ्चूरिया और जापान के मध्य अपनी सञ्चार-रेखा को बनाए रखने के लिए जापानियों के लिए यह आवश्यक था कि वे समुद्र पर अपना नियन्त्रण बनाए रखते। सर्वप्रथम उन्होंने इसी समस्या को हल करने की ओर ध्यान दिया। वस्तुतः युद्ध घोषित किए जाने के पूर्व

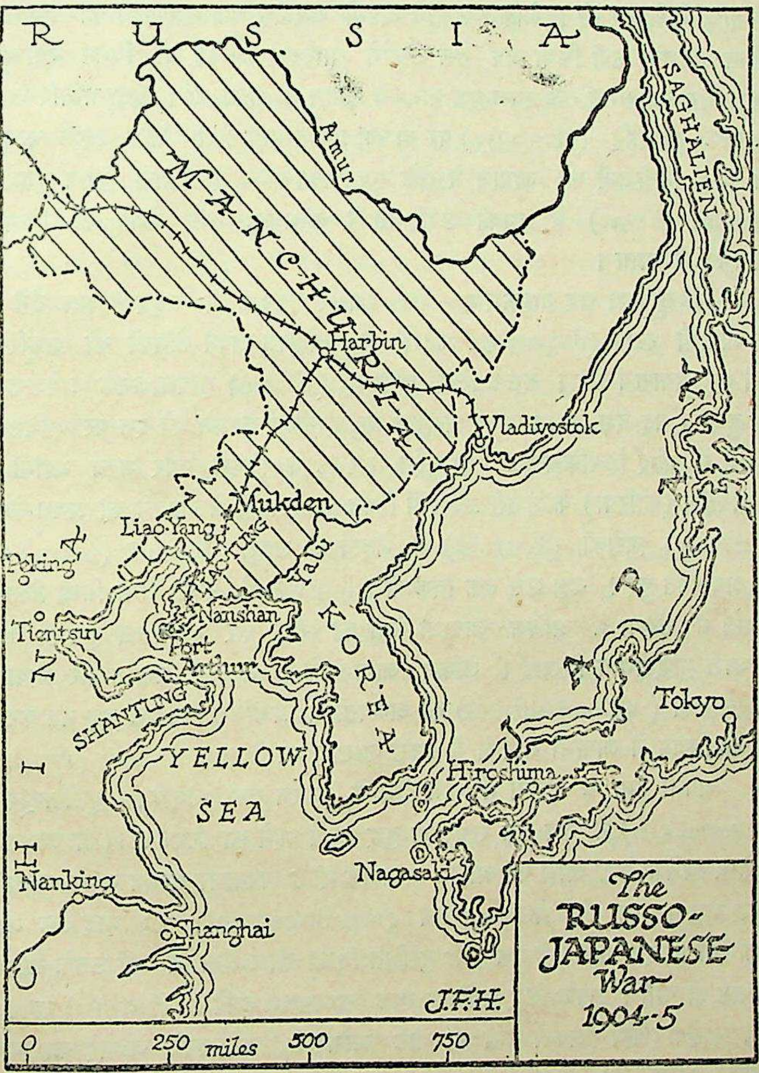

ही वे पोर्ट आर्थर में स्थित रूसी जलबेड़े (fleet) पर टूट पड़े और उसे बन्दरगाह में उपरुद्ध कर दिया। इससे कम से कम उस समय तो पीत समुद्र (Yellow Sea) पर उनका पूर्ण नियन्त्रण हो गया। लेकिन व्लाडिवोस्टोक पोतदल (Vladivostock-squadron) अभी तक स्वतन्त्र था और बाल्टिक जलबेड़ा (Baltic fleet)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रशान्त महासागर की ओर बढ़ा चला आ रहा था। अन्ततोगत्वा व्लाडिवोस्टोक पोतदल अगस्त १९०४ में और प्रशान्त महासागरीय जलबेड़ा (Pacific fleet) मई १९०५ में विनष्ट कर दिए गए। जनवरी १९०५ में पोर्ट आर्थर के जलबेड़े और दुर्ग ने आत्म-समर्पण कर दिया। इस प्रकार जापानी सम्पूर्ण युद्ध के दौरान जल-शक्ति में श्रेष्ठतर रहे। लेकिन उन्होंने अपनी समुद्रीय सञ्चार-प्रणाली को तब तक सुरक्षित अनुभव नहीं किया जब तक उन्होंने बाल्टिक जलबेड़े को विनष्ट नहीं कर दिया, और उस समय तक स्थल-युद्ध लगभग समाप्त हो चुका था। इस अनिश्चितता का उनकी युद्धनीति (strategy) पर बाधक प्रभाव पड़ा। विशेषतः, इसके कारण सेना के दो डिवीजनों को जापान में रोके रखना आवश्यक हो गया। मुख्य युद्धक्षेत्र (theatre of war) में उनकी उपस्थिति से सम्भवतः रूसी सेना का विनाश सुनिश्चित हो जाता।

मञ्चूरिया पर आक्रमण—पोर्ट आर्थर पोतदल को समुद्र से हटा देने के बाद जापानी स्टाफ (Japanese staff) ने सर्वप्रथम अपने सैनिकों को मञ्चूरिया भेजने का प्रयास किया। इसके लिए कोरिया (Korea) सुविधाजनक प्रवेश-द्वार सिद्ध हुआ। यह देश तटस्थ परन्तु अरक्षित था, इसलिए जापान को इस पर अधिकार कर लेने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई। १९०४ के फरवरी और मार्च महीनों में इस प्रायद्वीप (कोरिया) के उत्तरी प्रदेश में स्थित बन्दरगाहों में जापान की प्रथम सेना (I. Army) कुरोकी (Kuroki) के नेतृत्व में उतरी और यालू (Yalu) की ओर अग्रसरित हुई। वहाँ उसे एक विलम्बी (delaying) रूसी सेना मिली जिसके सेनापति ने संख्या में अधिक जापानी सेना को रोक कर लड़ने की चुनौती देने की भारी बुद्धिहीनता दिखाई। लेकिन जापानी सेना ने उसे परास्त कर दिया। श्वेत सैनिकों (white soldiers) की अजेयता में प्रचलित विश्वास को नष्ट करके यालू की विजय ने जापानी सैनिकों में भारी उत्साह भर दिया।

अपनी सेना के संख्या में कम होने के कारण रूसी सेनाध्यक्ष कुरोपाट्किन (Kuropatkin) ने तब तक रक्षात्मक युद्ध लड़ते रहने का निश्चय किया जब तक रूस से बलवर्धक सेना आने पर अधिक आक्रमक नीति अपनाना सम्भव न हो जाता। उसका अनुमान था कि बलवर्धक सैन्य (reinforcements) छः माह तक नहीं आ पाएगी। इस बीच उसे एक ऐसी सुरक्षित स्थिति खोज लेनी थी जहाँ उसके सैनिक संकेन्द्रित हो पाते। इसके लिए सर्वोत्तम स्थल सम्भवतः हार्बिन (Harbin) रहता। लेकिन कुरोपाट्किन अपनी सेना को पोर्ट आर्थर से, जहाँ रूसी जलबेड़े का एक महत्त्वपूर्ण भाग फँसा हुआ था, इतनी दूर संकेन्द्रित (concentrate) करने से घबरा रहा था। इसलिए उसने लियाओ-यांग (Liao-Yang) को, जो संकटग्रस्त स्थल पोर्टआर्थर से दो सौ मील दूर होने बावजूद अपेक्षया निकटतर था, चुना। इस प्रकार जापानियों के सामने दो सम्भव लक्ष्य थे, पोर्ट आर्थर या लियाओ-यांग। उन्हें इनमें किसी एक की ओर ही ध्यान देना चाहिए था—या तो वे पोर्टआर्थर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का घेरा डालते और उसकी सहायतार्थ भेजी गई सेनाओं को पराजित करते रहते जैसा बोनापार्ट ने मान्तुआ में किया था; अथवा, और यह अधिक अच्छा होता, वे दुर्ग को घेर लेते और कुरोपाट्किन पर पूरा दबाव डालते। इसके बजाय उन्होंने दोनों लक्ष्यों को एक साथ पाने की चेष्टा की जिसके कारण उन्हें अपनी सेना को विभाजित करना आवश्यक हो गया और उनकी अन्तिम विजय की निर्णयात्मकता बहुत कुछ घट गई।

लियाओ-यांग—यालू की विजय के उपरान्त जापान की तीन और सेनाओं को कुछ पश्चिम की ओर स्थित पिट्ज़ुवो (Pitzuwo) और ताकुशान (Takushan) में उतारा गया—दूसरी सेना को ओकु (Oku) के नेतृत्व में, तीसरी को नोगी (Nogi) के नेतृत्व में और चौथी को नोड्ज़ु (Nodzu) के नेतृत्व में। ओकु ने पोर्ट आर्थर की रक्षा के लिए तैनात रूसी सेना को नान्शान (Nanshan) के समीप पराजित करके दुर्ग को आक्रम्य कर दिया। इस अवसर पर जापानी स्टाफ (Japanese staff) ने दोनों उद्देश्यों को पूरा करने की चेष्टा करने का निश्चय किया। नोगी को पोर्ट आर्थर के घेरे को कसने का भार सौंपा गया। शेष तीनों सेनाओं को लियाओ-यांग की ओर समकेन्द्रित रूप से (concentric) अग्रसरित होना था—ओकु को लियाओ-तुंग (Liao-Tung) प्रायद्वीप के पश्चिम की ओर स्थित रेलपथ के सहारे-सहारे, कुरोकी को यालू प्रदेश के पूर्व में मण्डारिन मार्ग (Mandarin road) द्वारा, और नोड्ज़ु को फेन्शुइलिंग (Fenshuiling) दर्रे से मध्यवर्ती प्रदेश के पर्वतों को पार करते हुए। मञ्चूरिया की उबड़-खाबड़ सड़कों पर गति अविश्वसनीय रूप से धीमी थी—दो मील प्रति दिन। ओकु ने रूस के विलम्बी सैन्य-दलों को तेलिस्सु (Telissu) और ताशिकाओ (Tashihchao) स्थानों पर पराजित किया, लेकिन अन्य सेनाओं को मामूली-सा ही प्रतिरोध सहना पड़ा, और अगस्त के अन्त तक जापानी सेनाएँ लियाओ-यांग के सम्मुख संकेन्द्रित (concentrate) हो गईं।

इन तीन महीनों में, जब जापानी सेनाएँ अग्रसरित हो रही थीं, कुरोपाट्किन की आन्तरिक रेखाओं (interior lines) पर कार्य करने की स्थिति वैसी ही थी जैसी बेनेडेक (Benedek) की बोहेमिया (Bohemia) में रही थी। लेकिन आस्ट्रियायी सेनापति के समान उसने भी एक दूसरे से पृथक् जापानी सेनाओं पर आघात करने की कोई चेष्टा नहीं की, यद्यपि उसे इसके लिए अनेक अवसर मिले। फिर भी उसे लियाओ-यांग में १५०,००० सैनिक एकत्र कर लेने का समय मिल गया। और क्योंकि जापानी सेनाओं की संख्या कुल मिला कर केवल १३०,००० थी, वह आने वाले संघर्ष का सामना विश्वासपूर्वक कर सकता था।

लियाओ-यांग का संग्राम २६वीं अगस्त से ४थी सितम्बर तक चला। मार्शल ओयामा (Oyama), जो अब जापानी सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति था, एक दुविधा में पड़ गया। बाह्य रेखाओं पर कार्य करने के कारण उसके लिए शत्रु के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर सब स्थलों पर एक ही समय आक्रमण करना आवश्यक था; लेकिन प्रतिस्पर्द्धी की तुलना में २०,००० सैनिक कम होने के कारण उसके लिए ऐसा करना असम्भव था। इसके बावजूद जापानियों के जीवट और रूसियों की भीरुता के कारण वह इस संकट से बच निकला। जापानियों के सम्मुखीय आक्रमण तो सब विफल रहे, लेकिन कुरोकी के दाहिने छोर पर चक्करदार प्रगमन (turning movement) द्वारा आक्रमण करने से संग्राम का निर्णय हो गया। वास्तव में यह पैंतरा स्थिति को गलत समझ लेने का परिणाम था। कुरोकी ने यह समझकर कि रूसी पीछे हटना प्रारम्भ कर रहे हैं, अपनी सेना का एक भाग उनको विच्छेदित करने के लिए तेत्स (Taitse) भेज दिया। इससे जापानियों के लिए बड़ी भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई। रूसी अभी तक दृढ़तापूर्वक जमे हुए थे और कुरोकी के पैंतरे से जापानी मोर्चे में संकटास्पद अन्तराल (gap) पैदा हो गया। जापानी हेडक्वार्टर्स में इसके कारण भारी चिन्ता छा गई। लेकिन इस नाजुक क्षण कुरोपाट्किन का मनोबल जवाब दे गया। कुरोकी के गलत पैंतरे के कारण मिले इस अमूल्य अवसर का लाभ उठाने के बजाय वह अपने पार्श्व (flank) पर आए संकट से भयभीत होकर पीछे हट गया। रूसी सेना मुक्देन (Mukden) लौट गई।

मुक्देन—लियाओ-यांग के संग्राम का परिणाम जापानियों की दृष्टि से निराशाजनक रहा। रूसियों के १६,००० की तुलना में उनके २३,००० सैनिक मारे गए और रूसी सेना अक्षत बच निकली। ओयामा को आशा थी कि वह उसे विनष्ट कर देगा। अगर ऐसा किया जा सका होता तो रूस के साथ एक लाभप्रद सन्धि करने के लिए वार्ता करना सम्भव हो जाता। जापान के साधनों पर इस युद्ध के कारण भयंकर बोझ पड़ रहा था और इसलिए वह संघर्ष का शीघ्र अन्त करना चाहता था। लेकिन जब तक रूस की नौसेना और स्थलसेना, दोनों अविजित थीं उसके लिए लड़ते रहने के अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं था। ग्रीष्म ऋतु में नोगी (Nogi) ने तूफ़ानी धावे बोलकर पोर्ट आर्थर पर अधिकार कर लेने का दुःसाहसिक प्रयास कई बार किया, परन्तु हर बार उसे पीछे धकेल दिया गया और जापानियों को भारी क्षति उठानी पड़ी। फिर भी कुरोपाट्किन के दुर्ग को सहायता भेजने के निर्बल प्रयासों को अनायास विफल कर दिया गया और अन्ततोगत्वा २री जनवरी १९०५ को दुर्ग का पतन हो गया। इससे नोगी की सेना स्वतन्त्र हो गई और ओयामा को दूसरे आक्रमण की तैयारी करने का अवसर मिल गया। युद्ध (war) का अन्तिम संग्राम (battle) मुक्देन (Mukden) की प्राचीर की छाया में २७वीं फर्वरी से ८वीं मार्च तक लड़ा गया। प्रतिस्पर्द्धी सेनाएं लगभग बराबर थीं। दोनों पक्षों में प्रत्येक के पास ३२०,००० आदमी थे। ओयामा (Oyama) ने दो चक्करदार प्रगमनों (turning movements) द्वारा आक्रमण करने की चेष्टा की। कावामुरा (Kawamura) के नेतृत्व में यालू (Yalu) से आई एक ताज़ी सेना को पहाड़ियों से होकर दाहिनी ओर भेजा गया और नोगी को बाईं ओर। ७वीं मार्च तक नोगी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुक्देन से उत्तर की ओर जानेवाले रेलपथ (railway) के पार पहुँच गया। रूसी दृष्टिकोण से स्थिति अभी तक उपायातीत नहीं हुई थी, लेकिन कुरोपाट्किन ने, जो अपनी मुख्य सञ्चार-रेखा की सुरक्षा के भयातुर हो उठा था, सेना को पीछे लौटने का आदेश दे दिया। इस बार प्रत्यावर्तन उतने व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाया जितने व्यवस्थित रूप से लियाओ-यांग में किया गया था। कई रूसी सैन्य-दलों का मुख्य सेना से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया और वे मुक्देन में पकड़ लिए गए। कुल हताहत रूसी सैनिकों की संख्या १००,००० रही, और जापानियों की इससे मात्र आधी।

मुक्देन के संग्राम से लेकर अगस्त १९०५ में सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर होने तक और लड़ाई बहुत कम हुई। सन्धि की शर्तें जापानियों के लिए उतनी अनुकूल नहीं रहीं जितनी उनको आशा थी। यहाँ तक कि जापानी शहरों में इस प्रश्न पर दंगे तक हो गए। लेकिन इसका कोई उपचार नहीं था। आर्थिक दृष्टि से जापान निश्शोषित हो चुका था और, यद्यपि उसने रूसी नौसेना को नष्ट कर दिया था, वह रूसी स्थलसेना का विनाश नहीं कर पाया था। रेल-यातायात में सुधार हो जाने के कारण अब रूसी सेना में प्रतिमास १००,००० सैनिकों के दल बलवर्धन के लिए पहुँच रहे थे। स्थिति खराब हो जाने के पूर्व युद्ध को समाप्त कर देना अत्यावश्यक था। दो लक्ष्यों को एक साथ पाने की चेष्टा करने एवं सैनिक और आर्थिक साधनों के अपर्याप्त होने के बावजूद युद्ध छेड़ देने की उतावली दिखाने के दण्डस्वरूप जापान को अननुकूल सन्धि स्वीकार करनी पड़ी।

जापान को यह विजय मुख्यतः अपने सैनिकों के युद्धकौशल और अफसरों की ऊर्जस्विता एवं बुद्धिमत्ता के कारण मिली। एक युद्धयन्त्र (fighting machine) के रूप में उसकी सेना रूसी सेना से अपरिमितरूपेण उत्कृष्टतर थी। उनके उच्चाधिकारियों (high commands) में अन्तर भी उतना ही स्पष्ट था। कुरोपाट्किन एक कुशल युद्धतन्त्री (strategist) था, लेकिन एक योजना को चुनने और उस पर जमे रहने की दृढ़ता का अभाव होने से वह समरतन्त्री (tactician) के रूप में असफल सिद्ध हुआ। यह बुद्धि का दोष न होकर चरित्र का दोष था। इस युद्ध के समरतन्त्रीय अनुभवों से दक्षिणी अफ्रीका के युद्धों से निकले निष्कर्षों की पुष्टि हुई। कोई भी सम्मुखीय आक्रमण (frontal attack) चक्करदार प्रगमन (turning movement) के बिना सफल नहीं हुआ। लेकिन इसमें तोपखाने ने पदाति-सैन्य को अधिक सहायता दी। जिस समय पदाति-सेना आगे बढ़ती थी, जापानी तोपची बराबर गोलाबारी करते रहते थे। वे अपने सैनिकों को हत कर देने की जोखिम उठाकर भी अन्त तक अग्निवर्षा करते थे। इस प्रकार जब तक उनकी पदाति-सेना शत्रु के निकट पहुँचती थी तब तक शत्रु का मनोबल और उत्साह भंग हो चुके होते थे। विदेशी सैनिक-पर्यवेक्षक (military observers) मञ्चूरिया के समरक्षेत्रों में तोपों के महत्त्व के विषय में एकमत थे। सभी को, सिवाय जनरल स्टाफों (general staffs) के, यह स्पष्ट हो गया कि अगला युद्ध तोपों का युद्ध होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १०

प्रथम विश्वयुद्ध, १९१४-१८—पश्चिमी मोर्चा

युद्ध की सामान्य विशेषताएँ—उन लक्षणों में, जिनके कारण यह युद्ध प्रकृत्या अभूतपूर्व हो गया, तीन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(अ) संयोधियों (combatants) की संख्या। १८७० से सभी बड़े महाद्वीपीय (यूरोपियन) राष्ट्रों[1] ने सार्वजनीन-सैनिक-सेवा (universal military service) का नियम लागू कर दिया था। इस संघर्ष में उन्होंने विशाल सेनाओं के साथ भाग लिया।

जर्मनी	...	...	...	५,३००,०००
फ्रान्स	...	...	...	४,०००,०००
आस्ट्रिया	...	...	...	२,०००,०००
रूस	...	...	...	४,५९०,०००
इटली	...	...	...	१,२००,०००

ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका ने युद्ध का आरम्भ लघु पेशेवर सेनाओं के साथ किया, लेकिन संघर्ष छिड़ जाने के उपरान्त अनिवार्य-सैनिक-सेवा का नियम लागू कर दिया। युद्ध-विराम-सन्धि के समय उनकी शस्त्र-सज्जित (mobilized) सेनाओं की संख्या इस प्रकार थी :

ब्रिटिश साम्राज्य	...	...	२,००२,०००
संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका	...	...	१,८८१,०००

इन सेनाओं को युद्ध के लिए पूर्णतः तैयार रखने से युद्धरत (belligerent) राष्ट्रों की जनशक्ति पर दुःसह्य भार पड़ा। औसत रूप से इनमें प्रत्येक ने अपनी जनसंख्या के पाँचवे भाग को युद्ध के लिए सज्जित किया। जर्मनी ने १३,२५०,००० आदमी जुटाए, फ्रान्स ने ८,०००,०००, ब्रिटेन ने ९,५००,०००। हताहतों की संख्या भी तदनुसार अधिक रही। जर्मनी के हत, आहत और बन्दी बना लिए सैनिकों की संख्या ७,०००,००० रही (इनमें २,०००,००० मृत रहे), फ्रान्स की ५,०००,००० (इनमें १,५००,००० मृत रहे) और ब्रिटिश साम्राज्य की ३,०००,००० (इनमें १,०००,००० मृत रहे)।

१. ग्रेट ब्रिटेन जैसे द्वीपीय राज्यों को छोड़कर यूरोप की मुख्य भूमि के राष्ट्रों को महाद्वीपीय (Continental) राष्ट्र कहा जाता है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ब) युद्ध-सामग्री का व्यय भी उतने ही अभूतपूर्व रूप से हुआ। न केवल उस समय प्रचलित युद्ध-सामग्री का अधिकाधिक उपयोग किया गया, विशेषतः भारी तोपों (heavy artillery) और मशीनगनों (machine guns) का, वरन् वायुयानों (aeroplanes), टैंकों (tanks) लीविस गनों[1] (Lewis guns), ट्रेञ्च मॉर्टरों (trench mortars) फ़्लेम थ्रोअरों (flame throwers), हथगोलों (hand grenades) तथा विषैली गैस के बमों (gas shells) आदि नवीन आयुधों का आविष्कार भी किया गया। युद्ध के दौरान ब्रिटेन का युद्ध-सामग्री पर किया जाने वाला वार्षिक व्यय ७००,००० पौण्ड से ६४,०००,००० पौण्ड हो गया। फ्रान्स ने युद्ध-सामग्री तैयार करने वाले श्रमिकों की संख्या २५,००० से बढ़ा कर १,५००,००० कर दी। संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका युद्ध के समय तैयार नहीं था, इसलिए उसे अपनी सेना को सज्जित करने में बारह माह से अधिक लग गए। इस नए विकास के कारण युद्धकर्म में आर्थिक स्थिति का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया। अब, सिवाय औद्योगिक रूप से विकसित राष्ट्रों के, किसी के लिए प्रभावकर रूप से युद्ध लड़ना लगभग असम्भव हो गया।

(स) इन दोनों बातों के सम्मिलित प्रभाव का एक तीसरा परिणाम हुआ—युद्धतन्त्र (strategy) की अवनति। संयोधी सेनाओं (combatant armies) के विशाल आकार के कारण गत्यात्मक युद्धों (wars of movements) का बड़ी तेज़ी से अन्त हो गया। सीमाएँ पूर्णतः सुरक्षित कर दी गईं जिससे अब शत्रुओं को घूमकर आक्रमण करने के लिए कोई पार्श्व (flank) ही नहीं मिलता था। युद्ध का निर्णय केवल सम्मुखीय आक्रमण (frontal attacks) द्वारा हो सकता था, परन्तु इस क्षेत्र में मशीनगन के कारण प्रतिरक्षात्मक स्थितियों की शक्ति हज़ार गुनी बढ़ गई और शत्रु की सैन्य-पंक्तियों को तोड़ना (break-through) लगभग असम्भव हो गया। तीन-चौथाई लड़ाई खाइयों में लड़े जाने वाले अनिर्णायक संघर्ष तक सीमित हो गई। किसी भी देश के जनरल स्टाफ को इस विकट समस्या को सुलझाने में सफलता नहीं मिली, यद्यपि ब्रिटेन वालों के द्वारा टैंकों के प्रयोग से इसके हल (solution) की ओर आशापूर्ण संकेत अवश्य प्राप्त हो गया।

श्लीफेन योजना—१८९१ में काउण्ट वान श्लीफेन (Count von Schlieffen) जर्मन जनरल स्टाफ का अध्यक्ष (Chief of German General Staff) बना। वह एक वैज्ञानिक सैनिक (scientific soldier) था। उसने कैने (Cannae) के संग्राम का गहन अध्ययन किया था और उसे आशा थी कि जिस पैंतरे द्वारा हनीबाल ने उस महान् विजय को प्राप्त किया था, उसका वह यूरोपियन युद्ध में बड़े पैमाने पर अनुकरण करने में सफल रहेगा। श्लीफेन योजना का उद्देश्य शत्रु को ऐसी स्थिति में ले आना था जिसमें उसे एक भयंकर आघात के द्वारा कुचला जा सकता,

---

१. एक प्रकार की हल्की मशीनगन।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे रोमन सैनिक हस्ड्रूबाल की अश्वारोही सेना द्वारा कुचल दिए गए थे (देखिये, पृ० २७)। कई साल से जर्मनी दो मोर्चों पर लड़ने की तैयारी कर रहा था। मोल्ट्क ने फ्रान्स के विरुद्ध प्रतिरक्षात्मक युद्ध और रूस के विरुद्ध सशक्त आक्रमण की एक योजना बनाई थी। श्लीफेन ने निर्णय किया कि रूस पर आक्रमण बाद में भी किया जा सकता है। रूस की सेनाएँ युद्ध के लिए बहुत धीरे-धीरे समुद्यत (mobilize) होती थीं। उन सप्ताहों में, जब उसकी सेनाएँ संकेन्द्रित होतीं, उसके पश्चिमी मित्र अर्थात् फ्रान्स को एक अप्रत्याशित (sudden) और निर्मम (ruthless) आघात द्वारा पराजित किया जा सकता था। समस्त जर्मन सेनाओं को फ्रान्स पर विशाल पैमाने पर किए जाने वाले इस आक्रमण में झोंक देना था। फ्रान्सीसी दुर्गों की बाधाओं से बचने के लिए श्लीफेन ने जर्मन सेनाओं को एक प्रकाण्ड चक्कर लगाकर हालैण्ड और बेल्जियम से ले जाने की योजना बनाई। दाहिने बाज़ू (wing) को मज़बूत करने के लिए सब कुछ बलिदान कर दिया गया। आल्सस-लॉरेन (Alsace-Lorraine) पर अदृढ़-रूपेण अधिकार कर लेना था, और अगर फ्रान्सीसी इस स्थल पर प्रत्याक्रमण करते तो जर्मन सैन्य-दल को आक्रमणकारियों को आगे बढ़ने के लिए लालायित करते हुए पीछे लौट जाना था। तब बलवर्धित (reinforced) दाहिना बाज़ू घूम जाता और फ्रान्सीसियों के पार्श्व (flank) और पृष्ठभाग (rear) पर जोरदार आघात करता। यह योजना कैने का पूर्ण प्रतिरूप (exact counterpart) तो नहीं थी, लेकिन सिद्धान्त वही था। अपने शत्रु को वहाँ ले आओ जहाँ लाना चाहते हो, उसे उलझा लो और उस पर घातक प्रहार करो।

जर्मन स्टाफ ने १९१४ में श्लीफेन की योजना को ही प्रयुक्त किया—परन्तु कुछ संशोधनों के साथ। इस समय चीफ ऑव स्टाफ सेडन के विजेता मोल्ट्क का भतीजा, कनीयस् मोल्ट्क (Moltke the younger), था कहा जाता है कि श्लीफेन ने अपनी मृत्युशय्या से अस्फुट स्वर में कहा था। "दाहिना बाज़ू सशक्त रखना"। उसके उत्तराधिकारी ने इस मूल सिद्धान्त की अवहेलना की। उसने दाहिने बाज़ू पर स्थित सैन्य-दलों की संख्या ही कम नहीं कर दी, वरन् बाएँ बाज़ू की सेनाओं को अधिक शक्तिशाली करके उनकी भूमिका (role) को अंशतः आक्रमक भी कर दिया। इन परिवर्तनों से श्लीफेन की महान् युद्धनीतिक योजना (great strategic conception) का विनाश हो गया।

फ्रान्सीसी चीफ ऑव स्टाफ मिशेल (Michel) ने जर्मन सेना के प्रकाण्ड चक्कर का प्रत्युत्तर देने के लिए बेल्जियम की सीमा पर दस लाख सैनिक एकत्र किए। आवश्यकता होने पर वह जर्मन सेना से, उसके फ्रान्स में प्रविष्ट होने के पूर्व ही, बेल्जियम में घुस कर टक्कर लेने के लिए तैयार था, यद्यपि इससे आंग्ल-फ्रान्सीसी सम्बन्धों के भयावह रूप से बिगड़ने की सम्भावना थी। लेकिन उसे अपनी योजनाओं को जाँचने का अवसर नहीं मिल पाया। उसके विचार फ्रान्सीसी जनरल स्टाफ के एक प्रभावशाली दल को रुचिकर नहीं लगे। वह दल एक निन्द्य षडयन्त्र के द्वारा १९१२ में उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान पर जोफ़े (Joffre) को नियुक्त कराने में सफल हो गया। अब फ्रान्सीसी सेना की बागडोर जिन व्यक्तियों के हाथ में आई, उन्होंने श्लीफेन-योजना के अस्तित्व को ही स्वीकृत करने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि अगर कोई आक्रमण हुआ भी तो वह म्यूज़ (Meuse) के उत्तर अथवा पश्चिम में फैल नहीं पाएगा। उन्होंने इसका मुक़ाबिला करने के लिए दो प्रत्याक्रमणों की तैयारी की—एक लॉरेन (Lorraine) में और दूसरा आर्देनिज़ (Ardennes) में। ये शान्तिकालीन सेनाओं द्वारा किये जाने वाले थे। उन्होंने अकारणतः यह मान कर कि जर्मनी वाले अपने आक्रमणों में केवल सक्रिय सैनिकों का ही प्रयोग करेंगे, आरक्षित सैनिकों (reserves) को सक्रिय बटालियनों के साथ दलबद्ध करना (to brigade) आवश्यक नहीं समझा। इन भयावह मिथ्यानुमानों के कारण फ्रान्स विनाश के सन्निकट आ पहुँचा। जर्मन सेनाएँ फ्रान्स में प्रविष्ट होने के लिए उससे कहीं अधिक पश्चिम की ओर से घूम कर आई जितना फ्रान्सीसी स्टाफ का अनुमान था, और उन्होंने दुर्दम्य संख्याधिक्यता का लाभ प्राप्त करने के लिए अपने सक्रिय सैनिकों (active troops) के साथ आरक्षित डिवीज़नों का भी प्रयोग किया।

सीमाओं का संग्राम—फ्रान्सीसी सैनिक स्विट्ज़रलैण्ड और बेल्जियम के मध्य तैनात पाँच सेनाओं में विभाजित थे। बाईं ओर स्थित ब्रिटिश-अभियान-सैन्यदल (British Expeditionary Force) के कारण मित्रराष्ट्रीय सैन्यपंक्ति (Allied line) सांब्रे (Sambre) तक लम्बी हो गई, लेकिन सांब्रे और समुद्र के मध्य फ्रान्सीसी प्रादेशिक सैन्यदल (French territorials) के अतिरिक्त कोई अन्य शक्ति नहीं थी।* जर्मन सैनिक कोमार (Colmar) तथा कोलोन् (Cologne) के मध्य स्थित सात सेनाओं में संगठित थे। दाहिने बाज़ू की तीन सेनाओं—प्रथम (क्लुक), द्वितीय (ब्यूलो), तृतीय (हौसेन)—को उत्तरी वृत्तीय आक्रमण करना था। अब यह धावा केवल बेल्जियम के मार्ग से किया जाने वाला था क्योंकि हालैण्ड की सीमाओं के उल्लंघन का विचार त्याग दिया गया था। इससे सैनिकों के विस्तारण (deployment) के लिए बहुत कम स्थान रह गया और एक सम्मुखीय धावे द्वारा लीज़ (Liege) पर अधिकार कर लेना अपरिहार्य हो गया। ७वीं अगस्त को नगर पर अधिकार कर लिया गया यद्यपि इसके अन्तिम दुर्ग का पतन १७वीं अगस्त को ही हो पाया। बेल्जियमी सेना अपने एण्टवर्प (Antwerp) स्थित शिविर को, जो खाइयों द्वारा सुरक्षित था, लौट गई और जर्मन सांब्रे की ओर बढ़ चले।

दक्षिण की ओर फ्रान्सीसियों ने अपने दो प्रधान आक्रमणों में से, जिनकी योजना उन्होंने बना रखी थी, पहले को आरम्भ किया। उनकी प्रथम और द्वितीय सेनाएँ (I. and II. Armies) लॉरेन में प्रविष्ट हो गईं। २०वीं अगस्त को मोर्हाञ्ज-सारेबर्ग (Morhange-Sarrebourg) में उन का सामना जर्मनी की ६ठी और

---

* प्रशा के पुराने 'लैण्डस्टर्म' (Landsturm) नामक सैन्य-दल से मिलती-जुलती सेना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७वीं सेनाओं (VI. and VII. Armies) से हुआ। इस संघर्ष में फ्रान्सीसियों की गहरी पराजय हुई। आर्देनिज़ (Ardennes) पर आक्रमण इसके तत्काल बाद प्रारम्भ हुआ, लेकिन इसमें भी फ्रान्सीसियों को विशेष सफलता नहीं मिली। २२वीं अगस्त को फ्रान्सीसियों की ३री और ४थी सेनाएँ जर्मनों की ४थी और ५वीं सेनाओं

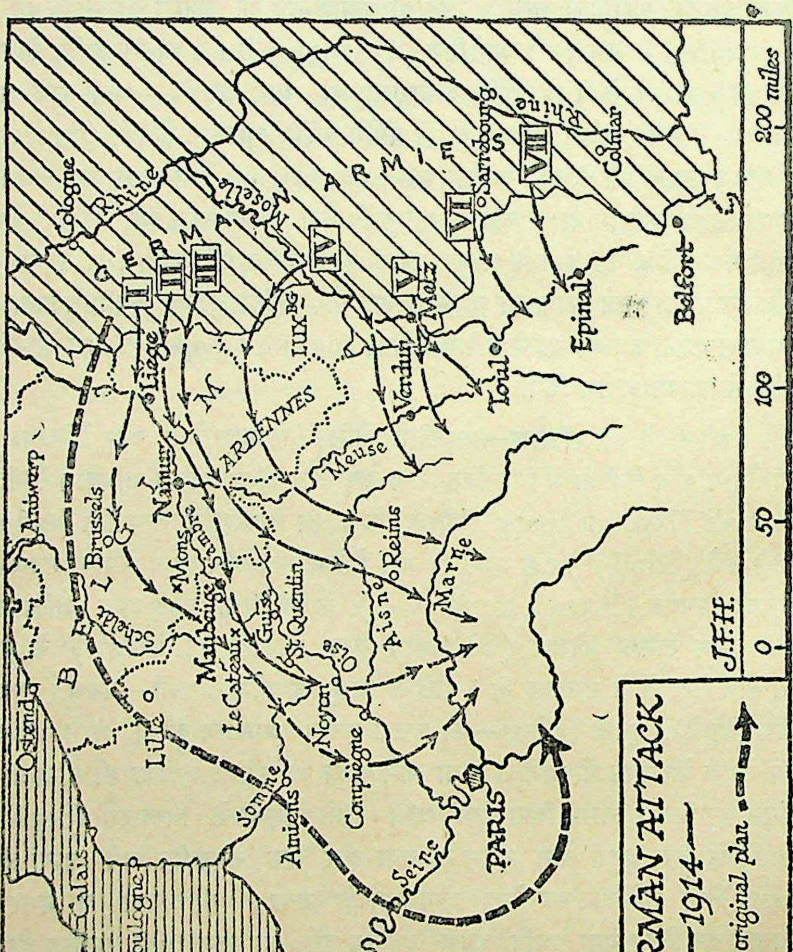

से टकरा गईं परन्तु एक भयंकर संघर्ष के उपरान्त म्यूज़ के पार धकेल दी गईं। अन्त में, सांब्रे पर फ्रान्सीसियों की ५वीं सेना के अग्रभाग और पार्श्व पर जर्मनों की २री और ३री सेनाओं ने हमला किया और उसे दक्षिण की ओर लौटने के लिए विवश कर दिया (२४वीं अगस्त)। ब्रिटेन की अभियान-सेना (British Expedi-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

tionary Force) भी, जिसने मोंस (Mons) में एक सफल रक्षात्मक लड़ाई लड़ी थी, पीछे हटते रहने के लिए बाध्य हुई।

फ्रान्सीसी स्टाफ की योजनाएँ नष्ट हो चुकी थीं। मित्रराष्ट्रीय सैन्य-पंक्ति पूर्ण प्रत्यागमन (full retreat) कर रही थी, और मोल्ट्क के पास यह घोषणा करने के लिए कुछ औचित्य हो गया था कि "पश्चिम का महान् निर्णायक युद्ध लड़ा जा चुका है और उसका निर्णय जर्मनी के पक्ष में हो चुका है।" लेकिन मित्रराष्ट्रीय सेनाएँ अभी तक अक्षत थीं और परिस्थिति अनुकूल होने पर पुनः लड़ाई छेड़ सकती थीं। जर्मन 'हाई कमाण्ड' की गलतियों से उन्हें इसका अवसर मिल गया। मोल्ट्क की सबसे पहली भूलों में एक थी बाएँ बाज़ू की सेनाओं के अध्यक्ष राजकुमार रुप्प्रेख़्ट (Prince Rupprecht) को आक्रमण करने की अनुमति दे देना, जिसके परिणामस्वरूप श्लीफेन की योजनानुसार फ्रान्सीसी सेनाओं को आगे बढ़ आने के लिए लालायित करने के बजाय रुप्प्रेख़्ट ने उन्हें उनकी दुर्गों से सुरक्षित सीमा की ओर खदेड़ दिया। तूल (Toul) और एपीनाल (Epinal) के मध्य 'गेॅप ऑव शार्मे' (Gap of Charmes) के समीप उसकी सेना को हानि सहित पीछे धकेल दिया गया (२५वीं–२७वीं अगस्त)। उसकी इस पराजय से जोफ्रे (Joffre) को एक बात सूझ गई। उसने शत्रु-सेना की प्रगति रोकने के लिए दुर्गों की पंक्ति (fortress barrier) पर विश्वास करके दाहिने बाज़ू के सैनिकों को वापिस बुला लेने और उनकी सहायता से अपने बाएँ बाज़ू पर एक नयी ६ठी सेना (VI. Army) बनाने का निश्चय किया। इससे चक्कर काट कर बढ़ते हुए जर्मनों के पार्श्व पर आक्रमण किया जा सकता था। यह पैंतरा मार्ने के संग्राम (battle of Marne) का बीज था।

मार्ने—जोफ्रे ने अपनी नई सेना को मोॅनूरी (Maunoury) के नेतृत्व में आमीन्स् (Amiens) में संगृहीत करना प्रारम्भ किया, लेकिन जर्मनों के दाहिने बाज़ू के द्रुत अग्रसरण (swift advance) ने इसे पेरिस (Paris) हटने के लिए बाध्य कर दिया। इस बीच श्लीफेन-योजना बराबर अधिकाधिक बिगड़ती गई। श्लीफेन ने दाहिने बाज़ू की सेनाओं को पेरिस के पश्चिम से लाने की योजना बनाई थी, परन्तु दाहिने बाज़ू को पर्याप्त सबल रखने में मोल्ट्क की असफलता से यह प्रक्रिया (operation) असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य हो गयी। एण्टवर्प स्थित बेल्जियमी सेना पर दृष्टि रखने और नामूर (Namur) तथा मौब्यूज़ (Maubeuge) के दुर्गों को उत्पात करने से रोकने के हेतु कुछ टुकड़ियाँ नियुक्त कर देने के कारण १ली और २री सेनाएँ दुर्बल हो गई थीं। इससे भी बुरी बात यह हुई कि मोल्ट्क ने यह विचार कर कि पश्चिमी मोर्चे के संग्राम का निर्णय हो गया है, दो सैन्य-दल रूसी मोर्चे पर भेज दिए। चक्राकार आक्रमण के फैलाव (sweep) के मूल विस्तार को बनाए रखने के प्रयास में आक्रमणकारी सेनाएँ, जो उपर्युक्त कारणों से पहले से कुछ दुर्बल हो गई थीं, परस्पर सम्पर्क खो बैठीं और उनकी एक दूसरे से दूरी भयावह रूप से बढ़ने लगी। इस तथ्य से क्लुक (Kluck) के द्वारा दिशा-परिवर्तन का कारण,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिस पर इतना वादविवाद हो चुका है, समझ में आ जाता है। २६वीं अगस्त को उसने २रे ब्रिटिश सैन्य-दल (2nd British Army Corps) से ल शातो (Le Cateau) के समीप युद्ध किया और उसे लगभग विनष्ट कर दिया। यह सोच कर कि उसने सम्पूर्ण ब्रिटिश-अभियान-सेना (B.E.F.) को निष्क्रिय बना दिया है, उसने निष्कर्ष निकाला कि वह निरापद रूप से दक्षिण-पूर्व की ओर घूम सकता है। इससे वह २री सेना (II. Army) के, जो उसकी बाईं ओर थी, निकटतर आ सकता था और सम्भवतः ५वीं फ्रान्सीसी सेना (French V. Army) के प्रत्यागमन में, जिसने गाइज़-सेण्ट कुएन्तिन (Guise-St. Quentin) के समीप व्यूलो से असफल संघर्ष (२९वीं-३०वीं अगस्त) किया था, बाधा डालने में समर्थ हो सकता था। इस नये रुख से वह कोंपिएन (Compiegne) और नोयों (Noyon) के मार्ग से मार्ने (Marne) नदी के दक्षिणी तट पर पहुँच गया। मित्रराष्ट्रीय पक्ष की दृष्टि से क्लुक के इस अग्रसरण का महत्त्व यह था कि इससे उसका पार्श्व पेरिस के सम्मुख स्थित ६ठी फ्रान्सीसी सेना (French VI. Army) द्वारा आक्रम्य हो गया। क्लुक इस सेना के अस्तित्व से अनभिज्ञ था।

विचित्र बात तो यह है कि क्लुक के इस अग्रसरण का जर्मन 'हाई कमाण्ड' ने अनुमोदन कर दिया। मोल्ट्क एक बार फिर श्लीफेन-योजना में काट-छांट करने लग गया था। इस बार उसने उत्तरी वृत्ताकार आक्रमण के फैलाव को घटाने का निश्चय किया। पेरिस के पीछे से घूम कर आने की बजाय अब दाहिने बाज़ू की सेनाओं को तेजी से दक्षिण-पूर्व की ओर घूम जाना और लोरेन की फ्रान्सीसी की सैन्य-पंक्ति को काट देना था। कुछ दिन बाद जब मोल्ट्क को ६ठी फ्रान्सीसी सेना के अस्तित्व का ज्ञान हुआ, उसने अपने पार्श्व पर उत्पन्न संकट को महसूस किया। १ली और २री सेनाओं को पश्चिमाभिमुख होने और पेरिस की दिशा से शत्रु-सैन्य का आगमन रोकने का आदेश दिया गया। लेकिन इस समय तक क्लुक और व्यूलो ऐसे किसी भी आदेश का पालन करने की स्थिति में नहीं रह गए थे। फ्रान्सीसी प्रत्याक्रमण होने को ही था। मार्ने के युद्ध के लिए रंगमञ्च तैयार था।

पेरिस में परिखास्थ (entrenched) शिविर के सामने क्लुक के पार्श्वीय अग्रसरण (flank march) से ६ठी फ्रान्सीसी सेना को उस पर आक्रमण करने का एक अतीव आकर्षक अवसर मिल गया, और ४थी सितम्बर को राजधानी के सैनिक गर्वनर गेलीनी (Gallieni) ने जोफ्रे से आक्रमण करने का आग्रह किया। लेकिन केवल एक सेना के द्वारा किया गया अकेला आघात व्यर्थ रहता। जोफ्रे को सर्वप्रथम समस्त फ्रान्सीसी मोर्चे से एक साथ किए जानेवाले संयुक्त आक्रमण को आयोजित करना था। इसके लिए उसे ब्रिटिश-अभियान-सेना (B.E.F.) के फ्रेञ्च (French) नामक सेनापति का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक था। परन्तु फ्रेञ्च मॉस् (Mons) में फ्रान्सीसियों द्वारा किए गए व्यवहार से, जिसे वह अपना साथ छोड़ देना (desertion) मानता था, बहुत क्रुद्ध था और समरक्षेत्र (battle area) का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्णतः परित्याग कर देने की तैयारी कर रहा था। स्वयं युद्ध-मन्त्री लॉर्ड किचनर (Lord Kitchener) के व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करने पर ही ब्रिटिश सेनापति को समझा-बुझाकर मनाया जा सका। अन्त में अपनी सब व्यवस्था पूरी कर लेने के बाद जाफ्रे ने ६ठी सितम्बर को सामान्य अग्रसरण (general advance) का आदेश दिया। लेकिन इसके पहले दिन ही मॉनूरी (Maunoury) की ६ठी सेना पेरिस से पूर्व की ओर बढ़ते समय क्लुक (Kluck) के दाहिनी पार्श्व से अप्रत्याशित रूप से जा टकराई थी। इस आक्रमण का, जिस पर इतनी आशा की गई थी, निर्णायक परिणाम नहीं निकला। मॉनूरी के सैनिक, जो मुख्यतः आरक्षित (reserve) डिवीज़नों से लिए गए थे, प्रभावहीन ढंग से लड़े और जर्मनों को उन्हें रोके रखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। लेकिन क्लुक ने अपने संकटग्रस्त पार्श्व को बलवर्धित (reinforced) करना आवश्यक समझा और अपने बाएँ पार्श्व के दो दल (army corps) दाहिनी ओर भेज दिए। इससे उसके और ब्यूलो के मध्य तीस मील का अन्तराल (gap) पैदा हो गया जिसमें ब्रिटिश-अभियान-सेना (B.E.F.) और ५वीं फ्रान्सीसी सेना सतर्कतापूर्वक घुस गई। उनका अग्रसरण हतोत्साहरूपेण धीमा था, लेकिन यह ब्यूलो को उसके दाहिने पार्श्व के विषय में चिन्तित बना देने के लिए पर्याप्त था। वह पीछे लौटा। क्लुक ने भी ऐसा ही किया, और धीरे-धीरे समस्त जर्मन मोर्चा उनका अनुकरण करने लगा। ९वीं सितम्बर तक सभी जर्मन सेनाएँ उत्तर की ओर प्रत्यावर्तन करने लगी थीं। इससे कम लड़ाई लड़े बिना शायद कभी किसी ने विजय प्राप्त नहीं की थी। लेकिन यह विजय युद्धतान्त्रिक (strategical) थी समरतान्त्रिक (tactical) नहीं। जर्मन सेनाएँ अक्षत पीछे हट गई और मित्रराष्ट्र (Allies) उनका पीछा करने में शोचनीय रूप से सुस्त रहे। १४वीं सितम्बर तक प्रत्यावर्तन का अन्त हो गया। जर्मन सेनाएँ एस्ने (Aisne) के तट पर रुक गईं और खाइयाँ खोदकर दृढ़तापूर्वक जम गईं।

इसके बाद वह घटना घटी जिसे "समुद्र तक पहुँचने की दौड़" ("the race to the sea") कहा जाता है। दोनों सेनाओं ने अपने पार्श्व को प्रतिस्पर्द्धी के पार्श्व से आगे बढ़ाने (outflank) का प्रयास किया जब तक कि उनकी परिखा-पंक्तियाँ (trench lines) समुद्र तट तक नहीं पहुँच गईं। जर्मनों द्वारा मित्रराष्ट्रीय पंक्ति को य्प्रेस (Ypres) के समीप तोड़ देने का सशक्त प्रयास (२०वीं अक्टूबर-२२वीं नवम्बर) ब्रिटिश-अभियान-सेना (B.E.F.) के अवशिष्ट भाग द्वारा निष्फल कर दिया गया, और जैसे-जैसे शीतऋतु निकट आती गई, समस्त पश्चिमी मोर्चे में खाइयों का युद्ध (trench warfare) फैल गया।

लड़ाई के प्रथम दौर में जो विशिष्ट तथ्य प्रकाशित हुआ, वह था फ्रान्स की सैनिक दुर्बलता। व्यक्तिगत रूप से तुलना किये जाने पर फ्रान्सीसी सैनिक जर्मन सैनिक से अवर (inferior) पड़ता था, और समान संख्याओं के सैन्य-दलों का मुकाबिला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होने पर सदैव फ्रान्सीसियों को ही हार माननीं पड़ती थी।* दोनों देशों के 'हाई कमाण्डों' की भी कोई तुलना नहीं थी। युद्ध के पहले फ्रान्सीसी सैनिक अधिकारियों ने 'सदैव आक्रमण करते रहो' (offensive *a outrance*) सिद्धान्त का बड़ी तत्परता के साथ प्रतिपादन किया था। 'एकोल द गुएरे' (Ecole de Guerre) में फॉक (Foch) तथा उसका शिष्य ग्रांदमेसों (Grandmaison) इस नए 'धर्म' के 'पैग़म्बर' थे। इसके पूर्व इससे अधिक सबल सिद्धान्त को इससे अधिक बुद्धिहीनतापूर्वक न तो प्रतिपादित किया गया और न व्यवहार में लाया गया। आक्रमण करना अच्छा है, परन्तु शत्रु-सैनिकों की संख्या, शस्त्रास्त्र और स्थिति पर ध्यान दिए बिना नहीं। अपने गुरुओं और उच्चतर अधिकारियों से गलत सीख लेकर फ्रान्सीसी अवर पदाधिकारी (subaltern) केवल 'मार्सेलीज़'[१] का गान करना और धावा बोलने का आदेश देना ही पर्याप्त समझने लगे। ऐसी कार्यरीतियों के परिणामस्वरूप लड़ाई के प्रथम तीन सप्ताहों में सेना को ६००,००० सैनिकों से हाथ धोना पड़ा। मार्ने की "अलौकिक घटना" के कारण पूर्ण पराजय तो बच गई, लेकिन यदि खुली लड़ाई (open fighting) चलती रही होती तो कुछ समय उपरान्त विनाश निश्चित था। स्विट्ज़रलैण्ड से समुद्र तक विस्तृत तिहरी परिखा-पंक्ति (triple trench line) के परिणामस्वरूप संकट से मुक्ति जर्मनों को नहीं फ्रान्सीसियों को मिली।

गतिरोध, १९१५-१७—इसके बाद पश्चिमी मोर्चे में तीन वर्ष तक गतिरोध (deadlock) रहा। खाइयों, कांटेदार तारों, और सबसे अधिक मशीनगनों के कारण प्रतिरक्षात्मक स्थितियाँ लगभग अभेद्य हो गयीं। प्रतिरक्षात्मक स्थितियों को भेदने की समस्या इन नीरस महीनों में बिना सुलझी रही।

य्प्रेस (Ypres) में विषैली गैस का प्रयोग करके (अप्रैल, १९१५) जर्मन लोग इस समस्या के हल के सर्वाधिक निकट पहुँचे। इस नए हथियार से फ्रान्सीसियों के मोर्चे के अग्रभाग में चार मील चौड़ा मार्ग बन गया। लेकिन बहुत ही आश्चर्य की बात है कि जर्मन 'हाई कमाण्ड' के पास अपनी सफलता का लाभ उठाने के लायक आरक्षित सैनिक (reserves) ही नहीं थे। अतः अन्तराल (gap) शीघ्र बन्द हो गया। जर्मनों को अवसर मिला, परन्तु वे उसका लाभ उठाने में चूक गए। इसके बाद सैनिकों में विषैली गैस से रक्षा करने वाले श्वासयन्त्र (respirators) वितरित कर दिए जाने से य्प्रेस के अनुभव को दोहराना असम्भव होगा, और यद्यपि शेष युद्ध

* यह दोनों देशों की जनसंख्या में भेद का अप्रत्यक्ष परिणाम था। जर्मनी को, जहाँ जन्मदर (birth rate) अधिक थी, प्रतिवर्ष उससे अधिक रंगरूट (recruits) मिल जाते थे जितने सेना में लिए जा सकते थे। अतः केवल सर्वाधिक शक्तिशाली ही भर्ती किए जाते थे। फ्रान्स में, इसके विपरीत, प्रत्येक व्यक्ति, जो विकृताङ्ग (deformed) नहीं होता था, सेना में काम करने के लिए बाध्य था। इसलिए औसतन् फ्रान्सीसी सैनिक की शारीरिक गठन स्पष्टरूपेण हीनतर थी।

१. फ्रान्स का राष्ट्र-गीत।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के दौरान दोनों पक्ष गैस का बराबर उपयोग करते रहे, विशेषतः गैस-बमों (gas-shells) के रूप में, तथापि इससे फिर कोई निर्णायक परिणाम नहीं निकल पाया।

इस काल का एक और विशाल जर्मन आक्रमण वर्दुन (Verdun) का संग्राम (फर्वरी-जून, १९१६) था। फॉकेनहेॅन (Falkenhayn) ने, जो मार्ने (Marne)

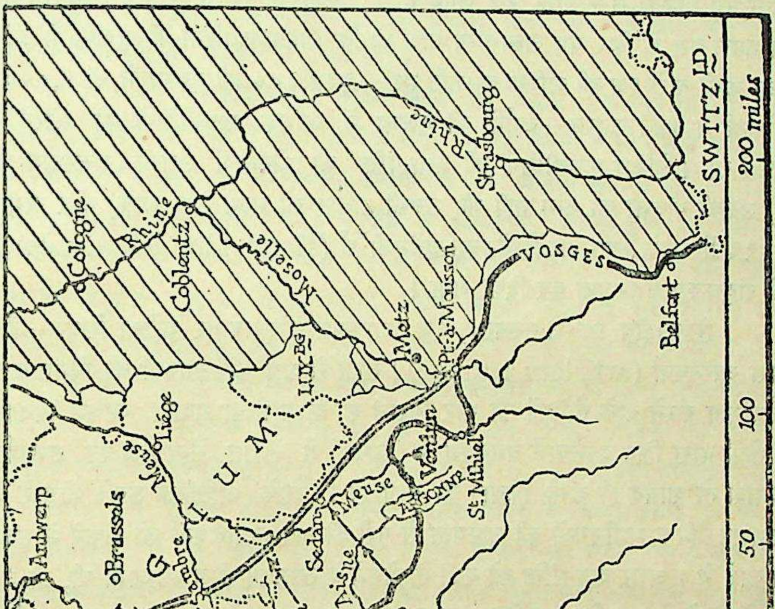

के संघर्ष के उपरान्त मोल्ट्क के स्थान पर 'चीफ ऑव स्टाफ' बना, एक विचित्र प्रकार के आक्रमण की योजना बनाई। उसने शत्रु की रक्षा-पंक्ति को तोड़ने की कोई चेष्टा नहीं की। वह मुख्यतः भारी तोपखाने से अग्निवर्षा करके छोटे-छोटे स्थानों पर अधि-

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार करना चाहता था। फॉकेन हेॅन का विचार था फ्रान्सीसी सेना के अधिकांश को वर्दुन के कोण (Verdun salient) में खींच लेना और शनैः शनैः नष्ट कर देना। उसकी योजनाओं को फ्रान्सीसी 'हाई कमाण्ड' (French High Command) से बड़ी सहायता मिली जिसने रक्षा की एक बेलोच विधि अपना कर अगली खाइयों को फ्रान्सीसी सैनिकों से—मानों उन्हें जर्मन तोपों का आखेट बनाने के लिए—भर दिया। आक्रमक-युद्ध के लिए यह असामान्य बात थी कि आक्रमणकारियों की तुलना में प्रतिरक्षा करने वाले पक्ष की अधिक जनक्षति हुई—३३४,००० की तुलना में ४४२,०००। फॉकेनहेॅन अपने उद्देश्य—जर्मनों की तुलना में अधिक फ्रान्सीसियों को मारने में, सफल रहा। लेकिन फ्रान्सीसियों की रक्षा-पंक्ति को भेदने में उसकी असफलता से, जो उसकी योजना का अंग नहीं थी, उसकी प्रतिष्ठा को भारी ठेस लगी और अगस्त १९१६ में उसके स्थान पर हिण्डेनबर्ग-लुडेनडॉर्फ (Hindenburg-Ludendorff) को संयुक्तरूप से नियुक्त कर दिया गया।

मित्रराष्ट्रीय पक्ष ने मुख्यतः एक आक्रमण-हथियार पर भरोसा किया—तोपों द्वारा अग्निवर्षा (artillery barrage)। तोपों से शत्रु की खाइयों को विनष्ट करने और रक्षा करने वाले सैनिकों को मार गिराने का काम लिया गया। लेकिन व्यवहार में तोपों द्वारा किए जानेवाले बमवर्षण से खाइयों में तैनात सैन्य-दल का सम्पूर्णतः विनाश तो शायद ही कभी किया जा सका हो। इसके अतिरिक्त उसके थोड़े से भी अवशिष्ट सैनिक मशीनगनों की सहायता से पूरी की पूरी बटालियनों को रोकने में समर्थ हो जाते थे। अगर शत्रु-पंक्ति को कहीं से तोड़ने में सफलता मिल भी जाती थी, तो उसे पिछले हिस्से में आपूरित कर दिया जाता था। अग्रसरण से एक मात्र लाभ यह होता था कि कुछ मील विस्तृत सर्वथा अनुपयोगी भूमि पर अधिकार हो जाता था जब कि हानि अनुपात से बहुत ज़्यादा हो जाती थी। मित्रराष्ट्रीय आक्रमणों का सबसे बड़ा दोष यह था कि इनमें जर्मनों से अधिक मित्रराष्ट्रीय सैनिक मारे गए। १९१५ के न्यूवे-शापेल (Neuve-Chapelle), आर्त्वा (Artois) तथा लूस (Loos) के आक्रमणों में जर्मनों के ५००,००० आदमी मारे गए, फ्रान्स और ब्रिटेन के १,२५०,०००। सोमे (Somme) के संग्राम (जुलाई–अक्टूबर, १९१६) में जर्मन हताहतों की संख्या फिर ५००,००० रही और मित्रराष्ट्रों की क्षति ८००,०००। १९१७ के आरा (Arras), शेमें दे दामे (Chemin-des-Dames), मेसिने (Messines) पाश्चेनडेल (Paachendaele), तथा कांब्रे (Cambrai) के युद्धों में ८००,००० जर्मन हत हुए, ४६०,००० फ्रान्सीसी और ७५०,००० ब्रिटिश।

ऐसा मित्रराष्ट्रीय धावा जो कुछ आशाप्रद प्रतीत हुआ ब्रिटेन द्वारा किया गया कांब्रे (Cambrai) का आक्रमण (नवम्बर, १९१७) था। इसमें टैंकों की सहायता ली गई। लेकिन जैसा कि जर्मनों ने अपनी गैस के साथ किया था, ब्रिटेन वालों ने भी अपने नए हथियार के प्रभाव को उसका समय से पहले प्रयोग करके बिगाड़ दिया। यह आक्रमण शत्रुपंक्ति को पाँच मील तक भेदने में सफल रहा, परन्तु ब्रिटिश हाई

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमाण्ड के पास ऐसे आरक्षित (reserve) सैनिक नहीं थे जिनसे इस सफलता का लाभ उठाया जा सकता। दस दिन बाद जर्मनों ने एक अप्रत्याशित प्रत्याक्रमण (surprise counter-attack) द्वारा खोए स्थल का अधिकांश पुनः हस्तगत कर लिया। भाग्यवश जर्मन जनरल स्टाफ या तो टैंकों के महत्त्व को समझने में असमर्थ रहा अथवा उनको अपनाने में। इससे ब्रिटिश सेना कांब्रे में प्राप्त सफलता को अन्य समरक्षेत्रों में दोहराने में सफल रही।

१९१७ में मित्रराष्ट्रीय पक्ष ने सख्याधिक्य की श्रेष्ठता (superiority in numbers) को, जो उन्हें फ्रान्स में ब्रिटिश सेना के परिवर्धन के कारण मिल गई थी, व्यर्थ गवाँ दिया। इसके परिणामस्वरूप सेनापतियों की प्रतिष्ठा को भी क्षति पहुँची। निविए (Nivelle) को, जो १९१७ में जोफ्रे के स्थान पर नियुक्त हुआ था, शेमें दे दामे के आक्रमण में असफलता और उसके उपरान्त फ्रान्सीसी सेना में होने वाले विद्रोह के कारण पदच्युत कर दिया गया। उसके स्थान पर पेतें (Petain) की नियुक्ति हुई। हेग (Haig) को भी, जो १९१५ में फ्रेञ्च के स्थान पर नियुक्त किया गया था, पाखेनडेल के हत्याकाण्ड को लेकर लगभग बर्खास्त कर ही दिया गया था*। हेग के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह एक योग्य सैनिक था परन्तु अभाग्य से अपने को सैन्य-प्रतिभा-सम्पन्न (genius) मानता था। उसका अनालोचनात्मक मस्तिष्क उसे उसके ही द्वारा निर्मित कल्पनालोक में बन्दी किए हुए था। उसकी यथार्थवाद में इस कमी का मूल्य उसके सैनिकों को अपने रक्त से चुकाना पड़ा। पाखेनडेल में वह आक्रमण करते रहने पर उसके बहुत बाद तक बल देता रहा जब एक मामूली-से-मामूली सैनिक भी उसकी निष्फलता को भली-भाँति समझ चुका था। अपनी ज़िद से उसने ब्रिटिश साम्राज्य को भयंकर संकट में डाल दिया, क्योंकि अब जर्मन, रूसियों से निपटने के बाद, पश्चिम में एक विनाशपूर्ण युद्ध के लिए सेनाएँ एकत्र कर रहे थे। वे आरक्षित सैनिक (reserves) जो इस समय इस आघात को टाल सकते थे, हेग द्वारा फ्लेण्डर्स (Flanders) के आक्रमण में विनष्ट कर दिए गए।

संकटपूर्ण वर्ष, १९१८—हिण्डेनबर्ग-लुडेनडोर्फ (Hindenburg-Ludendorff) के संयुक्त सेनापतित्व में लुडेनडोर्फ का योगदान ऐसे सक्रिय सहयोगी के रूप में था जो योजनाएँ आदि बनाने का कार्य करता था। जब इस जोड़ी ने १९१६ में कार्यभार सम्भाला, उसकी पहली समस्या थी पश्चिम में मित्रराष्ट्रों के आक्रमक आघातों का निवारण। लुडेनडोर्फ ने अपने को रक्षात्मक युद्ध में निष्णात सिद्ध किया। उसने आरा (Arras) और स्वासों (Soissons) के मध्यस्थित टीले को छोड़ कर और दृढ़रूपेण सुरक्षित हिण्डेनबर्ग का आश्रय लेकर, जिसे जर्मन लोग सीगफ्रीड रेखा (Siegfried Line) कहते थे, जर्मन मोर्चे के फैलाव

* लायड जॉर्ज, वार मेमोरीज़, भाग ४, पृ० २२२२-३, २२६५-७।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को घटा दिया। उसने अपनी पदाति-सैन्य के लिए नई प्रतिरक्षात्मक समरनीति (defensive tactics) का आविष्कार किया। सैनिकों से खचाखच भरी, मोर्चे के अग्रभाग में स्थित खाइयों के स्थान पर, जो शत्रु के तोपखाने का अनायास शिकार हो जाती थीं, उसने 'पिल-बाक्सिज'[1] (pill-boxes) और मशीनगन केन्द्रों (machine-gun nests) की, जिनमें बहुत थोड़े सैनिक रखे जाते थे, सीमा-चौकियाँ (outposts) स्थापित कीं और उनके पीछे आरक्षित सैनिकों को रखा। ज्यों ही शत्रु इन चौकियों में स्थित सैनिकों की रक्षा के लिए की जाने वाली बमवर्षा की मार से निकल जाता था, आरक्षित सैनिक प्रत्याक्रमण कर देते थे। इन विधियों से जर्मन लोग अपेक्षया थोड़े सैनिकों की सहायता से पश्चिमी मोर्चे को सम्भालने में समर्थ रहे। इससे उन्हें पूर्व में रूस और रूमानिया के ऊपर किए जाने वाले आक्रमणों के लिए सैनिक भेजने का अवसर मिल गया।

१९१८ की बसन्त तक रूसी लोग युद्ध से निकल चुके थे और जर्मनों को पश्चिम में संख्याधिक्य का लाभ प्राप्त हो गया था—१६८ की तुलना में १९७ डिवीज़न। यह सही है कि यह आधिक्य अतिशय नहीं था, परन्तु १९१६ के बाद हाई कमाण्ड को इतने आधिक्य का लाभ उठाने का अवसर पहली बार मिला था। इसके पूर्व कि अमरीकी डिवीज़नों के आने से* (जिनमें चार फ्रान्स में अब तक पहुँच चुकीं थी) यह लाभ समाप्त हो जाता, आक्रमण करना आवश्यक था। आक्रमक-युद्ध (offensive warfare) में भी लुडेनडोर्फ ने मौलिक विचारों का प्रदर्शन किया। उसने पदाति-आक्रमण के लिए अन्तःसरण (infiltration) विधि का विकास किया। लम्बी पंक्तियों में अग्रसरित होने के बजाय आक्रमणकारी छोटे-छोटे दलों में शत्रु-पंक्ति (enemy line) की जाँच करते और दुर्बल स्थलों में पैठते हुए आगे बढ़ते थे। रक्षकों के शेष समूहों की पीछे से आने वाले आरक्षित सैनिक (reserves) सफाई करते जाते थे। उसकी सामान्य आक्रमक युद्धनीति (general offensive strategy) भी उसी सिद्धान्त पर आधारित थी। किसी एक स्थल पर संकेन्द्रित आक्रमण करने के बजाय वह शत्रु के मोर्चे में दुर्बल स्थल की खोज करने और शत्रु के आरक्षित सैनिकों को यत्र-तत्र दौड़ाते रहने के लिए लगातार प्रहार करता रहता था।

सर्वप्रथम उसने आरा (Arras) और ला-फेयर (La Fere) के मध्य स्थित ५वीं ब्रिटिश सेना (British V. Army) की पंक्ति को भेदने में सफलता पाई (२१वीं मार्च)। यह सफलता आशा से बहुत अधिक थी। ब्रिटेन वाले चालीस मील पीछे सिकुड़ गए और उनका उनके दाहिनी ओर स्थित फ्रान्सीसी सेना से सम्पर्क लगभग टूट गया। ९वीं अप्रैल को लुडेनडोर्फ उत्तर की ओर घूमा। एक बार फिर

---

१. 'बॉक्स' के आकार की छोटी-छोटी खाइयाँ जिसमें तैनात सैनिक सुरंगों अथवा खाइयों द्वारा पीछे लौट सकते थे।—अनु०।

* संयुक्त-राज्य-अमरीका (United States) युद्ध में अप्रैल १९१७ में शामिल हो गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाग्य ने उसका उससे अधिक साथ दिया जितने की वह आशा कर सकता था। ब्रिटेन वाले लिस (Lys) से दस मील पीछे हाजेब्रुक (Hazebrouck) की ओर धकेल दिए गए और चैनल (Channel) के बन्दरगाहों को खतरा पैदा हो गया। तीसरा प्रहार शेमें दे दामे (Chemin-des-Dames) पर किया गया (२७वीं मई)। फ्रान्सीसी-ब्रिटिश सेनाएँ इस आक्रमण से स्तब्ध रह गईं और मार्ने की ओर धकेल दी गईं। अन्त में १५वीं जुलाई को लुडेनडोर्फ ने र्‌हीम्स् (Rheims) के दोनों ओर धावा बोला। इस बार मित्रराष्ट्रों ने, पहले से ही चेतावनी मिल जाने के कारण, रक्षा की एक लोचदार विधि अपनाई और शत्रु के अग्रसरण (advance) को अमर्यादित नहीं होने दिया। यह लुडेनडोर्फ की अन्तिम विजय थी। उसकी सामान्य सफलता उतनी महान् नहीं थी जितनी प्रतीत होती है। वह मित्रराष्ट्रीय मोर्चे (Allied front) को तोड़ने में असफल रहा और जर्मन सेना के दूर तक आक्रमण करने के कारण जर्मन मोर्चे में तीन विशाल कोण (salients) बन गए जो सरलता से आक्रम्य (vulnerable) थे। मित्रराष्ट्रीय प्रत्याक्रमण (counter-offensive) के लिए स्थिति परिपक्व हो गई थी।

जर्मन आक्रमणों के कारण मित्रराष्ट्रीय पक्ष में एक महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रिया हुई—सब देशों की सेनाओं में एक प्रधान सेनापति (single united command) पद की स्थापना। फॉक (Foch) को, जो आक्रमक-युद्धों का प्रतिपादक था, मित्रराष्ट्रीय सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति (supreme commander) मनोनीत किया गया (२६वीं मार्च)। उसके अधिकार यथार्थतः कम थे कागज पर अधिक, और उसे अपनी इच्छा को अपने सहायकों (subordinates) द्वारा मनवाने के लिए मुख्यतः समझाने-बुझाने पर निर्भर रहना होता था। वह अपनी तुलना 'ऑर्केस्ट्रा' (orchestra) के निर्देशक (conductor) से किया करता था। प्रारम्भ में संयुक्त-सेनापतित्व (united command) से स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। फॉक रक्षात्मक युद्धों में विशेष कीर्ति अर्जित नहीं कर सका और शत्रु द्वारा एक-के-बाद एक किए जाने वाले धावों का पूर्वानुमान करने और सफलतापूर्वक सामना करने में असमर्थ रहा। प्रारम्भ से ही वह प्रत्याक्रमण के लिए आरक्षित सैनिक जुटाने की चेष्टा में लग गया। ग्रीष्म ऋतु के मध्य, जब अमरीकी सैनिक बड़ी संख्या में पहुँचने शुरु हो गए, रक्षात्मक युद्ध का परित्याग व्यावहारिक हो गया और जब माँजें (Mangin) की १०वीं सेना (X. Army) ने मार्ने-कोण (Marne salient) के पश्चिमी पार्श्व पर आक्रमण किया तो पांसा पलटना प्रारम्भ हो गया। यद्यपि जर्मन सेना फन्दा कसे जाने के पूर्व ही बच निकलने में सफल हो गई, फिर भी यह तथ्य कि उसने नए प्रदेश जीतने के स्थान पर कुछ प्रदेश गवां दिए, मित्रराष्ट्रों के लिए नवजीवन प्रदान करने वाला टॉनिक सिद्ध हुआ। लेकिन लुडेनडोर्फ अविचलित रहा। वह अब भी यह मानता रहा कि पलड़ा उसी का भारी है और इसलिए उसने उत्तर में एक नए आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की तैयारी प्रारम्भ कर दी। लेकिन उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब एक ब्रिटिश सेना ने आमीन्स् (Amiens) के सम्मुख आगे बढ़ने में सफलता पाकर उसकी प्रगति रोक दी (८वीं अगस्त)। इस संग्राम में टैंकों ने शानदार भाग लिया। उनकी सहायता से पदाति-सेना शत्रु-पंक्ति में आठ मील तक घुस गई और २१,००० बन्दी बनाने में सफल रही। लुडेनडोर्फ ने इस घटना को "जर्मन सेना-अभाग्यपूर्ण दिन" बताया। वह अनावश्यक रूप से निराशावादी हो गया था। जर्मन सैनिक अब भी युद्धोत्साह से ओतप्रोत थे। लेकिन स्वयं लुडेनडोर्फ के अपने मन में कहीं कुछ टूट गया था। वह विजय प्राप्त करने में विश्वास खो बैठा था।

मित्रराष्ट्रीय पक्ष की दृष्टि से स्थिति ऐसी थी जिसमें लुडेनडोर्फ की युद्धनीति (strategy) का—शत्रु मोर्चे पर बारम्बार आघात करना—अनुकरण करना वाञ्छनीय प्रतीत हुआ। इस काल की शानदार सफलताओं में एक थी नई अमरीकी-अभियान-सेना (American Expeditionary Force) द्वारा सेंट मिथ्येल-कोण (St. Mithiel salient) पर अधिकार (१२वीं सितम्बर)। इसका सेनापति पेर्शिङ्ग (Pershing) अपनी विजय का लाभ उठा कर जर्मनों के पार्श्वस्थ रेलपथ (lateral railway) को काटते हुए मेट्ज (Metz) की ओर बढ़ना और जर्मन पार्श्व को घेर लेना चाहता था। लेकिन फॉक ने उसे समझा-बुझाकर इस योजना से (जिसके परिणामस्वरूप शायद जर्मनों का प्रतिरोध कुछ सप्ताह पूर्व ही समाप्त हो जाता) विमुख कर दिया जिससे वह आरा (Arras) और वर्दुन (Verdun) के मध्य स्थित जर्मन-कोण (German salient) पर किए जाने वाले आक्रमण में भाग ले सके। अमरीकियों को म्यूज-आर्गोने (Meuse Argonne) प्रदेश में लड़ना था, ब्रिटेन वालों को उत्तर की तरफ और फ्रान्सीसियों को मध्य में। यह महान् आक्रमण २६वीं सितम्बर को प्रारम्भ हुआ। दाहिनी ओर और मध्यवर्ती भाग में प्रगति बहुत मामूली रही, लेकिन बाईं ओर ब्रिटेनवालों ने कांब्रे (Cambrai) और सेंट कुएण्टिन (St. Quentin) के बीच हिण्डेनबर्ग-रेखा (Hindenburg Line) पर धावा बोल दिया। यह सफलता महत्त्वपूर्ण थी, यद्यपि इससे जर्मन प्रतिरोध की कमर नहीं टूटी। अन्तराल (gap) को शीघ्र आपूरित कर दिया गया। फिर भी हिण्डेनबर्ग-रेखा पर हुए आक्रमण से युद्ध का रुख बदल गया। इससे जर्मन मोर्चा तो नहीं टूटा, लेकिन एक और चीज़—लुडेनडोर्फ का मनोबल—अवश्य ही टूट गया। ३री अक्टूबर को उसने युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) के लिए प्रार्थना की। इसके उपरान्त जर्मन सैनिकों का रणोत्साह अपने मित्रों के द्रोह और देशवासियों के दुखों के समाचार मिलने के कारण बराबर कम होता गया। उन्हें बिना अवकाश के पीछे हटने के लिए मजबूर किया गया। जिस समय युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) पर हस्ताक्षर हुए (११वीं नवम्बर), वे घेण्ट (Ghent),

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेडन (Sedan) और वर्दुन (Verdun) होकर गुजरने वाली रेखा तक पीछे हट चुके थे। लेकिन यह तथ्य स्मरणीय है कि जर्मन सेना का मनोबल टूट जाने पर भी उसका मोर्चा भंग नहीं हुआ था। लुडेनडोर्फ से दृढ़तर निश्चय वाला कोई और व्यक्ति सेनाध्यक्ष रहा होता तो संघर्ष शायद एक वर्ष तक और चला होता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ११.

प्रथम विश्वयुद्ध, १९१४-१८—पूर्वी मोर्चा

टानेनबर्ग—युद्ध की घोषणा होने के बाद एक पक्ष (fortnight) के अन्दर ही रूसी सेनाएँ पूर्वी प्रशा (East Prussia) के लिए भय का कारण हो उठीं। यह अपेक्षया अकालपक्व (premature) पग फ्रान्सीसियों पर जर्मन दबाव कम करने के लिए उठाया गया था। दो उत्तरी सेनाओं को जिलिन्स्की (Jilinski) के सर्वोपरि सेनापतित्व (supreme command) में रख दिया गया। प्रथम सेना (I. Army) ने सीमा को रेन्नेन्काम्फ (Rennenkampf) के नेतृत्व में विल्ना (Vilna) की ओर से पार किया और दूसरी सेना (II. Army) ने साम्सोनोव (Samsonov) के अधिनायकत्व में वारसा (Warsaw) से उत्तराभिमुख प्रयाण किया।

श्लीफेन की योजनानुसार पूर्वी प्रशा की सेना में केवल चार सैन्य-दल (army corps) रखे गए थे। उनका सेनापतित्व प्रिट्टविट्ज़ (Prittwitz) के, जो एक नितान्त कल्पनाविहीन सैनिक था, हाथ में था। प्रिट्टविट्ज़ को पहले यही विचार आया कि वह विस्चुला (Vistula) की ओर लौट जाए, लेकिन उसके सहायकों ने प्रथम रूसी सेना (I. Russian Army) पर आक्रमण करने का आग्रह किया। उसने यह सुझाव मान लिया—परन्तु, प्रत्येक डिवीज़न को इस आक्रमण के लिए संकेन्द्रित करने के बजाय, साम्सोनोव पर दृष्टि रखने के लिए एक सैन्यदल (army corps) छोड़ दिया। परिणामस्वरूप जब जर्मनों की रेन्नेन्काम्फ से गुम्बीन्नेन (Gumbinnen) के युद्ध में मुठभेड़ हुई (२०वीं अगस्त), वे शत्रु से संख्या में न्यून रह गए और संग्राम का कोई निर्णय हुए बिना अन्त हो गया। उसी शाम प्रिट्टविट्ज़ ने सुना कि साम्सोनोव (Samsonov) ने प्रशा की सीमा पार कर ली है। भयातुर होकर उसने मोल्ट्क को टेलीफोन से सूचना दी कि वह अपनी सेना को विस्चुला की ओर ही नहीं वरन् उससे भी पीछे लौट आने का आदेश दे रहा है। मोल्ट्क ने यह निष्कर्ष निकाल कर (और उस का यह निष्कर्ष सही था) कि उसके सहायक का मनोबल टूट गया है उसके स्थान पर तत्काल हिण्डेनबर्ग को और उसके चीफ ऑव स्टाफ के रूप में लुडेनडोर्फ को नियुक्त कर दिया। इस प्रकार इस सुप्रथित जोड़ी (combination) का जन्म हुआ।

जब लुडेनडोर्फ पूर्वी प्रशा आया, उसने पाया कि जर्मन सेनाओं के प्रत्यागमन का आदेश रद्द कर दिया गया है। प्रिट्टविट्ज़ के स्टाफ के एक योग्य सदस्य हॉफ़मान (Hoffmann) ने अपने उच्चतर अफसर (प्रिट्टविट्ज़) को एक दूसरे संग्राम में भाग्य आज़माने के लिए राज़ी कर लिया था और दूसरी रूसी सेना (Russian II.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Army) पर आक्रमण की तैयारीस्वरूप गुम्बीन्नेन (Gumbinnen) स्थित तीनों सैन्य-दलों को साम्सोनोव के सामने भेजने की व्यवस्था कर ली थी। इस व्यवस्था में सुधार करना सम्भव नहीं था, इसलिए लुडेनडोर्फ ने उसे वैसे ही छोड़ दिया।

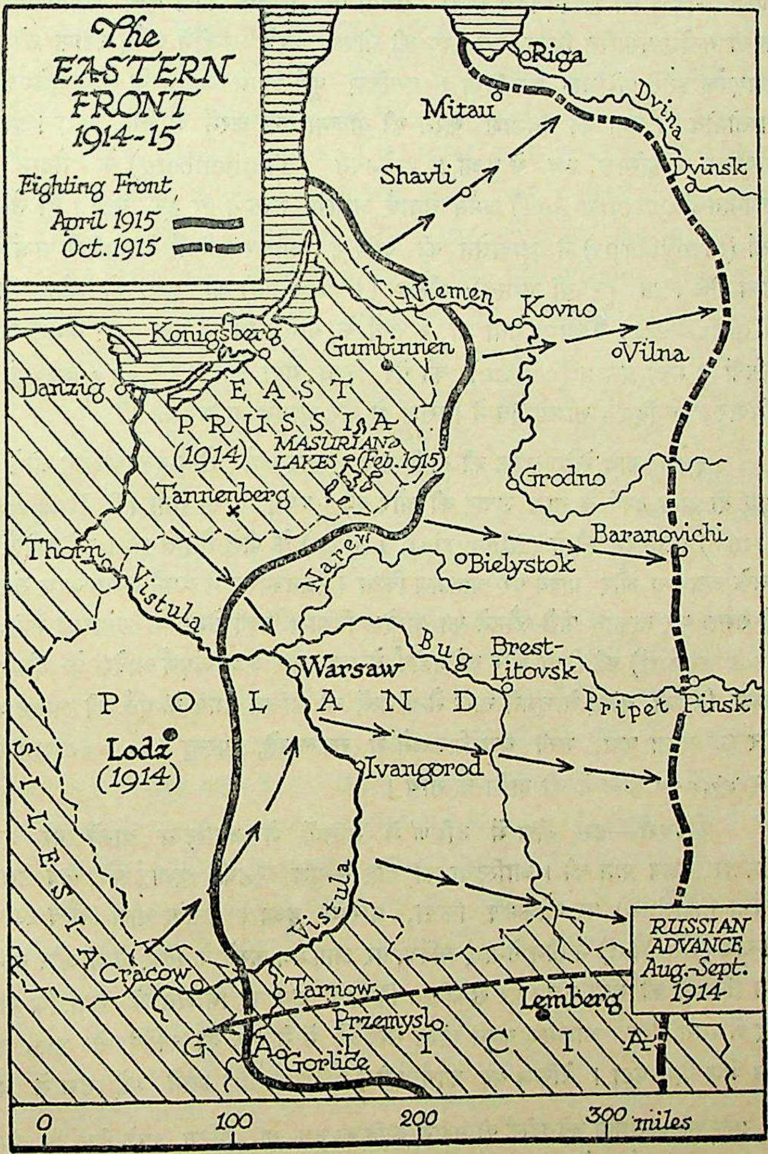

उधर रूसी हाईकमाण्ड इस भ्रम में पड़ा हुआ था कि जर्मन लोग पूर्ण प्रत्यागमन (full retreat) कर रहे हैं। जिलिन्स्की (Jilinski) साम्सोनोव पर तेज़ी से आगे बढ़ने और गुम्बीन्नेन के संग्राम से पलायित जर्मनों को मार्ग में ही रोक देने के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए बराबर दबाव डालता रहा, जबकि रेन्नेन्काम्फ को मन्दगति से अग्रसरित होने को कहा गया जिससे उसके कारण पराजित जर्मन पीछे लौटने में शीघ्रता करने के लिए विवश न हो जाएँ। इस परिस्थिति में दोनों सेनाओं का सम्मिलन असम्भव था और, सांकेतिक-भाषा का प्रयोग किए बिना रेडियो पर, जिसके द्वारा रूसी सेनापतियों ने अपना सन्देश प्रसारित किया, इस तथ्य की घोषणा करके उन्होंने जर्मन स्टाफ को भी कृपापूर्वक इससे परिचित कर दिया। इसलिए पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ लुडेनडोर्फ साम्सोनोव की सेना का विनाश करने की योजना पूरी करने में लग गया। प्रहार अत्यधिक आकस्मिक रूप से हुआ। टानेनबर्ग (Tannenberg) के मैदान में संकेन्द्रित (concentrated) जर्मन सेनाएँ अभागे रूसियों पर टूट पड़ी। दो सैन्य-दलों (armycorps) ने गुम्बीन्नेन की ओर से आकर रूसियों के दाहिने पार्श्व पर धावा बोल दिया (२६वीं अगस्त); फ्राँस्वा (Francois) का दल, जो कोनिग्स्बर्ग (Konigsberg) से लाया गया था, रूसियों के बाएँ पार्श्व में घुस गया; अगले दिन रूसियों के मध्य प्रभाग (centre) को घेर लिया गया और ९२,००० बन्दियों ने हथियार डाल दिए। साम्सोनोव ने निराश हो कर आत्महत्या कर ली।*

इसके बाद रेन्नेनकाम्फ की बारी आई। चार जर्मन सैन्य-दल पश्चिमी मोर्चे से आए दो अन्य दलों के साथ उत्तर की ओर बढ़े। प्रथम रूसी सेना (I. Russian Army) मसूरियन झीलों (Masurian Lakes) के पीछे तैनात थी। लुडेनडोर्फ ने उसके अग्रभाग और पार्श्व पर आक्रमण किया। रेन्नेनकाम्फ ने अपने ऊपर आए संकट को समझ कर तत्काल पीछे लौटने का आदेश दिया। रूसी सेना के पृष्ठारक्षी सैनिकों (rear guard) की निष्ठा और लुडेनडोर्फ के एक और अभाग्यपूर्ण आदेश के परिणाम स्वरूप, जिसकी वजह से घूमने वाले सैन्य दलों को उचित समय के पूर्व ही अन्दर की ओर मुड़ जाना पड़ा, रूसी बच निकलने में सफल रहे, परन्तु १००,००० हताहतों और ४५,००० बन्दियों की हानि के साथ।

लेम्बर्ग—इस बीच में दक्षिण में रूसियों ने आस्ट्रिया वालों पर एक शानदार विजय प्राप्त की। आस्ट्रिया की दृष्टि से युद्ध २८वीं जुलाई को, जब उसने सर्बिया (Serbia) पर आक्रमण किया, प्रारम्भ हुआ। उसके चीफ ऑव स्टाफ कोन्राड (Conrad) ने तीन सेनाएं सर्बिया पर आक्रमण करने के लिए भेजीं और अन्य तीन सेनाओं को रूसी सीमा पर संकेन्द्रित किया। जब यह निश्चित हो गया कि रूस युद्ध में भाग लेगा, आक्रमण करने वाली सेनाओं में से एक को सर्बिया से उत्तर की ओर भेज देना पड़ा। लेकिन यह कार्यवाही (operation) इतने भद्दे ढंग से की

* टानेनबर्ग का संग्राम लुडेनडोर्फ की महान कीर्ति का मूल था, लेकिन इसके लिए वह अपने सहायकों (subordinates) का बहुत ऋणी था—होॅफ़मान (Hoffmann) का, जिसने संग्राम की प्रारम्भिक योजना बनाई, और फ्राँस्वा (Francois) का जिसने लुडेनडोर्फ के एक ऐसे आदेश की अवहेलना कर दी जिसके कारण उसे अन्दर की ओर बहुत शीघ्र घूम जाना और रूसियों को भाग निकलने का अवसर देना पड़ता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गई कि यह सेना न उत्तर की लड़ाई में भाग ले सकी और न दक्षिण की लड़ाई में। इसके परिणामस्वरूप सर्बिया पर किया आक्रमण विफल रहा और आस्ट्रियायी सेनाएं गेलिशिया (Galicia) में पराजित हो गई।

उत्तर में, यद्यपि आस्ट्रिया वालों को तीन सेनाओं के साथ रूसियों की चार सेनाओं का सामना करना था, कोन्राड ने आक्रमण करने का निश्चय किया। उसकी योजनानुसार आस्ट्रिया की दो सेनाओं को उत्तर की ओर धावा बोलना था, और तीसरी को लेम्बर्ग (Lemberg) के सामने उनके पार्श्व की रक्षा करनी थी। यह विचित्र बात है कि रूसियों की योजना इससे बिल्कुल उल्टी थी। मुख्य आक्रमण दो सेनाओं को पश्चिम में लेम्बर्ग की ओर बढ़कर करना था, जब कि शेष दो को उत्तर की ओर से आकर आस्ट्रियायी सेना के उस भाग पर धावा बोलना था जिसे वे उसका बाँया बाज़ू समझते थे (वस्तुतः यह उसका अग्रभाग था)। इसके बाद २३वीं अगस्त से १२वीं सितम्बर तक जो संग्राम लड़ा गया वह गडबड़ियों से परिपूर्ण था। आस्ट्रिया का उत्तराभिमुख धावा और रूसियों का दक्षिणाभिमुख आक्रमण, दोनों सफल रहे। संग्राम का निर्णय इस बात पर निर्भर था कि किस सेना पर उसके एक बाज़ू की हतोत्साह करने वाली पराजय की प्रतिक्रिया पहले होगी। इसमें हार आस्ट्रिया वालों को माननी पड़ी क्योंकि सर्बिया से भेजी गई बलवर्धक सेना के देर से पहुँचने के कारण वे बहुत कठिनाई का अनुभव कर रहे थे।

लोड्ज़—रूसी हाईकमाण्ड ने अपनी इस सफलता के बाद शत्रु पर दूसरा प्रहार करने के लिए साइलेशिया (Silesia) पर आक्रमण करने का निश्चय किया, और चार रूसी सेनाएं लेम्बर्ग (Lemberg) से वारसा (Warsaw) के मोर्चे पर भेज दीं। कोन्राड द्वारा साहाय्यित लुडेनडोर्फ ने पश्चिमी मोर्चे से बलवर्धक सैन्य भेजने के लिए बहुत दबाव डाला, लेकिन नए चीफ ऑव स्टाफ फाकेनहेन (Falkenhayn) ने य्प्रेस (Ypres) के प्रथम संग्राम में बुरी तरह उलझे होने के कारण इस बात को अस्वीकृत कर दिया। इसलिए उसे आक्रमण का सामना उतनी ही सैन्य-शक्ति के साथ करना पड़ा जितनी उस समय पूर्वी मोर्चे पर तैनात थी। लुडेनडोर्फ ने बहुत स्फूर्ति से कार्य किया। उसने पूर्वी प्रशा से चार सैन्य-दल (corps) पोसेन-क्रॉको रेखा (Posen-Cracow line) की ओर रेलमार्ग द्वारा भेज दिए और वारसा पर आक्रमण किया। स्पष्टतः चार जर्मन सैन्य-दल (corps) चार रूसी सेनाओं (armies) के बराबर नहीं हो सकते थे, इसलिए यह धावा विफल रहा। लेकिन इसके तत्काल बाद लुडेनडोर्फ ने अपनी सेना पोसेन-थोर्न रेखा (Posen-Thorn line) की ओर घुमा दी और रूसियों के पार्श्व पर आक्रमण किया। एक सप्ताह से अधिक तक (१५वीं से २४वीं नवम्बर) लोड्ज़ (Lodz) के आस-पास अव्यवस्थित रूप से युद्ध होता रहा। सेना के संख्या में कम होने के कारण लुडेनडोर्फ निर्णायक विजय तो प्राप्त नहीं कर सका परन्तु उसने रूसियों को इतना परेशान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवश्य कर दिया कि उन्होंने साइलेशिया (Silesia) पर आक्रमण की योजना त्याग दी और वारसा लौट गए।

मेसूरिया का शीतकालीन युद्ध—युद्ध की इस अवस्था में 'जर्मन ग्रेट हेडक्वार्टर्स्' (German Great Headquarters) में एक विवाद उत्पन्न हो गया। जर्मनी का अगला प्रहार किस मोर्चे पर हो? लुडेनडोर्फ, जिसका कोन्राड ने पुनः समर्थन किया, उस क्षेत्र मे दिलोजान लगाकर युद्ध करना चाहता था जहाँ उसे इतनी महत्त्वपूर्ण सफलताएँ मिली थीं। इसके विपरीत फाकेनहेन पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध करने में विश्वास रखता था, और ब्रिटिश मोर्चे पर एक विशाल आक्रमण करने की योजना बना रहा था। अन्त में इस प्रश्न को क़ैसर[1] के सामने निर्णय देने के लिए रखा गया, और सर्वोच्च युद्धाधिपति (Supreme War Lord) ने अपना फैसला पूर्वी आक्रमण के पक्ष में दिया। तत्काल चार सैन्य-दलों को पश्चिम से पूर्व भेज दिया गया और लुडेनडोर्फ ने रूसियों को घेरने की एक बहुत बड़ी योजना बनानी शुरू कर दी। जर्मन सेनाओं को प्रशा से दक्षिण की ओर धावा बोलना था और आस्ट्रियायी सेनाओं को गेलिशिया (Galicia) से उत्तर की ओर। इस प्रकार रूसियों को इन दोनों के मध्य पोलैण्ड के कोण (salient) में घेर लेने की योजना बनाई गई। यह आकांक्षापूर्ण योजना कार्यान्वित किए जाते समय असफल हो गई। उत्तर में, मेसूरियन झीलों (Masurian Lakes) के समीप लड़े गए भयंकर शीतकालीन संग्राम (७वीं से २१वीं फरवरी) में जर्मनों ने एक रूसी सेना का विनाश कर दिया और १००,००० सैनिकों को बन्दी बनाया। लेकिन शत्रु का मोर्चा अखण्डित रहा और दक्षिण में आस्ट्रियायी सेनाओं को रोके रखा गया। इस प्रकार रूसियों को घेरने के लिए बनाई गई योजना पूर्णतः विफल हो गई।

पोलैण्ड का युद्ध—लुडेनडोर्फ की युद्धनीति (strategy) के असफल हो जाने से फाकेनहेन (Falkenhayn) की पश्चिमी मोर्चे पर आक्रमण की योजना पुनः स्वीकृत हो जाने की आशा थी। परन्तु इस बीच में नवीन घटनाओं के कारण चीफ ऑव स्टाफ के विचारों में कुछ परिवर्तन हो गया। जर्मनी का मित्र टर्की (Turkey)* दर्देदानियाल (Dardanelles) पर ब्रिटिश आक्रमण के कारण संकटग्रस्त हो गया था, और बल्कान प्रदेश (Balkans) में कुछ लघु देश जर्मनी के प्रति संदिग्ध रुख अपना रहे थे। यद्यपि फाकेनहेन को अब भी यही विश्वास था कि युद्ध में विजय पश्चिमी मोर्चे पर ही मिलेगी, तथापि वह यह मान गया कि पूर्व में कुछ प्रारम्भिक कार्यवाहियों (preliminary operations) की आवश्यकता है। टर्की की जर्मनी के प्रति निष्ठा (loyalty) बनाए रखने के लिए उसके और जर्मनी के

१. जर्मन सम्राट् की उपाधि क़ैसर (Kaiser) थी और रूसी सम्राट् की 'ज़ार' (Czar)। ये दोनों उपाधियां रोमन सम्राट् की उपाधि 'सीज़र' से (जो मूलतः एक सुविख्यात सेनापति का नाम था) व्युत्पन्न हुई हैं।—अनु०।

* टर्की अक्टूबर १९१४ में जर्मनी से मिल गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीच सीधा सम्पर्क बनाए रखना आवश्यक था, और इसके लिए सर्बिया पर, जो अब तक अस्ट्रियायी सेनाओं के धावों का सफल प्रतिरोध करता आया था, पूर्णरूपेण अधिकार कर लेना अपरिहार्य था। परन्तु सर्बिया पर आक्रमण रूस को एक घातक प्रहार द्वारा कुचल डालने के उपरान्त करना ही निरापद होता। इसलिए फाकेनहेन ने पोलैण्ड पर एक विशाल आक्रमण करने की योजना बनाई।

उसकी विजय युद्ध में जर्मनी द्वारा प्राप्त सबसे बड़ी विजय थी। इस आक्रमण के लिए डुनाजेट्ज़ नदी की रेखा (Line of the Dunajetz River) का टारनो (Tarnow) और गोर्लिस (Gorlice) के मध्य स्थित भाग चुना गया। इस स्थल के दूसरी ओर एक नई जर्मन सेना द्रुत गति से एकत्र की गई, और २री मई को इन अग्रगामी (spearhead) सैनिकों ने एक प्रचण्ड धावे के बाद रूसी मोर्चे को पूर्णत: भंग कर दिया। उनकी इस विजय का मुख्य कारण रूसियों के पास शस्त्रास्त्र का अभाव था। तोपें, गोलों, राइफिलों, मशीनगनों और स्फोटास्त्र (ammunition)—इन सभी की कमी के कारण रूसी रक्षक सैनिक भेड़ों की तरह काट डाले गए। तदनन्तर पूर्व की ओर मुड़कर अग्रगामी सैन्य ने गेलिशिया में रूसियों के पृष्ठभाग को जा दबोचा, जबकि शत्रु मोर्चे के अन्य भागों पर दु:सह्य आघात किए जाते रहे। शीघ्र ही उत्तर से लेकर दक्षिण तक समस्त रूसी सैन्य-पंक्ति पीछे हटने लगी। पूरी ग्रीष्म ऋतु भर यह प्रत्यावर्तन जारी रहा, और जब यह शरत्काल में रुका सारा पोलैण्ड जर्मनों के हाथ में जा चुका था। जर्मनों की इस अतुलनीय सफलता में केवल एक कमी रही, और वह थी उनकी रूसी सेना को घेर लेने में असमर्थता। यह दोष फाकेनहेन (Falkenhayn) का था। लुडेनडोर्फ ने शत्रु को घेरने के लिए चौड़ा परिवृत्त (circle) बनाने का प्रस्ताव रखा था, परन्तु फाकेनहेन ने, जो रूसी प्रदेश में अधिक दूर तक जाने का इच्छुक नहीं था, शत्रु को घेरने वाली सेना (pincer) का फैलाव (sweep) कम कर दिया जिससे रूसी सेना बचकर निकल गई[1]। भाग्य से हुए इस निस्तार (escape) के बावजूद रूसियों के लगभग दस लाख सैनिक पकड़े गए। उनकी लड़ने की क्षमता लगभग उपायातीत रूप से समाप्त हो गई, और इसके बाद वे युद्ध के महत्त्वपूर्ण सहभागी नहीं रह गए।

पोलैण्ड के युद्ध से सर्बिया का विनाश भी सुनिश्चित हो गया। बुल्गारिया (Bulgaria) उसके विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हो गया और उसके प्रदेश को चार आस्ट्रियायी-जर्मन (Austro-German) तथा बुल्गारी (Bulgarian) सेनाओं ने रौंद डाला। सर्बिया की सेना का अवशिष्ट भाग अल्बानियनी (Albanian) पर्वतों को पार करके समुद्र तट की ओर भाग गया, जहाँ से उसे जलपोत द्वारा कोर्फु (Corfu) और बाद में उस सेना में सम्मिलित होने के लिए भेज दिया गया

१. अपने रूसी आक्रमण में नेपोलियन की सेना को उस देश में बहुत अन्दर तक घुस जाने और शीत ऋतु प्रारम्भ हो जाने के कारण जिन संकटों का सामना करना पड़ा था, उन्हें दृष्टि में रखते हुए फाकेनहेन की यह हिचकिचाहट अनुचित प्रतीत नहीं होती।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिसे मित्रराष्ट्र (Allies) यूनान पर दबाव डालने के लिए सेलोनिका (Salonika) में एकत्र कर रहे थे।

ब्रुसीलोव का आक्रमण—यह समाप्तप्राय: रूसी सेना का अन्तिम उपद्रवजनक प्रयास था। इटली पर किए जाने वाले आक्रमण के कारण १९१६ की ग्रीष्मऋतु में आस्ट्रियायी मोर्चे पर बहुत कम सेना रह गयी। इससे दक्षिण में रूसी सेनाओं के अध्यक्ष ब्रुसीलोव को आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहन मिल गया। आस्ट्रिया वाले, जिन्हें इस आक्रमण के होने का कोई अनुमान तक न था, आश्चर्य से अभिभूत रह गए और पचास मील पीछे धकेल दिए गए। उनके ३५०,००० सैनिक भी बन्दी कर लिए गए। रूसियों को यह आशा होने लगी कि वे आस्ट्रियायी मोर्चे को पूर्णतः भंग कर देंगे। लेकिन रूसी रेलपथों के दोषपूर्ण होने के कारण उत्तर से आरक्षित सैनिक (reserves) बहुत देर से पहुँचे और जर्मन बलवर्धक सेना ने पुनः पूर्व-स्थिति प्राप्त कर ली। सफलता की इस अन्तिम टिमटिमाहट के लिए रूसियों को १००,००० हताहतों का मूल्य देना पड़ा। सम्भवतः एक पराजय और हो जाने पर भी उनकी सैन्य-शक्ति को इतना बड़ा धक्का नहीं लगता।

ब्रुसीलोव के इस आक्रमण का एक और दुष्परिणाम हुआ। इससे रूमानिया (Rumania) को मित्रराष्ट्रों के साथ मिल जाने का लोभ पैदा हुआ जो उसके विनाश का कारण बना। इस छोटे से देश ने अपने को एक विशाल जर्मन आक्रमण के विरुद्ध अकेले संघर्ष करता हुआ पाया। सेलोनिका स्थित मित्रराष्ट्रीय सेना उसे कोई सहायता नहीं दे सकी। उसे बुल्गारिया वालों ने रोके रखा। रूसियों ने उत्तर की ओर से दबाव डाला, परन्तु कार्पेथियन पर्वतमाला के कारण असफल रही। इस बीच रूमानिया को फाकेनहेन (Falkenhayn) और माकेनसेन (Mackensen) के नेतृत्व में दो जर्मन सेनाओं ने रौंद डाला, और छिन्न-भिन्न रूमानियनी सेनाएं मोल्डेविया (Moldavia) हट गईं। शेष देश ने 'सेण्ट्रल पावर्स' (Central Powers) के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दिया[१]।

पूर्वी मोर्चे का पतन—मार्च १९१७ में क्रान्ति प्रारम्भ हो जाने के बाद रूस ने युद्ध में सक्रिय भाग लेना बन्द कर दिया, यद्यपि कई माह तक उदासीनता पूर्वक लड़ाई की जाती रही और युद्ध-विराम-सन्धि पर दिसम्बर तक हस्ताक्षर नहीं किए गए। उत्तरी मित्र अर्थात् रूस द्वारा साथ छोड़ देने पर रूमानिया को भी अपने हथियार डाल देने पड़े। 'निकट पूर्व' (Near East) में मित्रराष्ट्रों का एक मात्र सीमा-निवेश (outpost) सेलोनिका रह गया जहाँ ४००,००० आदमियों का एक रक्षक-दल (garrison) तैनात था। जर्मनों ने इस दल को उलझाए रखने का भार बुल्गारिया वालों पर छोड़ दिया। वे सेलोनिका को अपना सबसे विशाल अन्तरारोध-शिविर (internment camp) कहते थे। इस मोर्चे पर सक्रिय कार्यवाही (active

---

१. यूरोप के मध्य स्थित होने के कारण जर्मनी और आस्ट्रिया 'सेण्ट्रल पावर्स' कहे जाते थे।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

operation) युद्ध समाप्त होने के कुछ सप्ताह पूर्व तक पुनः आरम्भ नहीं हो सकी। सितम्बर २५, १९१८ को मित्रराष्ट्रीय सेना अग्रसरित हुई और युद्धक्लान्त बुल्गारियनों ने एक पखवाड़े में ही युद्ध-विराम-सन्धि की याचना कर दी। यह जर्मनी की सुदीर्घ संग्राम रेखा (far-flung battleline) में प्रथम उत्क्रमण (breach) था, लेकिन इसे एक भारी मूल्य चुका कर—मित्रराष्ट्रीय पक्ष के पाँच लाख सैनिकों को दो वर्ष तक निश्चल रख कर—प्राप्त किया गया था।

युद्ध के कुछ गौण संग्राम—(अ) इटालवी मोर्चा : इटली के युद्ध में प्रविष्ट होने (मई, १९१५) से मित्रराष्ट्रीय पक्ष को विशेष अतिरिक्त-शक्ति उपलब्ध नहीं हुई। उसकी सेना निम्नकोटि की थी और सैनिक संगठन अत्यन्त दोषपूर्ण। आस्ट्रिया, जो स्पष्टतः उसका प्रधान प्रतिस्पर्द्धी था, एक दुर्जेय पर्वत-प्राचीर द्वारा सुरक्षित था। केवल पूर्व में आइसोञ्जो (Isonzo) में आक्रमण करने योग्य मैदान था। पहले दो वर्ष तक इटली के युद्ध सम्बन्धी प्रयत्न इस क्षेत्र में एक के बाद एक—कुल मिला कर ग्यारह—असफल आक्रमण करने तक सीमित रहे। आस्ट्रिया वाले संख्या मे शत्रु से बहुत कम रहने के बावजूद सभी हमलों को विफल करते रहे। इतना ही नहीं, कभी-कभी वे स्वयं भी आक्रमण कर देते थे। इसके बाद १११७ की पतझड़ मे इटालवी सेना को दुर्भाग्य का सामना करना पडा। लुडेनडोर्फ ने विजय रूपी टॉनिक द्वारा आस्ट्रिया वालों का मनोबल बढ़ाने का निश्चय किया। छः चुने हुए जर्मन डिवीज़न इटालवी मोर्चे पर भेज दिए गए, और इन तूफानी सैनिकों ने इटालवी सैन्य-पंक्ति को कापोरेट्टो (Caporetto) के समीप भेद दिया (२२वीं अक्टूबर)। इटालवी सेना का उत्तरी पार्श्व पराजित हुआ और अव्यवस्थितावस्था में पियावे (Piave) लौट गया। यहाँ ब्रिटिश और फ्रान्सीसी बलवर्धक-दलों ने सैन्य-पंक्ति को स्थिर किया। युद्ध के अन्तिम सप्ताहों में एक संयुक्त आँग्ल-इटालवी सेना ने विट्टोरियो-वेनेटो (Vittorio Veneto) की ओर घुस कर विह्वसित (depleted) आस्ट्रियायी सेनाओं को दो भागों में बाँट दिया और उन्हें युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) की प्रार्थना करने के लिए विवश कर दिया। तब तक (नवम्बर ४, १९१८), इटली वाले, जो अपने ६००,००० सैनिक हताहत हो जाने के कारण निर्बल हो गए थे, प्रतिरक्षात्मक (defensive) स्थिति में युद्ध करते रहे।

(ब) गेल्लिपोली : गेल्लिपोली[1] (Gallipoli) पर आक्रमण टर्की को युद्ध से निकाल बाहर करने और कृष्ण सागर (Black Sea) के मार्ग से रूस और उसके पश्चिमी मित्र-देशों के बीच सम्पर्क स्थापित करने के दोहरे उद्देश्य से किया गया था। दर्देदानियाल (Dardanelles) में नौ-सैन्य-शक्ति के प्रदर्शन के साथ इस कार्यवाही को प्रारम्भ किया गया (फरवरी और मार्च, १९९५), लेकिन जब तीन युद्धपोत

१. 'गेल्लिपोली' ईजियन समुद्र के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित एक प्रायद्वीप (peninsula) का नाम है। इस प्रायद्वीप में स्थित एक स्थल विशेष को भी 'गेल्लिपोली' कहा जाता है। प्रथम महायुद्ध के समय यह टर्की के अधिकार में था।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(warships) निस्फोटों (mines) द्वारा डुबो दिए गए तो उस एडमिरल (Admiral) ने, जो उस समय नौ-सेना का नेतृत्व कर रहा था, यह घोषित कर दिया कि सैनिकों (troops) की सहायता के बिना जलडमरूमध्य (straits) पर अधि-

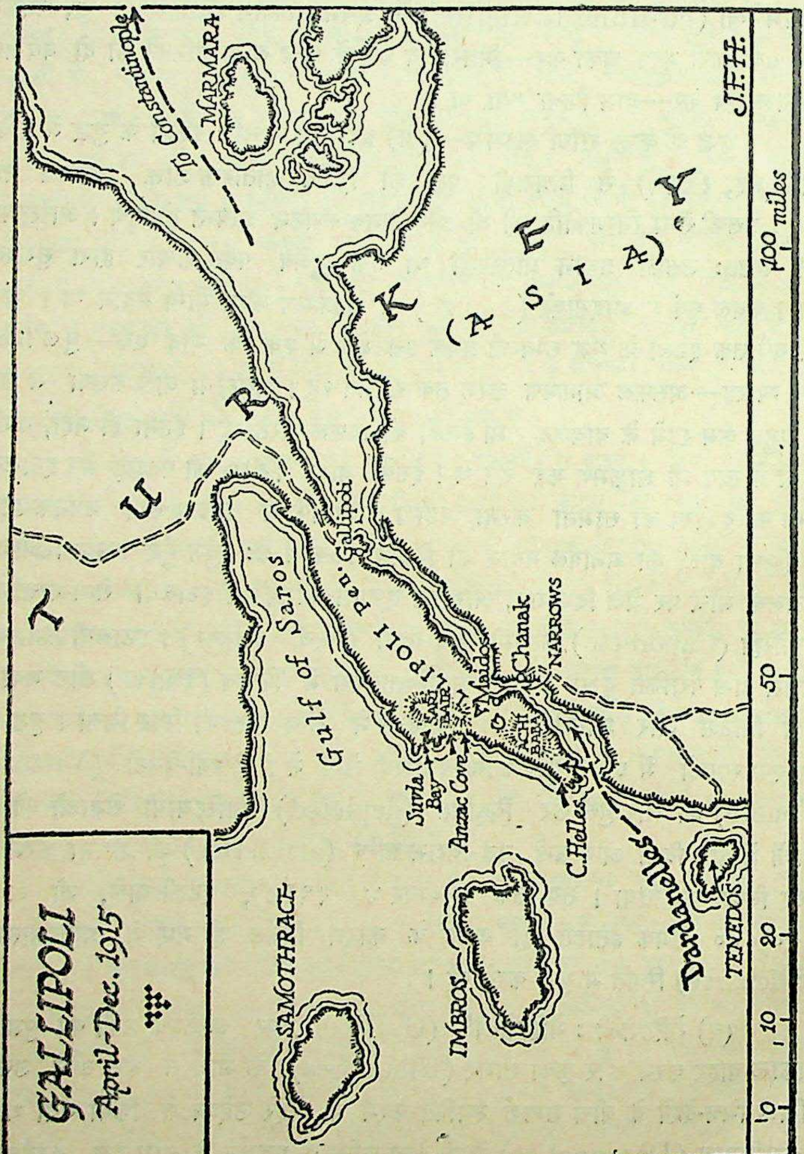

कार नहीं किया जा सकता। इसके परिणामस्वरूप पूर्वी भूमध्यसागर (Eastern Mediterranean) में एक अभियान-सेना (expeditionary force) संग्रहीत की गई और उस का नेतृत्व सर इयान हेमिल्टन (Sir Ian Hamilton) को सौंप दिया गया। अब टर्की वाले सावधान हो गए और द्रुत गति से प्रायद्वीप को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुरक्षित करने और उसके रक्षक-दल (garrison) को बढ़ाने की चेष्टा में लग गए। शत्रु की तुलना में ब्रिटेन वाले संख्या में कुछ कम थे—८४,००० की तुलना में ७५,०००—लेकिन, दूसरी ओर टर्की वालों को समस्त समुद्रतटीय-रेखा (coastline) की रक्षा का प्रबन्ध करना था जिसके लिए उन्हें अपने सैनिकों को दूर तक फैलाना आवश्यक था। बहरहाल, हेमिल्टन ने प्रायद्वीप के छोर पर आक्रमण किया (२५वीं अप्रैल) और दो स्थलों पर अपने सैनिक उतार दिए; लेकिन उसके सहायक सेनापति तेज़ी से आगे नहीं बढ़ पाए और तुर्क (Turks) प्रतिरक्षा के हेतु संकेन्द्रित होने में सफल हो गए। उनकी सुरक्षित (fortified) स्थितियों के विरुद्ध आगे प्रगति करना असम्भव था। ९वीं अगस्त को बलवर्धक सैन्य आ जाने के उपरान्त हेमिल्टन ने और उत्तर की ओर 'सुव्ला की खाड़ी' (Suvla Bay) के समीप सेना उतारने का पुनः प्रयास किया। सैनिकों को तट पर उतार देने की कार्यवाही सफलतापूर्वक सम्पन्न कर दी गई, लेकिन इस बार फिर अधीनस्थ सेनापति द्रुतगति से आगे नहीं बढ़े और तुर्कों को संकटग्रस्त स्थल तक बलवर्धक सैन्य-दल भेजने का समय मिल गया। ब्रिटिश सैनिकों ने अपने को एक बार पुनः सुरक्षित परिखा-रेखा (fortified trench line) द्वारा रोक दिया गया पाया। सुव्ला के उपरान्त और आक्रमण करने की चेष्टा नहीं की गई। ब्रिटिश सरकार को इस संघर्ष में कोई रुचि नहीं रह गई और उसने और अधिक बलवर्धक सेना (reinforcements) भेजना अस्वीकृत कर दिया। इस परिस्थिति में वहाँ रुके रहना व्यर्थ था, इसलिए वर्ष के अन्त में सेना को यह प्रदेश पूर्णतः खाली करने का आदेश दे दिया गया।

(स) मेसोपाटामिया : यहाँ लड़ाई का उद्देश्य फारस की खाड़ी (Persian Gulf) के समीप स्थित तेल के कुओं (oil wells) की रक्षा करना था। उनकी सुरक्षा उस समय सुनिश्चित हो गयी जब नवम्बर १९१४ में बसरा (Basra) पर अधिकार कर लिया। इसके बाद और अधिक आक्रमक कार्यवाही की आवश्यकता नहीं रह गई। लेकिन जब टाउनशेण्ड (Townshend) ने कुट (Kut) नामक नगर पर केवल एक ही डिवीजन की सहायता से अधिकार कर लिया (अगस्त, १९१५) तो ब्रिटिश सरकार को अधिक महत्त्वपूर्ण शिकार मारने का लोभ हो आया। फलस्वरूप टाउनशेण्ड को बग़दाद (Baghdad) पर हमला करने का अधिकार दे दिया गया। लेकिन उसकी सेना अपर्याप्त थी, और टेसिफोन (Ctesiphon) में बाधा पाने के उपरान्त वह कुट (Kut) लौट आया जहाँ उसे घेर लिया गया और आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया गया (अप्रैल २९, १९१६)।

इस गतिरोध का सबसे बुरा परिणाम यह हुआ कि इसके कारण ब्रिटेन मेसोपोटामिया में आक्रमक कार्यवाही करने के लिए अनावश्यक रूप से बाध्य हो गया। टाउनशेण्ड के आत्म-समर्पण के कारण हुए अपमान को दूर करने के लिए कुछ न कुछ करना अनिवार्य था। इसलिए एक विशाल आँग्ल-भारतीय (Anglo-Indian) सेना ने मोॅड (Maude) के नेतृत्व में दजला नदी (Tigris) के किनारे-किनारे उत्तर की ओर व्यवस्थित रूप से अग्रसरण (methodical

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

advance) प्रारम्भ किया (दिसम्बर, १९१६)। तुर्कों को पराजित करने के उपरान्त यह बग़दाद पहुँच गई और उस पर अधिकार कर लिया (मार्च १०, १९१७)। युद्ध के अन्तिम सप्ताहों में यह और आगे बढ़ कर मोसुल (Mosul) पहुँच गई। यह शानदार परन्तु सर्वथा अलाभकर विजयें थीं जिनसे युद्ध पर कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा। मेसोपोटामिया के अभियान (Mesopotamian campaign) से हानि यह हुई कि इसमें उन सैनिकों को व्यस्त करना पड़ा जिनका अन्यत्र, इससे बहुत अधिक लाभदायक रूप में, प्रयोग किया जा सकता था। तेल की कुओं की सुरक्षा सुनिश्चित होते ही ब्रिटिश सेना को नितान्त प्रतिरक्षात्मक स्थिति में रह कर लड़ना चाहिए था।

(द) फिलिस्तीन : टर्की के युद्ध में प्रवेश करते ही स्वेज़ नहर (Suez Canal) पर होने वाले आक्रमणों का सामना करने के मिस्र (Egypt) में विशाल ब्रिटिश सेनाएँ रखना आवश्यक हो गया। एक बड़े हमले का निवारण १९१५ में किया गया और एक अन्य आक्रमण की आशंका गेल्लिपोली की असफलता के उपरान्त उत्पन्न हो गई। ब्रिटिश कमाण्ड ने इस सम्भव प्रहार के पूर्व ही फिलिस्तीन अथवा पेलेस्टाइन (Palestine) पर आक्रमण करने का निश्चय किया। सर आर्किबाल्ड मुरे (Sir Archibald Murray) धीरे-धीरे सिनाई रेगिस्तान (Sinai Desert) को पार करता हुआ आगे बढ़ा। उसकी प्रगति उसके आगे-आगे रेलपथ (railway) और पाइप लाइन (जल के लिए) के निर्माण पर निर्भर थी। तुर्कों को कई संग्रामों में पराजित करने के बाद वह पेलेस्टाइन के द्वार गाज़ा (Gaza) और बीयरशेबा (Beersheba) के सामने रोक दिया गया (अप्रैल, १९१७)। वर्ष के अन्त में एलनबाई (Allenby) के नेतृत्व में अत्यधिक आवर्धित (augmented) सेना ने पुनः अग्रसरण प्रारम्भ किया। गाज़ा पर आक्रमण करने का दिखावा करके उसने बीयरशेबा (Beersheba) पर अधिकार कर लिया। फाकेनहेन ने, जो इस समय तुर्की सेनाओं का नेतृत्व कर रहा था, उतावले होकर प्रत्याक्रमण किया, परन्तु उसके आदमी इस कार्य को पूर्ण करने में असमर्थ रहे और उसके मध्यभाग (centre) में अन्तराल (gap) उत्पन्न हो गया। ब्रिटिश सेना ने प्रचण्ड आक्रमण करके जंक्शन स्टेशन को (जहाँ से येरुशलम लाइन मुख्य लाइन से फटती है) हस्तगत कर लिया और तुर्की सेना को दो भागों में बाँट दिया। दाहिनी ओर घूम कर एलनबाई येरुशलम (Jerusalem) की ओर ओर बढ़ा और उस पर विना किसी कठिनाई के अधिकार कर लिया (९वीं दिसम्बर)।

आगामी शरद्-ऋतु में तुर्की सेना को मेगिड्डो (Megiddo) के संग्राम में विनाशकारी पराजय (सितम्बर १९, १९१८) भोगनी पड़ी। सैनिकों को अपनी बाईं ओर जाफा (Jaffa) और जूडा की पहाड़ियों (Judean hills) के मध्य गुप्त रूप से संकेन्द्रित करके एलनबाई शत्रु की सैन्य-पंक्ति को पूर्णरूपेण भेदने में सफल हो गया। उसकी अश्वारोही सेना ने जोर्डन (Jordan) नदी के पश्चिम में दो तुर्की सेनाओं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के पृष्ठभाग पर धावा बोल दिया। नदी के पूर्व में एक तीसरी तुर्की सेना ने व्यवस्थित रूप से प्रत्यागमन प्रारम्भ किया, लेकिन लॉरेन्स (Lawrence) और उसके अरब सैनिकों द्वारा पकड़ ली गई। और आगे बढ़कर अश्वारोही सेना और अरब सैनिकों ने दमिश्क (Damascus) और अलेप्पो (Aleppo) को हस्तगत कर लिया। ३१वीं अक्टूबर को कर्तव्यविमूढ़ तुर्की सरकार ने आत्म-समर्पण की घोषणा कर दी।

युद्धनीति का सामान्य विवेचन—मध्यवर्ती स्थिति में होने के कारण जर्मनी को बहुत से विरोधियों के विरुद्ध संघर्ष में अपरिमित लाभ प्राप्त थे। आन्तरिक रेखाओं (inner lines) पर कार्यवाही करके वह प्रत्येक पर बारी-बारी से प्रहार कर सकता था। उसके लिए मुख्य समस्या यह निश्चित करना था कि वह मुख्य प्रयास किस दिशा में करे। श्लीफेन का अनुसरण करते हुए मोल्ट्के और फाकेनहेन ने पश्चिमी मोर्चे को प्राथमिकता दी तथा हिण्डेनबर्ग और लुडेनडोर्फ ने पूर्वी मोर्चे को। प्रश्न वास्तव में यह है : दो विरोधियों में किस पर पहले प्रहार किया जाए, दुर्बलतर पर या अधिक शक्तिशाली पर ? इसका उत्तर है : अगर दुर्बलतर की पराजय से अधिक बलवान शत्रु की शक्ति कम होती हो तो पहले दुर्बलतर शत्रु पर आक्रमण करो; अन्यथा अधिक शक्तिशाली पर तत्काल धावा बोलो। जर्मन सेनाध्यक्षों में शायद अकेले फाकेनहेन ने इस बात को स्पष्ट रूप से समझा। रूस की पराजय से पश्चिमी मित्रराष्ट्रों की लड़ने की शक्ति कम नहीं होती। वे जर्मनी के सबलतम शत्रु थे और उन्हें केवल फ्रान्स में पराजित किया जा सकता था। जर्मनी की पूरी शक्ति उनके विरुद्ध लगा दी जानी चाहिए थी। इसीलिए फाकेनहेन ने १९१५ में विजयी जर्मन-सैन्य का रूस में अग्रसरण रोक दिया था। वह पश्चिम में लड़े जाने वाले संग्राम के लिए कुछ शक्ति अपने हाथ में रखना चाहता था। बाद के घटना-क्रम से उसके विचार सही सिद्ध हो गए। लुडेनडोर्फ अपनी बात मनवाने में सफल हुआ और रूसियों का विनाश कर दिया गया; लेकिन जब जर्मन सेनाएं पश्चिम की ओर घूमीं, मित्रराष्ट्रों ने उन्हें विनष्ट कर दिया। रूस पर प्राप्त विजय उन्हें अन्तिम पराजय से नहीं बचा सकी।

अभी जो कुछ कहा गया है उससे मित्रराष्ट्रीय युद्धनीति (Allied strategy) के विवेचन में भी सहायता मिलती है। उनका सबलतम शत्रु जर्मनी था और पश्चिमी मोर्चे पर उसकी शक्ति सबसे अधिक थी। यहीं वह निर्णायक रूप से पराजित किया जा सकता था। अन्य युद्धक्षेत्रों (theatres of war) में प्राप्त विजयों से जर्मनी को पश्चिमी मोर्चे पर मिली विजय का प्रभाव समाप्त नहीं हो सकता था। मित्रराष्ट्रों ने इस तथ्य को केवल अंशतः ही समझा। उन्होंने गेल्लिपोली, सेलोनिका, मेसोपोटामिया और फिलिस्तीन के निर्बल अथवा असफल अभियानों में अपने सैनिकों को व्यर्थ गँवा दिया। गेल्लिपोली का अभियान इस नीति की विवेकहीनता का ज्वलन्त उदाहरण था। इसके पक्ष में दलील दी गई थी कि इससे जर्मनों के ऊपर पीछे से हमला किया जा सकता था। लेकिन अगर आपकी सेना शत्रु सेना की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुलना में बहुत अधिक नहीं है तो शत्रु पर दोनों ओर से आक्रमण करने से अधिक प्रवंचक कोई और पैंतरा नहीं हो सकता। जब आप उसके पृष्ठभाग पर आक्रमण कर रहे होंगे वह आगे बढ़ जाएगा और आपके दुर्बल हो गए मोर्चे को कुचल कर रख देगा। गेल्लिपोली के मामले में तो दो महत्त्वपूर्ण मित्रराष्ट्रीय सेनाओं के मध्य खतरनाक अन्तराल था। दर्देदानियाल (Dardanelles) और फ्रान्स के बीच सम्पर्क केवल समुद्र के विलम्बपूर्ण मार्ग द्वारा ही बनाए रखा जा सकता था। इसके विपरीत जर्मनी, आन्तरिक रेखाओं पर कार्यवाही करने और रेलपथों का प्रयोग करने के कारण, अपनी सेनाओं को इच्छित स्थल पर अनायास संकेन्द्रित कर सकता था। अगर गेल्लिपोली-सैन्य टर्की में दूर तक घुसने में सफल हो जाती तब भी जर्मनी को उसे विनष्ट करने में कोई कठिनाई नहीं होती। तुर्कों का सफल प्रतिरोध मित्रराष्ट्रों (Allies) के लिए वस्तुत: प्रच्छन्न वरदान (blessing in disguise) था।

यह सही है कि पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध का निर्णय करना दुष्कर था। लेकिन उचित कार्य को करने में कठिनाई अनुचित कार्य करने का बहाना नहीं हो सकती। सब बातों के बावजूद मित्रराष्ट्रों को पश्चिमी मोर्चे पर अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए थी, यद्यपि उनके सेनापतियों को कुछ धैर्य भी रखना चाहिए था। ऐसे आक्रमणों में जो निश्चित रूप से असफल होने वाले थे, अपने आदमियों को गँवाने के बजाय उन्हें उनको सुरक्षित रखना चाहिए था और पश्चिमी मोर्चे पर शत्रु-पंक्ति को भेदने के लिए नए आयुधों और नई विधियों के साथ बराबर प्रयोग करते रहना चाहिए था। अगर मित्रराष्ट्रों ने अपनी जनशक्ति का अपव्यय न किया होता तो शायद संख्याधिक्य से ही अन्त में युद्ध का निर्णय हो गया होता। इसके असफल होने पर 'आर्थिक नाकेबन्दी' (economic blockade) को अपना असर दिखाने का अवसर देना चाहिए था। लेकिन जो नहीं करना चाहिए था वह था मुख्य युद्धक्षेत्र (main field of war) से सैनिकों और शस्त्रास्त्रों को ऐसे अपेक्षया गौण युद्धक्षेत्रों में भेजना जहाँ निर्णायक विजय मिलनी असम्भव थी परन्तु पराजय होने पर उससे उत्पन्न हानियों से नहीं बचा जा सकता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १२

द्वितीय विश्वयुद्ध, १९३९-४५

यंत्रीकृत सेनाएँ—१९३९ की सेनाओं के १९१४ की सेनाओं से भिन्न होने का प्रधान कारण यन्त्रीकरण (mechanization) था। बीसवीं शती के चौथे दशक में शस्त्रीकरण के लिए प्रतियोगिता (armaments race) हुई, जिससे यूरोप की सेनाओं के पास बहुत शीघ्र १९१४ की तुलना में तिगुने तोपखाने और बीस गुनी मशीनगनें हो गईं। इसके अतिरिक्त उनके पास नए शस्त्रास्त्र—ब्रेनगनें (bren guns) टॉमीगनें (tommy guns), हल्की मॉर्टरें और सुधरे हुए टैंक तथा वायुयान हो गए। इनमें अन्तिम दो (टैंक तथा वायुयान), जो प्रथम विश्वयुद्ध में अपेक्षया महत्त्वहीन से रहे थे, अब विजय का साधन हो गये और हजारों की संख्या में बनाए जाने लगे। सेना के यन्त्रीकरण के साथ यातायात में मोटरों का बहुलशः प्रयोग (motorization) प्रारम्भ हुआ। तोपों और सैनिकों को 'मोटर' चालित वाहनों (motor-vehicles) में ले जाया जाने लगा और भारी तोपखानों (heavy artillery), टैंकों (tanks) और बमवर्षा करने वाले वायुयानों (bombing aeroplanes) के कारण संवर्धित 'फायर-पावर' (fire-power) के साथ गतिशीलता (mobility) में भी भारी वृद्धि हो गई। इस प्रगति की पराकाष्ठास्वरूप सेना के अग्रगामी दल (spearheads) के रूप में 'आर्मर्ड डिवीजन' (armoured division) अस्तित्व में आए। इतना ही नहीं पुराने समय की, अनिवार्य रूप से भर्ती किए गए सैनिकों से बनी विशाल सेनाओं के स्थान पर छोटी परन्तु अत्यधिक यन्त्रसज्जित (highly mechanized) सेनाएं बनाएं जाने की मांग भी की जाने लगी। लेकिन यह सुधार कार्यान्वित नहीं हो पाया। 'आर्मर्ड' डिवीज़नें आधुनिक सेना की एक शाखा मात्र रहीं, लेकिन एक ऐसी शाखा जो अकेली ही शेषांश के बराबर थी। अन्तिम युद्ध में जो समरतान्त्रिक (tactical) समस्या सुलझने से रह गई थी, उसे यन्त्रसज्जित सैनिकों ने हल कर दिया। शत्रु-पंक्ति को तोड़ना (break-throughs) व्यवहार्य हो गया। इसके साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि खाइयों के युद्ध (trench warfare) स्थायी नहीं वरन् १९१४-१८ की विशिष्ट परिस्थितियों में प्रयुक्त एक अस्थायी समरनीतिक कार्यवाही मात्र थे। सदैव की तरह इस बार भी जर्मन जनरल स्टाफ नए परिवर्तनों के प्रति सर्वाधिक जागरूक सिद्ध हुआ। उसने एक नई आक्रमक नीति का विकास किया जिसके अनुसार बमवर्षक वायुयानों (bombers) द्वारा साहाय्यित टैंकों का समूह सुरक्षित शत्रु-पंक्ति के विरुद्ध उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्बल स्थलों की टोह लेता हुआ आगे बढ़ता था। अगर ये टैंक शत्रु-पंक्ति को भेदने में सफल हो जाते थे तो शत्रु की सञ्चार-व्यवस्था में गड़बड़ पैदा करते हुए आगे बढ़ जाते थे। इस बीच में उनके द्वारा बनाए गए अन्तराल (gap) को पीछे-पीछे मोटरों में लाए गए सैनिक चौड़ा करते जाते थे। अन्त में सामान्य पदाति-सैन्य (ordinary infantry) आती थी और पंखे के आकार में, (fanwise) शत्रु-पंक्ति के पृष्ठभाग को घेरती हुई फैल जाती थी। इन मौलिक विधियों (original methods) की सहायता से जर्मनों ने युद्ध की प्रथमावस्था में अप्रत्याशित और प्रभावशाली सफलताएँ प्राप्त कीं। इन प्रारम्भिक अभियानों की कहानी की अभी मात्र रूपरेखा दी जा सकती है। पूर्ण और विस्तृत सत्य के ज्ञान के लिए अभी हमें बहुत वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी।

पोलैण्ड का संग्राम— युद्ध १ सितम्बर, १९३९ को जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर किए गए आक्रमण से प्रारम्भ हुआ। इस कार्य के लिए जर्मन स्टाफ ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति का तीन-चौथाई भाग—१,५००,००० सैनिक जिनके साथ चौदह 'आर्मर्ड' डिवीजनें, ४,००० टैंक और १,००० वायुयान थे—लगा दिया। संख्या में पोलैण्ड की सेना बहुत हीन नहीं थी, लेकिन उसके पास टैंकों, वायुयानों और यन्त्रसज्जित सैनिकों (mechanized troops) की संकटास्पद रूप से कमी थी। उसके अश्वारोही-दल पूर्णत: अनुपयोगी सिद्ध हुए, और उसके पदाति सैनिक सहायक कम रहे बाधक अधिक। पोलैण्ड की पश्चिमी सीमा पर कोई प्राकृतिक रुकावट नहीं थी। उस दिशा से आने वाले शत्रु के लिए पहली बाधा विस्चुला (Vistula) और बग (Bug) नदियों की रेखा है। अगर पोलैण्ड का स्टाफ अपनी सेनाओं को तत्काल इन नदियों तक पीछे हटा लेता तो अच्छा रहता, यद्यपि ऐसा करने से पौलैण्ड के सर्वाधिक समृद्ध और ओद्यौगिक दृष्टि से समुन्नत प्रदेशों से हाथ धोना पड़ता। इन प्रदेशों को स्वेच्छा से खाली कर देने में पोलैण्ड के स्टाफ की हिचकिचाहट व्यर्थ रही, क्योंकि शीघ्र ही जर्मन दबाव के कारण वह ऐसा करने के लिए बाध्य हो गया। तीन मुख्य सैन्य-समूहों ने देश पर उत्तर, मध्य और दक्षिण से आक्रमण किया। अधिकांश दबाव उत्तर और दक्षिण में डाला गया। जर्मनों ने पिछले पैराग्राफ में वर्णित नीति का प्रयोग किया और जैसे ही पोलैण्ड की हीनतर वायुसेना द्रुतगति से समाप्त कर दी गई, उनके सामने अपना उद्देश्य पूरा करने में कोई बाधा नहीं रह गई। बमवर्षक वायुयानों ने पोलैण्ड की सेना के पृष्ठभाग को ध्वस्त कर दिया, लड़ने वाले सैनिकों तक रसद (supplies) और शस्त्रास्त्र (munitions) का पहुँचना रोक दिया और प्रधान कार्यालय (headquarters staffs) तथा रणक्षेत्र में स्थित सेना का सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया। एक पखवाड़े से कम में ही पोलैण्ड की सेना के पार्श्व पीछे की ओर मुड़ गए तथा अग्रभाग (front) का आकार एक ऐसे विशाल समकोण के समान हो गया जिसका सिरा वारसा (Warsaw) था, दाहिनी भुजा पिन्स्क (Pinsk) के दलदलों की ओर चली गई थी और बाईं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विस्चुला नदी के ऊपरले भाग के सहारे-सहारे। इसके उपरान्त पूर्णान्त करने वाला प्रहार हुआ। १७वीं सितम्बर को रूसी सैनिकों ने पौलैण्ड पर पूर्व की ओर से आक्रमण किया। इसके परिणामस्वरूप संगठित प्रतिरोध का एकदम अन्त हो गया और पोलैण्ड

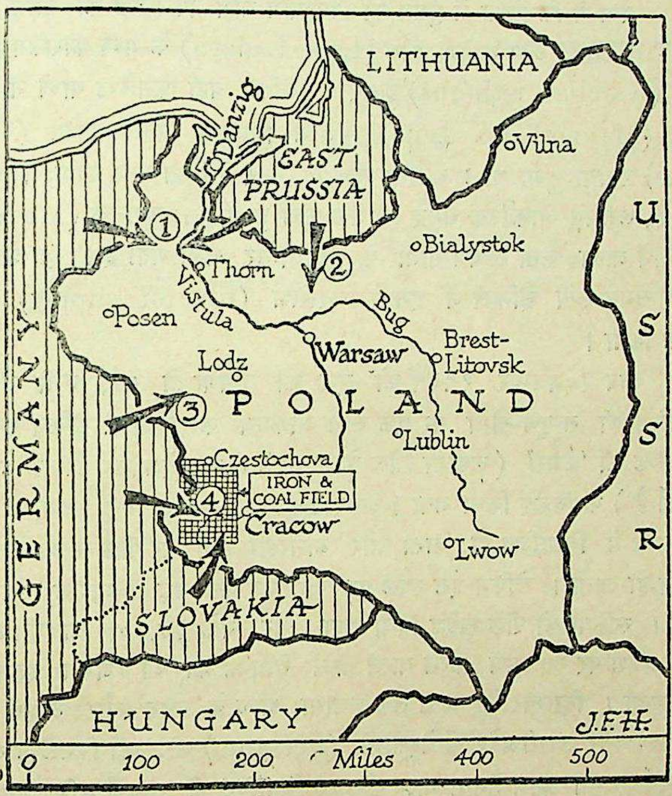

की सरकार सीमा पार कर रूमानिया भाग गई। वारसा नगर ने ३०वीं सितम्बर तक वीरतापूर्वक परन्तु असफल प्रतिरोध किया। एक माह के अन्दर ही पोलैण्ड को पराजित कर धराशायी कर दिया गया और जर्मनी तथा रूस उसके प्रदेशों का नए सिरे से विभाजन करने लगे।

फिनलैण्ड का संग्राम—फिनलैण्ड-रूसी युद्ध के कारण प्रकाश में आए तथ्यों में लाल सेना (Red Army) की, जिसे कुछ लोग यन्त्रीकरण (mechanization) और सामान्य संगटन (general organisation) में जर्मन सेना के बराबर मानते थे, दुर्बलता सर्वाधिक आश्चर्यप्रद रही। फिनलैण्ड की ४,००,००० आदमियों की लघु सेना रूस को, जो दसियों लाख (millions) सैनिकों को उसके विरुद्ध मैदान में उतार सकता था, वशीभूत करने की आशा नहीं कर सकती थी। लेकिन फिनलैण्ड की सरकार ने अनुमान किया कि अगर वह पर्याप्त समय तक प्रतिरोध कर सकी, तो उसे पश्चिमी देशों (Western Powers) से सहायता मिल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाएगी। लेकिन स्वीडन (Sweden) और नॉर्वे (Norway) के अनन्य तटस्थ दृष्टिकोण के कारण पश्चिम से सैनिक सहायता नहीं भेजी जा सकी और फिनलैण्ड को कुछ वायुयानों और थोड़ी-सी युद्ध-सामग्री के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला।

रूस से फिनलैण्ड में घुसने का सरलतम मार्ग फिनलैण्ड की खाड़ी (Gulf of Finland) और लडोगा झील (Lake Ladoga) के मध्य कारेलियन भूडमरू-मध्य (Karelian isthmus) होकर है। लेकिन यहाँ फिनलैण्ड वालों ने मानेरहीम रेखा (Mannerheim Line) नाम से विख्यात प्रतिरक्षित-क्षेत्र (fortified zone) बनाया हुआ था। लडोगा झील के उत्तर में स्थित वन्य प्रदेश, जिसमें अनेक झीलें हैं, लगभग आर्कटिक समुद्र तट तक फैला हुआ है। मुर्मान्स्क (Murmansk) को जाने वाला रूसी रेलपथ सीमा के समानान्तर चला गया है। इस क्षेत्र में कार्य करते समय रूसी सैनिकों ने इसको रसद-रेखा (line of supply) के रूप में प्रयुक्त किया।

जब ३० नवम्बर १९३९ को युद्ध की घोषणा हो गई, रूसी सेनाओं ने फिनलैण्ड की सम्पूर्ण सीमा पर एक साथ आक्रमण कर दिया। लेकिन मुख्य प्रयास फिनलैण्ड की 'कमर' (लडोगा झील के उत्तर में स्थित प्रदेश जहाँ फिनलैण्ड सर्वाधिक संकीर्ण है) के विरुद्ध किया गया। अगर उन्हें यहाँ सफलता मिल जाती तो फिनलैण्ड दो भागों में विभाजित हो जाता और मानेरहीम-रेखा पर पीछे से आक्रमण करना सम्भव हो जाता। लेकिन इस स्थल पर आक्रमण का बड़े विनाशक रूप से अन्त हुआ। रूसियों को पीछे खदेड़ दिया गया और उनके १४,००० आदमी मारे गए। वन्य प्रदेश पर आक्रमण करने वाली अन्य सेनाओं का भी लगभग इतना ही बुरा हाल हुआ। दिसम्बर के अन्त तक लडोगा झील के उत्तर और दक्षिण में स्थित दो स्थलों और उत्तरी प्रदेश में पेट्सामो (Petsamo) को, जहाँ फिनलैण्ड का केवल एक दुर्बल दस्ता मात्र तैनात था, छोड़कर फिनलैण्ड की सम्पूर्ण भूमि शत्रुविहीन हो गई। रूसी असफलता के कारण थे कठोर शीत ऋतु, वन्य प्रदेश में सैनिकों तक रसद पहुँचाने की कठिनाई, और इस प्रदेश की भूमि की बनावट जो फिनलैण्ड वालों की क्लेशकर छापामार समरनीति (harassing guerilla tactics) के सर्वथा उपयुक्त थी।

लगभग चार सप्ताह की शान्ति के उपरान्त पुनः आक्रमण आरम्भ कर दिया गया। इस बार रूसियों ने मुख्य प्रयास मानेरहीम-रेखा के विरुद्ध किया और इसे एक प्रचण्ड धावे द्वारा भेदने की चेष्टा की। अनेक भली-भाँति प्रशिक्षित डिवीज़नों को मैदान में उतारा गया। वे पर्याप्त तोपों और टैंकों से सज्जित थीं और उनके लिए भोजन, गोलाबारूद तथा ईंधन आदि की समुचित व्यवस्था कर दी गई थी। उत्तर की तुलना में भूडमरूमध्य (isthmus) में यातायात की समस्या बहुत सरल थी और निस्सन्देह इसी कारण रूसी स्टाफ ने चक्करदार प्रगमन (turning movement) का विचार छोड़कर सीधे मानेरहीम-रेखा पर आघात करना प्रारम्भ किया था। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय उपरान्त ही रूसी सेना के संख्या में अधिक होने का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। १५वीं फर्वरी को फिनलैण्ड की सैन्य-पंक्ति का सुम्मा(Summa) स्थित दाहिना भाग पीछे धकेल दिया गया, यद्यपि बायाँ भाग दृढ़ बना रहा। सफलता पर सफलता प्राप्त करते हुए रूसी सैनिक २७वीं फर्वरी को वाइपुरी (Viipuri) से केवल आठ

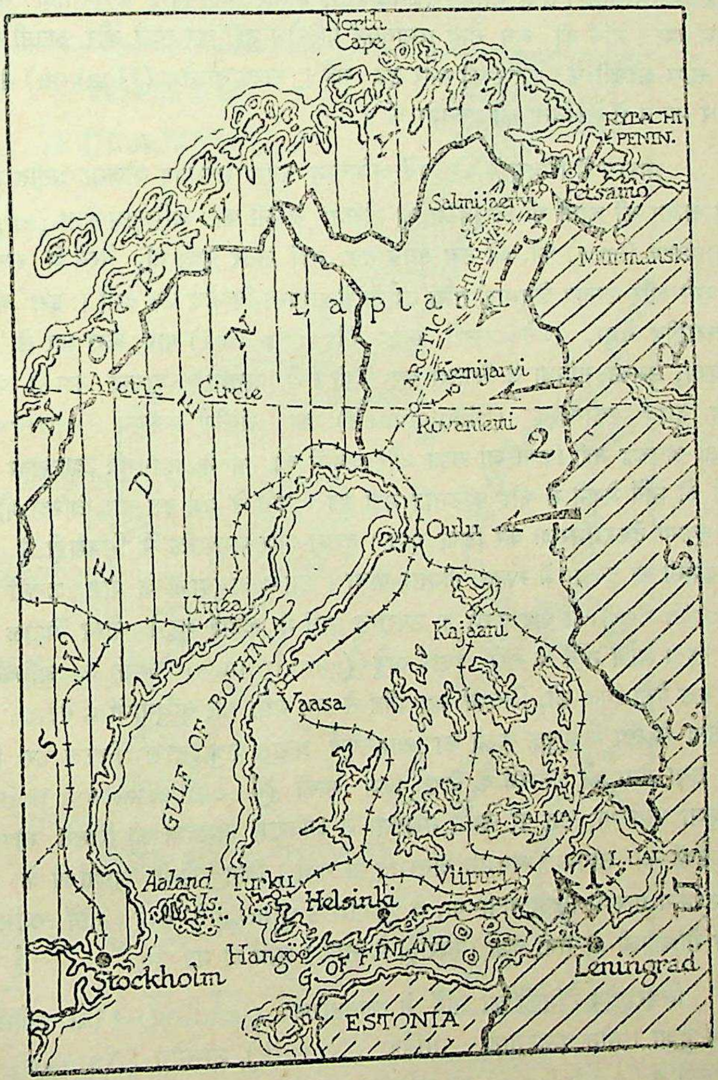

मील दूर रह गए और मानेरहीम-रेखा के उत्तरी अर्द्धांश के भंग होने की आशंका हो गई। और अधिक प्रतिरोध करना व्यर्थ समझ कर फिनलैण्ड की सरकार ने सन्धि के लिए वार्ता प्रारम्भ कर दी (१०वीं मार्च)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नॉर्वे का संग्राम—जर्मनी की नॉर्वे पर आक्रमण की योजना बहुत गुप्त रखी गई और बड़ी द्रुतगति से कार्यान्वित की गई। ९अप्रैल १९४० को डेनमार्क को रौंद डाला गया और वायुयानों अथवा जलपोतों द्वारा जर्मन सैनिक नॉर्वे के ओस्लो (Oslo), स्टावाङ्गेर (Stavanger), बेर्जेन (Bergen), ट्रोण्ढजेम (Trondhjem) तथा नार्विक (Narvik) आदि महत्त्वपूर्ण बन्दरगाहों में उतार दिए गए। नॉर्वे की लघु सेना प्रभावकर प्रतिरोध नहीं कर सकी और अपनी सरकार के साथ ओस्लो के उत्तर की ओर हट गई। राजा हाकोन (Haakon) ने ब्रिटेन और फ्रान्स से सहायता की याचना की।

प्रारम्भ में मित्रराष्ट्रों को नॉर्वे-अभियान बहुत लाभप्रद योजना प्रतीत हुआ। यह आशा की जाती थी कि ब्रिटेन की नौसेना जर्मनी की अभियान-सेना (expeditionary force) को, जो उस समय तक वहाँ उतर चुकी थी, घेरने में सफल हो जाएगी और उसका डेनमार्क तथा जर्मनी से सम्बन्ध-विच्छेद कर देगी। इस बीच में मित्रराष्ट्रीय सेना, जिसे उत्तरी समुद्र (North Sea) पार करा कर ले जाया जाएगा, उसका सुविधा से विनाश कर देगी। ये अनुमान दुःखद रूप से भ्रामक सिद्ध हुए। स्काग्गेरेक (Skaggerack) का संकीर्ण जलपथ (waterway) पूर्णतः अवरुद्ध नहीं किया जा सका और जर्मनों को अपने आदमी, शस्त्रास्त्र तथा टैंकों को नॉर्वे भेजने में कोई कठिनाई नहीं हुई। कम से कम इस बार ब्रिटिश नौशक्ति को चकमा देकर निराश कर दिया गया। दूसरी ओर नभशक्ति में मित्रराष्ट्रों ने अपने को जर्मनी की तुलना में स्पष्टत: हीनतर पाया। उनके वायुयानों के पास उत्तरी समुद्र (North Sea) को पार करने के उपरान्त नार्वे में लड़ाई लड़ने योग्य पेट्रोल शेष नहीं रहता था। नॉर्वे के सारे हवाई अड्डे (aerodromes) जर्मनी के अधिकार में थे। एक ऐसी झील को, जिसका जल शीत से जम गया था, वायुयानों में पेट्रोल भरने के केन्द्र के रूप में प्रयुक्त करने का साहसपूर्ण प्रयास शत्रु द्वारा विफल कर दिया गया तथा सेना को उतारने के लिए जिन स्थलों (disembarkation points) को चुना गया था, उन पर जर्मन नभसेना ने अविराम बमवर्षा की जिससे तोपखाने तथा टैंकों का उतारना लगभग असम्भव हो गया। जिन ऊँची आशाओं के साथ यह उपक्रम प्रारम्भ किया गया था, वे द्रुतगति से धूमिल होने लगीं। नॉर्वे अभियान दूसरा गेल्लिपोली हो गया जहाँ मित्रराष्ट्रों के साधन व्यर्थ ही नष्ट हुए।

मित्रराष्ट्रीय सैनिकों का नॉर्वे में अवतारण (landing) १६वीं अप्रैल को प्रारम्भ हुआ। तीन बन्दरगाहों—नार्विक (Narvik), नाम्सोस (Namsos) और अण्डाल्स्नीज़ (Andalsnes) को अधिकृत कर लिया गया। जर्मनों के ट्रोण्ढजेम (Trondhjem) स्थित सैन्य-दल पर आक्रमण स्पष्टतः सर्वप्रथम कर्तव्य कार्यवाही थी। नाम्सोस और अण्डाल्स्नीज़ के कॉलमों (columns) द्वारा संयुक्त आक्रमण की योजना बनाई गई। लेकिन नॉर्वे के सर्वोच्च सेनापति (commander-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

in-chief) ने बलवर्धक सैन्य (reinforcements) की इतनी अतिपाति (urgent) माँग की कि नॉर्वे की मुख्य सेना के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए अण्डाल्स्नीज़ से सैनिकों को दक्षिण की ओर भेज देना पड़ा। इस प्रकार दक्षिणी आक्रमण कार्यान्वित नहीं हो पाया। उत्तरी सेनाओं ने अवश्य आक्रमण किया परन्तु उसे भारी हानि के साथ विफल कर दिया गया। ट्रोण्ढजेम प्रोद्दरी[1] (Trondhjem Fiord) जर्मन

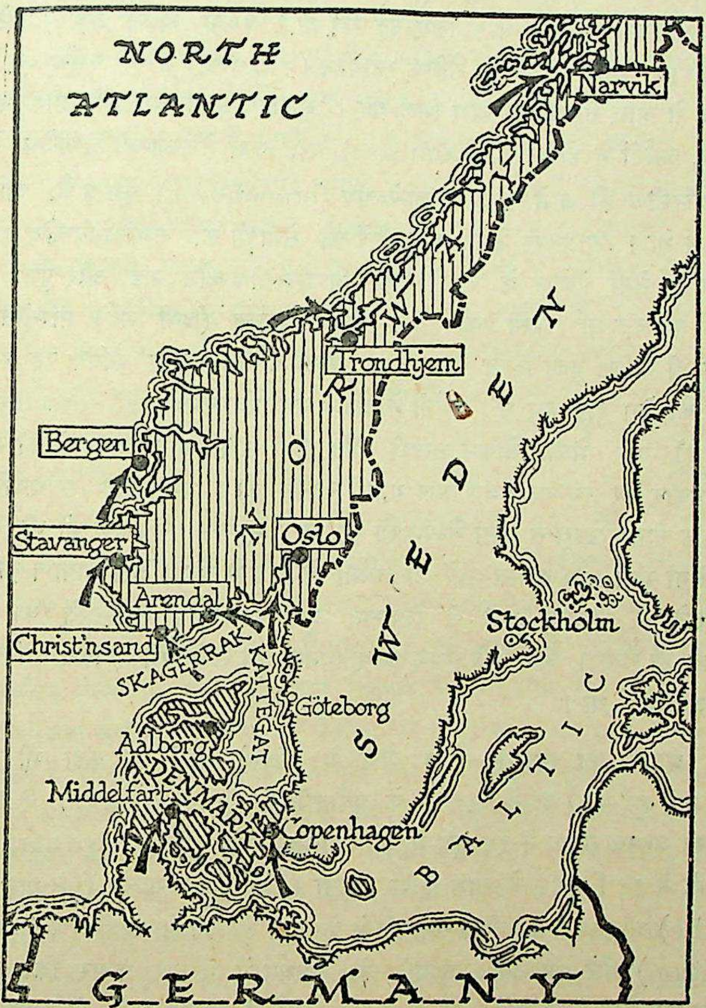

नौसेना के जलपोतों के अधिकार में थी, और ब्रिटिश नावाधिकरण (Admiralty) को उसे वहाँ से निकाल सकना व्यवहार्य नहीं जान पड़ा। जर्मनों ने अपनी स्थानीय नौसैन्य-शक्ति के श्रेष्ठतर होने का अच्छा लाभ उठाया। जब नाम्सोस से आई ब्रिटिश

१. प्रोद्दरी अथवा फियोर्ड (fiord) दो चट्टानों अथवा चट्टानी प्रदेशों के बीच बने लम्बे समुद्री-मार्ग को कहते हैं। साथ में दिए गए मानचित्र में ट्रोण्ढजेम प्रोद्दरी स्पष्टतः दिखायी गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेना प्रोद्दरी के पास अग्रसरित हो रही थी, ट्रोण्ढजेम से समुद्री-मार्ग द्वारा आए जर्मन सैनिक स्टीनकेर (Steinker) के समीप उतरे और उन्होंने उसके पृष्ठभाग तथा पार्श्व पर धावा बोल दिया। ब्रिटेनवालों को द्रुतगति से पीछे हटना पड़ा (२५वीं अप्रैल)।

इस बीच में ओस्लो (Oslo) स्थित जर्मन सेनाएँ भलीभाँति बलवर्धित होकर ओस्टेर (Oster) और गुड्ब्राण्ड्स (Gudbrands) नदियों की विशाल घाटियों के मार्ग से ट्रोण्ढजेम की सहायता के लिए बढ़ रही थीं। ३०वीं अप्रैल तक ओस्टेर की घाटी से होकर जाने वाले जर्मन सैनिक स्टोयरेन (Stoeren) से परे पहुँच गए और ट्रोण्ढजेम से आए सैनिकों के साथ मिल गए। गुड्ब्राण्ड्स की घाटी में, और पश्चिम की ओर, जर्मनों ने डोम्बास (Dombaas) पर, जहाँ से ओस्लो-ट्रोण्ढजेम रेलपथ से अण्डाल्स्नीज़ को जाने वाला शाखा-रेलपथ (branch-line) फूटता है, अधिकार कर लिया था। इस प्रकार ब्रिटेन और नॉर्वे की सेनाओं का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया और ब्रिटिश सेना रेलपथ के सहारे-सहारे अण्डाल्स्नीज़ लौट गई और पुनः अपने जलपोतों पर चढ़ गई। इसी प्रकार कुछ दिन उपरान्त (४थी मई) नाम्सोस स्थित दल को भी वापिस बुला लिया गया। अब केवल वे मित्रराष्ट्रीय सैनिक रह गए जो नार्विक का घेरा डाले हुए थे। जर्मनों ने अपनी बलवर्धक सेना (reinforcements) उत्तर की ओर भेजी, लेकिन उसकी गति धीमी रही और मित्रराष्ट्रों को नार्विक पर अधिकार कर लेने का समय मिल गया (२९वीं मई)। यह विजय सर्वथा निरर्थक थी। एक सप्ताह उपरान्त अन्य सैन्य-दलों की तरह नार्विक सैन्य-दल को भी वापिस बुला लिया गया और समस्त नॉर्वे को जर्मनी के हाथ में छोड़ दिया गया। ट्रोण्ढजेम को जीतने में असफल होने से छितराए हुए मित्रराष्ट्रीय सैन्य-दलों का मिलाप असम्भव हो गया। अब उन्हें पृथक्-पृथक् विनष्ट होने से बचाने के लिए वापिस बुला लेना अपरिहार्य था।

फ्रान्स का संग्राम—इस बीच में पश्चिमी मोर्चे पर कहीं भी गम्भीर लड़ाई नहीं हुई थी। अपने १९१४ के पूर्वगामियों (predecessors) के प्रतिकूल फ्रान्सीसी जनरल स्टाफ ने इस युद्ध में प्रतिरक्षात्मक नीति (defensive strategy) के लाभों में दृढ़ विश्वास के साथ प्रवेश किया। जनरल द गाल (General de Gaulle) और अन्य फ्रान्सीसी सेनापतियों के द्वारा सेनाओं के यन्त्रीकरण (mechanization) और आक्रमक-युद्धनीति के समर्थन में बराबर प्रचार किए जाने के बावजूद फ्रान्सीसी सेना टैंकों, वायुयानों और 'आर्मर्ड' डिवीज़नों में खेदजनक रूप से दुर्बल थी। स्टाफ ने मुख्यतः सुविख्यात माज़िनो-रेखा (Maginot-Line) में आस्था रखी। इसमें जर्मन सीमा पर भूमि के अन्दर बने दुर्गों की, जिनके निर्माण पर ६००,०००,००० पौण्ड व्यय किए गए थे, एक विस्तृत श्रृंखला थी। अभाग्यवश यह समुद्र तक विस्तृत नहीं थी और आगामी घटनाओं से यह सिद्ध हो गया कि इस पर बेल्जियम होकर पीछे से आक्रमण किया जा सकता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब ३सितम्बर १९३९ को फ्रान्स युद्ध में प्रविष्ट हुआ, उसने लगभग ४,०००,००० सैनिकों को युद्ध में भाग लेने के लिए बुलाया। जर्मनी का पोलैण्ड पर आक्रमण प्रारम्भ हो गया था और यह आशा करना स्वाभाविक था कि फ्रान्स जर्मनी पर हमला करके उसका ध्यान विकर्षित करने का प्रयास करेगा। लेकिन माज़िनो-रेखा के दूसरी तरफ जर्मनी की 'पश्चिमी दीवार' (West Wall) अथवा सीगफ्रीड रेखा (Siegfried Line) थी जिसके बनाने में यद्यपि माज़िनो-रेखा की अपेक्षा कम ध्यान दिया गया था लेकिन जो, इसके बावजूद भी, पर्याप्त दृढ़ प्रतिरक्षात्मक स्थिति (defensive position) थी। सभी फ्रान्सीसी सैन्य-विद्या-विशारद, कुछ अपवादों को छोड़कर, प्रतिरक्षात्मक स्थितियों के विरुद्ध आक्रमक कार्यवाही करने के विपरीत थे। तदनुसार मित्रराष्ट्रीय जनरलिस्सिमो गामेलें (Gamelin) ने अपनी गतिविधि छिट-पुट आक्रमणों तक सीमित रखी। सितम्बर के अन्त तक इन मामूली कार्यवाहियों से ही जर्मनी का लगभग सौ वर्गमील भूखण्ड फ्रान्स के अधिकार में आ गया। लेकिन जैसे ही पोलैण्ड का युद्ध समाप्त हुआ, विजयी जर्मन सेनाओं को पश्चिम की ओर भेज दिया गया और खोए प्रदेश को पुनः अधिकृत कर लिया गया। १९३९-४० की कठोर शीत ऋतु में दोनों पक्ष प्रतिरक्षात्मक रुख अपनाए रहे।' ब्रिटिश-अभियान-सेना (British Epeditionary Force), जो युद्ध के आरम्भिक सप्ताहों में फ्रान्स आ गई थी, शनैः शनैः १५८,००० से बढ़ाकर ४००,००० कर दी गई।

लेकिन जर्मन सेना स्थायीरूपेण प्रतिरक्षात्मक रुख बनाए रखने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। जैसे ही नॉर्वे की विजय सम्पूर्ण हुई, उसने पश्चिमी सीमा पर प्रहार कर दिया। इसके अध्यक्ष ब्रौं स्खिट्स्च (Brauschitsch) ने एक नई श्लीफेन योजना (Schlieffen plan) तैयार की। एक मामले में वह अपने पूर्वाधिकारी से अधिक भाग्यवान था। उसे अपने पृष्ठभाग के विषय में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। पौलैण्ड का विनाश कर दिया गया था और रूस को पिछले अगस्त में की गई अनाक्रमण-सन्धि (non-aggression pact) द्वारा अ-हानिकारक कर दिया गया था। श्लीफेन के समान ब्रौं स्खिट्स्च ने भी फ्रान्स की सुरक्षा-रेखा पर हालैण्ड और बेल्जियम होकर पीछे से आघात करने का निश्चय किया। आक्रमण १०मई, १९४० को प्रारम्भ किया गया। जर्मन स्टाफ का पहला लक्ष्य होलैण्ड और बेल्जियम की लघु सेनाओं को मित्रराष्ट्रीय सैनिकों के उनकी सहायता के लिए पहुँच पाने के पूर्व ही नष्ट कर देना था। सबसे भयंकर आक्रमण मास्ट्रिख्ट (Maastricht) के घुमावदार प्रदेश ("appendix") से होकर किया गया और अल्बर्ट नहर (Albert Canal) को उस स्थल के समीप पार कर लिया गया जहाँ यह मास (Mass) से मिलती है। इसके परिणामस्वरूप बेल्जियम और हालैण्ड, दोनों की प्रति-रक्षा-पंक्तियों पर पीछे से धावा बोलना सम्भव हो गया। होलैण्ड की सेना आइज़्सेल (Ijssel) नदी के पीछे एकत्र की गई थी, लेकिन जर्मन सैनिकों ने पश्चिम की ओर दबाव डालते हुए मास (Maas) को मोएरडाइक (Moerdyk) पुल के समीप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार किया और रोट्टेरडम (Rotterdam) के समीप अपने उन साथियों से मिल गए जिन्हें वहाँ सेनावाहक वायुयानों (carrier 'planes) अथवा पैराशूटों द्वारा उतारा गया था। अपने पृष्ठभाग पर हमला हो जाने के कारण हालैण्ड की सेना ने १४वीं मई को हथियार डाल दिए। दक्षिण की ओर अल्बर्ट नहर पर बेल्जियम सेना की स्थिति पर पीछे से आक्रमण कर दिया गया था और लीज़ (Liege) को घेर लिया गया था। लेकिन बेल्जियम वाले पीछे लौटने में सफल हो गए और उन मित्रराष्ट्रीय सैनिकों से जा मिले जो डाइल (Dyle) रेखा तक पहुँच गए थे।

संग्राम का प्रथम दौर समाप्त हो गया था। जर्मनों ने हालैण्ड की सेना को पकड़ लिया था और बेल्जियमी सैनिकों को उनकी दृढ़ प्रतिरक्षात्मक स्थिति से खदेड़ दिया था। अब उन्होंने अपने आक्रमण का दबाव आर्देनिज (Ardennes) पर डाला। यहाँ क्या हुआ, यह अभी तक पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो पाया है। ऐसा प्रतीत होता है कि म्यूज़ की रेखा (line of the Meuse) पर फ्रान्सीसियों ने, जिन्हें इस अपेक्षया वीरान प्रदेश से किसी सशक्त जर्मन आक्रमण की आशंका नहीं थी, बहुत अधिक शक्ति नहीं लगाई हुई थी। उन्हें अनायास पीछे खदेड़ दिया गया और म्यूज़ के पश्चिम में जर्मनों की प्रगति से मित्रराष्ट्रीय सैन्य-पंक्ति को ब्रुसेल्स (Brussels) के उत्तर की ओर लौटने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसके बाद इससे भी बुरी घटना घटी। म्यूज़ (Meuse) प्रदेश में मिली सफलता का लाभ उठाते हुए जर्मनों ने आमीन्स् (Amiens) और बापौम (Bapaume) के मध्य मित्रराष्ट्रीय-पंक्ति को पूर्णतः भेद दिया (२१वीं मई)। इस अन्तराल (gap) के मार्ग से जर्मन 'आर्मर्ड' डिवीज़न (armoured divisions) उमड़ कर बढ़ने लगे। बिना किसी हिच-किचाहट के वे समुद्र तट तक पहुँचने के लिए आब्वेविए (Abbeville) की ओर बढ़ गए और उत्तर की ओर घूमकर उन्होंने क्रमशः 'चैनेल' (Channel)[1] के दिएप्पे, बूलोन् तथा कैले बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया। इस बीच वह अन्तराल बराबर खुला रहा, और टैंकों के बाद मोटरों द्वारा लाई गई पदाति-सैन्य द्वारा अधिक चौड़ा कर दिया गया। इसे बन्द क्यों नहीं किया गया? यह एक दूसरा प्रश्न है जिसका इस समय ठीक-ठीक उत्तर नहीं दिया जा सकता। वेगैण्ड (Weygand) ने, जो गामेले (Gamelin) के बाद मित्रराष्ट्रीय सेनाओं का अध्यक्ष बना (१९वीं मई) अन्तराल के उत्तरी और दक्षिणी सिरों से एक साथ आक्रमण करने की एक योजना बनाई, परन्तु विभिन्न कारणों से इस आक्रमण को स्थगित किया जाता रहा और अन्त में यह कभी कार्यान्वित नहीं हो पाया। २४वीं मई को ब्रिटिश सेना के बाईं ओर स्थित बेल्जियमी-पंक्ति (Belgian line) को भेद दिया गया और ब्रिटिश डिवीज़नों को उसकी सहायतार्थ भेजना पड़ा। इससे अन्तराल (gap) को बन्द करने

१. उत्तरी फ्रान्स को ब्रिटेन से पृथक् करने वाली जलधारा, जो अटलाण्टिक महासागर का अङ्ग है, 'इंग्लिश चैनल' (English Channel) अथवा केवल 'चैनल' (Channel) नाम से विख्यात है।—अनु०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की योजना बिल्कुल ठप्प हो गई और यह मानने के लिए बाध्य होना पड़ा कि फ्लैण्डर्स (Flanders) स्थित ब्रिटिश और फ्रान्सीसी डिवीज़नों का सोमे (Somme) पर स्थित शेष मित्रराष्ट्रीय सेना से सम्बन्ध निश्चित रूप से विच्छेदित कर दिया गया है। उनकी स्थिति उस समय और भी संकटपूर्ण हो गई जब २८वीं मई को बेल्जियम नरेश ने अपनी सेना द्वारा हथियार डाल देने की घोषणा कर दी। अब समुद्र की ओर प्रत्यागमन के अतिरिक्त कोई उपाय शेष नहीं रह गया था। एक

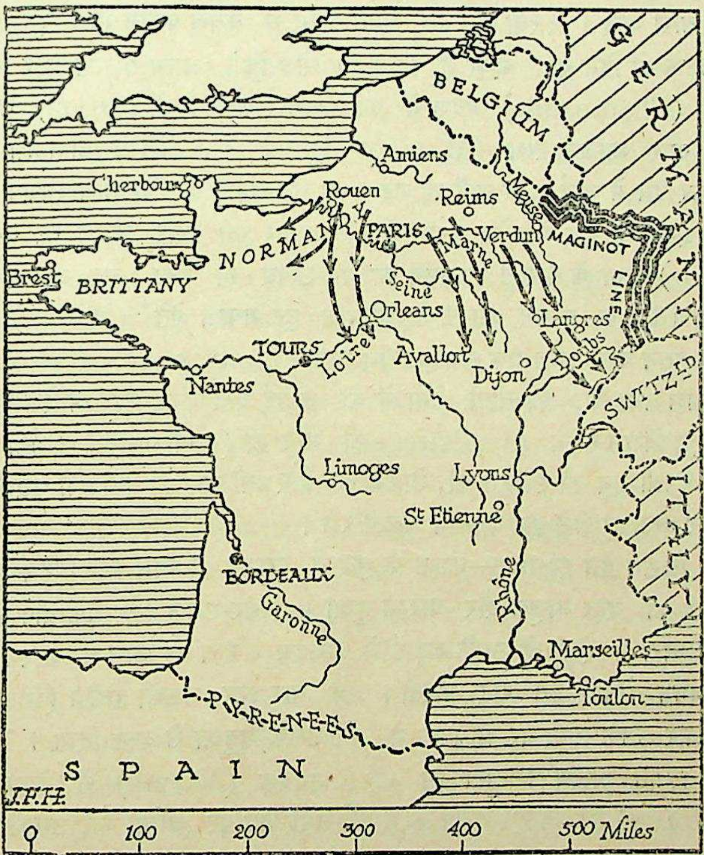

स्मरणीय संघर्ष के उपरान्त उत्तर में स्थित अधिकांश मित्रराष्ट्रीय सैनिक लड़ते-भिड़ते डन्किर्क (Dunkirk) बन्दरगाह पहुँच गए जहाँ जहाज़ों का एक विशाल बेड़ा उन्हें ले जाने के लिए शीघ्रतापूर्वक एकत्र किया गया था। समुद्र तट पर निर्मम रूप से बमवर्षण होने के बावजूद ३३५,००० आदमियों को कुशलतापूर्वक समुद्र पार कर इंग्लैण्ड पहुँचा दिया गया। ४थी जून तक निष्क्रमण (evacuation) पूर्णतः सम्पन्न हो गया। ब्रिटिश-अभियान-सैन्य (B.E.F.) का ⅘ भाग बचा लिया गया, यद्यपि उसे अपनी सभी तोपों और टैंकों से हाथ धोना पड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'फ्रान्स के संग्राम' (Battle of France) का अन्तिम दौर इसके तत्काल बाद प्रारम्भ हो गया। ५वीं जून को जर्मनों ने मित्रराष्ट्रीय मोर्चे (Allied front) पर, सोमे (Somme) और एस्ने (Aisne) के सहारे-सहारे, भीषण आक्रमण प्रारम्भ किया। मित्रराष्ट्रीय-पंक्ति शीघ्र ही टूटने लगी। ७वीं जून तक मित्रराष्ट्रीय मोर्चे का बायां भाग ब्रेस्ले (Bresle) तक धकेल दिया गया और जर्मनों के 'आर्मर्ड्' डिवीज़न रूएन (Rouen) के उपान्त (outskirts) तक पहुँच गए। इसके बाद मित्रराष्ट्रीय मोर्चे के मध्य भाग की, जो रेथेल (Rethel) और सोआसों (Soissons) के बीच में था, बारी आई। १२वीं जून को जर्मन पेरिस से केवल पचीस मील दूर रह गए और उसके दो दिन बाद नगर ने बिना प्रतिरोध किये आत्म-समर्पण कर दिया। शाँपान्ये (Champagne) प्रदेश में आगे बढ़कर शत्रु दिजों (Dijon) तक जा पहुँचा और माजिनो-रेखा (Maginot Line) को, पीछे से आक्रमण करके बेकार कर देने में कोई कसर नहीं रह गई। इन सब संकटों के शिरोमणि स्वरूप १०वीं जून को इटली ने युद्ध में प्रवेश करने की घोषणा कर दी और फ्रान्स पर एल्पाइन (Alpine) सीमा के पार से आक्रमण का भय उत्पन्न हो गया। सब ओर से आई इन आपत्तियों के कारण फ्रान्सीसी प्रतिरोध टूट गया। पेतें (Petain) ने, जो पेरिस के पतन के उपरान्त एक संकटकालीन सरकार (emergency government) का अध्यक्ष बना था, फ्रान्सीसी सेनाओं को लड़ाई बन्द करने का आदेश दे दिया और युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) की माँग की (१७वीं जून)। जर्मनों ने यह प्रार्थना २१वीं जून को स्वीकृत की, लेकिन लड़ाई २४वीं जून को इटालवी युद्ध-विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर होने तक यत्र-तत्र चलती रही।

ब्रिटेन का संग्राम—फ्रान्स के युद्ध में पराभूत हो जाने पर ब्रिटेन के लिए इस संघर्ष का बड़ा नाजुक दौर प्रारम्भ हुआ। अगर उसके और महाद्वीप के मध्य जल की धारा न होती तो उसके लड़ाई में एकदम अकेला रह जाने के कारण शक्तिशाली जर्मन सेनाएँ उसे रौंद डालतीं। एक बार फिर उसकी द्वीपीय (insular) स्थिति और उसके समुद्र पर अधिपत्य ने उसे उसके शत्रुओं से बचा दिया। फिर भी उसकी स्थिति अतीव संकटमय हो गई। नार्विक (Narvik) से लेकर बोर्डो (Bordeaux) तक विस्तृत यूरोप के सम्पूर्ण समुद्र तट पर जर्मनी का, उसकी विजयों के कारण, नियन्त्रण स्थापित हो गया और उसकी भारी तोपों के लिए डोवर (Dover) तक मार करना सम्भव हो गया। ब्रिटेन पर आक्रमण एक सम्भावना प्रतीत होने लगा और जर्मनी ने गर्वपूर्वक यह घोषणा कर दी कि इसे बहुत शीघ्र आरम्भ कर दिया जायगा। जब अगस्त और सितम्बर में लन्दन और दक्षिण-पूर्वी प्रदेश पर विशाल पैमाने पर दिन-दहाड़े हवाई हमले (air attacks) होने लगे तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो जर्मनी का प्रहार बस होने ही वाला है। लेकिन इन हवाई हमलों का सफलतापूर्वक सामना कर लिया गया और 'रॉयल एयर फोर्स' (Royal Air Force) ने शत्रु को ऐसी भारी क्षति दी कि इनकी पुनरावृत्ति नहीं की गई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके उपरान्त 'लुफ्टवाफे' (*Luftwaffe*) ने अपनी गतिविधि को राजधानी (लन्दन) और ब्रिटेन के अन्य प्रमुख औद्योगिक नगरों पर रात्रि में बमवर्षण तक सीमित कर दिया। इस प्रकार के हवाई हमले समस्त शीत ऋतु भर बराबर किए जाते रहे, यद्यपि इनसे न ब्रिटेन के निवासियों का मनोबल (morale) टूटा और न उसके युद्ध-यन्त्र (war machine) को कोई गम्भीर आघात पहुँचा। लेकिन ब्रिटिश-द्वीप-समूह (British Isles) में कहीं भी जर्मन सेनाओं को उतारने का प्रयास नहीं किया गया। बसन्त ऋतु आ पहुँची परन्तु इतना अधिक विज्ञापित आक्रमण कार्यान्वित नहीं हो पाया।

इटली की असफलताएँ—१९४०-४१ की शीत ऋतु में स्थल युद्ध की प्रचण्डता धुरी राष्ट्रों (Axis Powers) के कनीयस् (junior) सदस्य (इटली) को झेलनी पड़ी। लीबिया से मार्शल ग्राज़ियानी (Marshal Graziani) के नेतृत्व में १५०,००० से अधिक आदमियों की एक इटालवी सेना मिस्र पर आक्रमण करने और स्वेज़ नहर को काट देने के लिए तैयार हो गई। सितम्बर में इटालवी सैनिक मिस्री सीमा पार कर साठ मील दूर घुस आए और उन्होंने सीदी बर्रानी (Sidi Barrani) पर अधिकार कर लिया जबकि दक्षिण दिशा से किए गए अन्य इटालवी आक्रमणों के कारण केन्या (Kenya) और सूडान (Sudan) की सीमा-चौकियों (frontier posts) का पतन हो गया और ब्रिटिश सोमालीलैण्ड को खाली कर देना पड़ा। इन आरम्भिक सफलताओं के उपरान्त ग्राज़ियानी मन्थरतापूर्वक अपनी स्थिति को दृढ़ करने लगा। उसने परिधीय शिविरों (perimeter camps) के एक मण्डल द्वारा सीदी बर्रानी को सुरक्षित किया और अपने बर्दिया (Bardia) स्थित पृष्ठभागीय अड्डे (rear base) से आने वाली सड़क और जल की 'पाइप लाइन' (water pipe-line) का निर्माण कराना प्रारम्भ कर दिया। उत्तर अफ्रीकी मरुस्थल में लड़ाई लड़ते समय जल की समस्या पूरे वर्ष बनी रहती है, इसलिए ग्राज़ियानी के लिए अपने अग्रस्थ मोर्चे पर पर्याप्त मात्रा में रसद एकत्र कर लेने तक अग्रसरण (advance) को रोक देना सर्वथा उचित था। लेकिन उसने यह कार्य सम्पन्न करने में अत्यधिक समय लगा दिया। तीन बहुमूल्य माह व्यतीत हो गये और इस बीच में ब्रिटेनवालों को संकटग्रस्त क्षेत्र में सशक्त बलवर्धक दल संकेन्द्रित करने का समय मिल गया। इतना ही नहीं उन्होंने 'नील की सेना' (Army of the Nile) को भी इतना विशालतर कर लिया कि उसका कमाण्डर प्रत्याक्रमण (counter-offensive) की योजना पर विचार करना समुचित समझने लगा। इसके बाद ग्राज़ियानी को सफलता मिलने की सम्भावना बहुत क्षीण हो गई। अपनी मन्थरता के द्वारा उसने एक आशाप्रद योजना का विनाश कर दिया।

इस बीच में, एक अन्य युद्धक्षेत्र (theatre of war) में इटालवियों को गहरी पराजय मिली। २८वीं अक्टूबर को इटली ने यूनान को अन्तिमेत्थम् (ultimatum) दिया और तत्काल २००,००० आदमियों की एक सेना अल्बानिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(Albania) से पिण्डस पर्वतों (Pindus Mountains) को पार कर यूनानी सीमा की ओर अग्रसरित हो गई। इटालवी स्टाफ को आशा थी कि यूनानियों के युद्ध के लिए पूर्णतः सन्नद्ध होने के पूर्व ही इटालवी सेना उन्हें धर दबाएगी और बिना प्रतिरोध हुए दक्षिण के अधिक समतल प्रदेश में, जहाँ उसके 'आर्मर्ड' दल अधिक प्रभावशाली ढंग से लड़ सकते थे, पहुँच जाएगी। लेकिन यूनानियों ने बहुत फुर्ती दिखाई। यद्यपि उन्हें अपनी सेना के पूर्णतः सन्नद्ध होने के पूर्व ही शत्रु का सामना करना पड़ा, तथापि वे दरों (passes) के दक्षिणी द्वारों (outlets) को बन्द करने में सफल हो गए। इस प्रकार इटालवी सैनिक एक ऐसे पर्वतीय प्रदेश में घिर गए जहाँ वे अपने संख्याधिक्य और टैंकों का विशेष लाभ नहीं उठा सके। इसके बाद इटालवियों को विपत्तियों के एक तांते का सामना करना पड़ा। यूनानियों ने एक अनोखी समरनीति (tactics) अपनाई। आक्रमणकारियों से सम्मुखीय टक्कर लेने के बजाय वे पहाड़ियों के निचले ढालों पर उतर आए और शत्रु के सैन्य-दलों को प्रताड़ित करने लगे। इस उपाय से इटालवी आक्रमण का सामना करने में सफलता प्राप्त हुई और यूनानी अल्बानिया पर आक्रमण करने में समर्थ हो गए। शत्रु के अग्रिम अड्डों, कोरिट्ज़ा (Koritza) और आर्ग्यरोकास्ट्रो (Argyrkoastro) पर अधिकार कर लिया गया और उसके पास रसद पहुँचाने वाले बन्दरगाहों, वालोना (Valona) और दुराज़ो (Durazzo) पर आक्रमण का भय उपस्थित हो गया। घोर शीत ऋतु के कारण यूनानियों का अग्रसरण शनैः शनैः धीमा हो गया, लेकिन तब तक इटालवी सेना के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी गई थी जिससे उसका, जर्मन सहायता के बिना, मुक्त होना असम्भव प्रतीत होता था।

यूनान की सफलता में ब्रिटन की सहायता का महत्त्वपूर्ण भाग रहा। ब्रिटन के हवाई स्क्वाड्रनों (squadrons) की सहायता से यूनानी नभ-सेना की दुर्बलता दूर हो गई, और ब्रिटिश नासेना की टुकड़ियों ने एड्रियाटिक (Adriatic) समुद्र में घुस कर वालोना पर बमवर्षा की। लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सहायता जनरल वैवेल (General Wavell) और 'नील की सेना' (Army of the Nile) के प्रत्याक्रमण प्रारम्भ कर देने से मिली। ८वीं दिसम्बर को एक ब्रिटिश सेना शत्रु के सीदी बरानी स्थित निशंक सैन्य-दल पर टूट पड़ी। ग्राज़ियानी के परिधीय शिविरों (perimeter camps) पर 'आर्मर्ड' डिवीज़नों और उनके पीछे आने वाले विशिष्ट पदाति सैनिकों (infantry *d'elite*) ने, जिनमें नियमित और औपनिवेशिक (regulars and colonials) सैनिक सम्मिलित थे, आक्रमण करके प्रतिरक्षक सैनिकों (defenders) को आश्चर्याभिभूत कर दिया। ब्रिटिश नभ-सेना के बमवर्षक वायुयानों और नौ-सेना की तोपों ने आक्रमणकारियों को सहायता दी। यह ब्रिटिश सेना किस प्रकार पचहत्तर मील लम्बे मरुस्थल को, मेर्सा मट्रूह (Mersa Matruh) स्थित रेलपथ-सिरे (railhead) से लेकर शत्रु की सीमा-चौकियों तक गोपनीय रूप से पार कर सकी यह एक रहस्य है; परन्तु यह अद्भुत कार्य सम्पन्न करने में उसने सफलता प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कर ली, इसमें कोई सन्देह नहीं। ब्रिटिश टैंक पंखे के आकार में फैलते हुए शिविरों (camps) और सीदी बर्रानी के मध्य घुस गए और नगर के पश्चिम में समुद्रतटीय सड़क के पार तैनात हो गए। 'आर्मर्ड' टुकड़ियों में ब्रिटेन वालों के अत्यधिक उत्कृष्टतर होने के कारण इटालवी प्रतिरोध बड़ी शीघ्रता से टूट गया। सीदी बर्रानी पर धावा बोल दिया गया और ३०,००० सैनिकों को बन्दी बना लिया गया। ग्राज़ियानी की शेष सेना शीघ्रतापूर्वक लीबिया प्रान्त लौट गई।

जनरल वैवेल इस समय रुक सकता था और पुनः प्रतिरक्षात्मक लड़ाई लड़ने की नीति अपना सकता था। लेकिन उसने आक्रमक लड़ाई लड़ते रहना पसन्द किया। लीबिया पर आक्रमण करते समय उसे दो ऐसी सुविधाएँ प्राप्त थीं जो ग्राज़ियानी को आगे बढ़ कर हमला करते समय अनुपलब्ध रही थीं। उसके पीछे, उसके अड्डे (base) के रूप में लीबिया के बञ्जर पठार के बजाय नील की समृद्ध घाटी थी; और यातायात के साधनों के रूप में उसे भूमध्यसागर (Mediterranean) में ब्रिटेन की नौ-सेना की सबलता के कारण समुद्र और समुद्रतटीय सड़क की सुविधा प्राप्त थी। बिना किसी प्रकार का विलम्ब किए अग्रसरण प्रारम्भ कर दिया गया। सोलुम (Sollum) और फोर्ट कापुज़ो (Fort Capuzzo) पर अधिकार कर लिया गया (१६वीं दिसम्बर), और ब्रिटिश सेनाए बर्दिया (Bardia) की ओर बढ़ चलीं जिसको उन्होंने घेर लिया और दो सप्ताह तक घेरा डाले रहने के उपरान्त मुख्याक्रमण (main assault) द्वारा जीत लिया (५वीं जनवरी)। तोब्रुक (Tobruk) का पतन, जो वैवेल का अगला लक्ष्य था, २२वीं जनवरी को हुआ, और अन्त में टैंकों द्वारा १५० मील लम्बे प्रदेश को शीघ्रता से पार करके बेङ्गाज़ी (Benghazi) पर आश्चर्यजनक रूप से अधिकार कर लिया गया। दो माह में ही 'नील की सेना' (Army of the Nile) ५०० मील बढ़ गई और १४०,००० शत्रु सैनिकों को बन्दी बनाने में सफल हुई। इसके बाद उत्तर की कार्यवाही मन्द हो गई, लेकिन सूडान और केन्या से अभियान-सेनाओं (expeditionary forces) ने एरिट्रिया और सोमालीलैण्ड पर आक्रमण किए और वहाँ पर तैनात इटालवी रक्षक-दलों के विरुद्ध सफलता पाई। एबीसीनिया में इटालवी सेना की स्थिति अतीव शोचनीय हो गई। वैवेल के द्रुत और प्रभावकर आघातों से उत्तरी अफ्रीका में तैनात इटालवी सेनाएँ विनष्ट अथवा निश्चलीकृत (immobilized) कर दी गईं और धुरी राष्ट्रों (Axis Powers) की स्थल युद्ध में प्रथम बार गम्भीर पराजय हुई। ब्रिटेन की सफलताएँ प्रायः सैनिकों की लड़ाइयाँ रही हैं, लेकिन यह विजय अत्युत्कृष्ट सेनापतित्व का परिणाम थी जिसमें सैनिकों के शानदार रणकौशल का महनीय योग रहा।*

---

* द्वितीय विश्वयुद्ध में युद्धनीति (strategy) और समरनीति (tactics) के क्षेत्र में हुए विकास का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पूर्वी अफ्रीका, बर्मा तथा जापान के युद्धों का अध्ययन करना अत्यावश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय विश्वयुद्ध का अन्त—फ्रान्स के पतन के उपरान्त ब्रिटेन को धुरी राष्ट्रों से अकेले लड़ाई लड़नी पड़ी। परन्तु सोवियत रूस और संयुक्त-राज्य-अमरीका, इन दोनों सबल राष्ट्रों के द्वारा ब्रिटेन को सहयोग प्रदान कर दिए जाने से १९४१ के अन्तिम पाद में स्थिति में परिवर्तन हो गया। इस नवीन मैत्री का मुख्य कारण स्वयं धुरी राष्ट्रों (Axis Powers) का गर्व और अहंकार थे। यद्यपि जर्मनी ने रूस के साथ सन्धि कर ली थी, तथापि उसने जून १९४१ में बिना कोई घोषणा किए उस पर अप्रत्याशितरूपेण धावा बोल दिया। जापान ने भी उसी वर्ष अमरीका के प्रशान्त महासागरीय उपनिवेशों पर अकारण आक्रमण कर दिया। इसके परिणामस्वरूप युद्ध में भाग लेने वाले राष्ट्र दो नए दलों में बँट गए—जर्मनी, इटली और जापान के विरुद्ध ब्रिटेन, रूस और अमरीका। धीरे-धीरे शक्ति-सन्तुलन हिटलर के विरुद्ध होने लगा और नाज़ी शक्ति के पतन की सम्भावना प्रतिदिन अधिकाधिक होती गई।

नाज़ी शक्ति का पतन प्रारम्भ में असम्भव सा प्रतीत हुआ। जर्मनी को रूसी आक्रमण में पर्याप्त सफलता उपलब्ध हुई। १९४१, १९४२ और १९४३ में जर्मन सेनाएँ भीषण आक्रमण करके रूस में प्रविष्ट होने और मास्को के समीप तक पहुँचने में सफल हो गईं। परन्तु तीनों ही बार वे पूर्ण सफलता प्राप्त करने में असमर्थ रहीं। अन्तिम आक्रमण में जर्मनों के सम्मुख दो भीषण समस्याएँ उत्पन्न हुईं। एक, वे असंख्य सैनिकों को लड़ाई में झोंकने और अपरिमित युद्ध-सामग्री व्यय करने के बावजूद रूस के मुख्य नगर स्टालिनग्राड को अधिकृत नहीं कर सके। दूसरे, और यह और भी अधिक खेदजनक बात थी कि रूसी सेनापति मार्शल पॉलुस (Paulus) के अधिनायकत्व में रूसी सेना ने सम्पूर्ण छठी जर्मन सेना को घेर लिया। इस समय से रूस की विजय के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे। धीरे-धीरे रूसी सेना पश्चिम में आगे बढ़ने लगी और जर्मन सीमा के निकट पहुँच गई। अन्त में, १९४५ में, वह जर्मनी की राजधानी बर्लिन में प्रवेश करने में सफल हो गई।

अमरीका और ब्रिटेन का जर्मनी में प्रवेश अधिक चक्करदार मार्ग से हुआ। इसका प्रारम्भ उत्तरी अफ्रीका में हुआ जहाँ उन्होंने धुरी राष्ट्रों की शक्ति को विनष्ट किया। इस प्रदेश में विजय की सम्भावना बहुत कम थी। यहाँ प्रारम्भ में वैवेल को सफलता मिली थी, परन्तु बाद में उसे भी पराजित होना और मिस्र की सीमा की ओर लौट जाना पड़ा। यही दशा उसके उत्तराधिकारी अकिनलेक की हुई। लेकिन उसके बाद, ब्रिटेन की ८वीं सेना (British VIII. Army) के सेनापति जनरल मोण्टगोमेरी (General Montgomery) के काल में, मित्रराष्ट्रों को सफलता मिली। जनरल मोण्टगोमेरी और उसकी ८वीं सेना ने एल आलामीन (ElAlamein) के प्रसिद्ध संग्राम में संयुक्त इटालवी-जर्मन सेना को, जिसका नेतृत्व लब्धप्रतिष्ठ जनरल रोमेल (General Rommel) कर रहा था, घातक रूप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
से पराजित किया (२३वीं अक्टूबर १९४२)। इस विजय के उपरान्त ब्रिटिश सेना पश्चिम की ओर बढ़ चली। ८वीं नवम्बर को ब्रिटिश-अमरीकी सेनाएँ उत्तरी फ्रान्सीसी अफ्रीका में कासाब्लेन्का (Casablanca), ओरान (Oran) तथा अल्जीयर्स (Algiers) के समीप उतरने में सफल हुईं और ८वीं ब्रिटिश सेना से मिलने के लिए पूर्व की ओर बढ़ चलीं। मित्रराष्ट्रीय सेनाओं के इस दोहरे आक्रमण ने रोमेल की सेना को कुचल कर रख दिया। मई १९४३ के प्रारम्भिक सप्ताहों तक धुरी राष्ट्रों की अफ्रीका स्थित समस्त सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। उनके लगभग २५०,००० सैनिक बन्दी हुए।

इसके उपरान्त इटली पर आक्रमण किया गया। सर्वप्रथम ८वीं ब्रिटिश और ७वीं अमरीकी सेनाओं ने जुलाई १९४३ में सिसली पर आक्रमण किया और अगस्त के मध्य तक इस पर अधिकार कर लिया। इस बीच में मुसोलिनी (Mussolini) ने अपने पद से स्तीफा दे दिया था और मार्शल बाडोग्लियो (Marshal Badoglio) के नेतृत्व में एक नई सरकार बनी जिसने मित्रराष्ट्रों से युद्ध-विराम-सन्धि (armistice) कर ली। परन्तु जर्मनी ने रोम पर अधिकार कर लिया (१०वीं सितम्बर) और बाडोग्लियो की सरकार को मित्रराष्ट्रों की शरण लेनी पड़ी। बाडोग्लियो ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया और इस प्रकार इटली मित्रराष्ट्रों के साथ मिल गया। मित्रराष्ट्रीय सेनाओं ने इटली में ३री सितम्बर से ही उतरना प्रारम्भ कर दिया था। धीरे-धीरे वे उत्तर की ओर बढ़ीं और अन्त में रोम पर अधिकार करने में सफल हो गईं (४थी जून १९४४), यद्यपि सम्पूर्ण इटली पर उनका अधिकार मई १९४५ में ही हो पाया।

रोम-विजय के दो दिन उपरान्त, ६ठी जून १९४४ से, इस विश्वयुद्ध का अन्तिम दौर प्रारम्भ हुआ। उस दिन मित्रराष्ट्रीय सेनाएँ अपने सर्वोच्च सेनापति (Supreme Commander) जनरल आइजनहॉवर (General Eisenhower) के नेतृत्व में, जो इसके पूर्व उत्तरी अफ्रीका और इटली में मित्रराष्ट्रीय अभियान का नेतृत्व कर चुका था, फ्रान्स के उत्तरी तट पर नार्मण्डी (Normandy) प्रान्त में शेरबर्ग (Cherbourg) तथा ल हाव्रे (Le Havre) के मध्य उतरने में सफल हो गईं। इसके बाद वे शनैः शनैः जर्मन सीमा की ओर बढ़ीं। जर्मनों ने उनका भीषण प्रतिरोध किया और अपने प्रत्याक्रमणों में कई बार सफल भी हुए; किन्तु मित्रराष्ट्रों की संयुक्त शक्ति के सम्मुख नहीं टिक पाए। २३वीं अगस्त को पेरिस स्वतन्त्र हो गया और सितम्बर के मध्य तक लगभग समस्त फ्रान्स, आल्सेस-लॉरेन और अटलाण्टिक के बन्दरगाहों को छोड़कर, जर्मन आधिपत्य से मुक्त हो गया। इस बीच में रूसी सेनाएँ पूर्वी मोर्चे पर दबाव डालने लगी थीं। जनवरी १९४५ तक उन्होंने वारसा (Warsaw) पर और मार्च १९४५ तक आस्ट्रिया पर अधिकार कर लिया। १६वीं अप्रैल को बर्लिन पर आक्रमण प्रारम्भ हुआ और २री मई को उसका पतन हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा जाता है कि इसके दो दिन पूर्व हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी। ७वीं मई १९४५ को जर्मन सरकार की ओर से जर्मन चीफ ऑव स्टाफ जनरल जाड्ल (Jeneral Jodl) ने जनरल आइजनहावर के र्हाम्स् (Rheims) स्थित प्रधान कार्यालय (Headquarters) में पराजय-स्वीकार-पत्र (instrument of surrender) पर हस्ताक्षर कर दिए।

अब मित्रराष्ट्रों का एक मात्र शत्रु जापान शेष रह गया था। यह बात अमरीकी राष्ट्रपति रूज़वेल्ट और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री चार्चिल दिसम्बर १९४१ में हुई प्रथम वाशिंग्टन कान्फ्रेन्स में ही तय कर चुके थे कि पहले मित्रराष्ट्रीय पक्ष को सम्पूर्ण शक्ति यूरोपियन शत्रुओं के विरुद्ध लगाई जाएगी और उनका कुचलन के बाद अमरीका और ब्रिटेन के समस्त साधनों को जापान के विरुद्ध प्रयुक्त किया जाएगा। इसके बाद १९४२ के अन्त तक जापान सफलता पर सफलता प्राप्त करता गया। परन्तु १९४३ के उत्तरार्द्ध से पांसा पलटने लगा। मई १९४५ तक बर्मा स्वतन्त्र कर लिया गया। जुलाई १९४५ तक फिलिप्पाइन्स भी मुक्त हो गया। इसी माह अमरीका, ब्रिटेन और चीन ने पोट्स्डम (Potsdam) में कान्फ्रेन्स करके जापान को बिना शर्त आत्म-समर्पण करने का अन्तिमेत्थम् (ultimatum) दिया। जापान के द्वारा इसकी उपेक्षा किए जाने पर और युद्ध का शीघ्र अन्त करने के लिए ६ठी अगस्त को हिरोशिमा (Hiroshima) नगर पर प्रथम एटम बम (atom bomb) गिराया गया। इससे अवर्णनीय विनाश हुआ। नगर का ४ मील विस्तृत क्षेत्रफल पूर्णतः ध्वस्त हो गया और उससे अधिक व्यक्ति हताहत हो गए जितने जर्मनी के द्वारा इंग्लैण्ड पर छः वर्ष तक हवाई हमले करते रहने से हुए थे। परन्तु इसके बावजूद जापानी सरकार ने मित्रराष्ट्रों की शर्तें नहीं मानीं। इस पर अमरीका ने ९वीं अगस्त को नागासाकी (Nagasaki) नगर पर दूसरा एटमबम गिराया। इसका भी उतना ही विनाशकारी परिणाम हुआ। अगले दिन जापानी सरकार ने आत्म-समर्पण कर दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध का नाटकीय अन्त हुआ। इस युद्ध में हुए जन-संहार और रक्तपात से स्पष्ट है कि यदि कभी तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो उसका परिणाम कितना विनाशकारी होगा।

निष्कर्ष—इस अन्तिम खण्ड में हम युद्धकर्म के मुख्य सिद्धान्तों का, जितना इसके इतिहास के सर्वेक्षण से ज्ञान होता है, विवेचन करेंगे। ये संख्या में बहुत कम हैं और अनलंकृतरूपेण वर्णन किए जाने पर मन में अपने अत्यन्त सरल होने की भ्रान्त धारणा उत्पन्न करते हैं। इसलिए अगर इनका अध्ययन इन्हें इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पृथक् करके किया जाय तो ये बहुत प्रभावोत्पादक प्रतीत नहीं होते। इसका मुख्य कारण यह है कि युद्ध-विज्ञान (science of war) प्रधानतः प्रयोगात्मक (practical) विज्ञान है जिसमें कार्यान्विति (execution) सर्वोपरि होती है। इसके नियमों (rules) और सूत्रों (maxims) को समझना दुष्कर नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कठिनाई उन्हें व्यावहारिक रूप देते समय उत्पन्न होती है। अन्य क्षेत्रों के समान इस क्षेत्र में भी ज्ञान और उसकी कार्यान्विति दो भिन्न बातें हैं।

युद्ध में सर्वोपरि लक्ष्य शत्रु से सबलतर हो जाना होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने का सरलतम उपाय है अपने पास उससे अधिक सैनिक रखना जितने उसके पास हैं। यह सैन्य सफलता का सर्वाधिक प्रभावशाली और सर्वाधिक मान्य सिद्धान्त है। इससे कम-से-कम विश्व की ९० प्रतिशत महत्त्वपूर्ण विजयों की मीमांसा हो जाती है। संख्याधिक्य का लाभ प्राप्त न होने पर इस कमी को (अ) मनोबल (morale), (आ) शस्त्रास्त्र (armament) (इ) पैंतरेबाजी (manoeuvring) द्वारा पूरा किया जा सकता है। इनमें अन्तिम के साथ सैन्य-विज्ञान का विशेष रूप से सम्बन्ध है। पैंतरेबाजी (manoeuvring) द्वारा किसी एक निर्णायक स्थल और समय पर शत्रु के विरुद्ध अदम्य शक्ति संकेन्द्रित की जाती है। इसे स्थूलरूपेण पाँच प्रकार की संक्रियाओं (operations) में विभाजित किया जा सकता है।

१. शत्रु के दुर्बल स्थलों—उसके पार्श्वों अथवा पृष्ठभाग पर—आघात करना।

२. उसकी सञ्चार-रेखाओं को काट देना।

३. 'बाह्य' (exterior) रेखाओं के स्थान पर 'आन्तरिक' (interior) रेखाओं पर लड़ना।

४. शत्रु के सम्मुखीय मोर्चे को तोड़ देना।

५. उसे घूम कर घेर लेना।

इन संक्रियाओं को चतुरतापूर्वक कार्यान्वित करने से सैन्यबल की न्यूनता दूर की जा सकती है। परन्तु सच पूछा जाए तो इन सबके समुचित सम्पादन में (३री के अतिरिक्त) शत्रु की तुलना में अधिक सैनिकों की आवश्यकता होती है। अन्यथा ये सेनापति को उस प्रकार के भयानक संकट में डाल देती हैं जिससे नेपोलियन मारेंङ्गो के रणक्षेत्र में बाल-बाल बच पाया था। इस प्रकार युद्धकला को बिना अतिशयोक्ति के दो सरल नियमों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

१. शत्रु की तुलना में अधिक सैनिक रखो।

२. अपनी सेनाओं को संयुक्त रखो और उसकी सेनाओं को विभाजित।*

सभी महान् सैन्य-विद्या-विशारदों ने सैन्य-विज्ञान की मूलभूत सरलता पर बल दिया है। परन्तु यह सरलता सैद्धान्तिक रूप में ही मिलती है, व्यवहार में नहीं। 'ज्ञान'

---

* अपनी कृति 'आर्म्स एण्ड दि मेन' में शॉ ने एक पात्र से युद्धकला का सही, यद्यपि कुछ निष्ठुर रूप से, वर्णन कराया है : "श्रीमतीजी, सैनिक की कला कायर की कला है जिसमें अपनी शक्ति अधिक होने पर निर्ममतापूर्वक आक्रमण किया जाता है और दुर्बल होने पर हानिकर मार्ग से दूर रहा जाता है। सफल लड़ाई लड़ने का सम्पूर्ण रहस्य यही है। अपने शत्रु को अलाभप्रद स्थिति में ले आओ; और कभी भी, किसी हालत में भी, उससे उस समय मत लड़ो जब वह समान रूप से शक्तिशाली हो।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(knowing) और 'कर्म' (doing) का यह भेद सभी क्षेत्रों में मिलता है। गोल्फ-नियमावली पढ़ने में बहुत सरल लगती है, लेकिन उन नियमों को, जो इतने संक्षिप्त और स्पष्ट रूप में समझाए गए होते हैं, प्रयोगात्मक रूप देते समय अप्रत्याशित कठिनाइयाँ सामने आती हैं। इसीलिए गोल्फ का प्रशिक्षण देने वाले विद्यालय सर्व-जेता (champions) उत्पन्न करने की गारण्टी नहीं दे सकते। यही बात सैनिक अकादमियों (military academies) के साथ है। एक सेनापति को सर्वोत्तम सैनिक शिक्षा मिली हो सकती है; उसे सैन्य-विज्ञान के नियम हस्तामलकवत् स्पष्ट हो सकते है; और फिर भी वह रणक्षेत्र में सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप देने की शक्ति के अभाव के कारण असफल हो सकता है। रणक्षेत्र की हालत 'लेक्चर-रूम' से बहुत भिन्न होती है। किसी अभियान के इतिहास का अध्ययन करते समय अध्यापक और विद्यार्थी, दोनों को हर समय तथ्यों की पूरी जानकारी होती है। रणक्षेत्र में सेनापति को बराबर अपर्याप्त सूचनाओं के आधार पर कार्य करते रहना होता है। उसे युद्ध के कोहरे को भेदने का प्रयास करना होता है। कुछ छिटपुट सूचनाओं और अधूरे समाचारों के आधार पर उसे शत्रु की स्थिति का चित्र बनाना होता है और उसके उद्देश्य के विषय में अनुमान लगाने होते हैं। इस कार्य को करने की क्षमता प्रशिक्षण द्वारा नहीं आ सकती। यह प्रकृति की देन, एक प्रकार की छठी इन्द्रिय, होती है। किसी अन्य गुण से अच्छे और बुरे सेनाध्यक्ष का भेद इतना स्पष्ट नहीं होता।

कहा जा सकता है कि अगर यह बात सही है कि सेनापतित्व का सर्वाधिक मूल्यवान गुण अध्ययन द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता तो सेनापति युद्ध के सिद्धान्तों के विषय में क्यों परेशान हों? उनकी नैसर्गिक योग्यता पर विश्वास क्यों न किया जाए अथवा उनके अन्तर्बोध पर निर्भर क्यों न रहा जाए? इसका उत्तर यह है कि कोई भी कर्म तब तक पूर्णतः प्रभावोत्पादक नहीं होता जब तक वह किसी प्रकार के ज्ञान पर निर्भर नहीं होता। विज्ञान प्रत्येक कला का अपरिहार्य आधार होता है और विज्ञान व्यवस्थित और संघटित ज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं है। गोल्फ का कोई स्वयं-शिक्षित खिलाड़ी शायद गोल्फ अच्छी तरह खेल ले क्योंकि प्रकृति ने उसे तीक्ष्ण दृष्टि और सुस्थिर बाहु प्रदान किए हैं। परन्तु अगर वह खेल के सिद्धान्त, पेंग (swing) की प्रकृति, उचित पकड़ (grip) और 'हिट' करते समय शरीर की सर्वोत्तम स्थिति (stance) से परिचित होगा तो अधिक अच्छी तरह गोल्फ खेल पाएगा। क्योंकि हर मामले में मात्र सिद्धान्त के ज्ञान से अच्छा अभ्यास (practice) नहीं हो पाता, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि बिना सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त किए समुचित अभ्यास सम्भव है। जैसा कि सैन्य-विज्ञान के एक जर्मन लेखक ने कहा है, "ज्ञान से कर्म की ओर एक पग उठाना सदैव आवश्यक होता है, परन्तु यह पग ज्ञान के बाद की अवस्था है अज्ञान के बाद की नहीं।" संक्षेप में यही युद्धकर्म के सैद्धान्तिक अध्ययन का औचित्य है, और साथ ही किसी भी अन्य विषय का। अपनी कला के सब मूल तत्त्वों—सैनिक सफलता की सम्भावना को सर्वाधिक सुनिश्चित करने वाले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्य के सिद्धान्तों—से पूर्व परिचय होने से किसी सेनापति को वह सम्पूर्ण उत्कृष्टता मिल जाती है जो ज्ञान को अज्ञान के ऊपर प्राप्त है। और सैन्य-विद्या का सर्वोत्तम ज्ञान, हम दोहरा दें, सैन्य-विद्या के इतिहास के अध्ययन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है जो, जर्मन-युद्ध-अकादमी (German War Academy) की पाठ्य-तालिका के शब्दों में, "शान्ति काल में युद्ध की शिक्षा देने का सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय है।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पठनीय सामग्री

Clausewitz.	*On War.*
Colin.	*The Transformations of War; Great Battles of History.*
De Gaulle.	*The Army of the Future.*
Cyril Falls.	*A History of the Second World War.*
Fuller.	*Decisive Battles.*
Gilbert.	*Evolution of Tactics.*
Hamley.	*Operations of War.*
Ironside	*Tannenberg.*
Jomini.	*The Art of War.*
Johnstone.	*History of Tactics.*
Liddell Hart.	*Decisive Wars of History; Great Captains Unveiled.*
Murray, S. L.	*The Reality of War., a Companion to Clausewitz.*
Oman.	*History of the Art of War in the Middle Ages; History of the Art of War in the Sixteenth Century.*
Sheppard.	*Military History for the Staff College; A Short History of British Army.*
Spaulding, Nickerson,	and Wright. *Warfare.*
Wavell.	*Palestine Campaign.*

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पारिभाषिक शब्द-सूची

अग्रगामी सैनिक	Forward Troops
अग्रदल	Vanguard
अग्रभाग, मोर्चा	Front
अग्रसरण	Forward Advance
अड्डा	Base
अतिपाति	Urgent
अनिवार्य भर्ती	Conscription
अन्तराल	Gap
अन्तःसरण	Infiltration
अन्तिमेत्थम्	Ultimatum
अप्रत्याशित	Sudden
अप्रत्याशित घटना	Accident
अभियान	Campaign, Expedition
अभियान-सेना	Expeditionary Force
अर्द्धगहरी-विरचना	Half-deep Order
अवतारण	Landing
अवर	Inferior
अवर पदाधिकारी	Subaltern
अश्वारोही सेना	Cavalry
अश्वावरोही	Dismounted
अश्वारोही-धनुर्धर	Mounted Archer
असम अनुक्रम, तिर्यक गति	Oblique Order
आक्रमक दल	Striking Arm
आक्रमक समरनीति	Offensive Tactics
आक्रमण, आक्रमक-युद्ध	Offensive
आग्नेयास्त्र	Firearms
आदर्शभूत	Typical
आन्तरिक रेखाएँ	Inner Lines, Interior Lines
आमने सामने जमकर होनेवाला संग्राम,प्रत्यक्षयुद्ध	Pitched Battle
आरक्षित	Reserve
आरक्षित सैनिक	Reserves
आर्केबस	Arquebus

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आर्डर, अनुक्रम	Order
आवर्तिक	Periodic
आसामी सामन्त	Feudal Tenant
आहाराभाव	Starvation
इच्छाविरुद्ध संचलन	Forced March
उपक्रम	Enterprise
उपायातीत	Desperate
ऊँचे कोण से गोलन्दाजी	High Angle Fire
एककेन्द्राभिमुख	Converging
एकत्रीकरण, संकेन्द्रण	Concentration
एकस्थ	Converge
ओट	Shelter
'कर्म'	Doing
कवच	Armour
कवचधारी	Armoured
कवचधार अश्वारोही	Mailed, Cavalry, Cuirassier
कार्तूस	Cartridge
कार्यान्विति	Execution
कार्यवाही, संक्रिया	Operation
कॉलम	Column
कुशल निशानेबाज़	Sharp Shooter
कूटाक्रमण	Feint-Attack
केन्द्राभिमुख	Convergent
कोण	Salient
खाई	Trench
खाइयों का युद्ध	Trench Warfare
खात	Ditch
खुली लड़ाई	Open Fighting
खुली विरचना, अन्तरालयुक्त विरचना	Open Order, Open Formation
खोल	Shell
गण	Company
गति	Tempo

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गतिरोध	Stalemate, Deadlock
गतिशीलता	Mobility
गत्यात्मक युद्ध	War of Movement
गमनागमन	Movement
गिरिपाद	Foothills
गोला	Projectile
गोली	Bullet
घात	Ambush
घेरने की नीति	Encircling Strategy
घेरा	Scige
चक्करदार प्रगमन	Turning Movement
चिकने छेदवाली तोपें	Smooth Bores
चिकनेछेदवाली मुस्केट	Smooth Bore Musket
छलबल	Stratagem
छापामार	Guerilla
जलपथ	Waterway
जलपोत, पोत	Ship
जलबेड़ा	Fleet
जानपद-सैन्य	Fyrd
ज्ञानवृद्ध, अनुभवी	Veterans
डोरीवाले धनुष	Crossbow
ढाल	Shield
तिर्यक अग्रसरण	Transverse March
तिहरी परिखा पंक्ति	Triple Trench Line
तोप	Cannon
तोपखाना	Artillery
तोपची	Artillerist
तोपों द्वारा अग्निवर्षा	Artillery Barrage
दर्रा	Defile
दल, 'कोर'	Corps
दलबद्ध करना	To Brigade

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दस्ती बन्दूक	Hand Gun
दुर्गरक्षा का कार्य	Garrison Duty
दुर्गों की पंक्ति	Fortress Barrier
द्रुत अग्रसरण	Swift Advance
धनुर्धर	Archer
धनुर्धारी	Bowmen
धर्मयुद्ध	Crusade
नलिका	Barrel
नावाधिकरण	Admirality
नियम	Rule
नियमित सैनिक	Regulars
निर्मम	Ruthless
निश्चलीकृत	Immobilized
निष्क्रमण	Evacuation
निष्ठा	Allegiance
निस्फोट	Mine
नुकीली बेलनाकार गोली	Cylindro-Conoidal Bullet
नौसैनिक शक्ति	Maritime Power
पंक्ति	File, Line, Rank
पंचकुनिया फैशन	Quincunx Fashion
पकड़	Grip
पदाति-धनुर्धर	Foot, Archer
परशु	Battle Axe
परस्पर अंशतः आच्छादित करना	Overlap
पराजय-स्वीकार-पत्र	Instrument of Surrender
परिखा-पंक्ति	Trench Line
परिखास्थ	Entrenched
परिवृत	Circle
पार्श्व	Flank
पार्श्वीय अक्रमण, पार्श्वीय प्रगमन	Flanking Movement
पार्श्वीय अग्रसरण	Flank March
पिण्डुलीकवच	Greaves
पूर्ण प्रतिरूप	Exact Counterpart
पूर्ण प्रत्यागमन	Full Retreat
पूर्वोपाय	Precaution
पृष्ठभाग	Rear
पृष्ठारक्षी संक्रिया	Rearguard Action

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेंग	Swing
पेशेवर सेना	Professional Army
पैंतरा	Manoeuvre
पैंतरेबाजी	Manoeuvring
पोतदल	Squadron
प्रक्रिया	Operation
प्रतिरक्षात्मक	Defensive
प्रतिरक्षात्मक साधन	Fortification
प्रतिरक्षात्मक स्थिति, रक्षात्मक स्थिति	Defensive Position
प्रतिवेदन	Report
प्रत्याक्रमण	Counter-Attack
प्रत्यागमन	Retseat
प्रभाग, डिवीजन	Division
प्रभागीय सिद्धान्त	Divisional Principle
प्रयोगात्मक	Practical
प्रवेग	Tempo
प्रशिक्षण	Drill
संघीय, कॉनफेडेरेट्स	Confederates
प्रहार्य, आक्रम्य	Vulnerable
प्रादेशिक सैन्यदल	Territorials
फेॅलेॅक्स	Phalanx
फैलाव	Sweep
बन्दूकची	Gunner
बर्छी, बल्लम	Pike
बर्छीधारी सैनिक	Pikemen
बल, शक्ति	Force
बलवर्धक सैन्य	Reinforcements
बाज़ू, पक्ष	Wing
बारूद	Gunpowder
बाह्यरेखाएँ	Exterior Lines
बेड़ा, जलबेड़ा	Fleet
बेलोच सैन्य-विरचना	Still Formation
भर्ती	Recruitment
भारी आयुधों से सज्जित अश्वारोही सेना	Heavy Cavalry
भारीतोप	Heavy Artillery
भिड़न्त	Skirmish
भिड़न्तु सैनिक, झड़पनेवाले सैनिक	Skirmishers

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका	Role
मध्यस्थित पठार	Tableland
मनोबल	Morale
महान् युद्धनीतिक योजना	Great Strategic Conception
मार	Range
मित्रराष्ट्रीय सैन्य-पंक्ति	Allied Line
मिसाइल, फेंककर मारे जाने हथियार, क्षेप्यास्त्र	Missile
मुख्याक्रमण	Main Assault
मुठियादार बन्दूक	Clubbed Musket
मुस्केटधारी सैनिक	Musketeer
मुहासरा	Siege
यन्त्रीकरण	Mechanization
युद्ध	War
युद्धकर्म	Warfare
युद्धक्लान्ति	War-Weariness
युद्धक्षेत्र	Theatre of War
युद्धघोष	War-Cry
युद्धतन्त्र	Strategy, Fighting Machine
युद्धतन्त्री	Strategist
युद्धतन्त्रीय	Strategical
युद्धतन्त्रीय विस्तारण	Strategic deployment
युद्धनीति	Strategy
युद्धनीतिक	Strategic
युद्धयन्त्र	War-Machine
युद्ध-विराम-सन्धि	Armistice
युद्धरत	Belligerent
युद्ध-विज्ञान	Science of War
युद्ध-सामग्री	Supply
रकाब	Stirrups
रक्षा, प्रतिरक्षा	Defence
रंगरूट	Recruits
रणक्षेत्र	Theatre of War
रणक्षेत्र का प्रधान कार्यालय	Field Headquarters
रणविधि	Mode of Fighting
रणोत्साह	Fighting Spirit
रसद-विभाग	Commissariat
राष्ट्रीय-सुरक्षा-सरकार	Government of Notional Defence

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रेखा, पंक्ति	Line
रेलपथ	Railway
रैखिक-विरचना	Line Formation
रैखिक समरतन्त्र	Linear Tactics
लचीली विरचना	Loose Formation
लड़ाई, रण	Fighting
लीजन	Legion
लूटपाट	Raids
लोकसेना	Militia
लोच	Flexibility
वक्षस्त्राण	Cuirass
वर्ग	Square
विकृताङ्ग	Deformed
विरचना	Formation
विलम्बी पैंतरा, विलम्बी प्रगमन, शत्रु की गति विमन्द करना	Delaying Movement
विश्वजनीन, सार्वजनीन	Universal
विषैली गैस के बम	Gas-Shells
विस्तारण, फैलाना	Deployment
विस्फोटक	Explosive
वेतनभोगी सैनिक	Mercenaries
वैज्ञानिक सैनिक	Scientific Soldier
व्यूह रचना	Military Formation
शक्ति, बल	Power
शस्त्रसज्जित	Mobilized
शस्त्रास्त्र	Armament
शॉक ट्रूप्स, सहसाक्रमक सैनिक	Shock Troops
शिरस्त्राण	Helmet
शिविर	Camp
श्वासयन्त्र	Respirators
संक्रिया	Operation
संख्या	Numbers
संगीन	Bayonet
संग्राम	Battle
संग्राम विमुखता	Defeatism
संघी, फेडेरल्स	Federals

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संचलन	Morale
सञ्चार	Communication
संयोग	Chance
संयोजन, जोड़ी	Combination
संयोधी सेनाएँ	Combatant Armies
सक्रिय सैनिक	Active Troops
संकेंद्रित	Concentrated
सघन विरचना	Denser Formation, Close Order
सन्निकटीय युद्ध, मुठभेड़	Hand to Hand Fighting
सबलीकृत	Reinforced
समधिक दल	Additional Force
समरक्षेत्र	Battle Area
समरभूमि	Battle Field
समरतन्त्री	Tactician
समरनीति, समरतन्त्र	Tactics
समरतान्त्रिक, समरनीतिक	Tactical
सर्पिलाकार खांचे	Spiral Grooves
'समुद्र तक पहुँचने की दौड़'	'The race to the sea'
सम्मुखीय आक्रमण	Frontal Attack
सर्वगत सैनिक सेवा	Universal Military Service
सर्वजेता	Champions
सर्वोत्तम स्थिति	Stance
सर्वापरि	Supremacy
सवेग प्रक्षेपण	Hurling
सशस्त्रयोद्धा	Men-at-arms
सहसाक्रमण	Coup-de-main
सहायक सैन्यदल	Auxilary
सामान्य अग्रसरण	General Advance
सामान्य सैनिक सिद्धान्त	General Military Doctrines
सामुदायिक पदातिसैन्य	Communal Infantry
साम्राज्यिक	Imperial
सार्वजनीन सैनिक सेवा	Universal Service
साहसपूर्ण उपक्रम	Initiative
सीमा चौकी	Frontier Post
सीमानिवेश	Outpost
सुरक्षित	Fortified
सूत्र	Maxim
सेना, सैन्यबल	Army
सेनापतित्व	Generalship
सैनिक	Troops

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैनिक अन्तर्बोध	Military Instinct
सैन्यदल	Corps
सैनिक पर्यवेक्षक	Military Observer
सैनिक वर्ग	Squares
सैन्य-विन्यास	Disposition
स्क्वाड्रन	Squadron
स्थान-निर्धारण	Disposition
स्थानापन्न	Substitute
स्थायी सेना	Standing Army
हथगोला	Hand Grenade
हल	Solution
हल्के आयुधों से सुसज्जित अश्वारोही सेना	Light Cavalry
होप्लाइट	Hoplite

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

(संग्रामों के नाम काले टाइपों में दिये गये हैं)

अर्बेला, १८
अलेक्ज़ेण्डर महान् , १४–२०

आइसस, १६
आगिन्कूर्त, ५७–५९
आदिम युद्ध कला, १
आन्तरिक रेखाएँ, ३०, १९७
आरसफ, ५१
आर्केबस, ६३
आलिवर क्रोमवेल, ७०–७५

इटली, (१७९६-९७), ९५–९८
इटली की असफलताएँ, **१९४०–४१**, १९१-९२
इटालवी मोर्चा, **१९१५–१८**, १७३
इलेर्डा, ३८

उदेनार्द, ८३

एड्रियानोपल, ४३
एण्टिएटम, १२६
एपामिनोडास १३-१४

कनीयस् मोल्टक, १५२, १५५-५६, १६६, १६७
कात्र-ब्रास, १०७
कापोरेट्टो, १७३
काम्ब्रे, १६०-६१
कास्तिलों, ६०
कार्हे, ३९
कुट, १७५
कुनेर्स्डोर्फ, ८९
कुरोपाटकिन् , १४६-४७

केरोनिया, १५
कैने, २५–२९
कोनिग्ग्राटज़, १३४-३५
कोन्राड, १६८–१७०
कोरुन्ना, १०४
कोलिन, ८६, ८९
कोहार्ट लीजन, ४४-३५
क्रेसी, ५३–५५
क्लाज़विट्ज़, १३१
क्लुक, १५५, १५७
क्लोडियस नीरो, २९-३०

गुस्टावस अडोल्फस, ६४-७०
गेट्टिस्बर्ग, १२१
गेलीनी, सैनिक गवर्नर, १५६
गेल्लिपोली, **१९१५**, १७३–७५, १८४
गौगामेला, १८
ग्राण्ट, १२२-२३, १२६–२८
ग्रावेलोत्त, १३९–१४१
ग्राँसों, ६१
ग्रेट प्लेन्स, ३१
ग्रेनिकस, १६

चतुर्दश लुई की सेना, ७५-७६

जनरल द गाल, १८६
जनरल वैवेल, १९२-९३
जनरलिस्सिमो गामेले, १८७-८८
जामा, २९-३०
जोन ऑव आर्क ५९-६०
जोफ्रे, १५३, १५५–५७, १६१
जोमिनी, ९९-१३१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टाइबेरियास, ५१
टानेनबर्ग, १६६–१६८
टिली, ६६-६७, ६९
टिसिनो, २५
ट्रिकामेरोन, ४३-४४
ट्रेबिया, २५

डन्किर्क, १८९
डिवीजनल सिद्धान्त, ९२-९३
डन्बरडोव, ७१-४
डीराइलेय्रस, ५०-५१

तालावेर, १०५
तिर्यक् गति, ८६-८७
तीस वर्षीय युद्ध, **१६१८-४८**, ६४–७०
तूलूज, १०७
तोप, ६२-६३, ६५
तोरगाओ, ८७
तोरेस वेड्रास, १०५
त्रसिमेन झील, २५

थर्मोपाइले, ६–१०
थाप्सस, ३९

दक्षिण अफ्रीकी युद्ध, **१८९९-१९०२**, ४८–५२

नार्जेबार्ड, ७०-७१
नान्सी, ६१
नाफेल्स, ६१
नार्वे अभियान १८४-८६
निविए, १६१
नेपोलियन, अध्याय ६
नेपोलियन के अभियान, ९५–१०१, १०५–११४
नेपोलियनी युद्धनीति, ९४-९५
नेपोलियनी संग्राम, १०१–१०३
नोर्डलिन्जेन, ७०

पाइकमेन, ६३-६४
पाइड्ना, ३४
पाखेनडेल, १६०-६९
पाविया, ६३-६४
पेतें, १६१–१९०
पेलोपोनेशियन दीवार, ११
पेल्टास्ट, १५
पोलैण्ड, **१९१५**, १७०-७१,
पोलैण्ड का संग्राम, **१९३९**, १८०-८१
पोरुम, १९
पोसेनियस, १२
प्रशा की सेना, १३०-१३
प्राग, ८९
प्रायद्वीपीय युद्ध, **१८०८–१४**, १०३-१०६
प्लेटाई, १०–१३
प्वाक्रियर्स, ५५-५७

फर्सालस ३८
फाक, १५८, १६३-६४
फाकेनहेन, १५९, १७०–१७२, १७६–७७
फार्मिनी ६०
फिनलैण्ड का संग्राम **१९३९–४०**, १८१–८३
फिलिप, मेसीडोन नरेश, १५
फिलिस्तीन अभियान **१९१५–१८**, १७६-७७
फेबियस कन्क्टेटर २६, ३०
फ्रान्स, **१९४०**, १८६–९०
फ्रान्सीसी जर्मन युद्ध **१८७०-७१**, १३४–१४२
फ्रेडेरिक महान्, ८५–९०
फ्रेडरिक्स्बर्ग ११८-११९

बर्त्रान्द् दुगस्कलें, ५९
बाजेन, १३८-१३९
बाह्य रेखाएँ, ३०
बिकोका, ६३
बुलरन, १२५-२६
बूवाइन्स, ५२
बेनडेक, सेनाध्यक्ष, १३२-१३५
बेलिसारियस, ४३-४४
ब्रिटेन, **१९४०**, १९०-९१
ब्रीचलोडर, ११५-११६
ब्रीटेनफेल्ड, ६६-६७, ६९
ब्रुसीलोव का आक्रमण, १७२
ब्लूखेर, १०७-०८, ११०, ११३-१४
ब्लेनहीम ७८, ८१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
माजिनी रेखा, १८६, १९०
मान्जीकेर्ट ४६-४७
मानेरहीम रेखा, १८२-८३
मान्तुआ, ९७-९८
मालपलाके, ८४
मारिग्ननो, ६१
मारिस ऑव नासो, ६४
मारेङ्गो, ९८-९९
मार्डोनियस, १०-१३
मार्ने, १५५-५६
मार्लबो रो, ७७-८५
मार्शल ओयामा, १४७-४८
मिलिटयाडिज, ६
मुक्देन, १४८-४९
मुण्डा, ३९
मुस्केट ६१, ६३–६६, ७८
मूर, मार्स्टन, ७०
मूर, सर जॉन, ९१, १०४, १०६
मेक्मेहोन, १३७, १३९-४०
मेक्लेलान, १२५-२६
मेगिड्डो, १७६
मेग्नेशिया, ३४
मेटोरस, २९
मेनिपल लीजन, २१–२३
मेण्टीनिया, १४
मेराथोन, ३–६
मेरियस, ३४-३५
मेसूरिया, १७०
मेसोपोटामिया, **१९१५–१९१८**, १७५-७६
मोंस, १५५-५६
मोन्तेनोत्त, ९६
मोराट, ६१
मोर्गार्टेन, ६१
मो लविट्ज , ८६
मोल्टक, द एल्डर, १३०–४२, १५२
मोल्टक, द यंगर, १५२, १५५-५६
मोही, ४७-४८

यन्त्रीकृत सेनाएँ, १७९-८०
याल्, १४६
युद्धनीति, २

ग्रोस, १५८-५९
राइफिल, १९५-१६
रामिलीज, ८३
रिचार्ड ५१-५२
रूसी-जापानी युद्ध, **१९०४-५** १४३–४९
रोक्रोय, ७५
रोजबाख़, ८७

लम्बे धनुष, ५२
लाइन बनाम कालम, ९१
लिग्नि, १०७-११०
लियाओ यांग, १४७-४९
ली, ११९-२३
लीग ऑव आग्सबर्ग, ७६
लीपज़िग, ९९-१००
लीबियन अभियान, **१९४०-४१**, १९-९३
लुटज़ेन, ६७
लुडेनडोर्फ, १६०-६१, १६६, १७७
लेख़फेल्ड, ४४
लेम्बर्ग, १६८-६४
लोड्ज, १६९-७०
लोदी, ९७
लौपेन, ६१
ल्यूक्ट्रा, १४
ल्यूथेन, ८६-८७

वरसेस्टर, ७५
वर्थ, १३७-३८
वर्दुन, १५९-१६०
वाटरलू अभियान, १०७-११४
वालेन्स्टीन, ६७-७०
वाल्मी, ९२
विट्टोरिया, १०६
विमिएरो, १०४
वेगैण्ड, १८८
वेन्दोमें, ७६, ८३
वेलिंग्टन, ९१, ९४ १०३-११४
वोबान, ७५

शतवर्षीय युद्ध, **१३३७-१४५३**, ५२-६०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शत्तानूगा, १२३, १२७
शाँसेलोरविए, ११९-१२१, १२२
शिलोह, १२२-२३, १२७
शेरमान, १२३, १२७-२८
श्लीफेन योजना, १५१-५६, १६६, १७७

सङ्गीन, ६३-६४
सप्तदिवसीय संग्राम १८६२, १२६
सप्तवर्षीय युद्ध, **१७५६-६३**, ८८-९०
समरतन्त्र, २
सरिस्सा, १५
साइनोस्केफाले, ३३
सात सप्ताह का युद्ध **१८६६**, १३१-१३५
सालामाङ्का, १०६
सालामिस, १०
सीज़र, ३६-३९
सीदी बर्रानी, १९२-९३
सीपियो अफ्रीकेनस, २९-३२
सुवुताई, ४७
सेडन, १४०
सेडोवा, १३४-३५
सेम्पाख, ६१
सेलोनिका, **१९१५-१८**, १७२-७३
स्पिकेरेन, १३८
स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध **१७०१-१३**, ७७-८५
स्विस पाइकमेन, ६०-६१

हनीवाल, २३-३३
हस्ड्रूबाल गिस्गो, ३१
हाइपेस्पिस्ट, १५
हिण्डेनबर्ग, १६०-६१, १६६-१७७
हेग, १६१
हेस्टिंग्ज, ४४-४६
होख़किर्क, ८८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

भाग १ : ३२३ ई० पू० तक

लेखक
श्री श्रीराम गोयल

भूमिका
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

डिमाई अठपेजी, ६५० पृष्ठ, १० मानचित्र, १५० रेखाचित्र, १० हाफटोन चित्र, सुनहरी जिल्द, आकर्षक आवरण।

मूल्य : बीस रुपये

इस पुस्तक में लेखक ने मानव जाति के आविर्भाव से लेकर ३२३ ई० पू० तक विश्व की सभ्यताओं के विकास के इतिहास को छः खण्डों—पश्चिमी एशिया, मिस्र, ईजियन प्रदेश और रोम, ईरान, भारत, तथा चीन—में विभाजित किया है। नवीनतम गवेषणाओं से परिपूर्ण इस ग्रन्थ में प्रत्येक सभ्यता के अन्तर्गत भौगोलिक अवस्था, निर्माता जाति की उत्पत्ति, इतिहास जानने के साधन, राजनीतिक इतिहास, शासन प्रबन्ध और राजनीतिक संगठन, युद्धकला, न्याय और दण्ड-व्यवस्था, आर्थिक संगठन, सामाजिक अवस्था, लेखन कला, शिक्षा और साहित्य, धर्म, दर्शन, राजनीतिक और नैतिक दर्शन, विज्ञान, कला, विदेशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध, विश्व सभ्यता को देन तथा ह्रास के कारण आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कुछ विद्वानों की सम्मतियाँ

"...**मैं इस ग्रन्थ को एक आदर्श ग्रन्थ मानता हूँ**। अभी तक मेरी यही धारणा थी कि हिन्दी में इस प्रकार के नवीन विषयों पर गम्भीरतापूर्वक एवं सुबोध और रुचिकर शैली में ग्रन्थ लिखना सर्वथा असम्भव है। परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ के कुछ ही अंश पढ़ कर मेरी उक्त धारणा का मूलोच्छेद हो गया।..."

—**डॉ० बहादुरचन्द्र छाबड़ा**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"...'**विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ**' अपने विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसके वर्णन रोचक तथा तथ्यात्मक हैं। चित्रों और मानचित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता बढ़ा दी है। आशा है हिन्दी जगत् में इस कृति का आदर होगा।..."

—प्रो० गोवर्धनराय शर्मा
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

'...लेखक ने सुबोध और स्पष्ट रूप से विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का व्यापक परिचय इस पुस्तक में दिया है। इतिहास एवं संस्कृति के विद्यार्थियों और सामान्य पाठकों दोनों के लिए यह उपादेय है। सम्भवतः **हिन्दी में अपने ढंग का पहला ग्रन्थ है**।...'

—डॉ० राजबली पाण्डेय
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय

अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

भारतीय संस्कृति : डॉ० लल्लनजी गोपाल तथा डॉ० ब्रजनाथ सिंह यादव	५.००
STUDIIES IN INDIAN ART—Dr. V. S. Agrawala	25.00
DUPLEIX & CLIVE—H. H. Dodwell	12.50
INDIA UNDER WELLESLEY—P. E. Roberts	12.50

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास

वाकाटक-गुप्त-वर्धन युग

ले० श्री श्रीराम गोयल
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास पर हिन्दी में लिखित प्रामाणिक ग्रन्थों का सर्वथा अभाव है। इस अभाव की पूर्ति की ओर यह ग्रन्थ प्रथम पग कहा जा सकता है। इसमें प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास का लगभग २०० ई० से लेकर लगभग ६५० ई० तक अध्ययन किया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इसमें न केवल शोध-पत्रों (Jorunals) एवं आजकल अनुपलब्ध ग्रन्थों में बिखरी सामग्री को एकत्र सगृहीत कर दिया है, वरन् इस विषय पर प्रकाश डालने वाले मूल स्रोतों का अध्ययन करके विभिन्न सिद्धान्तों और मतों की प्रामाणिक समालोचना की है। और विषय को बोधगम्य और सरल बना दिया है।

पुस्तक ६ खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में कुषाण और सातवाहन साम्राज्यों के पतन के उपरान्त भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन है। दूसरे खण्ड में गुप्त-साम्राज्य का इतिहास दिया गया है; तीसरे में मौखरी परवर्ती गुप्त-वंश एवं अन्य समकालीन वंशों का, चौथे में हर्षवर्धन और इसके काल का, पाँचवें में दक्षिणा पथ के वाकाटक, चालुक्य एवं अन्य समकालीन राज्यों का तथा छठे में सुदूर दक्षिण के राज्यों का। प्रत्येक खण्ड अनेक अध्यायों में विभाजित हैं। गुप्त-साम्राज्य एवं हर्षवर्धन का विशेष रूप से विस्तरशः अध्ययन किया गया है। प्रत्येक अध्याय में सभी महत्त्वपूर्ण मतों का विश्लेषण, मुख्य शोध-निबन्धों (research-articles) का उल्लेख एवं मूल स्रोतों (original sources) से आवश्यक उद्धरण (quotations) दिए गए हैं। पुस्तक के अन्त में पाठकों की सुविधा के हेतु मूल ग्रन्थों के आवश्यक अंश, प्राचीन अभिलेख एवं अनेक परिशिष्ट जोड़ दिए गए है। साथ में इस विषय पर आगे कार्य करने वालों की सहायतार्थ विस्तृत पठनीय-ग्रन्थों और निबन्धों की सूची दे दी गई है। पुस्तक में विषय को सरलतर बनाने के लिए अनेक मानचित्र एवं प्राचीन सिक्कों के रेखचित्र जोड़े गए हैं। (यंत्रस्थ)

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी—१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रमुख इतिहास ग्रंथ

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	श्री श्रीराम गोयल	२०·००
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ	श्री श्रीराम गोयल	६·५०
गुप्तकालीन भारत	श्री श्रीराम गोयल	१२·५०
भारतीय संस्कृति	डा० लल्लनजी गोपाल तथा डा० ब्रजनाथसिंह यादव	५·००

INDIA UNDER WELLESLEY
by P. E. Roberts 12·50

DUPLEIX AND CLIVE
by H. H. Dodwell 12·50

AGE OF IMPERIAL GUPTAS
by Dr. P. L. Gupta (in Press)

विश्वविद्यालय प्रकाशन • वाराणसी